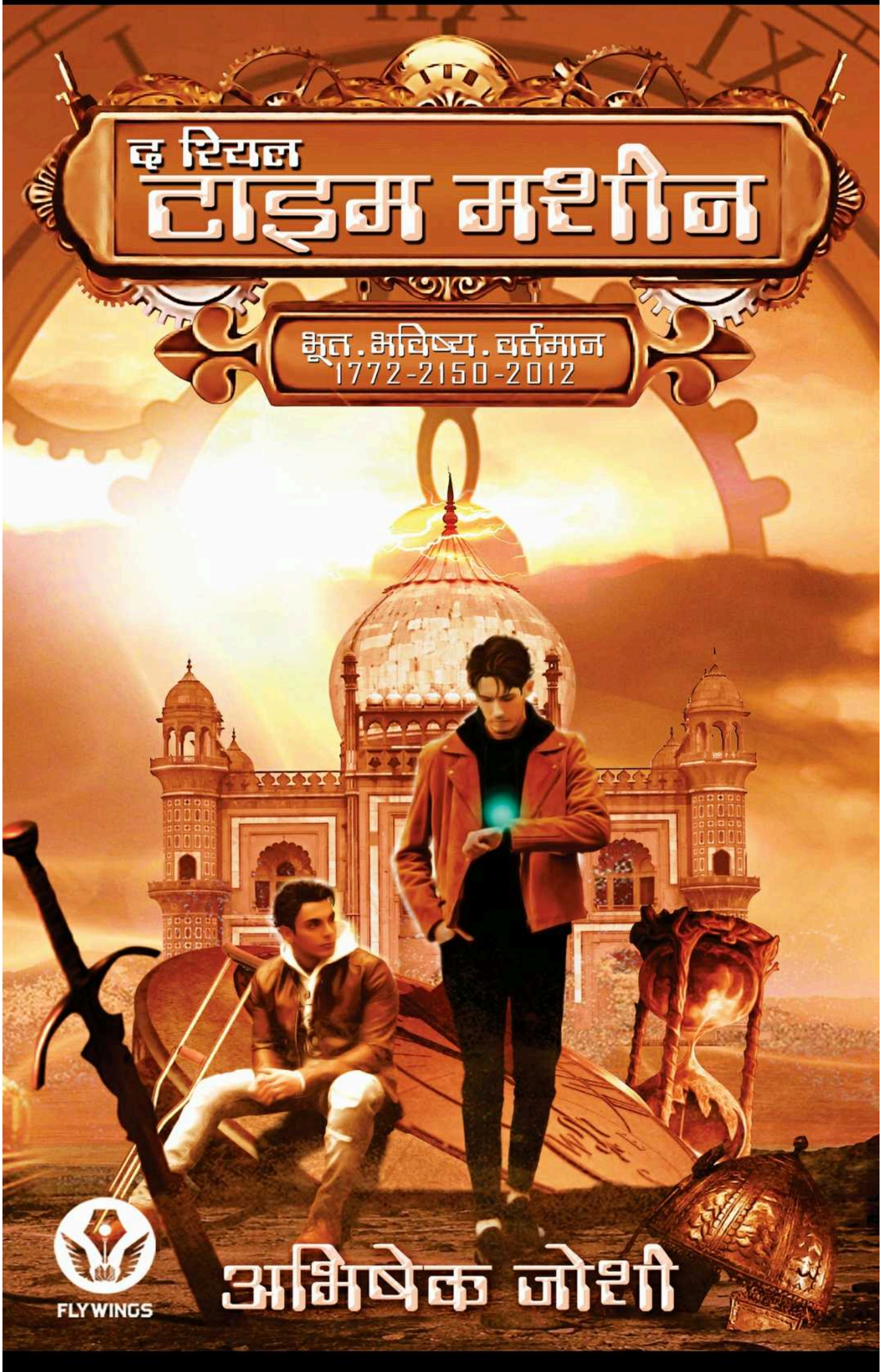

द रियल
टाइम मशीन
भूत.भविष्य.वर्तमान
1772-2150-2012
FLYWINGS
अभिषेक जोशी

लेखक परिचय

एक साधारण ब्राह्मण परिवार में जन्म लेते ही अपनी मनमानी और जिद्द पूरी करने वाले अभिषेक जोशी ने 1999 में कलम थामी। उस वक़्त ये कक्षा नौवीं में पढ़ते थे और अपने गुस्से व जिद्द पर नियंत्रण पाने के लिए कागज़ों को काला किया करते थे। इनकी इसी कोशिश के नतीजे में सन् २००९-१० में “यात्रा”, “बिजनौर के देवता”, “इश्क़ समंदर” और “चंचल मन की शाश्वत कविताएँ” जैसे लघु उपन्यास, लघु कथा संग्रह और कविता संग्रह सामने आए।

सन् 2005 में इन्होंने पीएमबी गुजराती साइंस कॉलेज, इंदौर से बीएससी इन इलेक्ट्रॉनिक्स किया और फिर किसी ज़िद में आकर इंदौर के ही प्रसिद्ध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के एजुकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर से 2009 में एमबीए इन मीडिया की डिग्री प्राप्त की, लेकिन इन्हें नहीं पता था कि इनका योग और आध्यात्म से जुड़ाव इन्हें मीडिया से दूर ले जाएगा।

इन्होंने कुछ वर्षों तक एडवरटाइजिंग एजेंसी में कॉपीराइटिंग का काम किया है। फिर एक प्रकाशन संस्था में कंटेंट राइटर व एडिटर के तौर पर अपनी सेवाएँ देने लगे थे, जिससे जल्द ही इनका जी उचट गया। ये स्वयं की खोज में निकल गए। जिस कारण एक बार फिर कोरे कागज़ों पर काली स्याही उभरने लगी। “एक साधक की आत्मकथा”, “तेरी प्रेम कहानी” और “आख़िरी प्रेम गीत” जैसी आधा दर्जन रचनाएँ इस दौरान सामने आई। आखिरी प्रेम गीत FlyDreams से इनका पहला उपन्यास था जिसे आपने काफी प्रतिसाद दिया। लेकिन जीवन में अब भी कुछ कमी थी। तब इन्होंने ‘द रियल टाइम मशीन’ लिखी, जो आपके सामने है। जीवन के गणित को समझने के लिए खुद गणित पढ़ाते है। पर अब भी इन्होंने कागज़ काले करना न छोड़ा हैं। अव्वल दर्जे के ज़िद्दी थे, हैं और शायद रहेंगे। ये बहुत कुछ समझना चाहते है और उसी में लगे हैं।

प्रस्तुत उपन्यास पर इन्हें अपनी प्रतिक्रियाएँ देने के लिए सीधे सम्पर्क करें।

ईमेल: abhishekjoshi27@gmail.com

द रियल टाइम मशीन

भूत.भविष्य.वर्तमान
1772-2150-2012

अभिषेक जोशी

FLYWINGS

WingsHouse

की प्रस्तुति

FlyWings

ईमेल: teamflywings@gmail.com
INSTAGRAM: the_flywings

WingsHouse की प्रस्तुति
द रियल टाइम मशीन

लेखक – अभिषेक जोशी
संपादन- प्रणव शशांक

प्रथम संस्करण (सितम्बर 2021)

मूल्य: ₹ 250
कवर: शाहनवाज़ खान

मुद्रक: Manipal Technologies Limited

भारत में हिंदी भाषा में प्रकाशित

यह किताब समर्पित है

एक परिवार के इतिहास,

एक पत्रकार की महत्वाकांक्षा,

एक वैज्ञानिक के प्रेम एवं जुनून

और

सिनेमा जगत के

अभिनेता

*"**इरफ़ान खान**" को*

इनकारी बयान

(डिस्क्लेमर)

इससे पहले कि आप उपन्यास पढ़े, मैं साफ कर देना चाहता हूँ कि यह कोई इतिहास का दस्तावेज़ नहीं है, जिस पर आप आँख मूंदकर विश्वास करें, न ही यह तथ्यों को आधार बनाकर उड़ाई गयी कोई बहुत ऊँची कल्पना हैं और न किसी गंभीर वैज्ञानिक शोध पर प्रस्तुत धांसू विज्ञान फंतासी, जिसके बारें में ख्याल करते हुए आपको रातों को नींद न आए। यह एक कहानी है बस, और इससे ज्यादा कुछ नहीं।

इसमें दिखाएं गए पात्र असल जीवन और इतिहास के पन्नों से उठाए गए है, उनके नाम वास्तविक लग सकते है, क्योंकि कहानी की माँग को ध्यान में रखते हुए उनका ज़िक्र ज़रुरी था। वरना उनके बिना इस उपन्यास के बारें में सोचना भी असंभव था। कुछ घटनाएँ आपको सच लग सकती है, वो इसलिए क्योंकि उनको लिखने के लिए इतिहास के कुछ दस्तावेजों पर नज़र दौडाई गई है, लेकिन उन्हें इतने भी गौर से नहीं पढ़ा और परखा गया है कि उपन्यास में उनका अक्षर: जिक्र किया जा सके। उन्हें बस पात्रों की स्थिति-परिस्थिति को दर्शाने और कथानक को मजबूत बनाने के लिए इस्तेमाल किया है। इसलिए अगर कोई बात या घटना आपको ऐसी लगे जिससे आपकी किसी भी प्रकार की भावनाओं को ठेस पहुँचे तो मैं पहले ही आपसे क्षमा चाहूँगा, और यहीं गुजारिश करूँगा कि इसे न पढ़े।

मेरा इरादा किसी भी धर्म-सम्प्रदाय की बुराई करना या किसी एक को श्रेष्ठ बताना नहीं भी है।

यह सिर्फ एक कहानी है, जो किसी वास्तविक व्यक्ति को देखकर आज से कई साल पहले मन में पैदा हो गई थी। यह कहानी का पहला भाग है, जिसे लिखने के लिए बहुत ही उम्दा शोध की ज़रूरत थी, जोकि मुझसे कम ही हो पाया है।

क्या कहूँ? मगर यही सच है! इस तरह का उपन्यास गहरा शोध, समय और श्रम माँगता है। मेरे पास इन तीनों की कमी ह। अगर इस पर आपका अच्छा प्रतिसाद मिल सका तो दूसरा भाग इससे भी बेहतर होगा, इसके लिए निश्चिन्त कर सकता हूँ। आपकी प्रतिक्रियाओं और आलोचना के इंतज़ार में ।

आपका

अभिषेक जोशी।

इरफ़ान- अस्सलाम वालेकुम!

(मैं आपके अच्छे की कामना करता हूँ)

डॉ॰ रामावल्ली- वालेकुम अस्सलाम!

(मैं भी आपके अच्छे की कामना करता हूँ)

-अगर हम बहुत तेज़ चलें तो समय की गति मंद हो जाती है।

(1)

होश में आओ

२०११ की एक रात, मध्य भारतमें स्थित एक घर

जब जावेद ने बेडरुम में जाने के लिए दरवाज़ा खोला, तो गुलाबों की महक ने उसका स्वागत किया। वह पहले से इसके लिए तैयार था। तैयार न भी होता, तो भी उसकी दूर की बहनों की बेहिसाब हँसी-ठिठोली ने उसके मन में यह बात बिठा दी होती कि आज की रात उसी की होने वाली है। उनकी बेशर्म हँसी-ठट्टे की आवाज़ें घर के कोने-कोने में इस कदर गूँज रही थी कि हजार कोस दूर का फासला तय कर आए मेहमान भी शर्म से लाल हुए बिना नहीं रह पा रहे थे। जावेद की शादी के बहाने, वे भी अपने हम उम्रों के बीच बैठे अपनी शादी की पहली रात के बारे में बातें करते हुए खुद को रोक नहीं पा रहे थे। वे ऐसी अश्लील बातें कर रहे थे कि किसी के भी पेट में गुदगुदी होने से न रूकती।

जब घर के माहौल में ही प्यार की खुशबू बिखरी हुई हो, तब भला वह दुल्हन इससे कैसे अछूता रहती रह सकती थी, जो अपने झिलमिलाते लिबास को थोड़ा सिमटाये व थोड़ा फैलाएँ अपने मियाँ 'जावेद' के इंतज़ार में बेचैनी में बैठी थी। मियाँ जावेद की नवेली दुल्हन 'मिस्बा' को भी उसकी ननंदों ने बख्शा नहीं था। जावेद के पहले, सभी उसी के साथ हँसी-ठिठोली करते हुए उसे बहुत सी हिदायतें दे रही थी। हालाँकि, वे हिदायतें उसकी सहेलियों और भाभी जान ने पहले ही दे दी थी।

सुहागरात के लिए हर नयी दुल्हन और हर नया दूल्हा हजारों ख्वाहिशें और कल्पना करता हैं। और उस इंतजार की तो पूछो मत, वह इंतजार जिसका एक-एक पल घण्टों जितना लम्बा लगता है। फिर चाहे इंतज़ार फूलों की सजे सेज पर दुल्हन कर रही हो, या बाहर दोस्तों व बहनों से घिरा दूल्हा। वह इंतजार ऐसा लगता है, जैसे कभी ख़त्म ही न होगा। लेकिन क्षण-क्षण बढ़ते समय के साथ उसे तब ख़त्म होना ही पड़ता है, जब दूल्हा कमरें में घुसते ही दरवाजे की चटखनी बंद कर देता है।

अपनी बैसाखी का सहारा लेते व कुछ लंगड़ाते हुए जावेद कमरें में आ चुका था। हालाँकि, दरवाज़े में दाख़िल होने से पहले तक वह इसी कशमकश

"तुम्हें गर्मी तो नहीं लग रही? मेरे कमरे में का कूलर मेहमानों के कमरे में लगा है।" उसने मिस्बा से बात करने की शुरूआत करते हुए पूछा।

"नहीं, हमें गर्मी नहीं लग रही।" थोड़ी घबराई-सी, लेकिन उम्मदों से भरी एक मीठी आवाज़ जावेद के कानों में घुल गई।जावेद के होठों पर फिर मुस्कान तैर गई।

"तुम्हारी आवाज़ बहुत मखमली है।" उसने मिस्बा से कहा।

"शुक्रिया!" मिस्बा पलकें उठाकर मुस्कुरा दी।

"जानती हो, जब तुम्हें देखने आया था, तब केवल तुम्हारी आवाज़ सुनकर 'हाँ' कह दी थी।" जावेद शेरवानी के तीन बटन खोल चुका था।

"अच्छा!" मिस्बा गर्दन उठाकर जावेद को ठीक से देखना चाह रही थी, लेकिन उठा न सकी। वह शर्मा रही थी।

"मैं बहुत घबराया हुआ था। सोचा नहीं था, कि कोई मुझे अपना जीवन साथी बनाने के लिए हाँ कह देगा।" जावेद ने एक पल रुकते हुए पूछा, "तुमने मेरे लिए हाँ क्यों कहा था?"

"पता नहीं।" मिस्बा अपनी मधुर और मीठी आवाज़ में बोली।

"पता नहीं!" जावेद सोचने लगा। फिर एक क्षण रुककर उसने कहा, "समझा! मतलब मैं तुम्हें पसंद नहीं था।"

"नहीं ऐसा नहीं है, हमें आप पसंद थे! अब भी हैं..." मिस्बा ने झट से बोलते हुए खुद को संयत किया।

उसकी आवाज़ में हड़बड़ाहट जावेद को अच्छी लगी। वह मुस्कुरा दिया।"मतलब तुम जानती थी, कि मैं एक पैर से विकलांग हूँ।" उसने फिर से पूछा। वह अपने मन की सभी शंकाएँ निकाल देना चाहता था।

"नहीं। हमें पहले से नहीं मालूम था।" मिस्बा ने बताया।

"तुम्हें बाद में बताया गया होगा. हैं न?" जावेद के हाथ फिर रुक गए। उसे पंखें की खड़-खड़ आवाज़ कानों में चुभती-सी मालूम हो रही थी।

"हमें फोटो दिखाया गया था।"

"कौन-सा वाला फोटो?" जावेद ने याद करते हुए पूछा।

"जिसमें आप पूल खेल रहे हैं। उसे देखकर ही हमने हाँ कहा था। तब आप एक ही बार में पसंद आ गए थे। लेकिन...।" मिस्बा कहते हुए रुक गई।

"लेकिन क्या?" पूछते हुए जावेद फोटो के बारे में सोचने लगा। फिर मुस्कुराते हुए उसने कहा, "समझा। शायद तब तक तुम्हें अम्मी-अब्बा ने बताया नहीं होगा।"

"हाँ!"

"मेरे उस फोटो में पूल की टेबल पर कुछ गेंदे और मेरा शॉर्ट लगाना ही नज़र आ रहा है। अम्मी ने वही फोटो भेजा जिसके लिए मैंने मना किया था। वैसे मैंने सोचा था कि मेरा फोटो दिखाने से पहले तुम्हें मेरे अपंग होने की बात बताई जाएगी।"

"अल्लाह, हमें माफ करें। हमें यह बात कहनी नहीं चाहिए, लेकिन आपके एक पैर से विकलांग होने की बात हमें सबसे आख़िरी में बताई गई थी।"

"अच्छा!" जावेद को आश्चर्य हुआ।

"जी! हमें सबसे पहले आप की खूबियों के बारें में बताया गया था।"

"जैसे?" जावेद ने मुस्कुराते हुए पूछा, जबकि वह जानता था कि मिस्बा से क्या कहा गया होगा।

"जैसे आप किसी कंपनी में बड़े पद पर इंजीनियरहैं। अच्छा कमाते हैं। बहुत पढ़े-लिखे हैं, इतना कि हम तो उसका आधा भी नहीं पढ़े हैं। आपने शतरंज और कैरम जैसे खेलों में गोल्ड मेडल पाए हैं और नेशनल तक खेले हैं।" अब मिस्बा की झिझक दूर हो चुकी थी। उसने नज़रें उठाकर जावेद को देखा।

जावेद शेरवानी के सारे बटन खोल चुका था और पंखे को देख रहा था। पंखा बहुत कम हवा फेंक रहा था। मिस्बा भी पंखे को घूरने लगी।

"और?" जावेद ने मिस्बा के चुप होने पर पूछा। अब दोनों की नज़रें मिली।

"और क्या?" मिस्बा जावेद को देखती रह गई। उसने आगे कहा, "इतनी खूबियाँ सुनकर हमने आपका फोटो देखा। आप हमें हैंडसम लगे। हमें तुरंत हाँ कहने का मन हुआ लेकिन..." मिस्बा फिर रुक गई और उसने नज़रें झुका ली।

"लेकिन क्या?" जावेद ने हैरत से पूछा।

"लेकिन हम हाँ कहते, इससे पहले ही अम्मी-अब्बू हमारे दिल की बात जान गए, उन्होंने हमें आपके अब्बू के बारे में बताया। वे नहीं है, है न?"

"वो है भी और नहीं भी! वे घर छोड़कर चले गए थे।" जावेद मायूस होता हुआ बोला।

"क्यों?" मिस्बा को आश्चर्य हुआ।

"लम्बी कहानी है। तुम बाताओं, मेरे अब्बू के बारे में बताने के बाद तुम्हें क्या बताया गया?"

"आपके पैर के बारे में..." मिस्बा सोचने लगी कि जावेद को अपने सही मनोभाव बताए या नहीं।

पर जावेद ने उसे ज्यादा सोचने नहीं दिया और खुद ही बोल पड़ा, “सच जानकर तुम्हारी सारी खुशी का काफूर हो गई होगी।” जावेद ने शरवानी उतारकर एक ओर रख दी। उसने गर्दन घुमा कर मिस्बा की ओर देखा। मिस्बा उससे नज़रें मिलाने की कोशिश कर रही थी।उसकी आँखों में जावेद के लिए नरमी, प्यार और अपनेपन के भाव आ रहे थे।

“आपको कईयों ने इनकार किया है, है न?” मिस्बा ने पूछा।

“हाँ। लेकिन मैं हमेशा से उसके लिए तैयार रहता था।” जावेद ने लम्बी नि:श्वास छोड़ते हुए कहा, “अच्छा यह बताओ,जब तुम्हें पता चल गया कि मेरा एक पैर आधा ही है, तब तुम कैसे मान गई?” अब जावेद अपने दाहिने नकली पैर के बेल्ट खोलने लगा था।

“पता नहीं।” मिस्बा, जावेद का पैर देखने के लिए थोड़ी झुकी।

“पता नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है?” जावेद अपना नकली पैर हटाते हुए रुक गया।

“शायद हमारे दिल से आवाज़ आई, कि हमें आपके लिए हाँ कह देना चाहिए।” मिस्बा अपनी सिमटी झिझक को दूर करने की कोशिश करते हुए जावेद के करीब सरक गई। फिर बिस्तर से उतरकर अपने हाथों से जावेद के नकली पैर की बेल्ट खोलने लगी।

“मैं खुद कर लूँगा।” जावेद उसे मना करते हुए बोला। लेकिन मिस्बा जावेद का अपंग पैर देखना चाहती थी, ताकि उस नेक दिल और कई खूबियों वाले इंसान के और करीब आ सके जिसे दुनिया द्वारा अब तक नकारा जा रहा था। फिर वह जावेद को अपना मान चुकी थी।

जावेद का दिल उसके प्यार को महसूस कर आभार से भर गया। वह मिस्बा को प्रेमपूर्ण होकर देखने लगा। खूब सजी-धजी दुल्हन उसके नकली पैर के पेचीदे फीतों से दो-दो हाथ कर रही थी। जावेद उसे चाहकर भी नहीं रोक पाया। उसे मिस्बा का मासूम चेहरा और उसके चेहरे पर आई शिकन भा गई। वह एकटक उसे देख अल्लाह का शुक्रिया करने लगा।

जब नकली पैर के सारे बेल्ट खुल गए तब मिस्बा उसे जांघ से अलग करने हो हुई। उसी पल जावेद ने हाथ बढाकर मिस्बा को रोक लिया। यह कहते हुए, कि-

“मेरे ख्याल से तुम्हें इसे नहीं देखना चाहिए!”

इस पर मिस्बा ने उसकी आँखों में झाँका। उसने जावेद को यकीन दिला दिया कि वह उसके पैर को देखने के लिए तैयार थी। जिसके बारें में उसकी अपनी

कल्पनाएँ और ख्याल थे, जो उन बातों से उपजे थे, जिन्हें उसकी अम्मी और कुछ सम्बन्धियों ने उसके दिमाग में बैठाने की कोशिश की थी।

"पैर है तो सही, लेकिन कुछ अजीब-सा है!" मिस्बा को लोगों की बातें याद करने लगी, "नहीं-नहीं, पैर है ही नहीं। वो नकली पैर इस्तेमाल करता है।

"पर तब भी चल नहीं पाता। उसे एक बैसाखी लगती है।"

ऐसी और भी बातें थी।

मिस्बा ने उस नकली पैर को जावेद से अलग किया, वो पैर जिसके बगैर जावेद अपने वजूद की कल्पना भी नहीं कर सकता था और जिसे वह कई बार रातों को पहने हुए ही सो जाता था; वह नकली पैर जिसे वो अपने शरीर का अंग ही मानता था, पहली बार किसी और के द्वारा उतारा जा रहा था। उसे उतारते ही मिस्बा चौंककर पीछे हट गई।

"या अल्लाह!" उसके मुँह से निकल पड़ा।

जावेद की मोटी व मजबूत जांघ के नीचे एक छोटा और पतला-सा, अर्ध विकसित पैर लटक रहा था।बिना फूल और फलों वाली सूखी पेड़ की डाल की तरह। मिस्बा आँखें फाड़े उसको घूरती रही । उसके चेहरे के भावों को देख जावेद का दिल छोटा हुआ जा रहा था। कुछ पल बीतने के बाद, मिस्बा ने सामान्य होते हुए पंखे की खड़-खड़ आवाज़ के बीच पूछा,

"क्या आपको पोलियो था?"

जावेद इस सवाल को बचपन से सुनता आया था। उसने मिस्बा को भी वही जवाब दिया जो वह अब तक देता आया था।

"यह पोलिया की वजह से नहीं है।"

"फिर?" अब मिस्बा हैरत से जावेद को देखते हुए उठी। उसने नकली पैर को पलंग के नीचे सरका दिया और फिर जावेद के पास बैठ गई थी।

"यह एक लाइलाज जेनेटिक डिसऑर्डर है, मिस्बा। ऐसी बीमारी जिसने हमारे खानदान को पीढ़ियों से अपने मुँह में दबाए रखा हैं। जो न तो ख़त्म होती है और न ही इसका इलाज होता है। मुझे डर है कि यह हमारे बच्चों को भी होगा।" जावेद अपने पैर को घूरने लगा। फिर उसने पायजामा नीचे कर लिया। उसे पल उसे अपने कहे पर सोच हुआ।

"तौबा-तौबा! अल्लाह के लिए ऐसी बात न करें जावेद!" मिस्बा घबरा गई।

"माफ़ी चाहता हूँ! पर यह बीमारी पीढ़ियों से है!" जावेद ने बताया।

“पीढ़ियों से... मतलब?” मिस्बा की हैरानी बढ़ गई। जेनेटिक बीमारी उसकी समझ में नहीं आई।

“यह डिसऑर्डर मेरे अब्बा जान को भी था और न केवल उन्हें बल्कि मेरे दादा, मेरे परदादा और शायद उनके परदादा को भी था।”

“क्या सभी के पैर आपके पैर जैसे थे?” मिस्बा बेहद घबरा गई थी। उसे यकीन करना मुश्किल हो रहा था।

“पता नहीं! बचपन में अम्मी ने बताया था कि मेरे दादा के दोनों पैर नहीं थे। तब वो दिल्ली वाले पुश्तैनी घर में दुल्हन बनकर आई थी।”

“अच्छा!”

“अब्बा भी पैरों से लाचार थे। मेरे पैदा होने के कुछ समय बाद घर छोड़कर चले गए थे। मुझे देख उन्हें तरस आता था। वे बर्दाश्त नहीं कर सके। वे चाहते भी नहीं थे कि अम्मी औलाद के लिए ज़िद करें। शायद इसी वजह से दोनों में अनबन हुई होगी।”

“शायद?” मिस्बा ने अंदाज़ा लगाते हुए पूछा।

“मैंने अम्मी से कभी पूछा नहीं। पर उनके हाव-भाव से समझ गया था।”

“हम कई बच्चों की अम्मी बनना चाहती है!” मिस्बा के मन वे हिदायतें चक्कर लगा रही थी जिन्हें याद करते हुए उसका सब्र कम हो रहा था। वो सोच रही थी कि कब जावेद उसे अपनी ओर खींचकर उसके होंठों पर अपने होंठ रखेगा। भले ही उसका पैर कमजोर था, लेकिन तब भी वह बड़ा ही आकर्षक नौजवान था।

जावेद के दादा और अब्बा की बातें सुनते हुए मिस्बा उसके पास बैठ गई और धीरे-धीरे सरकते हुए उसने कब जावेद के कंधों पर सिर रख दिया, उसे होश ही न रहा। उसे जावेद एक सुलझा हुए इंसान लगा। जावेद को भी मिस्बा एक समझदार लड़की लगी। कुछ ही देर में दोनों के बीच की दूरियाँ बिलकुल कम हो गई। इतनी कि अपनी झिझक को दूर करते हुए दोनों ने होंठों को सटा लिया।

कुछ देर बाद, जावेद ने कमरे की बत्तियाँ बुझा दी। कमरे में अँधेरा होते ही जावेद को दरवाज़े के बाहर से उसकी दूर की बहनों के हँसने की आवाज़ें आई। उसने मुस्कुराते हुए मिस्बा से कहा, “पता नहीं, इन्हें आज क्या हो गया है!” फिर उसने मिस्बा को अपने आगोश में ले लिया।

Œ Œ Œ

जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा उसका दोस्त 'इरफ़ान' उसके गालों पर जोर से थपकियाँ देकर उसे उठाने की कोशिश करता हुआ, जोर-जोर से चिल्ला रहा था,"होश में आओ! होश में आओ, जावेद मियाँ!"

"क्या हुआ?" जावेद ने आँखें खोलते हुए पूछा। वह किसी पार्क में जमीन पर पड़ा हुए था। उसके दाहिने कंधे में जोर का दर्द उठ रहा था। कंधे से खून की धारा निकलकर उसकी उजली कमीज़ को भीगा रहा था। इरफ़ान और एक अन्य व्यक्ति उसे उठा रहे थे।

"हम तुम्हें अस्पताल ले जा रहे हैं।" इरफ़ान घबराते हुए उसे बताया और तीन की गिनती के साथ ही उसने जावेद को अपने कंधे पर उठा लिया। दूसरा व्यक्ति जिसने सफ़ेद टोपी पहनन रखी थी, जावेद की बैसाखी को थामकर उससे इरफ़ान के लिए रास्ता बना रहा था ।

जावेद ने बेहोशी की हालत में देखा पार्क में बहुत से लोगों की भीड़ थी।

"मुझे क्या हुआ है, इरफ़ान?" जावेद ने कराहते हुए पूछा।

"अरे! मियाँ गोली लगी है, तुमको।" इरफ़ान तेज़ साँसें लेते हुए बोला। जावेद का शरीर भारी था।

"नाथूराम गोडसे ने महात्मा गाँधी को गोली मार दी है। एक गोली तुम्हें भी लगी। तुम होश मत खो देना। अगर निपट गए तो भाभीजान को क्या मुँह दिखाऊँगा। साला ये समय यात्रा भारी पड़ने वाली है।" बड़बड़ाते हुए इरफ़ान ने अंतिम वाक्य कहा।

€ ¥ Ω £ §

-भविष्य में जाने के लिए प्रकाश की गति से यात्रा करनी होगी।

(2)

पर्ची नष्ट कर देना

31 जनवरी 1948, दिल्ली का एक अस्पताल।

बड़े से हॉल में दर्जनों बिस्तर लगे हुए थे। जिनमें से ज्यादातर पर मरीज लेटे थे।मरीजों की तिमारदारी के लिए वहाँ दो डॉक्टर, कुछ नर्सें, वार्डबाय और तीन सफाई कर्मचारी थे, लेकिन सभी बड़े बेमन से काम कर रहे थे। उनके चेहरों पर मायूसी और मातम के भाव थे। यह भाव होते भी क्यों नहीं?

आख़िर देश के बापू 'मोहन दास करम चाँद गांधी' उर्फ़ 'महात्मा गाँधी' नहीं रहे थे।

वह दिन ही कुछ ऐसा था। नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी थी। जिससे पूरा देश सकते में आ गया था। विभाजन से पूर्व और उसके बाद हिन्दू-मुस्लिम दंगों को रोकने व देश में अमन, चैन, एकता, भाईचारा तथा शान्ति कायम करने लिए बापू जी जान से जुटे थे। हालांकि कुछ संगठन और लाखों हिन्दू-मुस्लिम नहीं चाहते थे कि वो बूढ़ा फिर कोई और बवाल करें। फ़रवरी के प्रथम सप्ताह में महात्मा गांधी पाकिस्तान की यात्रा पर जाने की योजना बना रहे थे। वो भी पैदल। ठीक दांडी यात्रा की तरह। लेकिन नियति ने कुछ और ही तय कर रखा था।

दो सिविल इंजीनियर दोस्त 'जावेद और इरफ़ान' किसी को ढूँढ रहे थे और समय यात्रा करते हुए २०११ से १९४८ में आ पहुँचे थे। वे अस्पताल में थे जहाँ भर्ती मरीजों के साथ, नर्सों, डॉक्टरों, वार्डबॉय आदि की आँखों में बार-बार आँसू आ रहे थे। सभी महात्मा गाँधी के जाने से दुःख का अनुभव कर रहे थे।

सभी की जुबान पर एक ही बात थी, 'उसने बापू को क्यों मारा? उसे बापू की हत्या नहीं करना चाहिए थी।'

कुछ मरीज़ बार-बार डॉक्टर या नर्स से कह रहे थे, 'भगवान! मेरे शरीर में थोड़ी ताकत भर दे तो मैं बापू के अंतिम दर्शन करने जाऊँ।' फिर कुछ ऐसे भी थे, जो पूछ रहे थे, 'क्या मुझे छुट्टी मिल सकती है? मैं बापू को कंधा देना चाहता हूँ!' एक-दो विरोध के स्वर भी वहाँ गूँज रहे थे, 'देश के विभाजन का फल मिला है गाँधी को! अच्छा हुआ मर गया।'

हॉल से लगे एक निजी वार्ड में इरफ़ान लकड़ी के स्टूल पर बैठा बाहर मरीजों और डॉक्टरों की बातें सुन रहा था। जावेद उसके सामने बिस्तर पर लेटा था। उसके सिरहाने दायीं ओर छोटी-सी टेबल पर सेब, पानी का लोटा व दवा की दो-

तीन पुड़िया रखी थी। डॉक्टर ने उसके कंधे से गोली निकाल दी थी और दो दिन अस्पताल में ही आराम करने को कहा था। साथ ही ये भी बताया था कि पार्क में हुई घटना की पूछताछ करने कोई अधिकारी आएगा।

"लगता है, बाहर कल के बारे में बातें हो रही है?" जावेद ने अपने कंधे पर बंधी पट्टी को देखते हुए इरफ़ान से पूछा। उसकी नज़र अपनी बैसाखी पर भी गई जो उसके सामने एक कोने में दीवार से तिरछी लगी हुई थी।

"हाँ, शहर भर में महात्मा गांधी के बारे में बातें हो रही है।" इरफ़ान से दरवाज़े की आड़ में से बाहर देखते हुए कहा। दरवाज़ा हल्का-सा खुला हुआ था।

"अच्छा! क्या तुमने उन्हें देखा था?" अब जावेद इरफ़ान से कुछ ज़रूरी बात करना चाहता था। वह तकिए का सहारा लेकर बैठने की कोशिश करने लगा।

"तुम लेटे रहो जावेद मियाँ! डॉक्टर तुम्हें आराम करने को बोल गया है।" इरफ़ान स्टूल से उठते हुए जावेद को सहारा देने के लिए पास गया।

"नहीं, मैं बैठना चाहता हूँ।" जावेद नहीं माना और पीठ तकिए से लगाकर बैठने लगा। इस दौरान वह एक बार कंधे के दर्द से कराहा।

"तुम मानते नहीं हो यार! लाओ, अपना हाथ दो!" इरफ़ान ने जावेद को सहारा देकर बिठाया। फिर इरफ़ान वापस स्टूल पर बैठता कि जावेद ने अपना सवाल दोहराया।

"क्या तुमने उन्हें देखा था?"

"हाँ, इन्हीं आँखों से देखा था। साक्षात मेरे सामने थे।" इरफ़ान अपने एक हाथ को आँख से छूआते हुए स्टूल पर बैठ गया और कहने लगा, "शायद तुमने भी उन्हें देखा था। क्या तुम्हें याद नहीं?"

"हलकी-सी झलक देखी थी। महात्मा गाँधी आभा और मनु के..." जावेद आगे कहता इससे पहले ही इरफ़ान से उसे टोकते हुए कहा,

"महात्मा गाँधी मत बोलो मियाँ! हम 1948 में है। यहाँ सभी महात्मा गाँधी को बापू कहते हैं। मत भूलो वे हमारे राष्ट्रपिता है। 21वीं सदी की बातें यहाँ करने से बवाल हो जाएगा। पहले ही हिन्दू-मुस्लिमों के दंगे शाँत नहीं हुए है। कभी भी कुछ भी घट सकता है। नई मुसीबत हमारे लिए ठीक नहीं होगी।"

"मैं याद रखूँगा!" जावेद ने सहमती में सिर हिलाया। फिर अपनी बात जारी

रखते हुए बोला, "तो बापू आभा और मनु के कंधों का सहारा लेकर शाम की प्रार्थना के लिए जा रहे थे। मैं बिड़ला पार्क के दरवाजे पर बाहर खड़ा ये दृश्य देख रहा था। तुम मेरे दादा को ढूँढने पार्क के अन्दर गए थे। तभी तुमने मुझे अन्दर आने इशारा किया था।"

'हाँ, क्योंकि मैंने तुम्हारे दादा को वहाँ देख लिया था, इसलिए तुम्हें इशारा किया था।"

"मैं अन्दर आता कि तभी बन्दूक चलने की आवाज़ आई। मैं कुछ समझता कि दो बार और आवाज़ हुई।"

"उस वक़्त नाथूराम बापू पर गोलियाँ दाग रहा था। मैंने उसे देखा था।वह पार्क के रास्ते में बापू का इंतज़ार कर रहा था। उसके पीछे दो और लोग थे। वे मुझे बड़ी अजीब नज़रों से देख रहे थे। मुझे उन पर शक हुआ था। लेकिन हम वहाँ तुम्हारे अब्बा के अब्बा को तलाशने गए थे। मैंने उन संदिग्ध लोगों पर ध्यान नहीं दिया। जब बापू वहाँ से गुजरे तो गोडसे उनके नजदीक आते हुए बोला, "नमस्ते बापू!"

इस पर आभा उसे दूर करते हुए बोली, "कृपया दूर हट जाओ! बापू को प्रार्थना के लिए देर हो रही है।"

आभा ने गोडसे को दूर रखने के लिए हाथ बढ़ाया था, कि गोडसे ने उसे धक्का देते हुए बापू पर गोली चला दी। एक के बाद एक, तीन गोली। फिर वहाँ भगदड़ मच गई। बापू के हत्यारे को तुरंत पकड़ लिया गया। भगदड़ में तुम्हारे दादा कहाँ चले गये पता ही नहीं चला।"

"वे पार्क में ही थे। अपने अपंग पैरों के साथ। हाथ से चलने वाली लकड़ी की गाड़ी पर बैठे हुए।" जावेद कहने लगा, "मैं गोलियों की आवाज़ सुनकर पार्क के अंदर आ रहा था। जब गेट पर पहुँचा था तो देखा एक व्यक्ति भागता हुआ सामने से आ रहा था। वो मुझ से टकरा गया। उसी समय मुझे कंधे पर गोली लगी थी और मैं किसी चीज से टकरा कर नीचे गिर पड़ा था। उसी वक़्त मैंने देखा था कि गोली मेरे दादा ने चलायीं थी। उनके एक हाथ में पिस्टल थी और दूसरे हाथ से वे अपनी गाड़ी धकेलते हुए बाहर निकल रहे थे। शायद वे उस आदमी का पीछा कर रहे थे जिससे मैं टकराया था। मैं उठता, लेकिन फिर मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया।आँखें खुलने पर मैंने तुम्हें देखा। पर इस बीच मुझे ऐसा लगा, जैसे मैं मिस्बा के साथ था। शादी की सुहागरात वाला दिन किसी सपने की तरह मेरे दिमाग में

चल रहा था।"

"ये सब उस पत्रकार सहस्त्रबाहु और तुम्हारे समय यात्रा वाले विचार पर हामी भरने के साइड इफ़ेक्ट है। मुझे भी बड़े भयानक सपने आ रहे है। रात को देखा हम किसी शमशान में खड़े थे। दर्जनों चिताएँ सामने जल रही थी। कहीं दूर से विधवाओं के चीत्कार की आवाज़ें आ रही थी।" इरफ़ान अपना अनुभव बताने लगा, "जाने क्या-क्या देखना होगा अब।" उसने झल्लाते हुए कहा।

"गुस्सा मत हो यार। इसी बहाने पता तो चला की सहस्त्रबाहु और डॉ० रामावल्ली झूठ नहीं बोल रहे थे।" जावेद ने ये कहा ही था कि बाहर किसी के आने की आहट हुई।

दोनों सचेत हो गए। इरफ़ान उससे अपने मन की बात कहते-कहते रूक गया। कुछ ही क्षणों में वार्ड में गाँधी टोपी लगाए एक व्यक्ति का आना हुआ। यह व्यक्ति वहीं था जिसने इरफ़ान की मदद कर जावेद को अस्पताल पहुँचाया था। उसने सफेद कुर्ता पजामा पहन रखा था। वह एक दुबला-पतला व्यक्ति था।अपनी टोपी से वह महात्मा गाँधी का अनुयायी लग रहा था। जब वह वार्ड में दाखिल हुआ तो उसके पीछे एक और व्यक्ति दृष्टिगोचर हुआ। उसने लॉन्ग कोट और पेंट हुआ था तथा सिर पर अंग्रेजी हैट लगाई हुई थी। जावेद ने उसे गौर से देखा।

"नमस्कार! अब कैसी तबीयत है जनाब की?" गाँधीवादी व्यक्ति ने हाथ जोड़ते हुए इरफ़ान से पूछा और फिर जावेद को देखने लगा।

"नमस्कार श्रीमानजी!" इरफ़ान ने स्टूल से खड़े होकर व्यक्ति का अभिवादन किया, "अच्छा हुआ आप आ गए। मैं आप ही के बारे में सोच रहा था। कल आप जल्दी चले गए, मैं आपको शुक्रिया तक न कह पाया।"

"शुक्रिया की ज़रूरत नही है। वैसे भी यह समय शुक्रिया कहने का नहीं है, मित्र। देश गहरे सदमे में है। बापू की हत्या हो जाएगी यह किसी ने सोचा नहीं था।" गाँधीवादी उदास होते हुए बोला।

"हाँ, यह तो बिल्कुल भी अच्छा नहीं हुआ। गोडसे को बापू को नहीं मारना

चाहिए था।" इरफ़ान अफसोस जाहिर करते हुए कहने लगा।

"आप गोडसे को जानते है?" गाँधीवादी संदेह की दृष्टि से अपने साथी की ओर देखने लगा। वह भी इरफ़ान की बात से चौकन्ना हो गया और दोनों समय यात्रियों के चेहरे के भाव पढ़ने लगा।

"निजी तौर पर नहीं। लेकिन हाँ, कुछ लोगों को वहाँ कहते सुना। शायद वे नाथूराम को पहचानते थे।" अब इरफ़ान समझने की कोशिश करने लगा कि आख़िर दूसरा शख्स वहाँ क्यों आया था और जावेद उसे इतनी गौर से क्यों देख रहा था।इरफ़ान ने बात जारी रखते हुए पूछा, "क्या उसे फाँसी दी जाएगी?"

"शायद हाँ, लेकिन पहले अदालत में मुकदमा चलेगा। अच्छा! इनसे मिलो।" गाँधीवादी ने अपने साथ आए व्यक्ति का परिचय करवाते हुए कहा, "ये है राकेश सिंह। सरकारी मुलाजिम है। आप दोनों से कुछ सवाल-जवाब करेंगे, कल जो कुछ भी घटा उस बारे में।"

"लेकिन हमसे सवाल-जवाब क्यों? हमने तो कुछ किया ही नहीं।" इरफ़ान घबराते हुए जावेद को देखने लगा।

"डरे नहीं!" गाँधीवादी दोनों दोस्तों को आश्वस्त करते हुए बोला, "बिड़ला पार्क में जो भी व्यक्ति था, उससे पूछताछ की जा रही है। इन्होनें मुझसे पूछताछ की। मैंने आपका जिक्र किया तो इन्होंने आपसे मिलने की मंशा जाहिर की। फिर तुम्हारे साथी को गोली लगी है। राकेश सिंह का मिलना ज़रूरी था। अभी इन्हें जाँच-पड़ताल की जिम्मेदारी सौपी गई है। शायद बापू की हत्या के कारणों की पड़ताल आगे भी ये ही करें।"

"ठीक है, पूछिए क्या सवाल पूछना चाहते है?" इरफ़ान ने जावेद को देखते हुए कहा।

"एक मिनट! सिंह साब क्या मुझे जाने की अनुमति है? मेरे लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे है।" गांधीवादी ने राकेश सिंह से जाने की इजाजत माँगी।

"जी ज़रुर!" राकेश सिंह दरवाजें से एक ओर हट गया। उसने गाँधीवादी को बाहर जाने का रास्ता दिया।

गाँधीवादी जावेद को जल्दी ठीक होने और डॉक्टर द्वारा अच्छे से इलाज करने की बात कहते हुए हाथ जोड़कर चला गया। जाते हुए उसने गौर से राकेश सिंह को देखा। जावेद शक की निगाहों से दोनों को देख रहा था।

“क्या मैं शुरु करूँ?” राकेश सिंह ने कोट की जेब से नोटबुक और पेन्सिल निकालते हुए पूछा।

“आप बैठ जाइए!” इरफ़ान ने उसे स्टूल पर बैठने का आग्रह किया। जिसे राकेश सिंह ने नम्रता से अस्वीकार कर दिया।

“आप दोनों के नाम क्या है?” उसनेअपनी पेन्सिल नोटबुक पर लगा दी।

“मेरा नाम इरफ़ान खान है और ये मेरा बचपन का दोस्त और यार है। नाम है जावेद उमर शेख!” इरफ़ान ने कहा।

“दिल्ली में कहाँ रहते हैं?” सरकारी मुलाजिम ने अपना अगला सवाल पूछा।

“हम दिल्ली से नहीं है। हम भोपाल से आए है।”

“ये तो मध्यप्रदेश में है।” राकेश सिंह ने बिना सोचे कहा।

“जी!” इरफ़ान ने हामी भरी।

“दिल्ली में क्या कर रहे थे?”

इस प्रश्न पर इरफ़ान ने जावेद की ओर देखा। जावेद ने प्रश्न का उत्तर दिया।

“हम मेरे दादा को ढूँढनें आए थे। वे किसी बात पर नाराज होकर घर से चले गए थे।”

“आपके दादा का नाम क्या है?” राकेश सिंह ने जावेद की ओर देखते हुए पूछा।

“अब्दुल रहमान रजा शेख।”

“वो क्या करते हैं?” राकेश सिंह एक-एक बात नोटबुक में लिखने लगा।

“बुनकर हैं।”

“किसी से कोई दुश्मनी है आपकी?”

“नहीं!”

“जिसने आप पर गोली चलाई उसे जानते थे?”

“नहीं!” जावेद ने दृढ़ता से कहा।

“उसे कहीं देखा था पहले?”

“नहीं!”

“पार्क में जो हुआ उसके अलावा कुछ और अजीब देखा था?” राकेश सिंह के प्रश्न रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

“जनाब! अजीब तो वहाँ एक ही बात हुई थी, और वो थी बापू की हत्या।” इरफ़ान ने बीच में पड़ते हुए कहा।

“इसके अलावा कुछ और देखा था?” राकेश सिंह संदेह से दोनों को देखने लगा।

“और से क्या मतलब है, आपका?” इरफ़ान ने पूछा।

“मतलब गोडसे के अलावा कोई संदिग्ध व्यक्ति नज़र आया था?”

“ठीक से कह नहीं सकते!” इस प्रश्न का उत्तर जावेद ने दिया।

“अदालत में बयान देना पड़े तो आ सकोगे?”

“हम बहुत दूर से आए है, श्रीमान जी। फिर हमें किसी को ढूँढना है। मेरे ख्याल से ये थोड़ा मुश्किल होगा।” इरफ़ान ने सोचते हुए जावेद को देखा।

“ठीक है! बिना सूचना दिए अस्पताल से जाओगे नहीं। लेकिन अदालत में बुलाय जाने पर आना होगा।” फिर राकेश सिंह ने नोटबुक और पेन्सिल इरफ़ान की ओर बढ़ाते हुए कहा, “इस पर अपना पता लिख दीजिए और दिल्ली में कहाँ रुके हैं, वहाँ का पता भी लिख दीजिए।”

इरफ़ान ने पेन और नोटबुक लेकर पता लिख दिया।

“ठीक है, मैं चलता हूँ। आवश्यकता हुई तो फिर आऊँगा।” राकेश सिंह ने नोटबुक और पेन ले लिया। उसने पता देखा और नोटबुक कोट की जेब में रख ली। फिर वह अपनी हैट ऊँची करते हुए वार्ड से बाहर चला गया।

उसके बाहर जाते ही जावेद ने इरफ़ान से कहा, “इस आदमी की शक्ल को देख ऐसा लगता है जैसे कल यही मुझसे टकराया था।”

“क्या कह रहे हो जावेद मियाँ!” इरफ़ान आश्चर्य करते हुए दरवाजे से बाहर देखने लगा। उसे राकेश सिंह, गाँधीवादी के साथ बात करता नज़र आया।

“ये तो बाहर ही खड़ा है!” इरफ़ान बड़बड़ाया।

“कौन?” जावेद ने पूछा।

“वही जिसने हमारी मदद की थी।”

“वो गांधीवादी!” जावेद ने पूछा।

“हाँ वहीं।” इरफ़ान उन्हें देख रहा था कि तभी हॉल में गोलियाँ चलने की आवाज़ें हुई। गाँधीवादी और राकेश सिंह इरफ़ान के देखते ही देखते फर्श पर चित हो गए। मरीजों, नर्सों और डॉक्टरों में हडकंप मज गया। चीखने और चिल्लाने की आवाजों से अस्पताल गूँज उठा। इरफ़ान ने घबराकर दरवाज़ा लगा लिया।

“बाहर कैसी आवाजें आ रही है इरफ़ान? वहाँ क्या हो रहा है?” जावेद ने घबरा कर इरफ़ान से पूछा।

“तुम्हारे दादा ने दोनों को गोली मार दी है और वो यहीं आ रहे है।” इरफ़ान बुरी तरह घबरा गया।

“क्या?” जावेद चौंकते हुए बिस्तर से उठ बैठा। वह अपने कंधे का दर्द भूल गया। इससे पहले इरफ़ान दरवाजें की दूसरी कुण्डी लगाकर सुरक्षित होता कि एक कागज़ का टुकड़ा दरवाज़े के नीचे से भीतर आ गया। फिर गोली चलने की दो आवाज़ें और हुई और सब शाँत हो गया। इरफ़ान ने धीरे से दरवाज़ा खोलकर बाहर देखा। डॉक्टर और नर्स दो लाशों पर झुके हुए थे। कुछ मरीज़ उन्हें घेरकर खड़े थे।

जावेद ने कागज़ उठाकर पढ़ा।

तुम दोनों की जान को खतरा है। जितनी जल्दी हो सके यहाँ से निकल जाओ और मुझे हुमायूं के मकबरे पर मिलना। और हाँ, पर्ची पढ़कर नष्ट कर देना।

“क्या लिखा है?” इरफ़ान हैरानी से जावेद को देख रहा था। जावेद के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थी। उसने पर्ची इरफ़ान के हाथ में थमा दी और जल्दी से अपनी कमीज पहनने लगा।

€¥Ω£§

-समय एक छलावा है, लेकिन समय यात्रा संभव है।

(3)
कौन हो तुम?

31 जनवरी 1948 की शाम। हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली।

दिन ढलने लगा था। राज घाट पर लाखों लोग, या यूँ कहूँ सारा देश महात्मा गाँधी को अंतिम विदाई दे रहा था, जावेद और इरफ़ान, एक शख्स के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। वह शख्स जावेद के दादा अब्दुल रहमान रजा शेख थे। रजा,जावेद के परदादा का नाम था।

उस समय वहाँ उन दोनों के अलावा एक परिंदा भी नहीं था। जावेद और इरफ़ान के चेहरे पर बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

"तुम्हारे दद्दा आएगे कि भी नहीं?" इरफ़ान अपनी घबराहट को दूर करने के लिए मकबरे को घूरते हुए टहल रहा था।

"आएगे इरफ़ान!" जावेद वहीं बैठा कुछ सोच रहा था।

"बड़े खतरनाक इंसान मालूम होते है। लगता है, वे जानते थे कि हम उन्हें ढूँढ रहे है।" इरफ़ान मकबरे की वास्तुकला को परखने लगा।

"हम दो बार उनके बारे में पूछताछ कर चुके थे।" जावेद सड़क की ओर देखने लगा।

"हमनें अस्पताल से भागकर ठीक नहीं किया। अब सिपाही हमारे पीछे होंगे।"

"हाँ, और इसलिए हमें जल्द से जल्द इस समय से निकलना होगा। अच्छा इरफ़ान! एक बात बताओ, क्या हम महात्मा गाँधी की हत्या रोक सकते थे?" जावेद बिड़ला पार्क में हुई घटना के बारे में सोच रहा था।

"तुम्हें बापू की पड़ी है। सोचो, अगर जो गोली तुम्हारे कंधे के बजाय दिल या माथे पर लगी होती तो क्या होता? तुम्हारे दद्दा ने तुम्हें मार दिया होता।"

"वो गोली मुझ पर नहीं, उस शख्स पर चला रहे थे, राकेश सिंह पर। शायद वो जासूस था। अम्मी बताती थी कि मेरे अब्बा कहते थे कि उनके अब्बा जासूस थे।"

"क्या तुम जानते हो इस मकबरे में किन-किन महान लोगों की कब्र है?" इरफ़ान मकबरे की वास्तुकला में खो गया था। उसे जावेद के अब्बा के अब्बा की कम ही पड़ी थी।

"शायद हुमायूँ की?" जावेद बेपरवाह होकर बोला।

"न केवल हुमायूँ की, बल्कि उसकी बेगम हमीदा बानो, शाहजहाँ के बड़े बेटे दारा शिकोह और कई मुग़ल सम्राटों की कब्र भी यहाँ है।" इरफ़ान गर्व करते हुए बताने लगा।

"मेरा इतिहास का ज्ञान कच्चा है, तुम जानते हो।"

"हाँ, मैं जानता हूँ!" अब इरफ़ान आस-पास देखने लगा। अब्दुल रहमान अभी तक नहीं आया था, "क्या हमें सतर्क रहना चाहिए? अगर उन्होंने हमें भी गोली मार दी तो?" इरफ़ान ने पूछा।

"अगर उन्हें हमें मारना होता तो अस्पताल में ही मार देते।" जावेद अपने नकली पैर को ठीक करने लगा, "क्या ये नकली पैर यहीं छोड़ दूँ?" जावेद ने पूछा।

"क्यों?" इरफ़ान जावेद को देखने लगा।

"हमें समय में और पीछे जाना पड़ा तो? मैंने घड़ी में पाँच साल पहले का समय सेट किया है।" जावेद ने जेब से एक कलाई घड़ी निकालकर पहन ली। वह घड़ी आम घड़ियों-सी दिखती थी, लेकिन फिर भी कुछ मायनों में वो अलग थी। उसका डायल अपेक्षाकृत बड़ा था। उसमें कई बटन थे, कुछ उसके बेल्ट पर और घंटे, मिनट व सेकेंड को बताने वाली सुईयों की जगह घड़ी की ऊर्जा, गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र और विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र बताने वाले तीन पटल (स्क्रीन) थे।

"मेरे खयाल से तुम्हें इसे ऐसे ही रहने देना चाहिए। तुम्हारे पायजामे के नीचे ये नकली पैर दिखता नहीं है। फिर भी अगर तुम चाहते हो तो बैसाखी के बजाए एक मजबूत लकड़ी काम में लेना ठीक होगा। लकड़ी भूतकाल के किसी भी व्यक्ति के लिए अचम्भे का कारण नहीं बनेगी।" इरफ़ान इधर-उधर की कब्रें देखने लगा।

"सही कह रहे हो।" जावेद ने सहमती दी।

"वैसे, ये तो पक्का हो गया है कि तुम्हारे दद्दा विकलांग थे। हम चाहे तो उनसे मिले बगैर भी अतीत में जा सकते है।" इरफ़ान ने सुझाव दिया।

"फिर हमें मेरे परदादा 'रजा शेख' का असली पता नहीं मिलेगा इरफ़ान।"

"क्यों?" इरफ़ान ने पूछा।

"क्योंकि वे घर छोड़कर चले गए थे।" जावेद ने बताया।

"क्या?" इरफ़ान हैरान हुआ, "तुम्हारे खानदान को घर छोड़कर जाने की अजीब बीमारी है क्या? तुम्हारे अब्बा भी घर छोड़कर चले गए थे। उनके अब्बा के अब्बा भी उस रास्ते पर थे। इस हिसाब से देखें तो तुम्हारी होने वाली औलाद

होने पर तुम घर छोड़कर जाने वाले हो।” इरफ़ान हिसाब लगाते हुए बोला।

“इरफ़ान! तुम जानते हो मैं ऐसा नहीं करूँगा।” जावेद नाराज होकर बोला।

“हाँ, नहीं करोगे। लेकिन क्या पता भाग भी जाओ। आखिर तुम नहीं चाहते थे न कि तुम्हारी औलाद पैदा हो।”

“मिस्बा मुझसे बहुत प्यार करती है, इरफ़ान! मैं उसे छोड़कर कहीं नहीं जाने वाला।” जावेद ने संजीदा होकर कहा।

“ठीक है। फिर तुम्हारे खानदान के इतिहास को देखकर मैं यही कहूँगा कि तुम्हारी औलाद ज़रूर घर से भागेगी।”

“अल्लाह के लिए कुछ अच्छा बोलो।”

“माफ़ करना यार! मेरा वो मतलब नहीं था। अल्लाह करें,तुम्हारी औलाद स्वस्थ्य हो और जिंदगी भर तुम्हारे साथ रहे। लेकिन फिर भी मुझे तुम पर भरोसा नहीं।” इरफ़ान फिर से मकबरे को देखने लगा। एक क्षण बाद वो बोला, “ये कलाकृतियाँ कहीं और भी देखी थी। कहाँ? याद नहीं आ रहा।”

इरफ़ान बड़बड़ा रहा था कि तभी उनके कानों में घर्र-घर्र की आवाज़ कहीं दूर से आती मालूम पड़ी जो धीरे-धीरे बढ़ रही थी। दोनों ने दायीं ओर देखा। अब्दुल रहमान रजा शेख, जावेद के दादा, दोनों हाथों से लकड़ी की गाड़ी को धकियाते हुए बढ़े चले आ रहे थे। जावेद उन्हें देख संजीदा और भावुक हो गया। अब्दुल रहमान की शक्ल उसके पिता से बहुत मिलती थी। वह अपनी बैसाखी संभालते हुए खड़ा हो गया।

“अस्स्लावलेकुम!” इरफ़ान और जावेद ने झुककर अब्दुल रहमान का सजदा किया।

“वलेकुमअस्सलाम!” अब्दुल रहमान ने प्रयुत्तर में कहा।

दोनों दोस्त उसे घूरने लगे। मानों अंदाज़ा लगा रहे थे कि अब्दुल रजा शेख क्या सोच रहा था।

“क्या देख रहे हो बर्खुरदार? तुम्हारा कन्धा तो ठीक है ना? माफ़ करना मेरा इरादा तुम पर गोली चलाने का नहीं था।” अब्दुल रहमान ने जावेद से कहा।

“मैं जानता हूँ। वैसे आपको देखकर अपने वालिद की याद आ गई थी। आपकी शक्ल उनसे कुछ-कुछ मिलती है।” जावेद के कहने पर अब्दुल रहमान तिरस्कारपूर्ण हँसी हँसा।

“जिस शक्ल को देखकर लोग मुँह फेर लेते है, उसमें तुम्हें अपने वालिद नज़र आते है। चलों अच्छा है, एक और नेक इंसान से अल्लाहताला ने मेरी मुलाक़ात करवाई। शायद तुम भी मेरी तरह अपंग हो, इसलिए मुझसे तुम्हें हमदर्दी हो रही है।”

“नहीं, ऐसा नहीं है।” जावेद ने इन्कार किया।

“ऐसा ही है, नौजवान। जैसे एक गंजेड़ी दूसरे गंजेड़ी को देखकर खुश होता है, वैसे ही एक विकलांग दूसरे विकलांग को देखकर असर में आता है। मैं अजनबियों से ज़रा दूर रहता हूँ, लेकिन तुम दोनों से मिलने आना पड़ा। मेरे साथ तुम पर भी खतरा बढ़ गया है।”

“कैसा खतरा?” जावेद और इरफ़ान के माथे पर शिकन आ गई।

“मौजूदा हालत देख रहे हो न? बापू की हत्या हो गई है। क्या कुछ नहीं किया उसने बँटवारे को रोकने के लिए। लाखों हिन्दू-मुसलमान दंगों में कुर्बान कर दिए गए। अबलाओं की इज्ज़त बेआबरू हो गई। हज़ारों मासूम यतीम कर दिए गए। क्या मिला जिन्ना को और क्या पीछे छोड़ गया आज़ाद हिन्दुस्तान का सिपहसलार? मुझे जिंदगीभर अफ़सोस रहेगा कि उसकी हत्या रोक नहीं पाया।”

“तो क्या आप बिड़ला पार्क में गाँधी... मेरा मतलब बापू की हत्या रोकने आए थे?” इरफ़ान ने अपनी गलती ठीक करते हुए पूछा।

“हाँ!” अब्दुल रहमान ने नि:श्वास छोड़ते हुए अफ़सोस जताया, “लेकिन रोक नहीं पाया।”

“लेकिन आप तो उसके पीछे थे जिसे आपने सुबह अस्पताल में मारा, नहीं क्या?” जावेद ने पूछा।

“हाँ मैं उसके पीछे था। पर मुझे नहीं पता था कि कोई और भी बापू को मारने के लिए वहाँ मौजूद था। गोडसे की खबर मुझे नहीं थी। लेकिन वो शख्स

जो खुद को राकेश सिंह बता रहा था, फिरंगी एजेंट था। उसे इंग्लैंड से किसी ने आदेश दिया था।"

"लेकिन वो तो एक सिपाही था, है न?" इरफ़ान ने पूछा।

"सिपाही के भेष में भेदिया! और वो गाँधी टोपी वाला कांग्रेस का गद्दार!" अब्दुल रहमान ने बात पूरी की।

"मतलब बापू को कोई और भी मारना चाहता था?" इरफ़ान हैरान रह गया।

"हाँ! लेकिन तुम लोगों को उससे मतलब नहीं होना चाहिए। ये बताओ तुम कौन हो और मुझे क्यों ढूँढ रहे थे?" अब्दुल रहमान ने असल सवाल पूछा।

"ये मेरा दोस्त इरफ़ान खान है और मैं जावेद शेख। हमें रजा शेख का पता चाहिए!" जावेद ने दृढ़ता से कहा।

"रजा शेख? कौन रजा शेख?" अब्दुल रहमान के माथे पर बल आ गए।

"आपके वालिद के वालिद!" जावेद ने बताया।

"क्या? मुझे लगा तुम दोनों भी मेरी तरह के आदमी हो?" अब्दुल रहमान कुछ सोचते हुए बोला।

"आपकी तरह? नहीं हम जासूस नहीं है!" जावेद ने बिना कुछ सोचे कह दिया। इस पर अब्दुल रहमान चौंक गया और उसने अपने अपंग पैरों के नीचे छिपाई हुई बन्दूक पर हाथ रख लिया। फिर सतर्कता से दोनों को देखते हुए पूछने लगा, "सच-सच बताओ तुम दोनों को किसने भेजा है?"

"हमें किसी ने नहीं भेजा। हम खुद आए है।" जावेद अब्दुल रहमान को विश्वास दिलाने लगा।

"सच कह रहे हो?" अब्दुल रहमान ने दृढ़ता से पूछा।

"हाँ!" जावेद ने अब्दुल रहमान की आँखों में देखते हुए कहा।

"बहुत कम लोग जानते है कि मैं जासूस हूँ। अगर तुम जानते हो कि मैं जासूस हूँ तो तुम्हें पता होना चाहिए, रजा शेख कहाँ है?"

"नहीं, हम नहीं जानते। इसलिए आपसे पूछ रहे है।" इरफ़ान बोला।

"तुम दोनों काम क्या करते हो?" अब्दुल रहमान को रह-रहकर दोनों पर शंका हो रही थी। इस प्रश्न पर दोनों दोस्तों को साँप सूँघ गया। वे तैयारी करके नहीं आए थे। वे कैसे अब्दुल रहमान को बताते कि वे भविष्य से आए है।

"हम किसान है!" जावेद को चुप देख कर इरफ़ान ने तुरंत कहा।

"अपने हाथ दिखाओ!" अब अब्दुल रहमान के हाथ में बन्दूक आ चुकी थी।

इरफ़ान, जावेद को घूरने लगा।इस पर अब्दुल रहमान ने फिर से दोनों से पूछा, "अपने हाथ दिखाओ।" दोनों को देर करते देख उसने बन्दूक निकाल कर जावेद के सीने पर तान दी।

डरते-डरते जावेद ने अपना हाथ आगे किया। अब्दुल रहमान ने इरफ़ान से हाथ दिखाने को कहा। इस पर इरफ़ान ने हाथ आगे करते हुए अब्दुल रहमान के हाथ को झटक दिया जिससे बन्दूक चलते हुए दूर गिर गई। ठाँय... की तेज़ आवाज़ ने जावेद को चौंका दिया।

इरफ़ान की हरकत पर अब्दुल रहमान चिल्लाया, "किसने भेजा है तुम दोनों को?" और उसने इरफ़ान का हाथ पकड़कर मरोड़ दिया। इरफ़ान एक ही बार में पलटी खाकर चित हो गया। जावेद पीछे हटते हुए थर्र-थराने लगा।

जब इरफ़ान ने सिर उठाकर अब्दुल रहमान को देखा तो अब्दुल रहमान के हाथ में फिर से बन्दूक थी और वो जावेद से पूछा रहा था, "कौन हो तुम दोनों? बताओ मुझे!" फिर उसने इरफ़ान के माथे पर बन्दूक रख दी।

"हम बताते है!" हाथ ऊँचा करते हुए इरफ़ान उठने की कोशिश करने लगा।

"नहीं, ऐसे ही बताओ!" अब्दुल रहमान ने उसे सचेत किया।

"लेकिन मेरा हाथ दर्द कर रहा है, बैठना तो पड़ेगा ही।" इरफ़ान दर्द से कराहते हुए उठने लगा।

"ठीक है, लेकिन सिर्फ बैठोगे।" अब्दुल रहमान ने चेतावनी दी। जैसे वो जानता था कि इरफ़ान का हाथ वाकई में पीड़ा जनक स्थिति में था। पर उसकी बन्दूक निशाने पर थी।

"जावेद मियाँ, ज़रा हाथ तो देना। लगता है मेरा ये हाथ गया।" इरफ़ान ने जावेद से मदद माँगते हुए हाथ बढ़ाया।

जावेद ने अब्दुल रहमान को देखते हुए अपना हाथ बढ़ाया। अब्दुल रहमान की मौन सहमति थी कि वो इरफ़ान की मदद करें। जैसे उसे मालूम था कि इरफ़ान को मदद लगेगी। उसने सतर्क होकर अपनी हाथ गाड़ी थोड़ी पीछे की। उसी क्षण में इरफ़ान झट से जावेद का हाथ थाम लिया और जल्दी से कहा,"चलो! यहाँ से चलें!"

इरफ़ान के यह कहते ही अब्दुल रहमान बन्दूक का ट्रिगर दबाने को हुआ, लेकिन तब तक इरफ़ान, जावेद के हाथ में बंधी घड़ी का बटन दबा चुका था। एक तेज़ रोशनी और कम्पन ने अब्दुल रहमान की आँखों को चौंधिया दिया। साथ ही उसे अदृश्य गुरुत्वाकर्षण जैसे बल का अहसास हुआ। वह अपनी हाथ गाड़ी समेत पीछे की ओर फिका गया। लेकिन तब भी बन्दूक से गोली चल ही गई।

खुद को संभालते हुए अब्दुल रहमान ने देखा कि उसकी तलाश में आए दोनों दोस्त अब वहाँ नहीं थे और उसके द्वारा चलाई गई गोली हुमायूँ के मकबरे पर लग धंसी हुई थी।

“कहाँ गए दोनों? और वे थे कौन?” अब्दुल रहमान हैरान और भयभीत सा रिक्त स्थान में देखने लगा था।

€¥Ω£§

इरफ़ान के यह कहते ही अब्दुल रहमान बन्दूक का ट्रिगर दबाने को हुआ, लेकिन तब तक इरफ़ान, जावेद के हाथ में बंधी घड़ी का बटन दबा चुका था। एक तेज़ रोशनी और कम्पन ने अब्दुल रहमान की आँखों को चौंधिया दिया। साथ ही उसे अदृश्य गुरुत्वाकर्षण जैसे बल का अहसास हुआ। वह अपनी हाथ गाड़ी समेत पीछे की ओर फिका गया। लेकिन तब भी बन्दूक से गोली चल ही गई।

खुद को संभालते हुए अब्दुल रहमान ने देखा कि उसकी तलाश में आए दोनों दोस्त अब वहाँ नहीं थे और उसके द्वारा चलाई गई गोली हुमायूँ के मकबरे पर लग धंसी हुई थी।

“कहाँ गए दोनों? और वे थे कौन?” अब्दुल रहमान हैरान और भयभीत सा रिक्त स्थान में देखने लगा था।

€ ¥ Ω £ §

-हम सब समय के यात्री हैं।

(4)

दशमलव नौ नौ

मध्य भारत के एक शहर का एक सरकारी बगीचा

पॉपकॉर्न बनाने वाला जलती भट्टी में लकड़ियाँ डाल रहा था।

जावेद अपनी बेगम साहिबा 'मिस्बा' को घुमाने लाया था। दोनों के निकाह को आठ महीने बीत चुके थे। जावेद के एक पैर से विकलांग होने के बावजूद मिस्बा उससे प्यार करने लगी थी। जावेद तो उसे देखते ही दिल दे बैठा था। दोनों अपने नवजीवन में सुखी थे। मिस्बा के जिंदगी में आने से जावेद का घर पूरा हो गया था। 'आफरीन', जावेद की अम्मी को भी तसल्ली हो गई थी कि उसका वंशवृक्ष सुखा नहीं रहेगा। जावेद के पिता के न होने से सारी जिम्मेदारी उसके कन्धों पर आ गई थी। जिसे उसने अकेले होने पर भी बखूबी निभाया।

कभी-कभी आफरीन सोचती थी कि क्या होता अगर जावेद के अब्बू घर छोड़कर न गए होते? उसे याद आता है कि कैसे उसका अपंग शौहर गर्भ में आने वाली औलाद के बारे में सुनकर उसी रात घर छोड़कर कहीं चला गया था।

"अगर वो घर छोड़कर बुद्ध बन जाता तो गिला ना होता!" आफरीन कभी-कभी जावेद से कहती थी, "बस, मुझे इस बात का दुःख होता है कि वो मुझे उस वक़्त अकेला और असहाय छोड़ गया, जब मुझे उसकी सबसे ज्यादा ज़रूरत थी। तू अपनी बेगम के साथ ऐसा न करना जावेद।" जावेद को देखते हुए आफरीन की आँखें द्रवित हो जाती थीं।

"तू रो क्यों रही है, अम्मी?"

जावेद छोटा था। उसे समझ नहीं आता था कि उसकी प्यारी अम्मी उससे क्या कहना चाहती है? लेकिन धीरे-धीरे, बड़े होने पर उसे वो बातें बखूबी समझ आने लगी थी। लेकिन कहते है न कि समय और घटनाएँ खुद को दोहराते है। आज वो दिन आ पहुँचा था, जब जावेद के दिमाग में आफरीन की दी हुई नसीहतें रह-रहकर गूँज रही थी। और वो समझ नहीं पा रहा था कि वो क्या करेगा। इधर मिस्बा ये समझ रही थी कि जावेद उसे घुमाने लाया है। जबकि सच ये था कि

जावेद उससे अपनी होने वाली औलाद को गिरा देने के बारे में बात करने लाया था। मिस्बा गर्भ से थी और एक रात पहले ही उसने जावेद को ये खुशखबरी दी थी। उस वक़्त आफरीन कुछ दिनों के लिए किसी फ़क़ीर की दरगाह पर चादर चढ़ाने दूसरे शहर गई थी।

"अम्मी को पता चलेगा तो कितनी खुश होगी!" मिस्बा बार-बार अपने पेट पर हाथ रख रही थी, "हमने अभी तक अपने घरवालों को भी ये खुशखबरी नहीं दी है। हम चाहते हैं, पहले ये ख़बर अम्मी ही सुने।"

"तुम क्या लोगी?" जावेद झिझक रहा था कि वो कैसे बात छेड़ेगा। बगीचे में कुछ फेरी वाले चक्कर लगा रहे थे।

"नहीं, अब से हम बाहर का कुछ नहीं खाएँगे। बच्चे की सेहत पर बुरा असर होगा।" मिस्बा ने जावेद की बाजू थाम ली और कंधे पर सिर रख दिया।

"ऐसा कैसे चलेगा? कुछ तो खाना होगा। हम रोज़ तो बाहर नहीं निकलते।" जावेद फेरी वालों को देखने लगा।

"तुम्हें कुछ लेना हो तो ले लो। हम तो कुछ न लेंगे।" मिस्बा ने फिर से इंकार कर दिया।

"तुम कुछ नहीं लोगी तो मैं अकेला लेकर क्या करूँगा?" जावेद ने एक आईसक्रीम वाले को रोक लिया, "दो आईसक्रीम देना।"

"हम नहीं खाएँगे जावेद।" मिस्बा फिर बोली।

"आज खा लो। अगली बार से नहीं बोलूँगा।" जावेद ने नकली मुस्कुराहट चेहरे पर लाते हुए कहा।

"ठीक है!" मिस्बा ने जावेद को देखते हुए फेरीवाले से कहा, "भैया! हमें ऑरेंज फ्लेवर देना। खट्टा खाने का मन हो रहा है।" मिस्बा जावेद को देख मुस्कुरा दी।

आईसक्रीम वाले ने एक आईसक्रीम जावेद के हाथों में और दूसरी मिस्बा को थमा दी। जावेद ने उसे पैसे दिए और वह आगे चला गया।

"आओ वहाँ बैठे!" जावेद ने खाली होती एक बैंच की ओर इशारा किया,

जिस पर से एक प्रेमी जोड़ा उठकर जा रहा था। दोनों बैंच की तरफ बढ़ गए। जावेद एक हाथ से बैसाखी सम्भाले थे और दूजे हाथ से आईसक्रीम।

कुछ ही पलों में दोनों बैंच पर बैठे थे। जावेद बार-बार मिस्बा के चेहरे को देख रहा था। मिस्बा के चेहरे पर उतर आए नूर को देख उसकी हिम्मत नहीं बंध रही थी कि वो अपने मन की बात मिस्बा से कह दे।

"क्या देख रहे है जनाब?" मिस्बा प्यार से बोली।

"देख रहा हूँ कि एक ही दिन में कितनी बदल गई हो तुम।" जावेद ने जवाब दिया।

"हाँ, वो तो है। तुम आइसक्रीम खाओ न, वरना पिघल जाएगी।" मिस्बा ने आइसक्रीम चाटते हुए देखा जावेद के हाथों में आईसक्रीम पिघल रही थी।

जावेद ने आईसक्रीम का कोन मुँह से लगा लिया। वह सोचने लगा कैसे बात शुरू करें? कुछ देर मौन रहने के बाद जावेद ने विषय छेड़ने के लिए बात की।

"जानती हो, कभी-कभी मैं सोचा करता था कि शादी नहीं करूँगा-बच्चे नहीं पालूँगा!"

"अच्छा! पर ऐसा क्यों सोचते थे?" मिस्बा को आईसक्रीम बहुत पसंद आ रही थी।

"इस दुनिया में कितना दुःख है। कोई सुखी नहीं। न अमीर, न गरीब और न इन दोनों के बीच जो लोग है, वो।"

"ज़िन्दगी में ख़ुशियाँ और परेशानियाँ न होगी तो इसका मज़ा ही क्या रहेगा जावेद। हम तो समझते है कि दोनों का होना बहुत ज़रूरी है। खासकर परेशानियाँ तो होना ही चाहिए। परेशानियाँ हमें तजुर्बा देती है और मजबूत बनाती है।

"हाँ, लेकिन तुम सोचो हम कैसी माहौल में जी रहे है? हमारे आस-पास बुराईयाँ बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार, लूट-पाट, खून, डकैती, बलात्कार। हम अपनी औलाद को कैसी दुनिया में लाएँगे?" जावेद गौर से मिस्बा को देखने लगा। वह सोच रहा था कि शायद मिस्बा ने कभी ये बातें सोची हो? लेकिन वो गलत था।

“आज तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो, जावेद? हम सोच रहे थे कि तुम हमें इसलिए घुमाने लाए हो क्योंकि तुम अपने बाप बनने की खबर से बहुत खुश हो। लेकिन लगता है तुम्हारे दिमाग में कुछ और ही बात है।”

“मैं अपने बाप बनने की ख़बर से बहुत खुश हूँ, मिस्बा। सच में बहुत खुश। इतना कि मैं बयाँ नहीं कर सकता। लेकिन साथ ही मैं डरा हुआ भी हूँ। एक अजीब-सी घबराहट हो रही है।”

“घबराहट हमें भी हो रही है, जावेद। पहली बार अम्मी बनेंगे हम। हम अपने बच्चे की ठीक से परवरिश तो कर पाएँगे ना? हमने पहले कभी बच्चों को नहीं पाला है।” मिस्बा के चेहरे पर मासूमियत आ गई। उसने जावेद की बाजू पकड़ ली और अपना सिर कंधे पर टिका लिया।

“पता नहीं!” जावेद के मुख से ये सुनते ही मिस्बा चौंक गई। जिस तेज़ी से उसने जावेद के कंधे पर सिर रखा था, उतनी तेज़ी से हटा भी लिया।

“पता नहीं, मतलब?” मिस्बा ने पूछा।

जावेद के चेहरे पर थोड़ी कठोरता आ गई।

“मिस्बा! मैं तुमसे एक ज़रूरी बात कहना चाहता हूँ। मुमकिन है, तुम्हें मेरी बात बिलकुल पसंद ना आए। शायद तुम मुझसे नाराज़ हो जाओ, लेकिन मेरे लिए वो बात कहना बहुत ज़रूरी है।”

“तुम क्या बात कहना चाहते हो, जावेद? तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुम दिल को चुभने वाली बात कहने वाले हो।” मिस्बा विचलित होने लगी।

“हाँ, इसलिए तुम्हें अपने कलेजा मजबूत रखना होगा।” जावेद मिस्बा को हिम्मत रखने के लिए कहने लगा।

“तुम ऐसा क्या कहने वाले हो जावेद?”

“हमें ये बच्चा गिराना होगा!” जावेद के चेहरे पर भावहीनता आ गई।

“क्या?” मिस्बा के पाँव तले जमीन खिसक गई।

उसकी ऑरेंज कैंडी उसके हाथ से छूट गई। जावेद का हाथ भी निराशा में लटक गया। उसकी आईसक्रीम पिघलते हुए नीचे गिरने लगी।

“तौबा-तौबा जावेद! क्या कह रहे हो तुम? तुम पागल हो गए हो? ख़ुदा का खौफ है की नहीं, तुम्हें?”

“हमारे पास कोई और चारा नहीं है, मिस्बा। तुम जानती हो हमारे खानदान में एक लाइलाज बीमारी चल रही है।”

“हाँ, तो क्या इसका मतलब ये होगा कि तुम हमारा बच्चा गिराने की बात करोगे?” मिस्बा गुस्से से लाल हो गई।

“तुम चाहती हो हमारा बच्चा मेरी तरह अपंग पैदा हो?”

“अभी हमने किसी डॉक्टर को दिखाया नहीं है, जावेद।” मिस्बा समझ गई जावेद क्या कहना चाहता था।

“मुझे पता है, वो क्या कहेंगे। पहले बताएँगे कि सब ठीक है। फिर कुछ महीने बीतने पर बोलेंगे, पता नहीं ये क्यों हो रहा है, लेकिन आपके बच्चे का एक हाथ या शायद दोनों पैर विकसित नहीं हो रहे है।” जावेद भविष्य की कल्पना कर बताने लगा।

“ख़ुदा के लिए तुम पहले से अंदाज़ा मत लगाओं। हमारा बच्चा सेहतमंद और पूरा होगा। ठीक वैसे जैसे औरों के बच्चे होते है।”

“मैं अंदाज़ा नहीं लगा रहा मिस्बा। सच कह रहा हूँ।” जावेद मिस्बा को विश्वास दिलाने लगा।

“हमारा बच्चा अपंग नहीं होगा, जावेद।” मिस्बा की आँखों में आँसू आने लगे।

“अम्मी भी मेरे पैदा होने के बारे में यहीं सोचती थी। जिस कारण अब्बा हमेशा के लिए घर छोड़कर चले गये।”

“तो क्या तुम भी हमें छोड़कर चलें जाओगे?”

“मैंने ऐसा तो नहीं कहा?” जावेद मिस्बा का दिल नहीं दुखाना चाहता था।

“फिर क्या कहना चाहते हो?” मिस्बा के आँसू टपकने लगे। वो गर्दन झुकाकर अपने पेट को देखने लगी।

“तुम समझती क्यों नहीं मिस्बा? हमें ये बच्चा जल्द ही गिराना होगा। देरी

की तो हमें पछताना पड़ेगा।”

“हमें तुम्हारी बात पर एतबार नहीं जावेद। ये तुम्हारे दिमाग का कोरा फितूर है, झूठ है। ऐसा कुछ नहीं होगा, हमें भरोसा है।”

“जब मेरी बातें सच होगी तब तुम्हारा भरोसा टूट जाएगा, मिस्बा। तब तुम मुझसे कहोगी कि काश तुमने मेरी बात मान ली होती। सोचो! क्या तुम देख पाओगी अपने बच्चे को चलने या कोई खिलौना उठाने के लिए संघर्ष करते हुए? सोचो, क्या तुम देख पाओगी जब उसे कोई अपना दोस्त नहीं बनाएगा? सोचो, जब वो तुमसे पूछेगा कि उसका एक पैर या हाथ क्यों नहीं है? सोचो, जब दुनिया उस पर तरस खाएगी। सोचो मिस्बा! सोचो!”

“नहीं! नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं होगा।” मिस्बा ने चीखते हुए अपने हाथ कान पर रख लिए। आसपास के एक-दो लोग चलते हुए रुक गए और उन्हें देखने लगे।

“क्या ये आपको परेशान कर रहा है?” एक युवक ने पास-आकर मिस्बा से पूछा।

“ये मेरी बीवी है। तुम अपना काम करो।” जावेद ने युवक को मिस्बा से दूर रहने के लिए कहा।

“तुझसे पूछा क्या लंगड़े?” व्यक्ति जावेद की बैसाखी देख असभ्य तरीके से बोला।

“ये मेरे शौहर हैं। हम आपसी-बातचीत में मशगूल हैं। आप ख़ुदा के लिए दूर चले जाए।” अब मिस्बा ने आँसू पौंछते व्यक्ति को दूर जाने के लिए कहा। मिस्बा के बोलते ही व्यक्ति जावेद को घूरते देख चला गया। फिर आसपास की भीड़ भी फिर छट गई।

“तुमने सुना उसने मुझे क्या कहा? ये तुम्हें हमारे बच्चे के लिए भी सुनना पड़ सकता है।” जावेद वितृष्णा से बोला।

“हम अपना बच्चा नहीं गिरा सकते जावेद। हम माँ बनना चाहते है। ‘अम्मी’ शब्द सुनना चाहते है।” मिस्बा सुबकते हुए बोली।

“तुम ये ज़रूर सुनोगी मिस्बा। बस, तुम्हें एक फैसला करना होगा।” जावेद आशा भरी नज़रों से मिस्बा को देखने लगा।

“कैसा फैसला?” मिस्बा ने पूछा।

“तुम्हें सेरोगेसी के ज़रिए हमारे वारिस को दुनिया में लाने के लिए रजामंद होना पड़ेगा।”

“क्या?” मिस्बा एक बार फिर चौंक गई।

“हाँ, इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है जिसके ज़रिए हम स्वस्थ्य, सेहतमंद और पूर्ण औलाद पा सकें।”

“तुम हमसे अपने अम्मी बनने का हक़ नहीं छीन सकते जावेद। यह नामुमकिन है।”

“मुझे मालूम था, तुम यही कहोगी।” जावेद अपनी औलाद के बारे में सोचते हुए निराश हो गया।

“बुरा मत मानना जावेद, लेकिन आपस में बहस करने और कोई भी फैसला लेने से पहले, क्यों न हम किसी बड़े डॉक्टर से बात कर लें? आजकल तो कुछ भी संभव है। जेनेटिक बीमारी भी कुछ इंजेक्शन से ठीक की जा सकती है।”

“ठीक है! तुम कहती तो डॉक्टर से मिलकर भी देख लेते है। लेकिन मैं जानता हूँ, उससे कुछ नहीं होगा।” जावेद ने एक ठण्डी साँस छोड़ते हुए कहा। उसके हाथ की आईसक्रीम पूरी पिघल चुकी थी।

फिर कुछ दिनों बाद उन्होंने किसी ऊँचे डॉक्टर से सलाह की। डॉक्टर ने कुछ जाँच करवाने को कहा। जावेद के खून के डीएनए की जाँच के लिए भी दूर भेजा गया, शायद अमेरिका के किसी बड़े डॉक्टर के पास। रिपोर्ट आने पर सबसे पहले जावेद को पता चलने वाला था। लेकिन इससे पहले कुछ ऐसा घट गया जिसके विषय में न मिस्बा को पता था और न आफरीन को ही। अब दोनों घर में अकेली थीं।

अभी सूरज उगने में देर थी। ‘मिस्बा’, जावेद की बेगम अपने पाँच माह के गर्भ को सम्भाले पानी भरने की तैयारी में थी। उसने खाली घड़े, हंडे और बाल्टी

निकालकर माँज लिए थे। उसने यह काम दबे पाँव बड़ी तसल्ली से किया था। होले से दरवाज़ा खोलकर वो कमरे से बाहर निकली थी। फिर धीरे से बत्ती जलाकर गुसलखाने में चली गई थी। वहाँ से निपटकर उसने रसोई में आकर चाय बनाई, पी और उसके बाद घर के भीतर के चौक का दरवाज़ा आहिस्ता से बंद कर एक-एक बर्तन को बिना आवाज़ हुए रसोई से चौक में रखा। फिर पाइप से बड़े टब में पानी भरा ताकि नल खुलने पर पानी के दाब का शोर न उठे। उसने हलके मुलायम हाथों से एक-एक बर्तन को धोया।

इतनी एतियात उसे सिर्फ इसलिए बरतना पड़ी क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसकी साँस और जावेद की अम्मी 'आफरीन' की नींद में दखल पड़े। दो दिन से उसकी तबियत थोड़ी नरम थी। कल नज़दीक के किसी दवाखाने पर डॉक्टर को दिखाया था। नब्ज टटोलने पर डॉक्टर ने मौसमी बदलाव का हवाला दिया था और कुछ दवाएँ लिख दी थी।

अब घर में वैसी चहल-पहल नहीं थी जैसी आठ माह पहले जावेद और मिस्बा की शादी के वक़्त थी।घर में केवल तीन प्राणी रह गए थे- आफरीन, जावेद और मिस्बा। लेकिन पिछले कुछ दिनों से जावेद घर पर नहीं था। वो अपने ऑफिस के काम से बाहर गया हुआ था। किसी साइट पर। उसके साथ इरफ़ान भी गया था। कम से कम आफरीन और मिस्बा को तो यहीं बताया गया था। जावेद ने ही कहा था।

"मिस्बा, दो दिनों के लिए बाहर जाना पड़ेगा। राजस्थान में एक नया प्रोजेक्ट शुरू हो रहा है।"

"कब जाना है?" मिस्बा ने बेमन से पूछा था।

"कल ही निकलना होगा।"

"इरफ़ान भाई भी साथ जाएँगे?"

"हाँ, उसे भी मेरे साथ जाना होगा।" जावेद ने कहा।

"मैं बैग तैयार कर दूँगी!"

मिस्बा जाने को हुई थी कि जावेद ने उसका हाथ थामकर उसे रोक लिया,

"मिस्बा!"

"हाँ!" मिस्बा ने कहा।

"क्या अब भी नाराज़ हो? देखों मैंने कहा था कि हमारे खानदान में ये जेनेटिक डिसऑर्डर है। कल डॉक्टर ने भी रिपोर्ट में कह दिया है कि बच्चे के पैर में कुछ विकृति हो सकती है।लेकिन..."

"लेकिन क्या जावेद?" जावेद के कहने से पहले मिस्बा ने बात काट दी, "मैं कह चुकी हूँ कि मैं बच्चा नहीं गिराने दूँगी। ये जैसा भी है मेरा है और मैं इसे पालूँगी। तुम्हें जो करना है करों। जहाँ जाना है जाओ!"

"शांत हो जाओ मिस्बा! मैं भी नहीं चाहता हूँ कि हम ये बच्चा गिराए।" जावेद ने भावुक होते हुए कहा।

जब से मिस्बा गर्भवती हुई थी, दोनों के बीच तकरार बढ़ गयी थी। जावेद एक अपंग बच्चे का पिता नहीं बनना चाहता था। जबकि मिस्बा किसी भी सूरत में बच्चा चाहती थी। इसलिए जब कई महीनों की बहस और तर्क-वितर्क के बाद जावेद ने बच्चे के लिए सकारात्मक बात की तो मिस्बा हैरान रह गई थी।

"क्या? क्या सच में? मतलब... तुम सच में?"

"हाँ, मैं सच में ये बच्चा चाहता हूँ।" जावेद के ये कहते ही मिस्बा उसके सीने से लिपटकर रोने लगी।

"तुम अचानक कैसे मान गए?" उसने सुबकते हुए पूछा।

"बस मैं मान गया हूँ।"

अगले ही दिन जावेद, इरफ़ान के साथ ऑफिस के नए प्रोजेक्ट के सिलसिले का बहाना लेकर निकल गया था। जबकि वो और इरफ़ान दोनों ही मिस्बा से कुछ छिपा रहे थे। कोई बात जो उन्हें बता देना चाहिए थी।

जब मिस्बा पानी भरने के लिए बर्तनों को घिस रही थी, आफरीन अपने बिस्तर से उठकर चौक में पहुँच गयी थी।

"मिस्बा, तुझे मना किया था न काम करने के लिए।" आफरीन चौक का बंद दरवाज़ा देखते ही समझ गई कि मिस्बा उठ चुकी है।

"सुबह बखैर अम्मी! आप आराम कर लेती।" मिस्बा ने माथे पर चुन्नी ओढ़ते हुए कहा।

"सुबह बखैर। रात भर आराम ही तो किया है। तू बता, तू ये क्यों कर रही है? रेशमा आ जाएगी न?" आफरीन पास आने लगी।

"माफ़ कीजिएगा अम्मी, लेकिन आज नल जल्दी आएगे। आपकी तबियत कैसी है अब?"

“काफ़ी ठीक महसूस कर रही हूँ।” आफरीन चौक की सीढ़ियों पर बैठ गई।

“मैं चाय लाती हूँ!” मिस्बा बर्तन छोड़कर उठने लगी।

“नहीं रहने दे। मैं ले लूँगी।” दो पल रूककर आफरीन उठ गई और रसोई में से चाय ले आई। इस बीच नल आ चुके थे। मिस्बा खाली बर्तनों में पानी भरने लगी।

“जावेद को फ़ोन लगाया था?” आफरीन ने चाय का घूँठ लेते हुए पूछा।

“नहीं अम्मी! उनका फ़ोन नहीं लग रहा।व्यस्त ही जा रहा है।” मिस्बा ने भर चुके बर्तन को सरकाया।

“और इरफ़ान का फ़ोन?” आफरीन का ध्यान चाय पर था।

“इरफ़ान भाई का फ़ोन भी बंद आ रहा है।” मिस्बा ने बताया।

“कैसे लापरवाह है दोनों? ऑफिस के काम में इतने डूब गए है कि घर-परिवार के लोगों की चिंता ही नहीं है।”

“आप परेशान मत हो, अम्मी। हो सकता है वहाँ सिग्नल न हो और अभी ज़्यादा समय भी नहीं हुआ है। केवल कल शाम से ही तो फ़ोन नहीं लग रहा। जावेद ने कहाँ था कि शायद उनका मोबाइल ना लगे।” एक और बर्तन भर चुका था।

“जब उसे पता था कि जहाँ वो जा रहा है, वहाँ मोबाइल नहीं लगेगा तब ऑफिस का नंबर देकर जाना चाहिए था की नहीं? उसे पता होना चाहिए था कि उसकी बूढ़ी अम्मी और एक बीवी जो पेट से है, घर पर अकेले होंगे। ख़ुदा न खास्ता कहीं कुछ हो गया तो…?”

“तौबा-तौबा करों अम्मी। सुबह-सुबह कैसी बात कर रही हो आप?” आफरीन कान पकड़कर अल्लाह को याद करने लगी।

“क्या गलत कह रही हूँ, मैं? एक तो बताकर भी नहीं गया कि कितने दिन में आएगा और अब ऐसी लापरवाही।” आफरीन ने चाय का अंतिम घूँट पीते हुए कटोरी चौकी में दूसरे बर्तनों के साथ रख दी।

“वो फ़ोन लगा लेंगे अम्मी।” मिस्बा आफरीन को आश्वस्त करने की कोशिश

करने लगी।

पर वो भी परेशान हो रही थी, ‘कहीं जावेद घर छोड़कर चला तो नहीं गया था। नहीं-नहीं वो ऐसा नहीं करेंगे। मुझसे अच्छे से बात करके गए थे।’ वो सोचने लगी थी।

कुछ देर बाद सूरज निकल चुका था। मिस्बा छत पर कपड़े डाल रही थी। उसी समय काम वाली बाई ‘रेशमा’ चौक में से अन्दर आती हुई दिखाई दी।

“अब आ रही है!” उसने रसोई से आफरीन की आवाज़ सुनी।

“हाँ,मम्मी जी आज थोड़ी देर हो गई। कल विधायक के घर मीटिंग में बहुत लोग आए थे। वहीं से घर देर पहुँची थी। रात भर नींद ही नहीं आई ठीक से।” रेशमा ने झाड़ू उठा लिया था और बुहारने लगी थी।

“किस बात की मीटिंग थी।” आफरीन ने पूछा।

“नेता नगरी वालों को काम क्या है? चुनाव आ रहे है। टिकिट के लेन-देन पर बातें चल रही थी।”

“अच्छा! तो किसे मिल रहा है यहाँ से टिकिट?”

“मिलना किसे है? जो अब तक है उसे ही मिलेगा।”

“अंसारी को हराना आसान नहीं है।” आफरीन खुश होते हुए बोली।

“हाँ, आसान तो नहीं है, लेकिन हवा बदल रही है। कुछ भी हो सकता है।” रेशमा अपना काम करती रही।

“हवा कितनी ही बदल जाएँ, यहाँ से तो अंसारी ही जीतेगा।” आफरीन विश्वास से बोली।

“मुझे तो नहीं लगता कि इस बार अंसारी जीतेगा। सुनने में आया है, उसके सामने पंडितजी को उतार रहे है।” छत पर खड़ी मिस्बा दोनों की बातें सुनते हुए जावेद को फ़ोन लगाने लगी। लेकिन अब भी जावेद का फ़ोन इंगेज ही जा रहा था। उसने इरफ़ान का फ़ोन मिलाया, लेकिन वह बंद ही आया। मिस्बा चिंतित हो गई।

“जावेद मियाँ कब तक आएगे?” रेशमा झाड़ू लगाते मिस्बा के कमरे के बाहर

पहुँच चुकी थी तब उसने आफरीन से पूछा।

"पता नहीं! इस बार कुछ कह कर नहीं गया है। यूँ तो हमेशा टूर पर जाने से मना करता रहा है, लेकिन इस बार खुद आगे रहकर टूर पर गया है। कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिला है। साइट बड़ी है।" आफरीन ने रसोई की खिड़की से मिस्बा को देखा। मिस्बा फ़ोन कान पर लगाए परेशान दिख रही थी।

"ग्यारह बजे उसके ऑफिस फ़ोन लगाकर पूछना!" आफरीन ने मिस्बा को जोर से पुकारते हुए कहा।

"जी अम्मी!" मिस्बा की आवाज़ आई।

"क्या हो गया?" रेशमा ने आफरीन से पूछा।

"कुछ नहीं रे! कल शाम से जावेद का फ़ोन नहीं लग रहा है।" आफरीन ने परेशान होते हुए बताया।

"तो इसमें परेशान होने की क्या ज़रूरत है? बैटरी ख़त्म हो गई होगी। कभी-कभी सिग्नल भी नहीं आता है। फिर आज के लड़के कुछ बताते भी नहीं है। मेरे ये भी एक बार पुताई करने किसी बड़े सेठ के बंगले पर गए थे। दो दिन तक न फ़ोन लगाया और न घर पर बताया कि कब तक आएगे। मैं छोरे को लेकर थाने रिपोर्ट लिखाने जा ही रही कि सामने से आ गए। तब मेरी जान में जान आई। खूब चिल्लाया था उनको। वैसे जावेद मियाँ और भाभी के बीच सब ठीक तो चल रहा है न?" रेशमा ने तिरछी नज़र से मिस्बा को देखा। वो रस्सी पर कपड़े ठीक कर रही थी।

"तू ये कैसी बात कर रही है?" आफरीन नाराज़ होते हुए बोली।

"माफ़ करना! मुझे लगा फिर से बच्चे को लेकर कोई झगड़ा हुआ होगा।" रेशमा पिछली बातों की याद दिलाती हुई बोली।

"नहीं, जावेद अब बच्चे के लिए राज़ी है।"

"ये तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं अल्लाह से दुआ करूँगी कि वो स्वस्थ्य पैदा हो।"

"आमीन! तेरे मुँह में घी-शक्कर!" आफरीन ने कहा। लेकिन उसके चेहरे पर

संतोषजनक भाव नहीं थे।

रेशमा जानती थी कि जावेद और मिस्बा के बच्चे के साथ कुछ जटिलताएँ थी। मिस्बा भी अपने पेट को देख दिन में कई बार दु:खी हो जाती थी। लेकिन फिर कुछ सोचकर वो खुद को हिम्मत देती कि सब ठीक होगा। डेढ़, एक घंटे में रेशमा झाड़ू, पोंछा और बर्तन कर चली गई।

दोपहर में जब मिस्बा खाना खाने के बाद झपकी ले रही थी तब एक अंजान नंबर से उसे कॉल आया।

“हेलो!” मिस्बा ने फ़ोन उठाया।

“हेलो मिस्बा जी!” उधर से आवाज़ आई।

“जी बोल रही हूँ!” मिस्बा ने कहा।

“मेरा नाम सहस्त्रबाहु है। मैं आपको बताना चाहूँगा, आपके पति जावेद और उनके दोस्त इरफ़ान दूर एक साइट पर गए है। उनके फ़ोन नहीं लग रहे है। उन्होंने कहलवाया है कि आपको सूचना दे दूँ कि वे ठीक है और साइट से आकर वे आपसे बात कर लेंगे।” दूसरी ओर से ये शब्द कान में पड़ते ही मिस्बा के चेहरे पर सुकून आ गया।

“आपका बहुत-बहुत शुक्रिया! हम उनके लिए बहुत परेशान हो रहे थे। वैसे वो साइट से कब तक लोटेंगे?”

“शायद कल शाम तक? कह नहीं सकता। काम ज्यादा है। परसों का दिन भी लग सकता है।”

“ठीक है! आपका एक बार और लाख-लाख शुक्रिया!” फिर मिस्बा ने फ़ोन रख दिया और उठकर ये बात आफरीन को बताने चली गई।

जावेद की ख़बर पाकर आफरीन भी बेफिक्र हुई।

लेकिन वो शख्स,‘सहस्त्रबाहु’ जिसने मिस्बा को फ़ोन लगाया था, फ़ोन रखने के बाद बड़ा चिंतित था। उनसे अपने पास सोफ़े पर बैठे एक व्यक्ति से कहा।

“हम ज़्यादा वक़्त तक झूठ नहीं बोल पाएँगे!” सहस्त्रबाहु ने टेबल पर रखे

दो मोबाइल पर नज़र डाली। दोनों मोबाइल जावेद और इरफ़ान के थे।

"जानता हूँ, सहस्त्रबाहु। लेकिन कोई चारा भी नहीं है। तुम लोगों ने बहुत ज़ल्दबाजी दिखाई द रियल टाइम मशीन को चुराने में।"

"तुम आसानी से मान जाते तो उन्हें वैसे न भेजना पड़ता। फिर तुमने पूरी बात भी नहीं बताई थी।"

"कैसे बताता? तुम लोगों ने मौका ही कहाँ छोड़ा था।और कोई अपनी कमियाँ क्यों बताएगा भला? तुम्हें मालूम था, मैं टाइम टनल को लेकर काम कर रहा हूँ। उसमें थोड़ा समय लगेगा। समीकरण तैयार नहीं है।" वह व्यक्ति बोला।

"क्या हम उनके पीछे नहीं जा सकते?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"जा तो सकते है लेकिन तुम जानते हो फिर क्या होगा? और अतीत इतना विशाल और विस्तृत है कि हम उन्हें ढूँढने जाएँगे भी तो कहाँ? हम भटक सकते है।" व्यक्ति ने बताया।

"कोई तो तरीका होगा, डॉक्टर?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"है तो सही। पर..."

"पर क्या डॉक्टर?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"पता नहीं काम करेगा कि नहीं? अतीत में सौ साल बिताने पर वर्तमान में केवल कुछ साल बीतते है। जबकि भविष्य में एक दिन बहुत महँगा साबित होता है।" व्यक्ति ने अपना सिगार सुलगाते हुए कहा।

"इसका क्या मतलब है?" सहस्त्रबाहु ने चौंकते हुए पूछा।

"इसका मतलब वैज्ञानिक और तकनीकी जटिलताएँ है। तुम राजनीति के पत्रकार हो, इसे शायद ही समझोगे?" व्यक्ति ने कहा।

"देखों डॉ० एन० रामावल्ली! मैं जानता हूँ तुम महान वैज्ञानिक हो, लेकिन थोड़ा विज्ञान मैं भी जानता हूँ। कम से कम मैंने तुम्हारे साथ काम करते हुए कुछ तो सिखा ही है। फिर मैं कई विज्ञान पत्रिकाएँ भी पढ़ता हूँ और अब मैं एक विज्ञान फंतासी फिल्म पर भी पैसा लगा रहा हूँ।"

"अपनी बढ़ाई मत करों। आज तुम जो भी हो मेरे कारण हो। अच्छा सुनो!

अगर मेरे लैब से भेजे सन्देश उन्हें मिल जाए और उसे फॉलो करते हुए वो निश्चित जगह पहुँच जाएँ, तो एक प्रतिशत संभावना है कि उस लंगड़े जावेद की बीवी उसे देख पाए। वरना उसे बता देना कि उसका पति और उसका हमदर्द दोस्त कभी नहीं लौटेंगे।" डॉ० रामावल्ली सिगार से धुआँ उगलते हुए कुछ सोचने लगा।

"ऐसा मत कहो, डॉक्टर। केवल एक प्रतिशत सम्भावना से क्या होगा?" सहस्त्रबाहु और ज्यादा चिंतित हो गया।

"वैसे सच कहूँ तो सम्भावना केवल दशमलव नौ-नौ प्रतिशित हैं।" डॉ० रामावल्ली ने कुटिल मुस्कराहट होंठो पर लाते हुए सहस्त्रबाहु के चेहरे पर धुआँ छोड़ा।

ये सुनते ही सहस्त्रबाहु के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी।

"मतलब मैं सही था। तुमने जिन्हें भी भेजा है वो वापस नहीं लौटेंगे।" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"बेशक वे नहीं लौटेंगे।लेकिन चिंता मत करों मैं सबको वापस लाने का मार्ग ढूँढ लूँगा। मुझे भी सबकी चिंता है। पर मुझे तुमसे ये उम्मीद नहीं थी कि तुम वालंटियर को सिखा-पढ़कर मेरे पास लाओगे।"

"मैं क्या करता... मुझे जानना था कि तुम क्या कर रहे हो और क्यों तुम्हें इतने वालंटियर लग रहे है। हम दो दर्जन से ज्यादा लोगों को समय यात्रा पर भेज चुके है।" सहस्त्रबाहु परेशान होता हुआ बोला।

"धीरज रखों मेरे दोस्त! मैंने तुम्हें बार-बार कहा है कि सही समय आने पर सब बताऊँगा। इंतज़ार करो!" कहते हुए डॉ० रामावल्ली ने अपना सिगार ऐश ट्रे में लगा दिया।

€ ¥ Ω £ §

-समय सापेक्ष है, लेकिन उसमें छेद कर सकते है।

(5)

फूस की झोपड़ियाँ

1943, एक अनजान जगह। भर दुपहरी का वक़्त

इरफ़ान द्वारा घड़ी जैसी दिखने वाली टाइम मशीन का बटन दबाते ही भविष्य की दुनिया से आए दोनों प्राणी एक बंजर भूमि पर प्रकट हुए। उन्हें सबसे पहले उबकाई सी आई। कुछ सैकंड बीतने पर जावेद उलटी करने लगा। इरफ़ान ने खुद को सम्भाल लिया, लेकिन वो अपनी खाँसी न रोक पाया। दोनों अपने घुटनों के बल बैठे बंजर जमीन पर झुके हुए थे।बंजर भूमि पर जावेद की उलटी बहुत अजीब लग रही थी।

“ये साला अच्छी झंझट है! तुम ठीक हो?” इरफ़ान थूकते हुए बोला और जावेद की पीठ पर हाथ फेरने लगा।उलटी करते हुए जावेद की आँखों में पानी आ गया था। उसे खुद पर नियंत्रण पाने में दो मिनट लगे।

“तुमने घड़ी का बटन क्यों दबाया?” जावेद ने इरफ़ान का हाथ एक और करते हुए पूछा।

“क्या नहीं दबाना था?” इरफ़ान ने जावेद को बैसाखी पकड़ने में मदद की।

“हाँ, नहीं दबाना था।” जावेद खड़ा होते हुए बोला।

“क्या बात कर रहे हो? तुम्हारे दद्दू ने गोली चला ही दी थी। शुक्र मनाओ बच गए हम।”इरफ़ान व्यंग करते हुए बोला।

“अब हम मेरे परदादा को कैसे ढूँढेंगे?” जावेद ने प्रश्न किया।

“तुम्हारे पास अपने पुरखों की लिस्ट है, है न? ढूँढ लेंगे।” इरफ़ान बेपरवाह-सा होते हुए बोला।

“तुम जानते हो, लिस्ट हमें कहाँ तक ले जाएगी।अब्दुल रहमान रजा शेख के बाद हम रजा सुलतान तारिक शेख तक जा सकते है। अगर हमने मेरी पीढ़ियों की कड़ी का पीछा नहीं किया तो शायद हम कभी नहीं जान पाएँगे कि मेरे खानदान में ये बीमारी कब शुरू हुई थी।”

“बात तुम्हारी सही है, जावेद मियाँ। लेकिन तुम्हें इल्म होना चाहिए कि अगर हमने एक भी गलत कदम उठा लिया तो ये समय चक्र हमें भारी पड़ेगा। इसलिए तुम्हें समझ लेना चाहिए कि हालात को देखते हुए हमें तुरंत निर्णय भी लेने पड़ेंगे।” इरफ़ान जावेद को समझाने लगा।

“मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ, इरफ़ान। लेकिन तुम कोई भी निर्णय लेने से

पहले ये सोच लेना कि किसी छोटी-सी गलती के कारण हमें भटकना न पड़े। मिस्बा और अम्मी मेरा इंतज़ार कर रही होगी।"

"भाभीजान और अम्मी की चिंता मुझे है, जावेद मियाँ। तुम फिक्रमंद मत हो, हम अपना काम करके ही घर जाएँगे। ये बताओ हम है कहाँ?" इरफ़ान घड़ी की ओर देखने लगा। जावेद ने अपनी कमीज की आस्तीन ऊँची की और टाइम मशीन के डायल में समय और स्थान देखने लगा।

"हम बंगाल में है, इरफ़ान। राजशाही में। सन् 1943 चल रहा है।" जावेद बताने लगा।

"राजशाही,बंगाल में! हमें तो उत्तर प्रदेश में लैंड होना था?" इरफ़ान हैरान हुआ।

"तुमने जगह का नाम डालने का मौका ही नहीं दिया। क्या वापस चले?"

"मेरे ख़याल से हमारे मुकाम तक का रास्ता ज़्यादा लम्बा नहीं है। ज़रा देखों कितने कोस का फासला है?" इरफ़ान घड़ी देखने को कहने लगा। जावेद ने फिर से घड़ी में कुछ बटन दबाएँ। घड़ी में नक्शा और उसके मार्ग को दिखाती रेखा प्रकट हो गई।

"नब्बे कोस से थोड़ा कम।" जावेद ने घड़ी में देखते हुए कहा।

"मतलब कोई साधन मिल जाएँ तो दो रोज़ में पहुँचा जा सकता है।" इरफ़ान अंदाज़ लगाते हुए बोला।

"तुम देर करवाना चाहते हो?"

"इसमें देरी कैसी? तुम्हें कंधे पर घाव है और ठीक से आराम भी नहीं मिला है। मैं सोचता हूँ कि आज कहीं आराम कर लेना ठीक होगा।"

इरफ़ान के कहने पर जावेद अपने कंधे को देखने लगा। फिर एक पल रूककर उसने कहा,"ठीक है! आज कहीं रूक जाते है।"

जावेद के यह कहते ही इरफ़ान ने उसे सहारा दिया और वे दोनों बंजर भूमि पर आगे बढ़ने लगे। कुछ देर बाद इरफ़ान ने जावेद से कहा,

"डॉक्टर की ये टाइम मशीन, है बहुत कमाल की। किसी भी भीड़-भाड़ वाली

जगह पर लैण्ड नहीं करवाती है। सोचों अगर हम उससे 2006 में मिले होते तो क्या होता? जब सहस्त्रबाहु उससे मिला था, ये टाइम मशीन कंस्ट्रक्शन मोड में थी। अगर हमने इसे उसी मोड में चुराया लिया होता या डॉक्टर ने टाइम मशीन में बदलाव न किये होते तो शायद हम गायब होकर किसी अँगरेज़, जमीदार या महाराजा की शाही सवारी में टपक पड़ते। शायद हाथी के पैरों के पास, या घोड़ों और ऊँटों के झुण्ड में।" इरफ़ान की अजीब कल्पना पर जावेद हँसने लगा।

"या हम प्रकट होते किसी कारावास में। स्वतंत्रा सेनानियों या बागियों के बीच, हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए।"

"हा हा हा..." इरफ़ान भी हँसने लगा।

"यहाँ इतनी वीरानी क्यों छाई है?" जावेद ने गौर किया कि बहुत दूर तक देखने पर भी उन्हें कोई पेड़, झोपड़ी या इंसान दिखाई नहीं दे रहा था।

"हाँ, बड़ा अजीब लग रहा था। हवा में भी मायूसी की गंध आ रही है। प्यास अलग लग रही है।"

"प्यास तो मुझे भी बहुत लग रही है। उल्टी होने से गले में कुछ फँसा-फँसा सा लगता है,पर दूर-दूर तक यहाँ कोई कुआँ या तालाब नज़र नहीं आ रहा।"

"कुआँ-तालाब यहाँ कैसे होगा जावेद मियाँ! हम बंजर धरती पर बढ़ रहे है। मुझे नहीं लगता यहाँ दो-तीन कोस तक भी पानी मिलेगा। हमें उस टीले तक जाकर देखना होगा।" इरफ़ान ने दूर उठे हुए टीले की ओर इशारा किया।

फिर दोनों चलते रहे। करीब आधे घंटे बाद वे टीले तक पहुँचे। इरफ़ान टीले पर चढ़ा और उसे दूर कुछ फूस की झोपड़ियाँ दिखाई दी।

"कितना और चलना होगा?" जावेद हाँफते हुए दम लेने लगा।

"ज़्यादा नहीं! जितना चले है, उतना ही।" इरफ़ान नीचे उतर आया और खुद भी दम लेने लगा। उसके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ नज़र आ रही थी।

"क्या हुआ?" जावेद को थोड़ा अजीब लगा।

"साला वहाँ कोई दिख नहीं रहा हैं। पता नहीं कोई इंसान है भी या नहीं।" इरफ़ान हैरान होता हुए बोला।

“तुम कहो तो हम टाइम मशीन से सीधे पूर्णिया चलते है। मेरे परदादा हमें वहीं मिल जाएँगे।” जावेद का हाथ कलाई घड़ी यानी द रियल टाइम मशीन पर चला गया।

“नहीं! वहाँ तक चलकर देखते है। कोई नहीं हुआ तो भी आराम करने के लिए कुटिया तो मिलेगी। वहाँ कोई कुआँ भी होगा।”

“सूखा हुआ...।” जावेद ने व्यंगपूर्ण हँसी बिखेर दी।

कुछ देर विश्राम के बाद दोनों टीला पार करते हुए झोपड़ियों की ओर बढ़ने लगे। आस-पास केवल वीरानी और सूखी धरती थी। ऐसा लगता था, जैसी सूर्य देवता ने सब कुछ भस्म कर दिया था।

चालीस मिनट चलने के बाद वे फूस की झोपड़ियों के पास पहुँच गए। वहाँ कोई नहीं था। केवल गर्म हवाओं से फूस उड़ रहा था। इरफ़ान ने एक झोपड़ी के बाहर रुककर आवाज़ लगाई कि शायद अन्दर कोई हो और बाहर आ जाएँ, लेकिन अन्दर से कोई नहीं आया। तब इरफ़ान ने झोपड़ी के अन्दर झाँक कर देखा। झोपड़ी रिक्त पड़ी हुई थी।तब तक जावेद दूसरी झोंपड़ी की ओर बढ़ चुका था। उसने भी भीतर झाँका, उसे भी नीरवता के दर्शन हुए। फिर इरफ़ान अन्य झोपड़ियों की ओर बढ़ गया।

“मुझे नहीं लगता यहाँ कोई है, इरफ़ान! हमें चलना चाहिए।” जावेद ने इरफ़ान को रोकते हुए कहा।

“हाँ, मैं भी यहीं सोच रहा था। लेकिन एक-दो झोपड़ियों में और देख लेता हूँ।” इरफ़ान जल्दी-जल्दी से झोपड़ियों में झाँकने लगा।कुछ और झोपड़ियों में देखने के बाद अचानक उसके पैर ठिठक गए। एक झोपड़ी में कंकाल नुमा दो बच्चे जमीन पर अंतिम साँसें गिन रहे थे। ऊपर चारपाई पर एक अर्धनंग व्यक्ति लेटा था। उसकी छातियों में से भी हड्डियाँ बाहर झाँक रही थी। वो केवल अस्थि-पंजर का ढाँचा-सा ही था, जिसमें प्राण शेष थे या नहीं, एकदम से कहना मुश्किल था।

“क्या हुआ इरफ़ान?” जावेद ने इरफ़ान को सहमा हुआ देख पूछा।

“यहाँ कोई है!” इरफ़ान ने जावेद को पास आने को कहा।

जावेद अपनी बैसाखी के सहारे झोपड़ी के द्वार पर पहुँचा। फिर उसने जो

देखा उससे वो विचलित हो गया।

"ये कौन है इरफ़ान?" जावेद ने पूछा।

"मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था।" इरफ़ान बड़बड़ाया।

"क्या समझ जाना चाहिए था?" जावेद को समझ नहीं आया।

"बंगाल में दुर्भिक्ष पड़ा है, जावेद मियाँ! 1943 का दुर्भिक्ष। दो करोड़ से ज्यादा लोग भूख से मरे थे उसमें।" इरफ़ान ने बताया।

"ये क्या कह रहे हो?" जावेद हैरानी से इरफ़ान तो कभी झोपड़ी के भीतर पड़े हड्डी-हड्डी व्यक्ति और उसके बच्चों को देखने लगा।

इरफ़ान आगे बढ़ा और बच्चों के माथे छूते हुए शरीर का ताप जाँचने लगा। बच्चे बाहर की गर्मी से ज़्यादा तप रहे थे। फिर वह खाट पर पड़े व्यक्ति के पास गया और उसके शरीर का ताप देखा। वह भी अपने बच्चों की तरह बेसुध था।

"क्या हम इनकी मदद कर पाएँगे?" जावेद झोपड़ी के बाहर पड़े मिट्टी के बर्तनों में पानी देखने लगा। वे खाली थे। एक बर्तन झोपड़ी के भीतर भी रखा था, पर वो भी रिक्त ही था।

"मेरे ख़याल से हमें चलना चाहिए।" इरफ़ान मायूस होता हुआ बोला।

"इन्हें इस हालत में छोड़कर जाएँगे?" जावेद इरफ़ान को देखने लगा।

"हम इनकी कोई मदद नहीं कर पाएँगे जावेद मियाँ!" इरफ़ान चारपाई से दूर हटते हुए बोला।

"लेकिन क्यों?" जावेद ने पूछा।

"अन्न समझते हो न? इन लोगों के पेट में कई दिनों से अन्न का एक कण नहीं गया है। ये जिन्दा लाशें है जावेद मियाँ। पता नहीं अब तक कैसे जिन्दा है। अल्लाह बहुत बेरहम है।" इरफ़ान भावुक हो गया।

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? ये नामुमकिन है!" जावेद के प्रश्न रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

"दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं है जावेद मियाँ। लेकिन यहाँ जो हालत बने है, वो सब अंग्रेजों की नीतियों के चलते हुआ है।" इरफ़ान जावेद को इतिहास के तथ्य बातना चाह रहा था कि खाट पर लेटे व्यक्ति में थोड़ी हलचल हुई। वह बेहोशी की हालत में कुछ बड़बड़ाने लगा। दोनों समय यात्रियों ने सुना कि व्यक्ति किसी का नाम पुकार रहा था। दोनों खाट के पास गए। इरफ़ान उसके मुँह के पास कान लगाकर सुनने लगा। जावेद व्यक्ति के सिर पर हाथ फेरने लगा।

व्यक्ति कुछ कह रहा था, लेकिन उसके शब्द अस्पष्ट थे।

“किसे पुकार रहे हो मियाँ?” इरफ़ान ने व्यक्ति को होश में लाने की कोशिश की, लेकिन व्यक्ति बेसुध हो गया।

जावेद से फूस की झोपड़ी में मौत का मंजर देखा नहीं गया। वह झोपड़ी से बाहर निकल आया। उसके पीछे इरफ़ान भी आ गया।

“क्या हुआ मियाँ? बाहर क्यों आ गए?” इरफ़ान भी व्याकुल था। उसने जावेद को रोकते हुए कहा।

“अन्दर रहकर भी क्या हासिल होगा, इरफ़ान? जबकि हम कुछ नहीं कर सकते।” जावेद वितृष्णा से बोला।

“तुम क्या करना चाहते हो?” इरफ़ान ने सोचते हुए पूछा।

“मदद! मदद इरफ़ान, मदद! हम इनकी मदद क्यों नहीं कर सकते?” जावेद ने पलटकर जवाब दिया।

“क्योंकि हम किसी की मदद करने नहीं आए है, मियाँ? मत भूलों ये इतिहास है। बीत चुका है। थोड़ी-सी भी छेड़छाड़ हम पर भारी पड़ सकती है।”

“ये अनुमान है, इरफ़ान!”

“अनुमान नहीं है, जावेद मियाँ। शायद तुमने डॉ० रामावल्ली की आँखें ठीक से नहीं पढ़ी थी। द रियल टाइम मशीन का आविष्कारक होने के बावजूद उसके चेहरे पर मायूसी थी। उसका अजीब ढंग से बात करना, छोटी से छोटी बात को बार-बार समझाना, हमेशा सिगार होठों में दबाकर फूँकना... ऐसा लगता था कि वह कुछ बदलना चाहता हैं, लेकिन बदल नहीं पाया हैं। सहस्त्रबाहु ने भी हमसे बहुत कुछ छिपाया है। उसने हमें वालंटियर बनाकर अपना ही काम साधा है।” इरफ़ान पुरानी बातें बताने लगा।

“मैं सहस्त्रबाहु पर शक नहीं कर सकता। आज उसकी वजह से हम मेरे परिवार के इतिहास को देख पा रहे है। लेकिन...” कहते हुए जावेद झोपड़ी की ओर देखने लगा।

“लेकिन क्या?” इरफ़ान जावेद को झोपड़ी की ओर देखते हुए खुद भी उस

ओर देखने लगा।

"मैं इन्हें देखकर अपना दुःख भूल गया हूँ, इरफ़ान।" जावेद झोपड़ी के प्राणियों के बारे में सोचते हुए बोला।

"ओह! अब समझा। हमदर्दी उमड़ आई है। याद है, मैं तुमसे कहता था, कि हम तुम्हारी औलाद को पालेंगे और उसे भरपूर मोहब्बत देंगे। फिर चाहे वो कैसी भी हो? लेकिन तुम कहते थे, नहीं! नहीं इरफ़ान! मैं अपनी औलाद को अपाहिज के रूप में नहीं देख सकता।" इरफ़ान झोपड़ी को देखते हुए कहने लगा, "अन्दर... झोपड़ी में दुनियाँ की केवल एक हकीकत है, जावेद मियाँ। तुम जानते हो, इससे भी बद्तर मंज़र भविष्य और इतिहास में हो चुके है।अभी हमें बहुत कुछ देखना बाकी है। आओ चलें। हम सीधे रजा सुलतान तारिक शेख के पास चलते है।"

"हम्म... यही ठीक रहेगा।" मायूसी से निजात पाने की कोशिश करते हुए जावेद अपनी कलाई पर बंधी घड़ी में समय और स्थान डालने लगा। इरफ़ान ने समय यात्रा में आगे बढ़ने के लिए उसका हाथ थाम लिया।

लेकिन अभी जावेद टाइम मशीन का बटन दबाता कि उसने देखा, एक कृशकाय और फटेहाल महिला लड़खड़ाते-झूमते, बेसुधी की हालत में कहीं से झोपडी तक आई। उसके हाथ में जलती हुई मशाल थी। उसने नशा नहीं किया था। शायद उसके शरीर में भी जान नहीं थी। जो थी, वह उसने मशाल को थामकर रखने में लगा दी थी। उसने भेदती नज़रों से दोनों को देखा, लेकिन वह कुछ समझ नहीं पाई। उसके शरीर की कमजोरी और उसकी लाचारी, उसे कुछ भी समझने का मौका नहीं देना चाहती थी। उसने जावेद और इरफ़ान को देखते हुए एक-एक कर सभी झोपड़ियों में आग लगा दी और अंत में खुद उस झोपड़ी में घूस गई जिसमें तीन जिन्दा लाशें अपने वक़्त का इंतज़ार कर रही थी। क्षण मात्र में झोपड़ियाँ धधक उठी।

ये सब इतनी जल्दी हुआ कि इरफ़ान और जावेद को प्रतिक्रिया दिखाने का मौका ही नहीं मिला। टाइम मशीन का बटन दब चुका था। अदृश्य होते हुए दोनों के कानों में उस महिला के विलाप और रुदन का स्वर गूँजता रहा गया।

“हे ईश्वर! हमें मुक्ति दे।”

€ ¥ Ω £ §

-समय गुरुत्वाकर्षण के नियमों पर कार्य करता है।

(6)

वे बड़े बदनसीब लोग है

1942, पद्मा नदी का किनारा, राजशाही, बंगाल

फूस की जलती झोपड़ियों को देखते हुए, जावेद और इरफ़ान रेतीले तट पर प्रकट हुए। फटेहाल स्त्री को आत्मदाह करते देख, जावेद के मन में भावनाओं का ज्वार उमड़ आया था।

समय यात्रा का वह छोटा-सा अंतराल उसे साल जितना बड़ा लगा। और उस छोटे से अंतराल में वह अपने जीवन की तुलना आत्मदाह करने वाली स्त्री के जीवन से करने लगा था। वह सोचने लगा कि उसका दुःख उस स्त्री और उसके परिवार के दुःख के आगे कुछ भी नहीं है। उसका दिल उस स्त्री के लिए रोने को हो रहा था। इसलिए जैसे ही दोनों नियत स्थान पर प्रकट हुए, जावेद उलटी करते हुए अपने ज़ज्बातों को दबाने की कोशिश करने लगा, लेकिन दबा न पाया। उसे और ज्यादा उल्टी हुई। उसकी बैसाखी उसके हाथ से छूटकर एक ओर गिर गई थी। पैर रेत में जम से गए ।वह आगे की ओर झुका और समय यात्रा के प्रभाव को बाहर निकलने का रास्ता देने लगा। वह लगातार खाँस रहा था।

इरफ़ान का जी भी अकुला रहा था। वह जावेद से एक फासलें पर घुटनों के बल बैठा था। लेकिन उसे नहीं मालूम था कि जावेद अपनी भावनाओं के अंतर्विरोधों से जूझ रहा हैं। उसे ये कुछ पल बीतने पर पता चला, जब गला साफ़ करते हुए उसने जावेद को देखा। उसने जमीन पर थूकते हुए गला साफ़ किया और जावेद के पास आ गया। उस समय नदी के तट पर उन दोनों के सिवा कोई इंसान नहीं था।

“क्या हुआ मियाँ? तुम ठीक तो हो? समय यात्रा का ये लक्षण बहुत ही बुरा है। गला बार-बार साफ़ करते हुए छिल सा गया है।” इरफ़ान अपनी बात पूरी करता कि उसने देखा जावेद की आँखों से आँसू निकल रहे थे।

वह रो रहा था।

“अरे! ये क्या? तुम रो रहे हो? इरफ़ान हैरानी से जावेद को देखने लगा। उसने जावेद की पीठ पर हाथ फेरा।

-समय गुरुत्वाकर्षण के नियमों पर कार्य करता है।

(6)

वे बड़े बदनसीब लोग है

1942, पद्मा नदी का किनारा, राजशाही, बंगाल

फूस की जलती झोपड़ियों को देखते हुए, जावेद और इरफ़ान रेतीले तट पर प्रकट हुए। फटेहाल स्त्री को आत्मदाह करते देख, जावेद के मन में भावनाओं का ज्वार उमड़ आया था।

समय यात्रा का वह छोटा-सा अंतराल उसे साल जितना बड़ा लगा। और उस छोटे से अंतराल में वह अपने जीवन की तुलना आत्मदाह करने वाली स्त्री के जीवन से करने लगा था। वह सोचने लगा कि उसका दुःख उस स्त्री और उसके परिवार के दुःख के आगे कुछ भी नहीं है। उसका दिल उस स्त्री के लिए रोने को हो रहा था। इसलिए जैसे ही दोनों नियत स्थान पर प्रकट हुए, जावेद उलटी करते हुए अपने ज़ज्बातों को दबाने की कोशिश करने लगा, लेकिन दबा न पाया। उसे और ज्यादा उल्टी हुई। उसकी बैसाखी उसके हाथ से छूटकर एक ओर गिर गई थी। पैर रेत में जम से गए ।वह आगे की ओर झुका और समय यात्रा के प्रभाव को बाहर निकलने का रास्ता देने लगा। वह लगातार खाँस रहा था।

इरफ़ान का जी भी अकुला रहा था। वह जावेद से एक फासलें पर घुटनों के बल बैठा था। लेकिन उसे नहीं मालूम था कि जावेद अपनी भावनाओं के अंतर्विरोधों से जूझ रहा हैं। उसे ये कुछ पल बीतने पर पता चला, जब गला साफ़ करते हुए उसने जावेद को देखा। उसने जमीन पर थूकते हुए गला साफ़ किया और जावेद के पास आ गया। उस समय नदी के तट पर उन दोनों के सिवा कोई इंसान नहीं था।

“क्या हुआ मियाँ? तुम ठीक तो हो? समय यात्रा का ये लक्षण बहुत ही बुरा है। गला बार-बार साफ़ करते हुए छिल सा गया है।” इरफ़ान अपनी बात पूरी करता कि उसने देखा जावेद की आँखों से आँसू निकल रहे थे।

वह रो रहा था।

“अरे! ये क्या? तुम रो रहे हो? इरफ़ान हैरानी से जावेद को देखने लगा। उसने जावेद की पीठ पर हाथ फेरा।

“क्या हम उन्हें नहीं बचा सकते थे? क्या हम उनकी कोई मदद नहीं कर सकते थे?” जावेद ने सुबकते हुए पूछा। वह फिर से वही बात दोहराने लगा जो उसने पहले भी दोहराई थी।

“यार मियाँ! अब तुमको कैसे समझाएँ। तुम कोई छोटे बच्चे हो जो एक ही बात का रट्टा लगाने लगते हो।” इरफ़ान भी बीती घटना के बारे में सोचकर सदमे में था, लेकिन इतना नहीं कि वो उससे प्रभावित होता। वह दृढ होकर बोला, “तुम बेवजह ज़ज्बाती हो रहे हो! हमें ऐसा बहुत कुछ देखना और झेलना होगा। बेहतर होगा, तुम आगे होने वाली घटनाओं के लिए पहले से खुद को तैयार कर लो।”

“लेकिन इरफ़ान...” जावेद कुछ कहता कि इरफ़ान ने उसकी बैसाखी उठाते हुए उससे कहा।

“लेकिन-वेकिन के बारे में सोचने से कुछ नहीं होगा, जावेद मियाँ। हम इतिहास बदलने नहीं निकले है और हमें पता भी नहीं है कि हमें ये करना भी चाहिए या नहीं? टाइम मशीन चुराते समय डॉ. रामावल्ली ने चेतावनी दी थी।” इरफ़ान जावेद को समझाने लगा।

“हाँ, लेकिन उस स्त्री ने सबके साथ खुद को क्यों जला लिया, इरफ़ान? कोई माँ अपने बच्चों को कैसे आग में झोंक सकती है? कोई बीवी अपने शौहर को कैसे जिन्दा जला सकती है?” जावेद उस स्त्री के बारें में सोचकर परेशान था।

“मजबूरियाँ और परिस्थितियाँ इंसान से कुछ भी करवा लेती है, मियाँ। शायद उस अबला के पास कोई और चारा नहीं था। जाने कितने दिनों से भूखें और प्यासे थे। गाँव छोड़कर जाने का साधन भी न होगा। कौन जाने क्या हालात रहे होंगे? तुमने देखा न, कैसी दुर्दशा थी गाँव की? दूर तक बंजर जमीन और पत्थरों के सिवा कुछ न था। नदी-तालाब और कुएँ सूखे पड़े थे। एक परिंदा भी वहाँ नज़र नहीं आ रहा था।”

“उस स्त्री और उसके परिवार ने मुझे बहुत बैचेन कर दिया है इरफ़ान। उनके दुःख के आगे मेरा दुःख है ही कितना बड़ा? चलो फिर से लौट चलते है। नहीं करना मुझे अपनी पीढ़ियों की पड़ताल!” जावेद ने आँसू पोंछते हुए कहा।

उसको नकारात्मक बातें करते देख एक पल को इरफ़ान मुस्कुराने लगा। फिर

उसने कहा, “जावेद मियाँ! ये तुम कैसी नामुमकिन बातें कह रहे हो? याद करो, तुमने अपने वंशवृक्ष की जड़ों तक को खोज निकालने के लिए कितने जतन किये थे? जिसके कारण आज हमें समय यात्रा का ये अनुभव मिल रहा है। मानता हूँ, इसमें पत्रकार सहस्त्रबाहु का बहुत बड़ा हाथ है, लेकिन हमें वो भी नहीं मिलता अगर हम तुम्हारें लिए अस्पताल दर अस्पताल, दरगाह दर दरगाह और जाने कहाँ-कहाँ नहीं भटके होते।”

“ये अनुभव मेरे जतन के कारण नहीं इरफ़ान, उस फ़क़ीर के कारण मिल रहा है जिससे हम मिलने गए थे।”जावेद याद करते हुए बताने लगा।

“वो फ़क़ीर! अरे! उसका तो नाम भी मत लों, मियाँ! पता होता कि उसकी सलाह और सहस्त्रबाहु से मुलाक़ात को लेकर तुम इतने संजीदा हो जाओगे तो मैं तुम्हारे साथ उसके पास जाता ही नहीं। खैर! ये भी सच है कि आज हम उनकी वजह से यहाँ तक पहुँचे है। अगर वो नहीं कहता कि अतीत में जा सको तो हो सकेगा, तो हम पता नहीं क्या कर रहे होते? शायद तुम अपने वालिद के नक़्शेकदम पर चलें जाते। फिर तुम्हारें पीछे मेरी भाभीजान छाती पीटती रह जाती।”

“नहीं, ये तुम सच नहीं कह रहे हो! मैं मिस्बा को छोड़कर कहीं नहीं जाता।” जावेद इरफ़ान की बात से मुकर गया।

“अरे जाओ मियाँ! मुझे मालूम है,तुम क्या चीज़ हो। तुम भाभीजान को चला सकते हो, मुझे नहीं।” इरफ़ान हँसने लगा।

“नहीं, मैं घर छोड़कर नहीं जाता। मैं मिस्बा से बहुत प्यार करता हूँ।” जावेद ने अपनी बात दोहराई।

“मैं नहीं मानता। पर हाँ, ये ज़रूर कहूँगा कि भाभी जान तुमसे बहुत प्यार करती है। उन्हें हरदम तुम्हारी परवाह रहती है।”

“तुम्हारे कहने का मतलब है कि मुझे मिस्बा की परवाह कम रहती है?” जावेद ने पूछा।

“हाँ!” कहते हुए इरफ़ान ने जावेद को बैसाखी थमा दी और उठते हुए बहती सलिला के पास जाकर मुँह धोकर कुल्ला करने लगा। अब नदी में दूर कुछ मछुआरें अपनी लम्बी नावों में आते दिख रहे थे।

“हाँ!” जावेद सोचते हुए उठा, “मेरे प्यार में कमी बताने की वजह?” वह इरफ़ान के पास आकर बैठ गया और मुँह धोने लगा। उसने एक नज़र अपने कंधे पर बंधी पट्टी पर भी डाली।

“वजह! वजह ये है मियाँ कि तुमने भाभी जान को बच्चा गिरा देने की बात

बोली।” इरफ़ान संजीदा हो गया। इरफ़ान की इस बात पर जावेद शर्मिंदा हो गया।

“मिस्बा को वो कहना मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती थी।”

“मतलब मानते हो कि वो तुम्हें ज़्यादा प्यार करती है?” इरफ़ान ने दोनों हाथ को रगड़ते हुए चेहरे पर फेरा और दो पल के लिए अल्लाह का नाम लिया।

“मैं भी उससे उतना ही प्यार करता हूँ, जितना वो करती है।” अब जावेद अल्लाह को याद करने लगा।

“अल्लाह को याद करते समय झूठ नहीं बोलते मियाँ! तुम्हारी ख़ुशी के लिए अपना बच्चा गिराने को तैयार हो गई थी, वो!”

“छोड़ो इरफ़ान! कहाँ पुरानी बात लेकर बैठ गए। वैसा हुआ तो नहीं न?”

“नहीं हुआ, लेकिन हो जाता। अगर मैं तुम्हें नहीं समझाता। वैसे मुझे आशंका है कि अगर हमें समय यात्रा में कोई कामयाबी हाथ नहीं लगी तो तुम भाभी जान को अकेला छोड़कर चले जाओगे या फिर अपनी औलाद से ज़िन्दगी भर रूखेपन से पेश आओगे।”

“ऐसा कुछ नहीं होगा, इरफ़ान! मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ।” जावेद इरफ़ान का भरोसा रखने के लिए कहने लगा, लेकिन इरफ़ान को कोई बात परेशान कर रही थी।

“मुझे यकीन दिलाने से कुछ नहीं होगा, जावेद मियाँ! ये यकीन तुम भाभी जान को दिलाना। और हो सके तो लौटने पर उन्हें ये भी बता देना कि तुम्हारी एक और औलाद कहीं पनप रही है।” इरफ़ान के ये बात सुनते ही जावेद थोड़ा अफ़सोस जताते हुए सोच में पड़ गया।

दो पल मौन रहने के बाद वो बोला, “मैं बता दूँगा, इरफ़ान!”

“बहुत खूब! मैं यही सुनना चाहता था। तो हम कहाँ है और किधर चलना है, हमें? वैसे तुम्हारा गोली का घाव कैसा हैं?”

“मैं ठीक हूँ!” कहते हुए जावेद घड़ी में देखने लगा। फिर बोला, “हम पद्मा नदी के किनारे है। रजा सुलतान तारिक शेख का घर नदी के उस पार है। हमें नाव में जाना होगा।”

“हम पद्मा नदी के किनारे है!” इरफ़ान नदी को देखने लगा। उसकी आँखों में चमक आ गई। जावेद थोड़ा हैरान हुआ।

“इतना चौंक क्यों रहे हो?” जावेद ने पूछा।

“मियाँ! ये गंगा है। गंगा की मुख्य धारा। बांगलादेश में प्रवेश करते ही पद्मा के नाम से जानी जाती हैं। मुर्शिदाबाद, बहरमपुर, नदिया, हुगली और कलकत्ता

से होती हुई पश्चिम-दक्षिण की ओर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।"

"मुझे इतनी जानकारी नहीं हैं। मैंने आईएएस की तैयारी नहीं की थी।"

"तो क्या हो गया? मैं बता रहा हूँ न।" इरफ़ान नदी को देखता रह गया।

"क्या हम चलें? मेरे ख्याल से वो नाव इधर ही आ रही है।" जावेद एक लम्बी नाव को तट पर लगता देख बोला।

"हाँ चलों, चलते है। पता नहीं कितना आने माँगेगा? अच्छा हुआ दिल्ली में हमने कुछ पैसे जोड़ लिए।" इरफ़ान नदी को देखते हुए आगे बढ़ने लगा।

"मेरी शादी की अँगूठी बेचना पड़ी थी।" जावेद ने अपनी बैसाखी थाम ली। उसका नकली पैर पायजामे के नीचे ढका हुआ था।

कुछ ही देर में वे नाविक से बात कर रहे थे। उसने पाँच-सात सवारियों को उतारा था।

"अस्सलावलेकुम मियाँ!" इरफ़ान ने नाविक का इस्तकबाल किया।

"वलेकुमअस्स्लाम!" नाविक ने प्रयुत्तर में कहा। वह एक वृद्ध, किन्तु हट्टा-कट्टा, मजबूत और स्वस्थ्य व्यक्ति था। वह एक मुस्लिम था।

"उस पार जाने के लिए कितना देना होगा?" इरफ़ान ने पूछा।

"दो आना किराया है, मियाँ! वैसे यहाँ नये दिख रहे हो। क्या दूर से आए है?" नाविक ने दोनों पर नज़र डालते हुए पूछा।

"हाँ, दिल्ली से आ रहे है। देश घुमने निकले है।" इरफ़ान ने बताया।

"दिल्ली से!" नाविक की आँखों में चमक आ गई, "लीग से जुड़े हैं?" उसने आगे पूछा।

"लीग से?" इरफ़ान एकदम समझ नहीं पाया। उसने प्रश्नसूचक भाव से जावेद को देखा।

"सुना है, जिन्ना साहब और कांग्रेस के बीच दूरियाँ बहुत बढ़ गई है।" नाविक ने अपनी बात जारी रखी, "गांधीजी, दूरियाँ पाटने की हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं।"

"शायद आप गलत समझ रहे है, लेकिन हम लीग से जुड़े बन्दे नहीं हैं।"जावेद ने नाविक की बात बीच में काटते हुए कहा।

"अच्छा! फिर मैं माफ़ी चाहूँगा। लेकिन लगता है, लीग मुसलमानों के लिए अलग देश बनवाकर ही रहेगी।" नाविक ने पतवार दूसरे हाथ में ले लिया।

"सौ टका सच बात है। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान अलग होकर रहेंगे। अच्छा क्या हम नाव में चढ़ जाएँ?" इरफ़ान ने कहा। उसका यह कहना नाव से उतर

चुकी एक सवारी ने सुना। उसे इरफ़ान की बात पसंद नहीं आई। वह इरफ़ान को घूरते हुए चला गया।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं!" नाविक ने पतवार एक ओर करते हुए जावेद और इरफ़ान को नाव में चढ़ने में मदद की।

"कुछ और सवारी आने तक रुकना होगा। वैसे उस पार किसके घर जाना है?" नाविक ने समय काटने के लिए पूछा।

"रजा सुल्तान शेख के घर जाना है।" जावेद ने नाविक को बताया।

"उस अपाहिज के घर!" नाविक के मुँह से निकल पड़ा।

"आप उसे जानते है?" जावेद के मन में उसके परदादा के पिता के बारें में जानने की इच्छा पैदा हुई।

"राजशाही में उस खानदान को भला कौन नहीं जानता। वे बड़े बदनसीब लोग है। खुदा उन पर रहम करें। रजा अपंग है। बेचारे का एक हाथ और एक पैर नहीं है। उसका बाप सुलतान कभी मेरा दोस्त हुआ करता था। वो दोनों पैरों से लाचार था। मेरे अब्बाजान बताते थे कि उनके खानदान में कभी कोई लड़की पैदा नहीं होती। सब लड़के होते है। वो भी अपंग या अपाहिज। जाने खुदा का कौन-सा कहर इस खानदान पर टूटा है।" कहते हुए नाविक मायूस सा हो गया।

"मतलब आप राजशाही के पुराने लोगों में से है?" इरफ़ान ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"हाँ, एक तरह से कह सकते है, लेकिन मेरा परिवार यहाँ का मूल निवासी नहीं है। मेरे पूर्वज, बताते है अफगानिस्तान से थे।" अपने बारे में पूछे जाने पर नाविक के चेहरे पर मुस्कान आ गई और वो किसी कल्पना में खोने लगा।

"और रजा सुलतान के पूर्वज?" अब जावेद अपने पूर्वजों के बारें में जानना चाहता था। क्योंकि उसके पास अपने खानदान के इतिहास के बारें में ज्यादा जानकारी नहीं थी।

"उनके पूर्वज? मेरे अब्बाजान बताते थे,कि राजशाही में कई मुसलमान एक साथ बसाये गए थे। हमारा और रजा का परिवार उनमें से एक था। लेकिन इसके बारें में आपको रजा से बात कर तसल्ली कर नहीं चाहिए।" नाविक ये बता ही

रहा था कि कुछ सवारियाँ आती हुई नज़र आई। नाविक ने उन्हें नाव पर चढ़ाया और फिर नाव पद्मा नदी की धारा के विपरीत बढ़ने लगी।

€¥Ω£§

-समय के ज्ञान के लिए परिवर्तन पर नज़र जरुरी है।

(7)
रिसर्च अधूरी है

सन् 2012, जोधपुर स्थित एक सरकारी बंगला।

पत्रकार सहस्त्रबाहु, वैज्ञानिक डॉ० रामावल्ली के पास सौफ़े पर बैठा था। डॉक्टर अपना दूसरा सिगार सुलगा रहा था। इस बार टेबल पर दो मोबाईल के साथ महँगी शराब की बोतल भी रखी थी, जो कुछ देर पहले ही डॉ० एन० रामावल्ली ने अपने बंगले के किसी कोने में बनाएँ छोटे से बार से निकालकर रखी थी। सहस्त्रबाहु की आँखें उस महँगी और पुरानी शराब को देखकर चमत्कृत थीं। वह अपना गिलास जल्द से जल्द भरने से खुद को रोक न पाया। डॉ० रामावल्ली ने अपना गिलास भरकर टेबल पर ही रख दिया था। उसके होंठों में सिगार दबा हुआ था।

दोनों बहुत देर से बैठे जावेद और इरफ़ान के विषय पर चर्चा कर रहे थे।

"तुम्हारी पुरानी टाइम मशीन कहाँ है?" सहस्त्रबाहु ने गिलास होंठो से लगाते हुए पूछा।

"वो! वो रखी हुई है। किसी सुरक्षित जगह पर, जहाँ से तुम जैसे चोर उसे चुरा न सके।" डॉ० रामावल्ली ने व्यंगपूर्ण हँसी हँसते हुए सहस्त्रबाहु को देखा।

"उससे हम दोनों को वापस ला सकते है।" चोर कहने पर जैसे सहस्त्रबाहु को कोई अंतर नहीं पड़ा।

"तुम्हें उस लंगड़े और उसके घमंडी दोस्त की इतनी फिक्र क्यों है?" डॉ० रामावल्ली बेपरवाह होकर बोला।

"दोनों दोस्त है, मेरे।" सहस्त्रबाहु जोर देकर बोला।

"कुछ दिन या एक सप्ताह साथ रहने से कोई दोस्त नहीं बन जाता। मैं जानता हूँ, तुम्हें उन दोनों से ज्यादा अपनी फिक्र है। वैसे टाइम मशीन चुराकर क्या करना चाहते थे तुम?" डॉ० रामावल्ली के मुख से ये बात सुनते ही सहस्त्रबाहु सचेत हो गया।

"मैंने जावेद की मदद करने के लिए ऐसा किया था।" सहस्त्रबाहु ने नपातुला जवाब देने की कोशिश की।

-समय के ज्ञान के लिए परिवर्तन पर नज़र जरुरी है।

(7)
रिसर्च अधूरी है

सन् 2012, जोधपुर स्थित एक सरकारी बंगला।

पत्रकार सहस्त्रबाहु, वैज्ञानिक डॉ॰ रामावल्ली के पास सौफ़े पर बैठा था। डॉक्टर अपना दूसरा सिगार सुलगा रहा था। इस बार टेबल पर दो मोबाईल के साथ महँगी शराब की बोतल भी रखी थी, जो कुछ देर पहले ही डॉ॰ एन॰ रामावल्ली ने अपने बंगले के किसी कोने में बनाएँ छोटे से बार से निकालकर रखी थी। सहस्त्रबाहु की आँखें उस महँगी और पुरानी शराब को देखकर चमत्कृत थीं। वह अपना गिलास जल्द से जल्द भरने से खुद को रोक न पाया। डॉ॰ रामावल्ली ने अपना गिलास भरकर टेबल पर ही रख दिया था। उसके होंठों में सिगार दबा हुआ था।

दोनों बहुत देर से बैठे जावेद और इरफ़ान के विषय पर चर्चा कर रहे थे।

“तुम्हारी पुरानी टाइम मशीन कहाँ है?” सहस्त्रबाहु ने गिलास होंठो से लगाते हुए पूछा।

“वो! वो रखी हुई है। किसी सुरक्षित जगह पर, जहाँ से तुम जैसे चोर उसे चुरा न सके।” डॉ॰ रामावल्ली ने व्यंगपूर्ण हँसी हँसते हुए सहस्त्रबाहु को देखा।

“उससे हम दोनों को वापस ला सकते है।” चोर कहने पर जैसे सहस्त्रबाहु को कोई अंतर नहीं पड़ा।

“तुम्हें उस लंगड़े और उसके घमंडी दोस्त की इतनी फिक्र क्यों है?” डॉ॰ रामावल्ली बेपरवाह होकर बोला।

“दोनों दोस्त है, मेरे।” सहस्त्रबाहु जोर देकर बोला।

“कुछ दिन या एक सप्ताह साथ रहने से कोई दोस्त नहीं बन जाता। मैं जानता हूँ, तुम्हें उन दोनों से ज्यादा अपनी फिक्र है। वैसे टाइम मशीन चुराकर क्या करना चाहते थे तुम?” डॉ॰ रामावल्ली के मुख से ये बात सुनते ही सहस्त्रबाहु सचेत हो गया।

“मैंने जावेद की मदद करने के लिए ऐसा किया था।” सहस्त्रबाहु ने नपातुला जवाब देने की कोशिश की।

“तुम बहुत झूठ बोलते हो। खैर! पत्रकारिता करने पर ये गुण कुछ अधिक विकसित हो ही जाता है। वैसे मैं जानता हूँ, तुम उन्हें धोखा देने वाले थे। ये तो उनकी किस्मत अच्छी थी कि टाइम मशीन पहले उनके हाथ लग गयी।”

“क्या तुम्हें मालूम था कि मैं तुम्हारी जासूसी कर रहा था?” सहस्त्रबाहु अनुमान लगाते हुए बोला।

सहस्त्रबाहु के ये कहते ही डॉ० रामावल्ली के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कान तैर गई। एक क्षण ठहरकर उसने होंठों से लगा जाम हटाया और बोला, “हाँ, मुझे कई साल पहले ही पता लग गया था कि तुम वापस आओगे और एक बार फिर मुझे धोखा देने की फिराक में रहोगे। लेकिन मैं ये भी जानता था कि इस बार वजह तुम्हारी जिज्ञासा बनेगी।”

डॉक्टर की ये बात सुनते ही सहस्त्रबाहु का चढ़ता हुआ नशा बीच में अटक गया। उसने जाम टेबल पर रख दिया और गौर से डॉ० रामावल्ली को देखते हुए कुछ सोचने लगा।

उसे गहरी सोच में जाता देख डॉ० रामावल्ली ने कमरे की शान्ति भंग करते हुए कहा, “सही सोच रहे हो। 2006 के गुर्जर आन्दोलन के बाद मैंने भविष्य देखा था।”

“इसका मतलब तुम्हें पता है, कब, कहाँ, क्या घटेगा?” सहस्त्रबाहु की आँखों में चमक आ गई।

“इस बात में कोई शक नहीं होना चाहिए।” डॉ० रामावल्ली ने शराब का गिलास उठाकर होंठों से लगाया। फिर सिगार मुँह में दबाते हुए धुआँ उगलने लगा।

“तुम क्या करना चाहते हो डॉक्टर? इतने वालंटियर क्यों लग रहे है तुम्हें?” सहस्त्रबाहु ने विचलित होते हुए पूछा।

“बता दूँगा सहस्त्रबाहु! सही समय आने दो। टाइम टनल बन जाने दो।” डॉक्टर ने एक और सिप लेते हुए कहा।

“मुझे जावेद की चिंता है। उसकी पत्नी और माँ परेशान होंगे। अगर वो कल तक घर नहीं पहुँचे तो।”

“वो दोनों कभी घर नहीं पहुँचेंगे, सहस्त्रबाहु! कम से कम अगले बाहर साल तक तो नहीं।” डॉ० रामावल्ली की ये बात सहस्त्रबाहु को हैरान कर गई।

“क्या कह रहे हो?” वो बुरी तरह से चौंक गया।

“यहीं सच है, लेकिन फिक्र मत करों। लंगड़ा जावेद अपनी हसीन बेगम से

ज़रूर मिलेगा। चूँकि मेरा प्रयोग पेचीदा है। इसलिए तुम्हें एकदम से कुछ समझ नहीं आएगा। पर अपने दिमाग पर जोर डालो तो शायद समझ भी जाओगे। देखो, समय का बिखरा हुआ जाल किसी मकड़ी के जाले से भी ज्यादा उलझा हुआ है। उसे सुलझाने के लिए मुझे वालंटियर चाहिए होंगें। ऐसे वालंटियर जो समय में लम्बी दूरी तक यात्रा कर सकें।”

“तो उससे क्या? मैं तुम्हें वालंटियर दे तो रहा हूँ।”

“हाँ, पर वो पर्याप्त नहीं होंगे। इसलिए मुझे कुछ लोगों को भविष्य में जाकर वालंटियर बनने के लिए राजी करना होगा। तुम मुझे ज्यादा लोग लाकर नहीं दे पाओगे।” डॉ० रामावल्ली ने सिगार को बीच में रोकते हुए कहा।

“तुमने और किस-किसको समय यात्रा पर भेजा है?” सहस्त्रबाहु अवाक होकर सोचने लगा।

“कल की घटना के बाद एक को!”

“किसे?” सहस्त्रबाहु अनुमान लगाने लगा।

“तुम उसे नहीं जानते, क्योंकि वो अभी पैदा नहीं हुआ है।” डॉ० रामावल्ली फिर से शराब का गिलास होठों से लगाकर सिगार का धुंआ उगलने लगा, “लेकिन तुम समझ जाओगे अगर दिमाग पर थोड़ा जोर डालो तो।” उसने आगे कहा।

सहस्त्रबाहु देर तक सोचता रहा। फिर उसके मुँह से अचानक से निकला, “नहीं, ये नहीं हो सकता?” वो जान गया था।

“क्या तुमने उसे पहचान लिया है?” डॉ० रामावल्ली खुश होते हुए बोला।

“कह दो ये झूठ है!” सहस्त्रबाहु ने जोर देकर कहा।

“यही सच है। मैंने उस लंगड़े जावेद के बेटे को भविष्य की यात्रा पर भेज दिया है।”

“क्या?” सहस्त्रबाहु सन्न रह गया। अब सहस्त्रबाहु की उत्तेजना और जिज्ञासा चरम पर थी। डॉ० रामावल्ली उसके लिए पहली बनता जा रहा था।

“तुम इसे धोखा मत समझना मेरे दोस्त। हम दोनों को एक-दूसरे की ज़रूरत थी। हम दोनों ने एक-दूसरे की मदद की है। हम आगे भी एक-दूसरे के काम आएगे।” डॉक्टर ने सहस्त्रबाहु को शांत रखने के लिए कहा।

“तुम्हारी बातें सुनने पर तो ऐसा नहीं लगता। तुम भविष्य में जा चुके हो। तुम्हारे पास द रियल टाइम मशीन जैसी महान खोज है।मेरे पास क्या है? तुमने मेरा उपयोग कर दो लोगों को इतिहास में खपने भेज दिया। जिनके बारे में ये भी

नहीं कहा जा सकता कि वो लौटेंगे भी या नहीं? और वे अकेले नहीं है! उन जैसे दर्जनों हैं, जो भूतकाल और भविष्य काल में जाने जिन्दा भी होंगें की नहीं, कौन जाने?" सहस्त्रबाहु के मन में उबाल आ गया।

"अपने दिमाग को शान्त रखो सहस्त्रबाहु। मेरा प्रयोग पूरा हो जाने दो। तुम जानते हो मुझे तुम्हारी और वालंटियर की मदद क्यों लेना पड़ी। एक बार काम पूरा हो जाने दो। फिर सब ठीक होगा। देखों, तुम्हारे पास, न उन वालंटियर के पास, और न उनके परिवार के पास हमने किसी चीज़ की कमी रहने दी है। हमने सबको वो सब दिया है जो उन्होंने चाहा था। जावेद और इरफ़ान को भी मैंने वहीं दिया है जिसकी उन्हें चाह थी।"

"लेकिन जावेद के बेटे का क्या? तुमने उसे भविष्य में समय यात्रा पर भेज दिया। तुमने उसे क्यों भेजा डॉक्टर?"

"उसे अभी नहीं भेजा है।" डॉ॰ रामावल्ली ने कहा।

"क्या?" सहस्त्रबाहु को राहत महसूस हुई।

"हाँ, पर भविष्य में भेजूँगा।"

"क्या?" सहस्त्रबाहु सन्न रह गया, "लेकिन वो तो अभी पैदा भी नहीं हुआ है?" सहस्त्रबाहु ने हैरत में पड़ते हुए पूछा।

"वर्तमान के हिसाब से देखें तो हाँ, वो पैदा नहीं हुआ है। लेकिन..." डॉ॰ रामावल्ली एक क्षण को रुक गया। फिर बोला, "लेकिन अब से कुछ सालों बाद देखें, तो उस लंगड़े 'जावेद' का बेटा बारह साल का हो चुका है।" डॉ॰ रामावल्ली सिगार और शराब के सुरुर में सहस्त्रबाहु को समझाने की कोशिश कर रहा था। समय और समय यात्रा की भयंकर जटिलताएँ। हालांकि कुछ के विषय में सहस्त्रबाहु पहले से जानता था।

"एक बारह साल के लड़के को तुमने अपनी रिसर्च का हिस्सा बना लिया। ऐसा कैसे कर सकते हो, तुम? मुझे अभी लैब में चलकर मेरे दोस्त और उसके बेटे की स्थिति देखना है।" सहस्त्रबाहु सोफ़े से उठ खड़ा हुआ।

"लैब में कुछ नहीं पता चलेगा। अभी उस तकनीक की खोज नहीं हुई है, जिससे हम समय यात्रा पर गए लोगों पर ठीक से निगरानी रख सके। इसलिए इतनी जल्दी मत मचाओं। बैठ जाओ, और एक और गिलास भर लों।"

"तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है, डॉक्टर? एक बारह साल का लड़का भविष्य में अकेला यात्रा कर रहा है। भला वो कैसे उस तकनीक को लेकर आएगा?और तुम खुद भविष्य में जाकर उस तकनीक को क्यों नहीं लाएँ? तुम तो कई बार जा चुके हो, है न? पता नहीं, उस मासूम बच्चे के साथ क्या हो रहा

होगा?” सहस्त्रबाहु की भौंहें तन गई थी।

“तुम्हारी अधीरता से मैं सारी बातें नहीं बताने वाला। कुछ बातें आगे के लिए छोड़ दो। शायद हमें एक लम्बा इंतज़ार करना पड़े।” डॉ० रामावल्ली सिगार फूँकने में तल्लीन था, लेकिन उसकी आँखें बता रही थी कि वो भी सहस्त्रबाहु की तरह अधीर और बुरी तरह बेचैन था। इसलिए वो बार-बार सिगार फूँकता जा रहा था।

“एक लम्बा समय? क्या कहना चाहते हो डॉक्टर?” सहस्त्रबाहु किसी आशंका से घबराकर सोफ़े पर बैठ गया।

“वो अकेला नहीं है। लंगड़े जावेद का बेटा आफ़ताब और उसकी बीवी मिस्बा दोनों भविष्य की यात्रा पर भेजे गए हैं। शायद अभी भविष्य में कहीं होंगे। थोड़ा मुश्किल है समझना। देखों, जब सन् 2006 में हम संयोग से मिले थे, तब हमने साथ में भविष्य देखा था। उस समय मेरे पास पाँच-सात टाइम मशीन थी। जिनमें से एक के बारें में तुम्हें अनजाने में पता चला। वो मशीनें भूत और भविष्य में जाकर वर्तमान में आ सकती थी। लेकिन उन टाइम मशीनों में कुछ गम्भीर कमियाँ थीं, जिनमें से कुछ के बारे में तुम जानते हो। फिर तुमने उस पहली मुलाक़ात में ही एक टाइम मशीन को मुझसे चुरा लिया, जिसका नतीजा तुम्हें भुगतना पड़ा। ये तुम्हारा भाग्य था कि तुम जिन्दा बच गए और मेरी किस्मत भी तेज़ थी कि मैंने तुम्हें ढूँढ निकाला था। पर मेरी वो टाइम मशीन तुम्हारी मूर्खता के कारण नष्ट हो गई थी। जब मैं अस्पताल में तुम्हें देखने आया, तब मुझे समझ आया कि मेरी टाइम मशीनें सुरक्षित नहीं हैं।

फिर मैंने तुम्हारा भविष्य देखा और जाना कि तुम मशीन चुराने फिर आओगे। उस समय मुझे अहसास हुआ कि मुझे टाइम मशीनों को नष्ट करना होगा और मैंने वही किया। मैंने कुछ टाइम मशीनों को नष्ट कर दिया और केवल तीन को अपने पास रखा। उन तीन में से दो को भी मैंने ऐसे बना दिया की अगर कोई उन्हें चुरा भी लें तो वर्तमान में वापस न आ सके। फिर मैं तुम्हारे आने का इंतज़ार करता रहा ताकि तुम्हें साथ लेकर अपनी अधूरी रिसर्च को पूरा कर सकूँ। तुमने मेरी भरपूर मदद की। लेकिन मैंने हमेशा वालंटियरों को समय यात्रा पर भेजते समय उन्हें तुमसे दूर रखा क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तुम्हें मेरी रिसर्च की कमी के बारे में

पता चले। मगर समय बीतने के साथ तुम जान गए। मैं तुम्हें समय की जटिलताएँ समझा रहा था कि इससे पहले तुम उस लंगड़े और उसके अभिमानी दोस्त को ले आए। तुमने दोनों को मेरे पास भेजा। मुझे उनके बारे में नहीं पता था, क्योंकि मैं बार-बार भविष्य में यात्रा नहीं कर सकता था। तुम जानते हो क्यों? बाकी आगे की कहानी तुम खुद जानते हो...” कहते हुए डॉ॰ रामावल्ली ने शराब का अंतिम घूँट पीया और सहस्त्रबाहु को देखने लगा।

“मेरे दोस्त को बार-बार लंगड़ा कहकर मुझे गुस्सा मत दिलाओ डॉक्टर। ये बताओं कि मिस्बा और जावेद के बेटे को भविष्य में क्यों भेजा है?” सहस्त्रबाहु ने गुस्से में अपना गिलास ख़त्म किया।

“मत भूलों कि हमारी डील हुए थी, सहस्त्रबाहु। मेरी रिसर्च का अंतिम चरण पूरा होने पर तुम्हें द रियल टाइम मशीन दे दी जाएगी।”

“और मेरे दोस्त और भविष्य में अकेले गए उसके बेटे व दर्जनों लोगों का क्या होगा? एक मिनट तुमने पहले क्या कहा था?” अचानक सहस्त्रबाहु को कुछ कौंध गया। उसने गिलास टेबल पर रखते हुए गौर से डॉ॰ रामावल्ली को देखा। और पूछा, “तुमने दोनों टाइम मशीनों को ऐसे बना दिया है, कोई भी वापस नहीं आएगा। मतलब तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो?” सहस्त्रबाहु के ये कहते ही डॉ॰ रामावल्ली मुस्कुराया।

“रिसर्च के लिए ये करना पड़ा!” एक क्षण बाद वह बोला।

“तुम मुझसे झूठ पर झूठ बोले जा रहे हो? बताओ तुम्हारा असली मकसद क्या है? और मुझे क्यों तुमने इसमें शामिल किया?” सहस्त्रबाहु ने सोफे पर से लपकते हुए डॉ॰ रामावल्ली का गला पकड़ लिया। डॉक्टर के हाथ से शराब का आधा भरा गिलास छिटक गया। काँच के टूटने की आवाज़ हुई।

“एक वैज्ञानिक का भला क्या मकसद हो सकता है?” डॉक्टर का गला कसा जा रहा था। “रिसर्च अधूरी है, सहस्त्रबाहु। द रियल टाइम मशीन तब तक किसी काम की नहीं जब तक मिस्बा अपने बेटे आफ़ताबको लेकर समय चक्र के एक निश्चित बिंदु पर न पहुँच जाएँ।” डॉ॰ रामावल्ली के ये कहते हुए सस्त्रबाहु ने उसका गला छोड़ दिया।

“वो कितनी आगे जाने वाले है?” सहस्त्रबाहु ने गुस्से से पूछा।

“पहले मुझे एक और गिलास पीने दो।” कहते हुए डॉ॰ रामावल्ली दूसरा गिलास बनाने लगा। सहस्त्रबाहु गुस्से में पीछे हटते हुए सोचने लगा और जाकर

सोफे पर बैठ गया।

“एक मेरे लिए भी बनाओ!” उसने आदेश दिया।

फिर सहस्त्रबाहु अतीत में घटी उन स्मृतियों को याद करने लगा, जब वो पहली बार डॉ॰ रामावल्ली से मिला था।

€¥Ω£§

-समय अस्तित्व की अनिश्चित गति है।

(8)

हम कहाँ हैं?

सन् 2006 जैसलमेर, राजस्थान

सहस्त्रबाहु एक नामी हिन्दी अखबार के लिए पत्रकारिता का काम करता था। उस समय वो एक जोशीला नौजवान था। उसने अपनी मेहनत और लगन से बहुत जल्दी नाम और रुतबा पा लिया था। पत्रकारिता के क्षेत्र में नया होने के बावजूद उसे हर कोई जानने लगा था। उसके लेख और खबरों की पड़ताल की हर तरफ तारीफ़ होने लगी थी। वह अपने वरिष्ठों का पसंदीदा बन चुका था इसलिए उसे हर बड़ी खबरों की रपट तैयार करने ज़रूर भेजा जाता था।

सन् 2006 में उसे राजस्थान भेजा गया। उस समय सरकारी नौकरियों में आरक्षण को लेकर गुर्जरों का आन्दोलन पूरे राजस्थान में जोर पकड़ रहा था। गुर्जर नेताओं ने शान्ति के साथ सरकार से अपील की थी।

“सरकार बताएँ कि जब सबकों आरक्षण दिया जा रहा है तो उसे हमें आरक्षण देने में क्या आपत्तिहै? ऐरे-गैरों को आरक्षण मिलने से हमारें पढ़े-लिखे नवयुवक काबिल होने के बावजूद बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं। इसलिए हमारी माँग है कि या तो आरक्षण व्यवस्था ख़त्म की जाएँ अथवा हमारी जाति को भी उसमें शामिल किया जाए।”

लेकिन सरकार उनकी माँगों को मानने को तैयार नहीं थी। नतीजा ये हुआ, कि आन्दोलन उग्र से उग्रतम हो गया। अपने नेताओं के आह्वान पर समर्थकों ने रेलों के पहिये रोक दिए, सड़कें जाम कर दी, बाज़ार बंद करवा दिए। अचानक लिए फैसले से आम जनता को परेशानी होने लगी। कहीं-कहीं विरोध के स्वर भी गूँजने लगे। कुछ स्थानों पर सरकार और आन्दोलनकारी आमने-सामने हो गए। और वहीं से आन्दोलन ने हिंसक रूप धारण कर लिया।

कुछ असामाजिक तत्व मौके का फायदा उठाकर आन्दोलनकारियों के साथ शामिल हो गए थे। जिस कारण हिंसक घटनाएँ एकदम से बढ़ गई थी। जगह-जगह लूटपाट और आगज़नी शुरु हो गई।

सहस्त्रबाहु आरम्भ से ही आन्दोलन का कवरेज कर रहा था। वह हर खबर के लिए सूचनाओं के पीछे भाग रहा था। जहाँ सम्भव हो रहा था, वो आम जनता की मदद भी करता जा रहा था।

आन्दोलन के उन्हीं हिंसक दिनों में से एक दिन जब वो अपनी आँखों के सामने एक ट्रक को जलाया जाता देख रहा था, तभी उसकी नज़र सड़क के दूसरी ओर पड़ी। आठ-दस लोगों के समूह ने एक सफ़ेद अम्बेसेडर कार को रोक लिया था। कार पर कोई लाल बत्ती नहीं थी जो उसके सरकारी गाड़ी होने का संकेत देती, लेकिन उसकी नंबर प्लेट पर लाल रंग की पट्टी ज़रूर बता रही थी कि गाड़ी किसी बड़े ओहदे वाले की थी। शायद समूह का ध्यान उस पर नहीं गया था। अगर गया भी होगा तो अपने तेवर में वे उसे देखना नहीं चाहते थे।

"पता नहीं है, राजस्थान बंद है?" एक आन्दोलनकारी ने कार पर लट्ठ जमाते हुए ड्राईवर को धमकाया था।

"बंद तो कल से शुरु होगा, है न?" ड्राईवर ने कार का काला काँच नीचे करते हुए आन्दोलनकारी से कहा।

"बंद शुरू हो चुका है। अच्छा होगा गाड़ी वापस मोड़ लो।" आन्दोलनकारी गुस्से में बोला।

"लेकिन हमें आगे जाना है। साब का बंगला आगे की सड़क पर पर है।" ड्राईवर ने बताया।

"तुझे समझ नहीं आ रहा, मैं क्या कह रहा हूँ? और कौन है तेरे साब?" अब आन्दोलनकारी ने कार के काले काँच में से भीतर देखने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ नज़र नहीं आया।

वह झल्लाकर कार पर मुक्का जमाने ही वाला था कि कार का काँच थोड़ा-सा नीचे हुआ। मोटी फ्रेम का नम्बर वाला चश्मा चढ़ाएँ, मध्यम कद का व्यक्ति, भूरे रंग के कोट में नज़र आया। उसकी उम्र अट्ठाईस साल के आस-पास थी। उसके बाल करीने से जमे हुए थे और वो थोड़ा चिंतित दिखाई पड़ रहा था।

"कृपया हमें जाने दीजिए। हम बहुत दूर से सफ़र कर आ रहे है।" व्यक्ति ने अपनी चिंता को दबाते हुए आन्दोलनकारी से गुहार लगाई।

एक सभ्य और रईस सज्जन को कार में देख भी आन्दोलनकारी के दिल में रहम नहीं आया। उल्टा वह चिढ़ गया। उसने व्यक्ति की याचना को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा, "अच्छा! फिर तो तुम्हें थोड़ा और सफ़र कर लेना चाहिए। चुप-चाप गाड़ी पलटा लो वरना तुम्हारी गाड़ी का भी उस ट्रक जैसा हाल होगा।" आन्दोलनकारी ने व्यक्ति को धमकाते हुए जलते ट्रक की ओर इशारा किया।

"ये सब मैंने बहुत देखा है। ये बताओ हमें आगे जाने दोगे या नहीं?" व्यक्ति एकदम से गुस्सा हो गया।

“हमको तेवर दिखा रहा है। जा… नहीं जा पाएगा तू आगे। अब बाहर निकल।” आन्दोलनकारी भी विपरीत तरीके से बोला और उसने ड्राईवर की खिड़की में हाथ डालकर कार का दरवाज़ा खोल ड्राईवर को बाहर खींच लिया।

ड्राईवर गिड़गिड़ाते हुए आन्दोलनकारी को मनाने की कोशिश करने लगा, लेकिन वह नहीं माना।

कार की पिछली सीट पर बैठा व्यक्ति इससे बोखलाकर बाहर निकला और अपने से तीन गुना हट्टे-कट्टे शख्स से भीड़ गया। आन्दोलनकारी को किसी अनजान व्यक्ति से ऐसे बर्ताव की आशा नहीं थी। शायद उसने अब तक हाथ जोड़ते, याचना करते या पैसे लेकर आगे जाने वाले लोगों को ही देखा था। लेकिन उस अट्ठाईस साल के साधारण से दिखने वाले शख्स ने उसे धोना शुरू कर दिया। उसने आन्दोलनकारी के मुँह पर तेज़ी से मुक्के मारना शुरू कर दिए। आन्दोलनकारी के दो दांत टूटकर नीचे गिर गए। उसके मुँह से खून बहने लगा। वह पूरी तरह से सकपका गया था और खुद पर से नियंत्रण खोते हुए गिरने ही वाला था।

अपने आदमी को पीटता देख दूसरे आन्दोलनकारी उसे बचाने दौड़े। वे मोटी फ्रेम का चश्मा पहने व्यक्ति के पास पहुंचे और उस पर लाठियाँ बरसाते हुए अपने आदमी को उसकी पकड़ से बाहर निकाल ले गए।

वह पहला आन्दोलनकारी अपनी धुनाई से बेहद हताहत हुआ था। अपने लोगों से मिले सबल से उसे चेतना हुई और वह मौका पाकर सफ़ेद एम्बेसेडर कार को आग लगाने दौड़ा। इधर वो सरकारी आदमी उन लोगों से अकेले भिड़ने की हर सम्भव कोशिश कर रहा था।

उसका ड्राईवर उसे बचाने आया, लेकिन आन्दोलनकारी ज्यादा थे। सहस्त्रबाहु जोकि वहीं था, जान चुका था कि मामला बिगड़ने वाला है। सो वह सड़क पार करता हुआ तेज़ी से आन्दोलनकारियों के पास पहुँचा।

अब तक सरकारी कार में आग लग चुकी थी और वह धूं-धूं कर जल रही थी। उसे जलाने वाला पहला आन्दोलनकारी अब सरकारी कर्मचारी की तरफ बढ़ रहा था। उसके इरादे नेक नहीं लग रहे थे।

“पकड़कर डाल दो सालें को आग में।” वह आन्दोलनकारी चिल्लाते हुए अपने साथियों से बोला।

इससे ड्राईवर थर-थर काँपने लगा। वह अपने मालिक को बचने के लिए बीच में पड़ना चाहता था, लेकिन दूसरे आन्दोलनकारी उसे घेरे हुए थे। वह उनसे

मिन्नतें कर रहा था, मगर उसका असर आन्दोलनकारियों पर कम ही हो रहा था।

इतना सब हो रहा था इस पर भी हैरान करने वाली एक बात थी। वह ये कि ड्राईवर के मालिक के मुख पर किसी प्रकार के भय के चिन्ह नज़र नहीं आ रहे थे। वो आन्दोलनकारियों से अपना बचाव करने की कोशिश में जीजान से लगा था। और कुछ हद तक सफल भी होता दिख रहा था, लेकिन उसका ज्यादा देर तक टिक पाना असंभव था। आन्दोलनकारी कभी भी उस पर हावी हो सकते थे।

सहस्त्रबाहु किसी अनहोनी की आशंका से डर चुका था। वो उस जुझारु आदमी की रक्षा करने को दौड़ा। उसने दो आन्दोलन्कारियों को किसी तरह दूर किया और खुद भी लाठियाँ खाते हुए उस साहसी व्यक्ति को बचाने के लिए बीच में आ गया। पर वो शख्स किसी अनजान कारण से इतना शुब्ध था कि अपनी निराशा को आन्दोलनकारियों पर उतारने को उतारु था। वह सहस्त्रबाहु के आगे आते हुए आन्दोलनकारी को लपकने के लिए तेज़ी से बढ़ा। उसकी बेकाबू प्रतिक्रिया पर सहस्त्रबाहु ने उसे रोकते हुए उसकी कलाई पकड़ ली। और उसी क्षण…

हाँ, उसी क्षण… उसी क्षण कुछ ऐसा घटित हुआ जो बहुत अप्रत्याशित, असामान्य और अजीब था।

सहस्त्रबाहु द्वारा व्यक्ति की कलाई पकड़े जाते ही एक अदृश्य घेरा बन आया। ऐसा घेरा जो विद्धुत और गुरुत्वीय शक्ति का सम्मिलित प्रभाव पैदा कर रहा था। घेरे और उसके तीव्र आवेग ने दोनों व्यक्तियों को वहाँ से गायब कर दिया।

दोनों किसी सुरंगनुमा मार्ग के जाल में दाखिल हो गये। उस सुरंग में अजीब सी तरंगे थी। अजीब से रंगों और आवृतियों वाली तरंगे , जिन्हें देखकर सहस्त्रबाहु भौचक्का रह गया।

आन्दोलनकारी आवेग से दूर फिका गए। एम्बेसेडर कार का ड्राईवर अपने साब को अचानक गायब होता देख वहाँ से तेज़ी से भाग गया। आन्दोलनकारी खुद को सम्भालते व कपड़े झाड़ते हुए हक्के-बक्के से उठे। उन्हें कुछ समझ नहीं आया। वे हैरानी से एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

कुछ ही सैकंड बाद सहस्त्रबाहु ने खुद को एक नयी जगह पाया। वे एक खाली मैदान में प्रकट हुए थे। सहस्त्रबाहु कुछ समझता इससे पहले उसको जोरदार चक्कर आने का अहसास हुआ। वो जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

वहीं वो व्यक्ति सहस्त्रबाहु से थोड़ी दूर जाकर कठोरता से कहने लगा, “ये

तुमने क्या किया बेवकूफ आदमी?"

लेकिन सहस्त्रबाहु उसकी ओर देखकर कोई जवाब देता इससे पहले ही उसे कै (उलटी) हो गई।

व्यक्ति सहस्त्रबाहु से थोड़ा और दूर चला गया और आस-पास देखने लगा। बहुत दूर मैदान के पार आम के पेड़ों की कतार के पीछे किसी सड़क पर वाहनों का आना-जाना लगा था।

"ये तुम्हें छूते ही मुझे क्या हो गया?" सहस्त्रबाहु को चेतना हुई। उसकी उल्टी पर विराम लगा, लेकिन अब भी उसका जी मचल रह था।

"हम कहाँ आ गए है?" सहस्त्रबाहु ने फिर से पूछते हुए अपने आस-पास नज़र दौड़ाई। वहाँ न कोई जलता ट्रक था, न धूं-धूंकर जल रही कार और न ही हुड़दंगी।

"कहीं नहीं?" व्यक्ति ने लापरवाह होते हुए कहा। उसकी दृष्टि मैदान के पार सड़क पर थी। सहस्त्रबाहु ने उठकर उस ओर देखा।

"हम कहाँ है? और इस मैदान में कैसे आ गए?" सहस्त्रबाहु के मन में कई प्रश्न उमड़ रहे थे। वो हैरान और घबराया हुआ था।

"बोला न... कहीं नहीं। वैसे तुमने ये ठीक नहीं किया?" वो व्यक्ति बड़बड़ाते हुए बोला।

सहस्त्रबाहु को वो बड़ा रहस्यमयी लग रहा था।

"क्या ठीक नहीं किया?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"चलो मेरा हाथ पकड़ो।" व्यक्ति ने सहस्त्रबाहु के प्रश्न का उत्तर देना ज़रूरी नहीं समझा। उसने सड़क ने नज़र हटा ली।

"पहले मुझे बताओ हम कहाँ है? और यहाँ कैसे आ गए?" सहस्त्रबाहु ने फिर पूछा।

"तुम्हारा ये जानना ज़रूरी नहीं। क्या हमेशा दूसरों के मामलों में टांग अड़ाते हो?"

"टांग अड़ाता हूँ? मैं तुम्हारी मदद करने आया था।" सहस्त्रबाहु ने कहा।

"मेरी मदद... मेरी मदद सिर्फ मैं सकता हूँ और कोई नहीं, समझे।" व्यक्ति थोड़े अभिमान से बोला। पर उसका एक भी शब्द सहस्त्रबाहु के पल्ले नहीं पड़ा।

"तुम क्या बकवास कर रहे हो और किस बारें में बताना चाह रहे हो, ज़रा खुलकर बताओ। लेकिन उससे पहले मेरे पहले वाले प्रश्न का उत्तर दो। हम यहाँ कैसे आ गए? हम तो राजस्थान में थे।"

“मैंने कहा न, तुम्हारा ये जानना ज़रूरी नहीं। चलों मेरा हाथ पकड़ों। हमें यहाँ से चलना होगा।” कहते हुए वो व्यक्ति अपनी कलाई घड़ी में समय ठीक करने लगा। सहस्त्रबाहु को वो घड़ी आम घड़ियों से अलग नज़र आई।

“क्या मेरा हाथ इस घड़ी से छुआ गया था?” सहस्त्रबाहु ने अनुमान व्यक्त करते हुए पूछा।

“हाँ।”व्यक्ति का सारा ध्यान अपनी घड़ी के समय को सही कर लेने में था।

“ये कोई विशेष घड़ी है?” सहस्त्रबाहु की जिज्ञासा बढ़ गई थी।

“तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं होना चाहिए।” व्यक्ति ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

“नहीं, पहले तुम मेरे सवालों का जवाब दो।” सहस्त्रबाहु ने हाथ बढ़ाने से इंकार कर दिया।

“जैसा कह रहा हूँ करों। अपना हाथ दो मुझे। मेरे पास समय नहीं है।” व्यक्ति दृढ़ता से बोला।

“नहीं पहले तुम मुझे सब समझाओ!” सहस्त्रबाहु ज़िद पर अड़ गया।

“नहीं समझा सकता। कुछ और पूछना हो तो पूछ सकते हो।” व्यक्ति ने अपनी विवशता जाहिर की।

“अच्छा तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारे हाथ में ये कैसी घड़ी है?”

“मेरा नाम डॉक्टर एन० रामावल्ली है। मैं एक वैज्ञानिक हूँ। और जिस घड़ी को तुम मेरे हाथ में देख रहे हो वो मेरी एक खोज है। इसके कारण ही हम राजस्थान से यहाँ इन्दौर, मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी में आ पहुँचे है।” व्यक्ति ने सहस्त्रबाहु के गले में लटके मीडिया कार्ड पर लिखे उसके नाम को पढ़ते हुए कहा।

“क्या ये हमें कहीं भी ला-लेजा सकती है?” सहस्त्रबाहु गैर से घड़ी को देखने लगा।

“हाँ।” डॉक्टर रामावल्ली एक क्षण मौन रहा। उसने फिर एक नज़र दूर, आम के पेड़ों के झुरमुट के पीछे, सड़क पर डाली और कहा, “चलो, अब हमें चलना होगा।” उसने अपना हाथ बढ़ाया।

लेकिन अब सहस्त्रबाहु के, जोकि एक खोजी पत्रकार था, मन में ढेरों प्रश्न थे। उसने झिझकते हुए हाथ बढ़ाना चाहा। मगर फिर रोक दिया। अचानक हुए अजीब से घटनाक्रम ने उसे भौचक्का कर रखा था। वह डॉ० रामावल्ली का हाथ न थामकर सड़क की ओर देखने लगा। फिर कुछ सोचते हुए आगे बढ़ गया।

"कहाँ जा रहे हो?" पीछे से डॉक्टर ने उससे पूछा।

"ये देखने कि हम कहाँ है!" सहस्त्रबाहु को सन्देह था। भला कोई व्यक्ति इतनी सरलता और स्पष्टता से सत्य कैसे कह सकता था। वह आगे बढ़ता रहा।

"हम वाकई दूसरे शहर में हैं, मिस्टर सहस्त्रबाहु।" डॉक्टर ने सहस्त्रबाहु को यकीन दिलाने की कोशिश की।

अपना नाम सुनते ही सहस्त्रबाहु ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

"मेरा नाम कैसे..." वह पूछने ही वाला था कि उसका ध्यान अपने गले में पड़े मीडिया कार्ड पर गया। उसने कार्ड गले से उतारकर जेब में रखा लिया और आगे चलता रहा।

"मूर्ख आदमी! मेरा समय बर्बाद कर देगा।" डॉ० रामावल्ली खुद से ही बड़बड़ाने लगा।

वह मैदान, जिसमें दोनों प्रकट हुए थे, कुछ बड़ा था। सहस्त्रबाहु को सड़क पर आने में सात मिनट से ज्यादा लग गए। जब वो सड़क पर पहुँचा, तब उसने देखा कि वहाँ वाहनों का आना-जाना लगा हुआ था। सड़क फोर लेन थी, जिसके बीच में सीमेंट से बने हुए ब्लाक थे। उन ब्लाक के बीच में ऊँचें-ऊँचें तथा हरे-भरे वृक्ष लहरा रहे थे। जिस जगह वह खड़ा था, वहाँ से सौ-डेढ़ सौ मीटर की दूरी पर एक चौराहा था। जहाँ सीसीटीवी कैमरे ट्रैफिक पर नज़र रखे हुए थे। एक ट्रैफिक पुलिस अफसर चौकसी से अपनी ड्यूटी कर रहा था। चौराहे से दाएँ ओर एक बड़ा-सा सुपर मार्केट था। वहाँ ग्राहकों की गाड़ियाँ कतार में लगी हुई थी। सुपर मार्केट के सामने, सड़क के पार, एक पैट्रोल पम्प था। वहाँ बहुत ज्यादा भीड़ थी। सहस्त्रबाहु कभी उस शहर में नहीं आया था पर उसे ज्ञान था कि शहर कैसा था। वह उसकी आबादी, संस्कृति, रहन-सहन और धार्मिक स्वभाव से परिचित था। उसे मालूम था वो शहर, जिसे भले ही लोग मिनी मुम्बई कहते थे, अभी पिछड़ा हुआ था। पर जो उसने अपनी आँखों से देखा उसे यकीन नहीं हुआ।

वो शहर उसे अपनी कल्पना से बिलकुल ही अलग लग रहा था। उसने इतनी साफ़-सुतरी सड़कें और व्यवस्थित सुपर मार्केट बड़े शहरों में भी नहीं देखा था। वो खड़ा-खड़ा विचारों की उधेड़बुन में पड़ने लगा कि उसका ध्यान पेट्रोल पम्प पर लगे एक बड़े से बैनर पर गया। वो बैनर किसी सरकारी योजना की सफलता की उद्घोषणा कर रहा था। बैनर पर एक प्रसिद्ध राजनेता की तस्वीर थी। वो राजनेता उस समय गुजरात राज्य का मुख्य मंत्री था।

"प्रधानमंत्री उज्जवला योजना।" सहस्त्रबाहु विज्ञापन पढ़कर चौंका, "नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री हैं? कौन-सा साल चल रहा है?" सहस्त्रबाहु चौंक गया।

उसके दिल की धड़कने तेज़ी से चलने लगी। उसने अपनी घड़ी देखी। उसमें दोपहर के तीन बज रहे थे। यह वहीं समय था, जब वो जेसलमेर में अपनी ड्यूटी पर था। तभी उसने सुपर मार्केट से बाहर निकल रही एक महिला को देखा। महिला अपने मोबाइल पर बात कर रही थी। उसके पास एनड्राईड फोन था। सहस्त्रबाहु महिला के मोबाइल को देखकर भी आश्चर्य में पड़ गया। उसने अपनी जेब से मोबाइल निकाला। वह नोकिया कम्पनी का छोटा-सा टुनटुना था।अब उसकी उत्तेजना चरम पर थी। वह जानना चाहता था कि साल कौन-सा चल रहा था। उसने महिला से पूछना चाहा, लेकिन उसे लगा कि वो उसे पागल समझेगी। इसलिए वो पूछते हुए रूक गया और सुपर मार्केट में दाखिल हो गया।

उसने एक ट्रॉली ले ली थी और उत्पादों की रेक के पास जाकर खड़ा हो गया। वहाँ उसे कुछ जाने-पहचाने प्रोडक्ट नज़र आए। कुछ उसके लिए बिलकुल ही नए थे। उसने हाथ बढ़ाकर एक प्रोडक्ट उठाया और उसकी निर्माण तिथि (मैन्युफैक्चरिंग डेट) देखी।

"12 मई 2017" सहस्त्रबाहु बुरी तरह हैरान हुआ।

वह कुछ और प्रोडक्ट्स की मैन्युफैक्चरिंग डेट देखने लगा। सब पर 2017 का साल चस्पा था।

"मैं ग्यारह साल आगे हूँ!" उसने खुद से कहा।

फिर उसकी नज़र सुपर मार्केट में लगी डिजिटल घड़ी पर गई जो दिन के साथ वार भी बता रही थी।

"31 जुलाई 2017, मंगलवार।"

"ये सच नहीं हो सकता? ये सच कैसे हो सकता है? हम ग्यारह साल आगे आ गए है।" सहस्त्रबाहु हैरान-परेशान-सा होते हुए बड़बड़ाने लगा। तभी उसे किसी के बोलने का स्वर सुनाई दिया।

"यहीं सच है पत्रकार महोदय। हम 2017 में हैं!"

सहस्त्रबाहु ने पलटकर देखा। स्वर डॉ० रामावल्ली का था।

"पर ये कैसे सम्भव है?" सहस्त्रबाहु अवाक रह गया था।

"बाहर चलो, मैंसमझाता हूँ।" डॉ० रामावल्ली ने उसे साथ चलने का इशारा किया। एक गौ माता की तरह सहस्त्रबाहु उस वैज्ञानिक के पीछे चलने लगा। जब वे बाहर निकले तब बारिश होने लगी थी।

€ ¥ Ω £ §

-समय का अध्ययन आपको समय यात्रा करवा सकता है।

(9)

एक दो तीन

एक अज्ञात समय का कोई माह। भारत का एक अज्ञात स्थान।

मिस्बा अपने बारह साल के बेटे, 'आफ़ताब' को लेकर टाइम मशीन में सफ़र कर रही थी। उसे सन् 2024 के किसी दिन, शायद आफ़ताब के बारवें जन्मदिन के कुछ दिन बाद, डॉ रामावल्लीने ये कहकर चौंकाया था, "जावेद मरा नहीं है मिस्बा। वो और उसका घटिया दोस्त ज़िन्दा है!"

मिस्बा बारह साल से अपने शौहर जावेद के इंतज़ार में दिन काट रही थी। हालांकि वो बारह साल एक सेकेंड में पार कर लिए गए थे क्योंकि जिस दिन जावेद और इरफ़ान समय यात्रा पर गए थे उसके एक सप्ताह बाद ही डॉ॰ रामावल्ली ने भविष्य की यात्रा की थी और मिस्बा से मिला था। मगर तब भी वे बारह साल घटित हुए थे, जिसका एक-एक दिन मिस्बा ने जावेद के इंतज़ार में काटा था।

उसे बताया गया था कि साइट पर भयानक हादसा होने से जावेद और इरफ़ान मारे गए। वे भीषण अग्निकाण्ड में जलकर भस्म हो गए। उनके साथ दस और लोग जलकर मरें। हादसे के बाद कम्पनी ने यानी डॉ॰ रामावल्ली ने और सहस्त्रबाहु ने मिस्बा और आफरीन को अच्छा-ख़ासा मुआवजा दिया।

लेकिन जाने क्यों मिस्बा को यकीन नहीं हुआ? उसे यकीन होता भी कैसे? जावेद और उसके बीच मन-मुटाव चल रहा था। जिसकी वजह वो बच्चा था, जो मिस्बा के गर्भ में पल रहा था।

सातवें महीने में स्पष्ट हो गया था कि आफ़ताब का एक पैर ठीक से विकसित नहीं रहा है। मिस्बा जान गयी थी कि जावेद सही कह रहा था। उनके परिवार में पीढ़ियों से एक अनुवांशिक बीमारी थी।

उस दिन वो बहुत रोयी थी। उसी दिन उसने जावेद के न होने और अपनी फूटी किस्मत पर मातम मनाया था।

मगर मातम कितने दिन चलता। एक न एक दिन उसे खुद को सम्भालना ही था। उसने आफ़ताब को अकेले ही बड़ा करने का फैसला किया। आफरीन उसके साथ थी, लेकिन समय नहीं।

सन् 2020-21 में कोरोना महामारी की जकड़ में आकर उसने दम तोड़ दिया।

वो समय मिस्बा के लिए बहुत ही कठनाईयों से भरा था। हालांकि कई रिश्तेदारों ने और कुछ दिलफेंक आशिकों ने उससे निकाह की इच्छा व्यक्त की थी पर उसका भी फैसला था कि वो आफ़ताब के साथ अकेले रहेगी। उस पर तरह-तरह के लोगों ने बहुत दबाव डाला था। मगर वो अंत तक अपने फैसले से डिगी नहीं।

फिर जब उसे लग रहा था कि जिंदगी में सब कुछ सामान्य चल रहा है, तभी एक दिन कहीं से डॉ॰ रामावल्ली उसके घर में प्रकट हो गया और उसने मिस्बा को बताया कि उसका शौहर और उसका दोस्त जिन्दा है। मिस्बा को यकीन नहीं आया। लेकिन डॉक्टर उसे समझाने लगा।

"मैं जानता हूँ, तुम्हें यकीन नहीं होगा, पर यही सच है, मिस्बा। वो दोनों जिन्दा हैं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो?" उसने शंकित भाव से डॉक्टर से पूछा था।

डॉ॰ रामावल्ली उसे देखकर मुस्कुराया। फिर उसने मिस्बा को बताया कि सच क्या था।

"जावेद अपने अतीत में गया है मिस्बा। समय यात्रा पर। जानता हूँ, तुम्हें यकीन नहीं आएगा। लेकिन शायद तुम्हें याद होगा, उसने एक बार तुमसे कहा था कि वो जानना चाहता है कि उसके खानदान में लूले-लंगड़ेपन की बीमारी कब और कैसे आई। कुछ याद है या भूल गई, तुम?" डॉक्टर गौर से मिस्बा को देखने लगा।

मिस्बा आश्चर्य और हैरानी से डॉ॰ रामावल्ली को देख रही थी। जावेद और उसके बीच की सालों पुरानी निजी बातें उसे कैसे पता थीं? वह सोचने लगी।

फिर सोचती रह गई।

डॉक्टर को उसका मन समझने में ज़रा भी देर नहीं लगी। उसने अपने कोट की जेब में हाथ डालकर एक घड़ी को निकाला। वो घड़ी जिसे वह 'द रियल टाइम मशीन' कहता था।

मिस्बा उस चमचमाती और अजीब-सी दिखने वाली घड़ी को देखने लगी। उसके मन-मस्तिष्क में सैंकड़ों प्रश्न घूमने लगे थे।

"मैं इसे तुम्हारे लिए लाया हूँ। तुम इसे पहनकर अपने शौहर के पास जा सकती हो। उससे मिल सकती हो।"

पर मिस्बा को इतनी जल्दी यकीन कैसे आता।

"यकीन नहीं हो रहा? अच्छा, मैं तुम्हें एक नमूना दिखाता हूँ।" फिर डॉ॰ रामावल्ली ने घड़ी वापस जेब में रख दी। उसने अपनी आस्तीन ऊँची की।

मिस्बा ने देखा डॉक्टर की कलाई पर एक और घड़ी थी। हुबहू वैसे जैसी उसने जेब से निकाली थी।

“मेरा हाथ पकड़ों, मिस्बा! मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है।” डॉ॰ रामावल्ली ने अपना हाथ मिस्बा की ओर बढ़ा दिया।

मगर मिस्बा असमंजस में थी।

“घबराओं नहीं! तुम सुरक्षित रहोगी!” डॉ॰ रामावल्ली ने उसे आश्वस्त किया।

मिस्बा ने डरते हुए डॉक्टर का हाथ थाम लिया। डॉक्टर ने घड़ी का बटन दबा दिया।

कुछ ही देर वे मिस्बा उस पार्क में पेड़ों के झुरमुट में प्रकट हुई जहाँ जावेद और वो अक्सर जाते थे। लेकिन इससे पहले वो ये बात समझती उसे उल्टी होने लगी।

डॉ॰ रामावल्ली में समय यात्रा के कोई लक्षण प्रकट नहीं हुए। वो बस मिस्बा से कुछ दूर खड़े होकर उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा। फिर वो जाकर फेरी वाले से पानी की बोतल ले आया।

मिस्बा ने पानी पिया, खुद को सचेत किया, अपने आस-पास देखा। मगर वो एकदम से समझ न पाई।

“हम कहाँ है?” उसने डॉक्टर से पूछा।

“खुद देख लों!” डॉ॰ रामावल्ली ने पेड़ों के झुरमुट से सामने आती एक डाल को पीछे करते हुए मिस्बा को कुछ दिखाना चाहा।

मिस्बा हौले-हौले कदमों से आगे बढ़ी। पाँच कदम चलने के बाद ही उसके पैर ठिठक गए।

उसने देखा, जावेद और वो एक बैंच पर बैठे थे। ये वो ही दिन था जब मिस्बा ने जावेद को अपने माँ बनने की खुशखबरी दी थी। उन्होंने आइसक्रीम खाई थी और लड़ पड़े थे।

उस दिन को अपनी आँखों के सामने देख वो भावुक हो गयी। उसकी आँखों से आँसू उमड़ने लगे। वो झट से जावेद के पास जाकर मिलना चाहती थी, लेकिन डॉ॰ रामावल्ली ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोक लिया।

“तुम्हें उनके पास नहीं जाना चाहिए। वो अतीत है। गुजर चुका है।”

“लेकिन... वो मेरे जावेद है।” मिस्बा अपने आँसुओं पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोली।

“जानता हूँ! मगर मेरे ख्याल से तुम्हें उससे मिलने कहीं और जाना होगा।”

“कहाँ?” मिस्बा ने हैरानी से पूछा।

“चलो, पहले हम वर्तमान में चलते है। फिर मैं तुम्हें सब बताता हूँ।” और डॉ॰ रामावल्ली ने अपनी घड़ी का बटन दबा दिया।

दोनों पार्क से गायब होकर फिर से घर में प्रकट हो गए।

मिस्बा को फिर से कै होने को थी, लेकिन वो उसके लिए तैयार थी। वो तुरंत गुसलखाने की ओर दौड़ गयी।

जब वो वापस आई तो डॉ॰ रामावल्ली के हाथ में घड़ी थी, जो उसने अपनी जेब से निकाल ली थी।

“इस घड़ी को अपने हाथ में पहन लो, मिस्बा!” डॉक्टर ने घड़ी बढ़ाते हुए कहा, “और मेरी हिदायतें ध्यान से सुनों!”

डॉ॰ रामावल्ली ने मिस्बा को ढेर साड़ी हिदायतें देकर समय यात्रा में प्रवेश करने के तौर-तरीके समझाए। जब सब बातें समझाने के बाद वो वापस जाने को हुआ तभी बैसाखी के सहारे चलते हुए मिस्बा और जावेद का लड़का ‘आफ़ताब’ वहाँ आ पहुँचा।

उसने घर में मेहमान को देख ‘हेलो’ कहा और अपने कमरे में चला गया। जावेद को जाता देख डॉक्टर ने मिस्बा से कहा, “जावेद और तुम्हारे बेटे में काफ़ी समानताएँ हैं। बेहतर होगा तुम आफ़ताब को भी साथ ले जाओ। इसे भी अपने अब्बा को देखने की चाह होगी। काफी लम्बा वक्त हो चुका है।”

मिस्बा को यकीन नहीं हो रहा था। समय यात्रा उसके लिए किसी फ़िल्मी गप का हिस्सा थी या सुदूर भविष्य में होने वाली कोई असम्भव-सी घटना।

“तुम सीधे-सीधे क्यों नहीं कहते, तुम्हें क्या चाहिए?” मिस्बा ने पूछा।

“मुझे... मुझे जो चाहिए वो तुम्हारे उस बिंदु पर पहुँचने पर मिलेगा जिसका समय मैंने तुम्हें बताया है। बस मेरे दिए गए निर्देशों का ठीक से पालन करते रहना। और हाँ अगर इसमें बीप बजे और लाल बत्ती चालू-बंद हो तो उस दिशा में बढ़ना मत भूलना!”

“तुम खुद क्यों नहीं ये काम कर लेते?” मिस्बा ने उससे पूछा।

“अगर मुझसे ये काम होता तो मैं तुम्हारे पास आता ही क्यों? चिंता मत करो, सब कुछ सही और ठीक होगा। बस तुम भविष्य में निर्धारित समय पर, निर्धारित स्थान पर पहुँच जाओ। ये घड़ी तुम्हें सब कुछ बता देगी।”

लेकिन मिस्बा के मन में कुछ शंका थी, “मुझे तुम्हारे इरादे ठीक नहीं लग रहे!” मिस्बा जावेद और इरफ़ान के डॉ॰ रामावल्ली से मिलने की बात पर गौर

करते हुए बोली।

"सही समझी, मगर फिर तुम्हारी मर्जी। अपने शौहर से मिलना चाहो तो घड़ी का उपयोग करना। और हाँ इसे बीच-बीच में धूप दिखाते रहना तो ये चार्ज रहेगी। मैं इसे एटॉमिक एनर्जी देना चाहता था, लेकिन नहीं दे पाया।"

"मुझे इस घड़ी की ज़रूरत नहीं है।" मिस्बा ने घड़ी वापस करते हुए कहा।

"मज़ाक कर रही हो?" डॉक्टर कटाक्ष करते हुए बोला, "डरो मत मिस्बा जावेद शेख!" डॉक्टर ने मिस्बा का पूरा नाम लेते हुए कहा, "तुम मुझ पर भरोसा कर सकती हो। जावेद ने भी किया था।"

मगर तब भी मिस्बा ने घड़ी नहीं ली।

फिर डॉक्टर ने हँसते हुए कहा, "समझा! क्या ज़िन्दगी में कोई और आ गया है?"

"हमारी ज़िन्दगी में जावेद की जगह कोई और नहीं ले सकता।" मिस्बा सख्त होकर बोली।

"फिर ये टाइम मशीन रखो। रख लो मिस्बा, वरना मेरा मन बदल जाएगा। मेरे पास लोगों की कमी नहीं है। मैं जावेद के लिए तुम्हारे पास आया हूँ। प्लीज मेरा काम कर दो।"

मिस्बा डॉ० रामावल्ली के मन को टटोलने की कोशिश करने लगी, लेकिन वह किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाई। डॉ० रामावल्ली उसके लिए अबूझ पहेली रहा। उसने हाथ बढ़ाकर घड़ी कलाई में पहन ली।

"मैं और आफ़ताब साथ जाएँगे।" उसने घड़ी को देखते हुए कहा।

"बहुत खूब! मैं यहीं चाहता था।"

"पता नहीं, तुम पर कितना भरोसा करना चाहिए?" उसने होले से कहा।

डॉक्टर मुस्कुराया और कुछ कदम पीछे हट गया। उसने एक नज़र मिस्बा को देखा और कहा, "तुम मुझ पर यकीन कर सकती हो।"

वह अपनी घड़ी का बटन दबाने को था कि मिस्बा उसे रोकते हुए पूछने लगी,"तुम कहाँ से आये हो? मेरा मतलब भूतकाल या भविष्य से?" उसके मन में शंका थी !

"सन् 2012, वर्तमान से!" और डॉ० रामावल्ली ने अपनी घड़ी का बटन दबा दिया।

मिस्बा घड़ी को देखते हुए सोच में डूब गई।

उस वैज्ञानिक ने, जिसे उम्मीद थी कि समय के एक छोर पर भूत, भविष्य और

वर्तमान मिलते है, मिस्बा को टाइम मशीन दे दी थी।

कुछ ही दिन बाद मिस्बा आफ़ताब को साथ लेकर समय की एक अनजान यात्रा पर निकल गई थी।

Œ Œ Œ

वह साल 2032 था। नवम्बर माह शुरु हो चुका था। ठण्ड ने दस्तक दे दी थी। डॉ० रामावल्लीद्वारा मिस्बा को दी गई टाइम मशीन को धूप दिखाने का समय हो चुका था। डॉक्टर की कुछ हिदायतों में से एक हिदायत ये भी थी। मिस्बा और आफ़ताब किसी अज्ञात स्थान पर सरसों के खेत के बीचों-बीच प्रकट हुए थे। प्रकट होते ही दोनों को कै होने लगी।

“ये बहुत घिनौना है अम्मी!”आफ़ताब थूकते हुए बोला।

“हाँ… सच कहा। लो… पानी पी लो।” मिस्बा ने उबाके मारते हुए अपने साथ लाए बैग को आफ़ताब की ओर बढ़ा दिया।

आफ़ताब अपनी बैसाखी सम्भालते हुए बैग खोलने लगा। उसने पानी से भरी बोतल बाहर निकाली और गट-गट पानी पीने लगा।

पानी ख़त्म होते देख मिस्बा बोल पड़ी, “मेरे लिए भी बचाना आफ़ताब।”

“हम्म… ।” आफ़ताब ने बोतल मिस्बा की ओर बढ़ा दी।

मिस्बा की उबकाई बंद हो चुकी थी, लेकिन जी खट्टी डकारों को महसूस कर रहा था। उसने बोतल हाथ में ली और पानी पीने के लिए सिर ऊँचा किया। अभी उसका गला पानी के घूँट से तर होकर थोड़ी-सी राहत पाता कि किसी तेज आवाज़ ने दोनों माँ-बेटे का ध्यान भंग कर दिया। कुछ ही सेकेंड में खेत के ऊपर से भारतीय लड़ाकू विमान जाते हुए दिखाई पड़े। एक के पीछे एक। कुल आधा दर्जन हवाई जहाज। वे क्षितिज में एक छोर से दूसरे छोर तक उड़ते हुए कहीं जा रहे थे। वायुयानों की तेज़ और तीखी आवाज़ ने उनके कान के पर्दे बस फाड़े ही नहीं थे।

“वाओ!”वायुयानों को देख आफ़ताब की आँखें चमक उठी थी। वे लड़ाकू हवाई जहाज उसके लिए किसी अजूबे से कम नहीं थे। लेकिन मिस्बा ने अपने हाथ कान पर हाथ रख दिए थे। वो शोर उसके बर्दाश्त से बाहर था।

आफ़ताब अपनी बैसाखी लिए खड़ा हो चुका था। वह और वायुयानों को जाता देखना चाहता था। उसने पहली बार इतने नजदीक से वायुयानों को देखा था। फिर वे तो लड़ाकू हवाई जहाज थे। वो अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को फैलाए उस अद्भुत दृश्य को देखने लगा। लड़ाकू हवाई जहाज दूर क्षितिज में विलीन हो

वर्तमान मिलते है, मिस्बा को टाइम मशीन दे दी थी।

कुछ ही दिन बाद मिस्बा आफ़ताब को साथ लेकर समय की एक अनजान यात्रा पर निकल गई थी।

Œ Œ Œ

वह साल 2032 था। नवम्बर माह शुरू हो चुका था। ठण्ड ने दस्तक दे दी थी। डॉ० रामावल्लीद्वारा मिस्बा को दी गई टाइम मशीन को धूप दिखाने का समय हो चुका था। डॉक्टर की कुछ हिदायतों में से एक हिदायत ये भी थी। मिस्बा और आफ़ताब किसी अज्ञात स्थान पर सरसों के खेत के बीचों-बीच प्रकट हुए थे। प्रकट होते ही दोनों को कै होने लगी।

"ये बहुत घिनौना है अम्मी!"आफ़ताब थूकते हुए बोला।

"हाँ... सच कहा। लो... पानी पी लो।" मिस्बा ने उबाके मारते हुए अपने साथ लाए बैग को आफ़ताब की ओर बढ़ा दिया।

आफ़ताब अपनी बैसाखी सम्भालते हुए बैग खोलने लगा। उसने पानी से भरी बोतल बाहर निकाली और गट-गट पानी पीने लगा।

पानी ख़त्म होते देख मिस्बा बोल पड़ी, "मेरे लिए भी बचाना आफ़ताब।"

"हम्म... ।" आफ़ताब ने बोतल मिस्बा की ओर बढ़ा दी।

मिस्बा की उबकाई बंद हो चुकी थी, लेकिन जी खट्टी डकारों को महसूस कर रहा था। उसने बोतल हाथ में ली और पानी पीने के लिए सिर ऊँचा किया। अभी उसका गला पानी के घूँट से तर होकर थोड़ी-सी राहत पाता कि किसी तेज आवाज़ ने दोनों माँ-बेटे का ध्यान भंग कर दिया। कुछ ही सेकेंड में खेत के ऊपर से भारतीय लड़ाकू विमान जाते हुए दिखाई पड़े। एक के पीछे एक। कुल आधा दर्जन हवाई जहाज। वे क्षितिज में एक छोर से दूसरे छोर तक उड़ते हुए कहीं जा रहे थे। वायुयानों की तेज़ और तीखी आवाज़ ने उनके कान के पर्दे बस फाड़े ही नहीं थे।

"वाओ!"वायुयानों को देख आफ़ताब की आँखें चमक उठी थी। वे लड़ाकू हवाई जहाज उसके लिए किसी अजूबे से कम नहीं थे। लेकिन मिस्बा ने अपने हाथ कान पर हाथ रख दिए थे। वो शोर उसके बर्दाश्त से बाहर था।

आफ़ताब अपनी बैसाखी लिए खड़ा हो चुका था। वह और वायुयानों को जाता देखना चाहता था। उसने पहली बार इतने नजदीक से वायुयानों को देखा था। फिर वे तो लड़ाकू हवाई जहाज थे। वो अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को फैलाए उस अद्भुत दृश्य को देखने लगा। लड़ाकू हवाई जहाज दूर क्षितिज में विलीन हो

रहे थे।

"क्या कुछ गलत हो रहा है?" मिस्बा को किसी आशंका ने घेर लिया था, "हमें जल्द से जल्द यहाँ से निकलना होगा।" उसने झट से पानी पीते हुए आफ़ताब से कहा और बोतल वापस बैग में रख दी। फिर सरसों की फसल को हाथ से इधर-उधर सरकाते हुए टाइम मशीन को धूप दिखाने लगी।

डॉ० रामावल्ली ने दर्जनों हिदायतों के साथ एक हिदायत यह भी दी थी कि, "भविष्य में अल्प समय के लिए रुकते समय, विशेषकर घड़ी को धूप दिखाने समय उस स्थान विशेष से अधिक दूर मत जाना। अगर ऐसा किया तो किसी मुसीबत में पड़ जाने का खतरा होगा।" मिस्बा को याद आया।

टाइम मशीन धूप से ऊर्जा पा रही थी। उसके डायल पर 5%... 10%... 15%... 18%... दर्शाते हुए अंक बढ़ रहे थे। हालांकि उसमें समय लग रहा था।

आफ़ताब अपनी बैसाखी के सहारे आगे बढ़ रहा था। वह आगे जाकर आस-पास देखने और चीजों को देखना चाहता था।

"तुम यहीं मेरे साथ रहोगे आफ़ताब!" मिस्बा ने उसके पैरों पर विराम लगाते हुए कहा।

"मैं ज्यादा आगे नहीं जा रहा।" आफ़ताब खेत में लहराते सरसों के फूलों को देखने लगा। उसने प्रत्यक्ष रूप से पहलीबारखेत देखे थे। अब तक वह शहर में पला-बढ़ा था और कहीं अधिक घुमने व सफ़र पर दूसरे स्थानों पर नहीं गया था। उसके अपंग पैर हर बार उसके मन में हीन भावना भर दिया करते थे, जिस कारण वह स्कूल द्वारा आयोजित ट्रिप पर भी नहीं जाता था।

मिस्बा को भी इतना समय नहीं था कि वो उसे कहीं ले जा पाती। हालाँकि कई बार आफ़ताब को लेकर उसने सफ़र किया था, लेकिन तब आफ़ताब बहुत छोटा था।

सरसों के लहराते पीले फूल आफ़ताब को भीतर ही भीतर बहुत आनंदित और पुलकित कर रहे थे। हाथ बढ़ाकर वो फूलों को स्पर्श कर महसूस करने लगा। वह उनकी खूबसूरती को अपने भीतर जब्त करना चाहता था। वह फूल दर फूल को देखता व छूता हुआ खेत में आगे बढ़ने लगा।

अभी उसने छः-सात फूलों को ही स्पर्श किया था कि तभी सरसों फसल अप्रत्याशित रुप से कम्पित होने लगे। न केवल सरसों की फसल बल्कि उसकी बैसाखी भी काँपने लगी। उसने नीचे देखा। धरती भी कम्पन से तरंगित हो रही थी। मिट्टी के ढेलें सरक रह थे। कम्पन ने आफ़ताब को चौंका दिया।

टाइम मशीन यानी घड़ी को धूप दिखाती मिस्बा भी चौंकने से बच नहीं पाई।

"ये क्या हो रहा है?" वह चौकन्नी हो गयी। पहले उसे लगा कि भूकंप तो नहीं आ रहा है, लेकिन तभी एक और लड़ाकू हवाई जहाज दोनों के ऊपर से गुजरा। उसे अंदेशा हो गया।

"मैं अभी आई! तुम यहीं रहना और कहीं मत जाना!" उसने आफ़ताब को सतर्क करते हुए कहा।

"नही मैं भी चलूँगा!" आफ़ताब ने कहा।

"मैंने कहा न!" मिस्बा ने सख्त होकर कहा ही था कि दूर से घर्र-घर्र की आवाज़ आने लगी। मानों कोई बहुत भारी चीज़ धरती पर डोल रही हो।

उसने अपने पैर ऊँचे कर देखने की कोशिश की, लेकिन फसल उसकी आँखों के आगे बाधा बनी हुई थी। उसे कुछ नज़र नहीं आया।

"मैं अभी आई, यहीं रहना!" और वह खेत से बाहर की ओर जाती हुई पगडण्डी की ओर बढ़ गयी।

कुछ ही पलों में वह खेत के दूसरे छोर पर थी। उसने सरसों के पीले फूलों के बीच में से झाँका। सेना के बड़े-बड़े टैंक आगे बढ़ते नज़र आ रहे थे। टैंकों के आगे-पीछे और दाएँ-बाएँ सैकड़ों सैनिक अपने अफसरों के साथ चल रहे थे। टैंकों पीछे माल असबाब से और मिसाइलों से लैस टैंक भी आ रहे थे। कुछ ट्रकों में आम नागरिक भी थे। शायद उन्हें पकड़कर पर उसमें बैठाया गया था।

"यहाँ क्या हो रहा है?"मिस्बा के मन में फिर से सवाल कौंध गया।

वो खेतों से बाहर आ गई और माजरा समझने की कोशिश करने लगी। लेकिन उसे नहीं पता था कि खेतों से बाहर आना उसे मुसीबत में डाल सकता है।

"ऐ लड़की तुम यहाँ क्या कर रही हो?" एक कड़कती आवाज़ ने मिस्बा को चौंका दिया। उसने गर्दन घुमा कर देखा। एक सैनिक अपनी राएफल थामे उसकी ओर बढ़ा चला आ रहा था। मिस्बा घबरा गई।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो?" सैनिक ने बंदूक उसकी ओर कर दी थी।

मिस्बा ने घबराकर अपने दोनों हाथ ऊपर कर दिए।

"मैं..." उसकी आवाज़ उसके गले में ही फँस गयी।

"पता नहीं है, जंग चल रही है! हम अनाउंसमेंट कर-करके थक गए हैं, लेकिन तुम लोग सुधरोगे नहीं। गाँव खाली करने का आदेश तुम्हें मिला नहीं क्या? सर!" सैनिक ने अपने अफसर को आवाज़ दी, "एक और सिवेलियन है यहाँ! और भी हो सकते हैं।"

"नाम नोट कर लो और डाल दो सालों को ट्रक में। अच्छी पेनल्टी लगाएंगें सब पर! मजाक बनाकर रख दिया है। जंग के माहौल में भी अपनी आदत से बाज नहीं आ रहे।" अफसर की कठोर आवाज़ आई।

"ठीक है, सर!" सैनिकों से कहा और मुड़ते हुए मिस्बा से प्रश्न करने लगा।

"अपना नाम बताओ!"

"मिस्बा जावेद शेख!"मिस्बा ने डरते हुए जवाब दिया।

"मिस्बा जावेद शेख!" नाम दोहराते हुए सैनिक चौंक गया।

"मुस्लिम हो!"

"हाँ!" मिस्बा ने जवाब दिया।

"किसी परिचित के यहाँ आई हो?" सैनिक ने अगला सवाल किया।

"हाँ!" मिस्बा बहुत घबरा रही थी। कुछ सैनिक खेतों की ओर बढ़ रहे थे। वहीं जहाँ आफ़ताब उसका इंतज़ार कर रहा था।

"किसके यहाँ? नाम बताओ!" सैनिक ने फिर से पूछा।

"वो..." जवाब देते हुए मिस्बा की जबान लड़खड़ाने लगी। वह आफताब के लिए परेशान थी। उसके रवैये पर सैनिक को कुछ शंका हुई।

"मुझे लग ही रहा था।" सैनिक बड़बड़ाया, "बाहर आ जाओ!" उसने मिस्बा को आदेश दिया।

"लेकिन..." मिस्बा पीछे आफ़ताब को देखने लगी ।

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं! चुप-चाप बाहर आ जाओ!" अब सैनिक ने मिस्बा पर गौर किया। वो तीन बार पीछे पलटकर देख चुकी थी।

"लगता है कोई और भी खेतों में है, है न?" सैनिक ने सतर्क होते हुए मिस्बा से पूछा। लेकिन मिस्बा कुछ नहीं बोली। वह दूसरे सैनिकों को देखती रही, जो खेत में अन्दर घुस रहेथे।

"ऐ सुना नहीं तूने मैंने क्या कहा!" सैनिक ने मिस्बा को लताड़ा। इस पर मिस्बा घबराते हुए कुछ सोचने लगी फिर तेजी से पलटकर खेतों की ओर दौड़ गई। उसके अस्वाभाविक रुख ने सैनिक को सकते में ला दिया। वो मिस्बा के कदम को संदेह की दृष्टि से देखने लगा।

"आल यूनिट अलर्ट! खेतों में संदिग्ध गतिविधि की उम्मीद है।" उसने अन्य सैनिकों को सावधान किया। तुरंत सभी में अफरा-तफरी मच गई। सभी टैंक रोक दिए गए। सनिकों ने भी अपनी पोजीशन ले ली। कुछ ही पलों में लाउड स्पीकर कर घोषण सुनाई दी।

“खेतों में जो भी लोग छुपे हुए हैं बाहर आ जाए, वरना हमें गोलियाँ चलानी पड़ेगी!”

“क्या हुआ अम्मी!” आफ़ताब ने मिस्बा को बदहवास-सा अपनी ओर आते देख पूछा। वो मिस्बा को देर हुई देख उसके पीछे पहुँच रहा था।

“हमें यहाँ से चलना होगा!” मिस्बा जल्दी से बैग उठाने लगी।

“क्या घड़ी चार्ज हो गई?” आफ़ताब ने उसकी कलाई पर देखते हुए पूछा।

“नहीं पर हमें जाना होगा!”मिस्बा को आभास हुआ कि सैनिक उसकी और बढ़ रहे थे। लाउडस्पीकर पर अंतिम चेतावनी दी जा रही थी।

“हम तीन गिनने के बाद गोलियाँ चलाना शुरू कर देंगे। हाथ ऊपर कर बाहर आ जाओ। एक...”

मिस्बा ने घड़ी के डायल पर नज़र डाली। स्क्रीन २१% ऊर्जा का स्तर बता रही थी।

“इतना काफी होगा!” मिस्बा ने हड़बड़ी दिखाते हुए बैग कंधे पर टांग लिया और आफ़ताब का हाथ पकड़ लिया।

“क्या मुझे फिर से उल्टी होगी?” आफ़ताब ने मासूमियत से पूछा।

“हाँ!” मिस्बा ने घड़ी के बटन पर हाथ रखते हुए कहा।

“धत! मुझे उल्टी नहीं पसंद!” आफ़ताब के कहते ही लाउडस्पीकर से तीन तक की गिनती ख़त्म होने की आवाज़ हुई।

“फायर!” किसी सैनिक का आदेश सुनाई दिया। और उसी क्षण खेतों में गोलियों की बौछार शुरू हो गयी।

सरसों की खड़ी फसल देखते-ही देखते बन्दूक की गोलियों से नष्ट होते हुए बिखरने लगी। उसके पीले फूल आसमान में ऐसी उड़ने लगे मानों चिड़ियों के पंख टूटकर उड़ रहे हो।

कुछ देर बाद फायरिंग बंद कर दी गयी। सैनिक सतर्क होकर आगे बढ़े। जब वे खेतों के बीच में पहुँचे तो वहाँ कोई नहीं था।

“कहाँ चली गयी?” सैनिक हैरान थे।

€ ¥ Ω £ §

-समय ही ब्रह्मांड का विस्तार है।

(10)

वंशवृक्ष

मियाँ 'रजा शेख' की पत्नी 'परवीन' जावेद के कंधे पर मरहम पट्टी लगा रही थी। सुदूर भविष्य से आए दो दोस्त गंगा नदी के पास बसे छोटे, लेकिन एक महत्वपूर्ण गाँव में मेहमान बनकर पहुँचे थे। वे रजा शेख से मिलने पहुँचे थे। रजा शेख एक मछुआरे थे, लेकिन यह उतनी महत्वपूर्ण बात नहीं थी। महत्वपूर्ण बात ये थी कि वे तथा परवीन जावेद के परदादा व परदादी थी। दोनों दोस्त किसी दूर के रिश्तेदार की हैसियत से उनसे मिलने पहुँचे थे। उन्होंने किसी बेहद जरूरी काम का हवाला देकर रजा शेख को अपनी रिश्तेदारी समझायी थी। बेशक ये काम इरफ़ान को करना पड़ा था क्योंकि जावेद अपने परदादा को देख बेहद जज्बाती हो गया था।

"जख्म ताजा लगता है। क्या हुआ था?" परवीन ने जख्म को पानी से पोछते हुए जावेद से पूछा।

"कुछ नहीं! बस थोड़ा जोश में आकर एक निजाम के सिपहसालार से उलझ पड़े थे।" जावेद कुछ कहता है इससे पहले ही इरफान ने परवीन को जवाब दे दिया।

"कहाँ और कौन से निजाम? हैदराबाद के?" मियाँ रजा शेख पास ही दूसरी खाट पर बैठे थे।

"हाँ वही थे!" इरफान ने हामी भरी।उसने झूठ बोला।

"वे अव्वल दर्जे के कंजूस है। जरूर कामगारों को तनखा नहीं दी होगी।"

"बिलकुल सही फरमाया आपने। उनका सिपहसालार जावेद मियाँ की फूफी के लड़के का पोता था। बड़ा अच्छा दोस्त है। एक दिन बाजार में मिल गया। जावेद ने खैर खबर लेने के बाद मजाक में पूछ लिया, तनखा मिली कि नहीं? नहीं मिली हो तो हम कुछ दे दें, बाजार से भाभी जान के लिए कुछ लेते जाना। बस इसी बात पर बिफर पड़े। नजदीक खड़े सिपाही से भाला लेकर दाग दिया जावेद मियाँ कंधे पर।" इरफ़ान कहानी गढ़ते हुए बताने लगा।

"अपाहिज लोगों का मजाक बहुत कम लोगों को समझ आता है!" रजा

शेख अफ़सोस जताते हुए आगे कहने लगे, “वैसे इसमें तुम्हारी गलती भी है। जनानियों के ऊपर पर मजाक नहीं करना चाहिए। फिर किसी की बीवी के बारे तो कतई नहीं।”

“सही फारमा रहे है आप?” इरफ़ान ने जावेद की ओर देखते हुए कहा।

“मैंने मजाक नहीं किया था!” जावेद बोला। फिर उसने रजा शेख से पूछा, “अच्छा यह बताइए कि आप कब से इस हालत में जी रहे हैं?” जावेद ने रजा शेख के कमज़ोर, पतले तथा अर्धविकसित हाथों की ओर इशारा करते हुए कहा।

“ये तो मजाक नहीं है ना?” रजा शेख ठहाका लगाते हुए हँसने लगा। उसके हँसने पर परवीन और दोनों मेहमान भी हँसने लगे।

“काफी दिलदार और जिंदादिल मालूम होते हैं, आप!” इरफान ने रजा शेख की तारीफ की।

“इस जिंदादिली और जीवटता की वजह से ही अब तक जिंदा हूँ। वरना मेरे जैसों के लिए दुनिया नहीं है। तुम्हें तो इसका इल्म होगा, क्यों? अपाहिजों को कोई नहीं पूछता। सिर्फ दूसरों के रहमों करम पर जिंदगी बसर करने को मजबूर होना पड़ता है।” रजा शेख ने जावेद की अर्धविकसित टाँग की ओर देखते हुए उससे कहने लगा।

“हाँ, मैं बहुत अच्छी तरह से वाकिफ हूँ! ये दुनिया हम जैसो को सिर्फ दुतकारती है।” जावेद ने रजा शेख के वाक्य के प्रयुत्तर में कहा।

“यही होता है!” रजा शेख जावेद की टांग को घूरते दोनों के बीच अजीब समानता को समझने की कोशिश करते हुए सोच में डूब गया।

परवीन पट्टी बाँध चुकी थी।

“मैं हल्दी वाला दूध लेकर आती हूँ!” कहते हुए वह उठी और रसोई में जाने से पहले दुशाला उठाकर रजा शेख के कंधों पर डाल दी, जो उसके कन्धों से सरक कर नीचे गिर गयी थी। परवीन ने एक नज़र रजा शेख को देखा। जैसे वो नहीं चाहती थी कि रजा शेख अपने अपाहिज और लाचार होने के विषय में अधिक बात करे। वह पलक झपकाकर रसोई में चली गयी।

“अच्छी बीवी मिली है आपको। खुदा आपके परिवार को बरकत दे और

हमेशा सलामत रखें।” जावेद ने परवीन की तारीफ कर शुक्रिया अदा किया।

“शुक्रिया! रजा शेख ने फीकी मुस्कुराहट चेहरे पर लाते हुए कहा। मानों वो परवीन के विषय में कोई बात नहीं करना चाहता था। उसने विषय बदलते हुए पूछा, “अच्छा यह बताओ मुझसे क्या काम था? मेरी फूफी ने तुम्हें किस बारे में बात करने के लिए भेजा है?”

जावेद कुर्ता पहनने लगा। उसने एक नज़र इरफान पर डाली। वह चाहता था कि रजा शेख के प्रश्न का उत्तर दे। इसलिए...

इरफ़ान रजा शेख से मुखातिब होकर कहने लगा, “दरअसल हमें आपसे जो काम है वह पारिवारिक है।” इरफान एक पल के लिए मौन होकर जावेद को देखने लगा। वह सोच रहा था कि क्या कहना है।

“आगे बोलो! मैं सुन रहा हूँ।” रजा शेख धैर्यपूर्वक बोला।

“हमें बताया गया है कि आपके खानदान में अपंग बच्चों के पैदा होने का सिलसिला चला आ रहा है!”

इरफान की बात सुन रजा शेख गंभीर हो गया। उसके चेहरे पर कठोरता आ गई। वो सोचने लगा था कि आखिर उसके घर आए ये दो मेहमान उससे ऐसा सवाल क्यों पूछ रहे थे।

उसने सख्त होकर कहा, “ये कैसा सवाल है?”

“बुरा मत मानिएगा, लेकिन हमारें लिए ये जानना बहुत ज़रूरी है। किसी के भविष्य का सवाल है! बताइये क्या आपके खानदान में ये सिलसिला है?”

इरफ़ान के कहने पर शेख कुछ जज्बाती हो गया। उसने कुछ देर की चुप्पी के बाद कहा, “बिल्कुल सही सुना है! मेरे हाथ तुम दोनों देख ही रहे हो। ये मेरे जन्म से विकसित नहीं हुए है।”

“क्या आपके वालिद में भी ये कमियाँ थी?” अब जावेद ने संजीदा होते हुए पूछा।

अपने वालिद की बात निकलते ही रजा शेख के चेहरे पर मायूसी के बादल छा गए। वो अपने वालिद के संघर्ष को याद कर सीने में दर्द महसूस करने लगा। एक लंबी खामोशी के बाद उसने गर्दन हिलाते हुए ‘हाँ’ कहा।

“तब तो उनके वालिद यानी कि आपके दादा भी उन कमियों के साथ पैदा हुए होंगे? एक हाथ, एक पैर या दोनों हाथ या दोनों पैर... उनके कौन-से से अंग विकसित नहीं हुए थे?”

“पहले ये बताओ तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो?” रजा शेख का धीरज

जवाब दे रहा था। वह जावेद के प्रश्न पर बिफर गया और कहने लगा, "मुझे लगा मेरी दूर की फूफी जिसे मैं याद नहीं कर पा रहा हूँ कि वो कौन है, पर तुम कहते हो कि तुम्हें उसने भेजा है तो ये बताओं कि क्या उसने तुम दोनों को मेरे बेटे की शादी के बारे में बात करने के लिए भेजा है? मैंने कई रिश्तेदारों को कह रखा है। शायद उनके ज़रिए उसे मेरे बेटे के बारें में मालूम हुआ हो। उसकी शादी नहीं हो रही है क्योंकि वो भी मेरी तरह लाचार है। अल्लाह ने उसे दोनों पैरों से अपंग पैदा किया है।"

"आपका बेटा भी है!" जावेद अचंभित हो गया। उसके दिमाग में हुमायूँ के मकबरे वाली घटना कौंध गई।

"हाँ! लेकिन वह हमारे साथ नहीं रहता। वो एक सरकारी मुलाजिम है। उसके अफसर उसे यहाँ-वहाँ भेजते रहते है। ज्यादातर समय वह घर से बाहर ही रहता है। उसे कभी-कभार ही हमारी याद आती है।" रजा शेख कुछ गुस्से से बोला, "उसकी खुद की इच्छा थी कि वह कभी हमारे साथ न रहे, लेकिन शादी तो करना होगी न?"

"इरफान के चाचा की एक लड़की है। जब हम यहाँ से वापसी करेंगे तो आपके लड़के के लिए बात चलाएंगे!" जावेद ने रजा शेख को सामान्य करने की कोशिश की।

"मतलब तुम किसी और मकसद से आए हो।" रजा शेख बिगड़ रहा था।

"आप अपने बेटे के लिए परेशान न होइये! उसे खूबसूरत लड़की मिलेगी!" इरफ़ान मिमियाया।

"खूबसूरत!" रजा शेख घर्राया।

"खूबसूरत और हसीन! आखिर सरकारी मुलाजिम है आपका बेटा। सरकारी मुलाजिमों की किस्मत तेज़ होती है। मैं अपने चाचा जान से बात करूँगा। वे राज़ी हो जाएंगे।"

"अगर ऐसा हो जाए तो बहुत अच्छा होगा। हो सके तो बात बढ़ायेएगा। मुझे आपके वापस आने का इंतजार रहेगा।"

"हम पूरी कोशिश करेंगे!" इरफान ने बातचीत का माहौल खुशनुमा रखने की कोशिश की, "अच्छा यह बताइए आपके खानदान में ये बीमारी कब से है?"

"मुझे यह सवाल पसंद नहीं है, लेकिन ठीक है, अब चूँकि तुम अपने चाचा जाना से मेरे बेटे की बात करने वालें हो तो मैं बता देता हूँ, मुझे नहीं पता हमारे खानदान में ये अपाहिज बच्चों के पैदा होने का सिलसिला कब से है। लेकिन मैं

बस इतना जानता हूँ कि यह है। मेरे वालिद के एक हाथ और एक पैर नहीं था। मेरे दादा, उनके दोनों पैर नहीं थे।और उनके वालिद यानी मेरे परदादा भी दोनों हाथ या पैर से लाचार थे। पर तब मुझे मेरे दादा, परदादा पर नाज़ है। तुमको हैरानी होगी जानकार कि मेरे दादा रंगून में एक अधिकारी थे। आज तो हम बहुत अच्छी स्थिति में हैं, लेकिन सोचिये वे कभी एक भिखारी थे जो घर छोड़कर भाग निकले थे।" रजा शेख की इस बात पर जावेद और इरफान हक्के-बक्के रह गए।

इरफान मन ही मन कहने लगा, "पक्का जावेद मियाँ घर छोड़कर भागेंगे। अजीब बीमार खानदान है इनका!"

जावेद इरफान के मन की बात समझ गया था। उसे आशंका होने लगी थी कि सच में वह घर छोड़कर तो नहीं चला जाएगा। अगर वो खुद नहीं गया तो ये निश्चित था कि इसका बेटा आफ़ताब घर छोड़कर जाने वाला था। मगर अभी तो जावेद के लिए वो पैदा भी नहीं हुआ था।

लेकिन तब भी अगर ठीक से देखा जाए तो वह घर से दूर था। आफ़ताब भविष्य की यात्रा पर था। उसे डॉ० रामावल्ली ने जावेद से दूर किया था।

"वह घर छोड़कर क्यों भाग गए थे?" इरफ़ान को जावेद का अजीब नज़रों से देखना नागवार गुजरा। वह समझ गया कि जावेद उसे कोस रहा था।

"क्यों भागे थे!" रजा शेख बताने लगा, "ख़ुदकुशी करने! वे अपनी जिंदगी से तंग आ गए थे। बेहद मायूस हो गए थे। नहीं चाहते थे कि अपाहिजों की तरह जिंदगी बसर करें। पहले जीने की खूब कोशिश की थी, लेकिन फिर हिम्मत जवाब दे गई। चले गए ख़ुदकुशी करने, पर वहाँ भी हिम्मत जवाब दे गई। उन्होंने ख़ुदकुशी नहीं की, पर वापस घर भी न आए। अपने वालिद से बहुत नफरत करते थे।"

"क्यों?" जावेद ने हैरत में पड़ते हुए कहा। मानों वो खुद को उस जगह रखकर देख रहा था।

"उन्होंने लगता था कि उनके वालिद यानी मेरे परदादा के अपाहिज होने की वजह से ही वो अपाहिज हुए हैं। जबकि मेरे परदादा चाहते थे कि उनका बेटा मुगल सम्राट के महल में लग जाए।कोई भी छोटा-मोटा काम जैसे पोशाकों को सिलने का, साफ-सफाई का।"

"मतलब आपके पुरखे शाही घराने में नौकर थे?" इरफान को बेहद आश्चर्य हुआ। वह चकित भाव से जावेद को देखने लगा था।

"हाँ! वे बहादुर शाह जफर, हिंदुस्तान के आखिरी मुगल की सेवा में थे। उनके

आखिरी वक़्त में। और न केवल उनकी सेवा में, बल्कि मैंने ऐसा सुना है कि मेरे पुरखों के आगे कभी बादशाह खुद सिर झुकाते थे।"

"यकीन नहीं होता!" जावेद चकित था।

"मुझे भी यकीन नहीं होता जब मैं इस बारें में सोचता हूँ, मगर यही सच है। हमारे खानदान का बहुत ऊँचा रुतबा था।"

"फिर वो रुतबा कहाँ चला गया?" इरफ़ान ने पूछा।

"हवा हमेशा एक सी नहीं चलती। वक़्त बदलता रहता है।" रजा शेख ने कहा।

"उनका नाम क्या था?" जावेद ने पूछा।

"किनका? मेरे दादा का या पर दादा का? चलो दोनों का नाम बताता हूँ। मेरे दादा का पूरा नाम था, फिरोज अनवर शेख!" रजा शेख सीना फुलाते हुए कहा।

"फ़िरोज़ अनवर शेख!" जावेद और इरफ़ान ने साथ में दोहारते हुए एक-दूसरे को देखा।

"मगर अभी तक तुमने ये सब पूछने की वजह नहीं बतायी! मुझे वो वजह बताओ बरखुरदार!" अब रजा शेख ने जावेद से फिर वही मूल प्रश्न किया।

"दरअसल, मेरे खानदान में भी यही बीमारी चली आ रही है जनाब, जो आपके खानदान में है!" जावेद ने दृढ़ता से कहा।

"क्या?" रजा शेक का मुँह खुला रह गया। उसे यकीन ही न हुआ। वह सोचने लगा कि ऐसा कैसे हो सकता था?

"क्या यह सच कह रहा है?" उसने इरफ़ान से पूछा।

"हाँ, ये सच है!" इरफान जज्बातों के साथ कहने लगा, "इनके वालिद और उनके वालिद के वालिद और उनके भी वालिद, सबमें कोई न कोई कुदरती कमियाँ थी। सभी उन कुदरती कमियों के साथ पैदा हुए थे, जिनके लक्षण आपके खानदान में बताए गए है।"

इरफान की बात सुनकर जावेद की आँखें नम हो गयी क्योंकि इरफ़ान जिनके बारे में बता रहा था वो सामने ही बैठे थे। बस वे नहीं जानते नहीं जानते थे कि जावेद उनका ही खून है, जो भविष्य से किसी तलाश में आया है।

“मैं सोचता था कि मेरे खानदान में ही ये जिस्मानी कमियाँ है!” रजा शेख को किसी प्रकार की तसल्ली महसूस हुई। वह आगे पूछने लगा, “लेकिन तब भी मुझे ये समझने में कठिनाई हो रही है कि तुम मुझसे क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे क्या काम आ सकता हूँ?” रजा शेख के इस प्रश्न का उत्तर इरफ़ान को ही देना था क्योंकि इसके लिए वो पूरी तैयारी के साथ आया था।

वह रजा शेख को बताने लगा, “एक पहुँचे हुए सूफी फ़क़ीर ने रुहों से पूछकर बताया है कि आपके और इनके वंशजों का पेड़ एक ही है। अगर हम उस पेड़ के बीज तक पहुँच जाएं तो इस खानदानी बीमारी को आने वाली पीढ़ियों में बढ़ने से रोक सकते हैं।”

“इन फकीरों के चक्कर में न पड़ो तो ही बेहतर है। ये कुछ भी बोलते रहते हैं। आजकल इनमें पहले जैसी बातें नहीं रही। हाँ, कभी हुआ करते थे रुहों से बात करने वाले। मगर आज ढूँढने से भी नहीं मिलते।” फकीरों का जिक्र निकलते ही रजा शेख का मन खट्टा हो गया।

“सब एक से नहीं होते! और वो सब में ऊँचे फ़क़ीर है!” जावेद ने रजा शेख को भरोसा दिलाना चाहा।

“मैं नहीं मानता। खूब दुनिया देखी है मैंने। इनके पीछे बहुत से चाँदी के सिक्के भी लुटा चुका हूँ। मेरा बेटा भी इनके पीछे पड़ा था, मगर बाद में उसकी भी आँख खुल गई।” रजा शेख बेमन से बोला।

“ये सूफी फ़क़ीर है जनाब! धन-दौलत से कोई वास्ता नहीं है!” इरफ़ान ने जावेद की बात को सही ठहराने की कोशिश की।

“अगर ऐसा है तो ठीक है। लेकिन वंश-वृक्ष के बीज तक कैसे पहुँचेंगे आप? मुझे अपनी जड़ों के बारे में कोई अधिक तजुर्बा नहीं है। केवल अपने पुरखों के कुछ नाम और उनसे जुड़ी कहानियाँ पता हैं।”

“यही दिक्कत हमारे साथ भी है। हमें भी अपनी जड़ों के बारे में ज्यादा नहीं जानते।” जावेद बीच में कहते हुए चिंता में पड़ गया।

“फिर कोई मतलब नहीं। जरा वो हुक्का मेरे पास रख दो।” रजा शेख ने

इरफ़ान से हुक्का पास सरका देने के लिए कहा।

इरफ़ान ने हुक्का उठाकर पास सरका दिया। फिर वो आंगन में एक ओर जल रही अंगीठी से आग ले आया और उसे हुक्के में डाल दिया।

उसने हुक्का रजा शेख के मुँह से लगाते हुए कहा, “लेकिन तब भी क्या हुआ। हम कहानियों के जरिए अपने पुरखों के बारे में कुछ तो जान सकते है। वंशवृक्ष के जड़ों की गहराई तक न जा सकते हैं, तो जड़ों को खोद तो सकते ही है। क्या पता कोई चिराग आज लग जाएँ?” इरफ़ान ने दोनों अपाहिजों में उमंग जगाने की लालसा से कहा।

“हम्म…विचार बुरा नहीं है। कहानियाँ-किस्से कुछ तो रहस्य से परदा उठा सकते है।”

“परदा बाद में उठा लेना पहले इन्हें दूध पी लेने दीजिए और ये क्या आपने फिर हुक्का थाम लिया। इसे रख दीजिए।आप भी थोड़ा दूध पी लीजिए।” परवीन ने जावेद और इरफ़ान को गरम दूध से भरा गिलास दिया और रजा शेख के मुँह से हुक्का हटा लिया।

फिर वो रजा शेख के लिए दूध लेने रसोई घर में चली गई। कुछ हो देर में वो वापस आयी। उसके हाथ में दूध का गिलास था। वह अपने हाथ से रजा शेख को दूध पिलाने लगी।

“आपके तो हाथ नहीं है, फिर आप मछलियाँ कैसे पकड़ते हैं?” जावेद ने दूध का गिलास होठों से लगाते हुए पूछा।

“एक लड़का रखा है, पास ही में रहता है। हमारे पास नाव है, उसके पास हुनर। कभी-कभार नाव मोल भी दे दी जाती है।” परवीन ने जावेद के प्रश्न का जवाब दिया। रजा शेख बकरी का गरम दूध पीने का मज़ा ले रहे थे।

“दाल रोटी चल जाती है, बस। अब तो शाही खानदान से नहीं रहे वरना कई सारी कैफियत हमें मिलती। लेकिन लड़का अच्छा है, मेहनती है। जरूरतें इंसानों को मिला ही देती है, उसे काम चाहिए थे, हमें काम करने वाला।” रजा शेख ने गिलास से मुँह हटाते हुए कहा।

“सही फरमाया आपने। अगर जरूरतें नहीं ती तो भला इंसानों का वजूद ही कितने वक़्त का है। काम बजा नहीं कि सब अपने रास्ते।” इरफ़ान ने दूध का गिलास ख़त्म करते हुए उसे जमीन पर रख दिया।

कुछ ही पलों में जावेद का गिलास भी ख़त्म हो गया। फिर रजा शेख भी गिलास से फारिग हो गए।

“मेरा हुक्का पास में रख दो!” रजा शेख ने परवीन से कहा।

“आज के लिए बहुत हुआ!” परवीन ने मन किया।

“नहीं तुम दे दो वर्ना मुझे नींद न आएगी ठीक से।” रजा शेख ने ज़िद की।

“लत बुरी चीज़ है!” परवीन ने बेमन से हुक्का सरका कर रजा शेख के मुँह से लगा दिया।

“मेरे परदादा की कहानी तुमको बहुत भाएगी।” रजा शेख हुक्का गुड़गुड़ाते हुए बताने लगा, “वो घर से भागकर रंगून चले गए थे। मेरे अब्बा सुनाते थे कि उन्हें हिन्दुस्तान के आखिरी शहंशाह बहादुर शाह जफर की कब्र की निगरानी का काम मिला था।”

और फिर रजा शेख, जावेद और इरफान की इच्छा की परवाह किए बगैर खुद ही बताने लगा। परवीन उसे देख मुस्कुराने लगी। उसने हुक्का थामे रखा था और बीच-बीच में हुक्का रजा शेख के मुख से लगाती जा रही थी। शायद उसे भी वो कहानी या किस्सा बहुत पसंद था। रजा शेख हुक्के के धूँएँ के छल्लों के बीच किसी और ही दुनिया बात कह रहा था। उसका हर शब्द जावेद के पुरखों का अनसुना सच बयाँ कर रहा था।

Œ Œ Œ

रात को जावेद और इरफान की खाट चौगान में लगा दी गई थी। रजा शेख परवीन के साथ दूसरे कमरे में सोने चले गए थे। जावेद अपने परदादा के मुख से पारिवारिक किस्सा सुनकर भावनाओं के ज्वार के चरम पर था। उसे सोचने में मुश्किल हो रही थी कि उसके परदादा के परदादा अधिकारी बन गए थे। वो भिखारी बनकर जीवन व्यतीत कर रहे थे। लेकिन उसे यह बात भी बड़े चक्कर में डाल रही थी कि उसके वंशज शाही घराने से ताल्लुक रखते थे।

“क्या तुम सो गए?” उसने करवट बदलते हुए इरफान की ओर देखा। इरफान सो चुका था। वह बहुत थक गया था। अब उसे सुबह बाग़ देने वाला

मुर्गा ही उसे उठा सकता था। जावेद के चेहरे पर फीकी-सी हँसी दौड़ गई। वह आहिस्ता से करवट बदलते हुए सोने की कोशिश करने लगा। उसे मिस्बा और अपनी अम्मी 'आफरीन' की याद आने लगी। वह देर तक दोनों के बारें में सोचता रहा। फिर कब उसकी आँख लग गयी उसे होश न रहा।

सुबह होने पर ही दोनों उठे। शौच और स्नान के लिए उन्हें नदी तट की विपरीत दिशा में, पर्वतों के पीछे वाले इलाके में जाना था। दोनों लोटा लेकर चल पड़े थे। गाँव में दो नए लोगों को देख रजा शेख के पड़ोसियों ने उनसे बीच-बीच में उनकी खैर खबर जान लेने की फिक्र की। जैसे कि वे दोनों कौन है? कहाँ से आए हैं?

इरफान उन्हें संक्षिप्त उत्तर देकर संतुष्ट करता जा रहा था। एक-दो निवासियों को जावेद ने भी जवाब दिया। फिर जब वे खाली पगडंडी पर पहुँच गए, तब जावेद अलग दिशा में चला गया और इरफ़ान अलग दिशा में।

दोनों हल्के होकर वापस पगडंडी पर मिले तब जावेद ने इरफान से पूछा, “मेरी नई बैसाखी कैसी है?”

दरअसल उसने एक मजबूत लकड़ी खोज निकाली थी जो आतीत में उसके लिए बैसाखी का काम करने वाली थी। उसने अपना नकली पैर भी निकाल फेंका था।

“बढ़िया है! लेकिन इससे तुम्हें चलने में थोड़ी परेशानी होगी।” इरफ़ान ने कहा।

“होगी तो सही, लेकिन अब मैं जैसा हूँ वैसा ही पेश आऊंगा।”

“ये बात तो है। इसी बहाने लोगों की हमदर्दी भी मिल जाएगी है जोकि समय पड़ने पर बहुत ज़रूरी होगी।” इरफ़ान बोला।

“लेकिन मुझे किसी की हमदर्दी और एहसान नहीं चाहिए।”

“जानता हूँ, मगर वक़्त की यही दरकार है।” इरफ़ान आस-पास के नजारों को देखते हुए बोला।

“अच्छा कुछ सोचा है फिर, आगे क्या करना है?” जावेद ने मुख्य बात पर आते हुए पूछा।

"इसमें सोचना क्या है जावेद मियाँ!" इरफ़ान अपने बेबाक अंदाज़ में बोला, "रजा शेख ने अपने परदादा का पता दे दिया है। मेरे ख्याल से सीधे उसी वक्त में जाना चाहिए। नवंबर 1862, इसी दिन बहादुर शाह को गुप्त रूप से दफनाया गया था। वहाँ जाकर तुम्हारे परदादा के परदादा से मिलते हैं। मुझे पक्का यकीन है, वे वही मिलेंगे। शायद उनसे हमें और पहले की जानकारी मिल जाए। देखें तुम्हारें खानदान की ये बीमारी हमें कहाँ तक ले जाती है।"

"ठीक है। फिर उसी वक्त में चलते हैं, लेकिन नहा-धोकर थोड़ी पेट पूजा कर लें।"

"अमाँ यार! भूखे पेट तो मुझसे भी ज्यादा समय यात्रा नहीं की जाएगी। मैं तो कहता हूँ दोपहर की झपकी लेकर चलेंगे। क्या है न, तब तक खाना अंदर अंतड़ियों तक पहुँच जाएगा उल्टी होने पर साला बाहर नहीं निकलेगा।"

"ये सही कहा!" जावेद हँस दिया।

"फिर तुम्हारी परदादी घी की रोटियाँ बना रही हैं। सोचता हूँ रास्ते के लिए भी कुछ रोटियाँ भी बनवा लेंगे। पता नहीं रंगून में हालात क्या बनें। कहीं हमें भी तुम्हारे परदादा के परदादा की तरह भीख न माँगनी पड़े।" इरफ़ान मज़ाक करते हुए बोला।

"मेरे खानदान का मजाक उड़ा रहे हो?" जावेद ने झूठ-मूठ का नाराज होते हुए पूछा।

"कैसी बात कर रहे हो जावेद मियाँ? यह कोई मजाक वाली बात लग रही है तुम्हें। चलो चलते हैं वरना घाट पर भीड़ मिलेगी।" इरफ़ान पगडंडी पर आगे बढ़ गया। जावेद अपनी बैसाखी के सहारे पीछे चलता रहा।

दोपहर को रजा शेख से विदा लेकर दोनों दोस्त फिर से गंगा नदी के सुनसान रेतिले तट पर पहुँचे। उन्होंने इधर-उधर देख कर एकांत होने की तसल्ली की। फिर जावेद ने अपने कुर्ते की जेब में से, कपड़े में लिपटी घड़ी यानी टाइम मशीन निकालकर कलाई में पहनी। इरफ़ान ने उसका हाथ थाम लिया। जावेद घड़ी में समय दर्ज करने लगा। फिर एक सेकेंड से भी कम समय में दोनों दोस्त एक आवाज़ करते हुए कहीं अज्ञात में विलीन हो गए।

€ ¥ Ω £ §

-समय ही समस्या का समाधान होता है।

1857

10 नवंबर 1862, रंगून, बर्मा (म्यांमार)

जावेद और इरफान ऐसे स्थान पर प्रकट हुए थे जहाँ से दस मील के फासले पर वो ऐतिहासिक इमारत थी, जहाँ बहादुर शाह जफर यानी हिन्दुस्तान के आखिरी मुगल को कैद करके रखा गया था।

चूँकि दोनों गहरे दोस्तों को एक लम्बा रास्ता तय कर वहाँ पहुँचना था, इसलिए इरफान जावेद को इतिहास का एक किस्सा सुनाने लगा। वो किस्सा जिसके अंत में रजा शेख द्वारा सुनाया फिरोज अनवर अहमद शेख यानी जावेद के परदादा के परदादा का किस्सा आ जुड़ता था।

वह आदमी जो घर से भागकर मौत को गले लगाना चाहता था, लेकिन हिम्मत पस्त हो जाने के कारण भीख माँग कर गुजर बसर करने को मजबूर हुआ था। वह आदमी जिसका जावेद एक वंशज था।

"तो असल में क्या हुआ था?" जावेद ने बैसाखी के सहारे चलते हुए, इरफान के साथ कदमताल बैठाते हुए पूछा। वह इतिहास के उस किस्सें को सुनने को बेताब था।

"हुआ यह था जावेद मियाँ..." इरफान बताने लगा, "कि जब 1857 की क्रांति उठी तो बहादुर शाह जफर दिल्ली की गद्दी पर बैठे थे। दिल्ली की गद्दी पर उनकी ताजपोशी उनके पिता अकबर शाह द्वितीय की मौत के बाद की गयी थी। उस वक्त तक मुगल सल्तनत बेहद कमजोर हो चुकी थी। बहादुर शाह सिर्फ कहने भर को शहंशाह रह गया था। लेकिन जब अंग्रेजों के अत्याचार बढ़ने लगे तो क्रांतिकारी दल व दूसरे राज्य के रजवाड़े इकट्ठे होकर उन्हें हिंदुस्तान की सरजमी से खदेड़ने के लिए एकजुट हो गए। उसी समय उन्हें ये जरुरत महसूस हुई कि वे सभी दिल्ली के सम्राट को अपना नेता मानें। क्योंकि बिना नेता के क्रांति का बिगुल नहीं फूँका जा सकता था।

इसके अलावा एक वजह ये भी थी कि क्रांतिकारी बादशाह को सम्राट मानकर अंग्रेजों को एक पैगाम देना चाहते थे। पैगाम ये कि हिंदुस्तान में किसी फिरंगी का शासन नहीं चलेगा, बल्कि हिंदुस्तान में असली शासक यानी दिल्ली की चलेगी। इसका मतलब ये था कि हिंदुस्तानी खुद ही अपनी किस्मत तय करेंगे, लेकिन यह इतना आसान नहीं था। बहादुर शाह को बागियों का सरदार

बनना खटक रहा था। वह नहीं चाहता था कि क्रांतिकारी उसे अपना नेता बनाएँ।”

“क्या यह सच था?” जावेद हैरान हुआ।

“हाँ, शुरुआत में वह नहीं चाहता था कि वह बागियों का सरदार बने। फिर जब बागियों की एक टुकड़ी लाल किले के नीचे पहुँची तो उन्होंने बादशाह से मिलने के लिए अपना पैगाम भिजवाया पर बादशाह ने पैगाम सुनकर भी मिलने से मना कर दिया। क्योंकि वह जानता था कि बाग़ी उससे क्यों मिलना चाहते थे।

इसके अलावा वह बूढ़ा हो चुका था।अपनी बची हुई जिंदगी वो चैन से जीना चाहता था। उसे किसी झमेले में नहीं पड़ना था। पर बागी कहाँ मानने वाले थे। उन्होंने उसे तोहमतें भेजी। उन्होंने उससे कहा कि हिंदुस्तान की तकदीर बदलने के वक़्त वो मुँह क्यों फेर रहा है। उन्होंने उसे ताने कसते हुए याद दिलाया कि उसकी रगों में किसका खून है।

उन्होंने उसे याद दिलाया कि वह अकबर और औरंगजेब का वंशज है। उसके पुरखे उसे जन्नत से देख रहे हैं। वो उन्हें शर्मसार ना करें। अगर उसने अब भी बागियों का साथ न दिया तो उसे इतिहास से बिसरा दिया जाएगा। भविष्य में आने वाली पीढ़ियाँ उस पर ना थूके, इसलिए उसे उनका साथ देना चाहिए।

बागियों की तोहमतों और तानों ने उसे हक्का-बक्का कर दिया। वह विचार शून्य हो गया। उससे तय नहीं हो पा रहा था कि वह क्या करें, क्या ना करें।

बागियों के बार-बार इसरार करने पर आखिर उसे उनकी बात माननी पड़ी। 82 साल की उम्र में वो मुग़ल शासक हिन्दुस्तान का शहंशाह बन गया, लेकिन हड़बड़ी में उसने खबर आगरा के लेफ्टिनेंट गवर्नर तक पहुँचा दी थी।

इधर बागियों ने उसके मान जाने पर उसके नाम के खुदबे पढ़ें। उसके नाम पर सिक्के ढलवाए और नए फरमान जारी किये।

बहादुर शाह के शहंशाह बनते ही बागियों ने सबसे पहले शहर में मौजूद अंग्रेजों व यूरोपियन को काट डाला। यह मई 1857 की बात है यानी अब से कुछ सालों पहले ही ये सब हुआ था। अंग्रेजों के खिलाफ सबसे बड़ी क्रांति का बिगुल फूँका गया था।”

"क्या अंग्रेजों ने कुछ नहीं किया?" जावेद ने पूछा।

"किया न! फिरंगियों को विद्रोह की भनक लग चुकी थी। हिंदुस्तान के ही कुछ गद्दार शासकों ने बगावत की एक-एक योजना की उल्टी अंग्रेजों के सामने कर दी थी। जिस कारण क्रांति को कुचलने के लिए धोखा और षड्यंत्र शुरू हो चुका था। बहादुर शाह को इसकी खबर मिल गयी थी। वह जान गया था कि बाग़ी ज्यादा समय तक अंग्रेजों के सामने टिक नहीं पाएंगे, इसलिए उसने अपनी बेगम 'जीनत महल' का कहा मान फिरंगियों के साथ सुरक्षा की बातचीत शुरू कर दी। लेकिन उससे कुछ होना नहीं था। अंग्रेज अपने साथ गद्दारी करने वालों को नहीं बक्शते थे। सितंबर 1857 में, अंग्रेजी फौजें दिल्ली में दाखिल हो गईं। इसे इत्तेफाक कहे या अल्लाह का कहर, उन फौजों में सिख इन्फेंट्री के जाबाज़ लड़ाकू जवान थे। वे सिख; जिनके गुरु तेग बहादुर और उनके चेलों के सिर बहादुर शाह जफर के पुरखों ने कलम कर दिए थे। सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्होंने इस्लाम कबूल करने से मना कर दिया था।

किले के कश्मीरी दरवाजे पर इन्फेंट्री के जवान गोले बरसा रही थी। वह दरवाजा कुछ ही देर में टूट कर गिर गया। अंग्रेजी सेना शहर में दाखिल हो गई। उन्होंने वहाँ कत्लेआम मचा डाला। उन सैनिकों ने अपने पुरखों की मौत का बदला पूरा कर लिया। पर शहंशाह बहादुर शाह जफर लाल किले में नहीं था। वह अपने बेटे और पोते के साथ हुमायूँ के मकबरे में जा छिपा था।"

हुमायूं का मकबरा नाम सुनते ही जावेद अपने कंधे पर लगी गोली को याद करने लगा। उसके परदादा ने उसे जासूस समझकर गोली चला दी थी। इधर इरफ़ान आगे बता रहा था। वह किस्सा सुनाने में पूरी तरह से तल्लीन था।

"शहंशाह बूढ़ा था। लड़ना नहीं चाहता था। वह तो बचने का रास्ता ढूँढ रहा था। उसके हमदम अंग्रेजों के साथ बातचीत करने में लगे थे। लेकिन बातचीत क्या होती? सब कुछ तय हो चुका था। मेजर हडसन को बादशाह को गिरफ्तार करने के लिए भेजा गया था। शहंशाह को गिरफ्तार करने पर ही उनकी जीत पक्की होने वाली थी, वरना क्रांति को कुचलना जीत नहीं माना जा सकता था।

20 सितंबर 1857 को अंग्रेज अफसर विलियम स्टीफन हडसन, उसका पूरा नाम था, उसने और उसके सिख सैनिकों ने हुमायूँ का मकबरा घेर लिया। बादशाह और उसके साथ छिपे उसके बेटे, पोते और ख़ासमख़ास सिपहसालारों को बाहर निकलने की चेतावनी दी गई। उन्हें कहा गया कि यदि वे बाहर नहीं निकले तो उन्हें गोली मारने का हुक्मनामा निकाला जा चुका है। बादशाह असमंजस में पड़ा

हुआ था। फिर उसे यकीन दिलाया गया कि उसे गोली नहीं मारी जाएगी और न ही उसके साथ किसी भी प्रकार की बदसलूकी या बेरहमी से पेशा आया जाएगा। लेकिन तब भी उस ओर कोई हलचल नहीं हुई। दोनों और बेचैनी से भरा माहौल बना रहा।

तभी मेजर हडसन ने बहादुरशाह के लिए एक शेर पढ़ा। मेजर उर्दू का जानकार था। उसने जफर से कहा,

दमदमें में दम नहीं है, खैर माँगों जान की,
ऐ जफ़र ठंडी हुई अब तेग(तलवार) हिंदुस्तान की।

उस वक्त बादशाह लाचार था, बूढ़ा था। उसके पास किसी भी प्रकार की मदद नहीं थी, लेकिन हडसन की ललकार पर वह झुका न रह सका। उसका शायर दिल ललकारते हुए बोल पड़ा,

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की
तख्त ए लंदन तक चलेगी तेग हिंदुस्तान की।

उसने हडसन को जवाब दे दिया था।

इस पर हडसन मुस्कुराया। उसने बादशाह से कहा, "आप मुझे आत्मसमर्पण कर दो बागियों के सम्राट। तुम्हारा वक्त खत्म हो चुका है।"

और तब बादशाह सम्राट बहादुर शाह जफ़र को बाहर आना पड़ा। मेजर हडसन ने उसको गिरफ्तार कर लिया। बादशाह के साथ उसके बेटों और पोते को भी गिरफ्तारी देना पड़ी। अगले दिन हडसन ने उसके दोनों बेटों और पोते को खूनी दरवाजे पर लाकर गोली मारने का हुक्म दे दिया।

"उन्हें गोली क्यों मारी?" जावेद ने दुखी होते हुए पूछा। उसे इतिहास के बारे में जानकारी नहीं थी। जबकि इरफ़ान को इतिहास के हज़ारों तथ्य पता थे क्योंकि कभी नौकरी न मिलने पर उसने सिविल सर्विस की परीक्षा की तैयारी की थी।

"उसने उन्हें गोली से मरवा दिया क्योंकि वो सबको पैगाम देना चाहता था। पैगाम ये कि किसी के भी साथ रहम दिली नहीं दिखाई जाएगी। एक-एक बाग़ी को पकड़ा जाएगा।"

"जफ़र का क्या हुआ?" जावेद ने अगला सवाल पूछा।

"बहादुर शाह पर मुकदमा चलाया गया। 19 मई 1857 के बाद, 41वें दिन उस पर लगाए गए सभी जुर्म साबित हो गए। फिर जैसा कि हडसन ने बादशाह से वादा किया था कि वो उसे सूली पर नहीं लटकाएगा, उसने अपना वादा पूरा किया। बादशाह को न सूली दी गयी और ना ही उसे गोली मारी गई। इसके उल्टा

उसे देश निकाला दे दिया गया। उसे रंगून, बर्मा भेज दिया गया।"

"और अब हम वहीं जा रहे है!" इरफान की बात ख़त्म होते ही जावेद ने कहा।

"हाँ, हम वहीं जा रहे हैं, जहाँ बादशाह को रखा गया है।" दोनों समय यात्री सुनसान इलाके से चहल-पहल भरी सड़क पर पहुँचे थे।

"वहाँ तो तगड़ा पहरा होगा!" जावेद ने आशंका व्यक्त की।

"वहाँ पहरा हो सकता है या शायद नहीं भी। हमें बहुत सतर्क रहना होगा। जगह-जगह चौकसी तो ज़रूर होगी। अच्छा होगा हम किसी से ज्यादा बात न कर आगे बढ़ें!"

"ठीक है!" जावेद कुछ सोचने लगा। फिर उसने पूछा, "हम वहाँ पैदल ही चलेंगे?"

"पैदल क्यों चलेंगे। किसी बैलगाड़ी या तांगे वालों को पकड़ते हैं।"

फिर वे एक चौराहे पर पहुँच गए। उन्हें एक हाथ गाड़ी चलाने वाला मिला। उन्होंने उसको एक सिक्का दिया जो उन्होंने रजा शेख से लिया था। हाथ गाड़ी चलाने वाला सिक्का हाथ में लेकर दोनों को घूरता रहा।

"मेरे पास छुट्टे नहीं है!" उसने बर्मी भाषा में कहा।

जावेद और इरफ़ान को कुछ समझ नहीं आया। उन्हें लगा शायद हाथ गाड़ी वाला उनसे जगह के बारे में पूछ रहा है, जहाँ वे जाना चाहते हैं।

"श्वेवडागोन पैगोडा!" इरफ़ान ने हाथ गाड़ी वाले को जगह का नाम बताया।

श्वेवडागोन पैगोडा का नाम सुन हाथ गाड़ी वाला थोड़ा घबरा गया। उसने सिक्का जावेद के हाथ में वापस धर दिया।

"क्या हुआ? नहीं चलोगे!" जावेद ने पूछा।

"मेरे पास छुट्टे नहीं है!" हाथ गाड़ी वाले ने बर्मी में पहले वाली बात दोहराई।

"यह क्या कह रहा है इरफ़ान?" जावेद ने फिर पूछा।

"बर्मी है जावेद मियाँ! लगता है किसी और से पूछना पड़ेगा!" और दोनों समय यात्री गाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते रह गए।

हाथ गाड़ी चलाने वाला व्यक्ति अपनी हाथ गाड़ी लेकर आगे चला गया।

"हमने एक बात तो सोची ही नहीं जावेद मियाँ!" इरफान ने कहा।

"क्या?" जावेद ने पूछा।

"हम जैसे-जैसे अतीत में पीछे जा रहे हैं, हमें नए लोग, नई संस्कृति, नई भाषा से रुबरु होना पड़ रहा है। हम हमारी विचित्रता के कारण किसी मुसीबत में न पड़

जाए!"

"ऐसा हो सकता है?" जावेद का ध्यान इस ओर गया।

"क्यों नहीं? हमारे पास टाइम मशीन है!" इरफ़ान के कहते ही जावेद चिंता में पड़ते हुए अपनी हाथ घड़ी यानी टाइम मशीन को देखने लगा।

"अभी हम बर्मा में हैं। कुछ सिक्के हमें रजा शेख ने दे दिए। अगर ये सिक्के ख़त्म हो गए तब क्या होगा?"

"शायद हमें फकीरों की तरह हाथ फैलाकर मदद माँगना पड़ेगी।" जावेद के पास आगे की रूपरेखा और कठिन परिस्थितियों से निपटने की तैयारी थी।

"कहना आसान है, मियाँ! जब करना पड़ेगा तब मालूम पड़ेगा।" इरफान बेपरवाही से बोला।

"श्वेवडागोन पैगोडा!" एक दूसरा हाथ गाड़ी खींचने वाला दोनों के पास आकर रुक गया था। शायद उसे पहले वाले ने भेजा था।

इरफान जावेद की ओर देखते हुए हाथ गाड़ी में बैठने लगा। इस पर हाथ गाड़ी वाले ने उसे रोकते हुए सिक्के की माँग की। उसने अपनी हथेली फैला दी। इरफान ने सिक्का उसकी हथेली पर धर दिया, जिसे देख हाथ गाड़ी वाले की आँखों में चमक आ गई। कुछ ही पलों में जावेद और इरफान हाथ गाड़ी में बैठे रंगून शहर के नजारों को देखने के व्यस्त थे।

एक घंटे बाद हाथ गाड़ी खींचने वाला रुक गया। वह पसीने से लथपथ हो चुका था।

"क्या हम पहुँच गए?" जावेद ने उससे पूछा।

इस पर हाथ गाड़ी खींचने वाले ने पसीना पोंछते हुए दूर एक इमारत की ओर संकेत कर दिया। श्वेवडागोन पैगोडा वहीं था। उसके मुख्य दरवाजे पर हिंदुस्तानी सैनिक पहरा दे रहे थे। वे सिख ही थे। जावेद और इरफ़ान हाथ गाड़ी से उतर गए। हाथ गाड़ी वाला बिना छुट्टे दिए चला गया। दोनों दोस्त इमारत को देखने लगे।

"वहाँ तो पहरा है!" जावेद ने इमारत का मुआयना करते हुए कहा। वो सोच रहा था कि इमारत अन्दर से कैसी होगी और उसमें बहादुर शाह जफ़र को कहाँ रखा गया होगा।

"पहरा तो है..." इरफ़ान बोला, "लेकिन अच्छी खबर यह है कि हमें इमारत में नहीं जाना है।"

"क्या?" जावेद को हैरत हुई।

"हाँ। घड़ी में देखकर तारीख बताओ।" इरफ़ान ने टाइम मशीन की ओर

इशारा करते हुए कहा।

जावेद सावधानीपूर्वक इधर-उधर देखने लगा। फिर हौले से उसने अपने कुर्ते की आस्तीन ऊँची की।

“10 नवम्बर 1857!” वह बोला।

“बादशाह का इंतकाल 7 नवम्बर को हो चुका है।” इरफ़ान घड़ी के डायल को देखने लगा।

“तुम्हें कैसे पता?” जावेद ने पूछा।

“इतिहास पढ़ा है हमने मियाँ! सिविल सर्विस में भाड़ नहीं झोंकी है। वैसे ये बताओ घड़ी को धूप कब दिखाई थी?” इरफ़ान ऐब से बोला।

“बंगाल से निकलने से पहले। लेकिन तुम क्यों पूछ रहे हो?” जावेद में घड़ी के डायल को देखते हुए कहा।

“यूं ही पूछ रहा था। केवल पाँच प्रतिशत ऊर्जा खर्च हुई है। डॉ० रामावल्ली सही कह रहा था।”

“ये सब तो ठीक है। तुम मुझे बताओ बादशाह का इंतकाल हो चुका है तो हम यहाँ क्या कर रहे हैं?”

“सब्र करो मियाँ, बताता हूँ! घड़ी हाथ से निकाल कर सुरक्षित कर लो क्योंकि आगे खतरा हो सकता है, हमें इमारत के पीछे जाना है। वहीं बहादुर शाह को दफनाया गया था। शहंशाह का इंतकाल 7 नवंबर 1857 को हुआ था। उसी दिन उसे गुप्त रूप से इस इमारत के पीछे कहीं दफनाया गया था। हमें वही चल कर देखना होगा कि उसकी कब्र वहाँ है या नहीं।”

“ठीक है, तो चलो।” जावेद के हाथ उसकी बैसाखी पर मजबूती से चिपक गए। फिर वो इरफान के साथ चलने लगा।

दोनों चलते हुए आगे बढ़ने लगे थे। पहरा दे रहे सैनिकों की नजरों से बचते हुए और उनसे एक दूरी बनाते हुए वे इमारत के पीछे पहुँच गए। हालांकि इस बीच कुछ सैनिकों की नज़र उन पर पड़ चुकी थी और वे उन्हें घूरकर जरूर देख रहे थे।

जब वे इमारत के पीछे पहुँच गए तो उन्होंने देखा बाँस से बना हुआ एक बाड़ा जमीन के छोटे से टुकड़े को घेरे हुए था। बाड़े के ऊपर एक पीपल का पेड़ छाया दे रहा था।

“क्या यही वो जगह है?” जावेद ने इरफ़ान से पूछा।

“शायद हाँ!” इरफान जमीन की मिट्टी को गौर से देखने लगा।

“पर यहाँ कोई पहरा क्यों नहीं है?” जावेद को संदेह हुआ कि वे सही जगह पर आए थे। मिट्टी को देखकर लगता ही नहीं था कि वहाँ पर कब्र होगी।

“अंग्रेज नहीं चाहते थे कि किसी को पता चले कि बहादुर शाह को कहाँ दफनाया गया है।” इरफान जगह का ठीक से मुआयना करने लगा।

“कौन हो तुम और यहाँ क्या कर रहे हो?” एक गरजती आवाज़ ने दोनों समय यात्रियों को चौंका दिया।

जावेद और इरफ़ान ने पलटकर देखा। एक सूबेदार अपने दो सैनिकों के साथ उनके पीछे खड़ा था। वे सावधान हो गए। जावेद का हाथ अपने कुर्ते की जेब पर गया। टाइम मशीन उसी में थी।

“कौन हो तुम दोनों?” सूबेदार ने कड़कती आवाज़ में दोनों से पूछा। खाकी वर्दी देख इरफान की जुबान लड़खड़ा गई।

“बोलते क्यों नहीं?” सूबेदार ने फिर पूछा।

“जी हम किसी से मिलने आए हैं!” जावेद ने उत्तर दिया।

“किससे?” सूबेदार ने अगला सवाल किया।

“यहाँ एक भिखारी बैठा रहता था!” जावेद के उत्तर पर सूबेदार अपने सिपाहियों को देखने लगा।

“यहाँ कोई भिखारी नहीं बैठता!” एक सिपाही बोला, “शक्ल-सूरत से सभ्य दिखते हो। भिखारी से क्या काम है तुम दोनों को?”

“वो मेरे दादा हैं। घर से भाग आए थे।” जावेद ने जवाब दिया।

“सच कह रहे हो?” सूबेदार ने पूछा।

“हम झूठ क्यों बोलेंगे!” जावेद ने लाचारी से सिपाहियों को देखा।

सिपाहियों ने गौर से उसकी अर्ध विकसित और लटकती टांग पर नज़र डाली। उसे घिन्न-सी आई।

“लगता तो यही है कि उस भिखारी का यह कोई रिश्तेदार है!” सिपाही ने सूबेदार से कहा। उसने जावेद और भिखारी में समानता ढूँढ ली थी।

“हम्म... ठीक है बता दो!” सूबेदार ने सिपाही को आदेश दिया।

“वो तुम्हें नदी किनारे मिलेगा। इस रास्ते से पीछे चले जाओ, वो चट्टान के पीछे ही बैठा रहता है।!” सिपाही ने एक मार्ग की ओर संकेत करते हुए दोनों को बताया।

"जी शुक्रिया आपका!" जावेद ने सलाम किया।

"आगे से यहाँ दोबारा मत दिखना!" सूबेदार ने चेतावनी दी।

"जी!" जावेद और इरफ़ान उनके सामने से आगे बढ़ते हुए बतायी गयी दिशा में बढ़ गए।

जब उन्होंने एक चट्टान पार की तो एक भिखारी किसी मजार के पास बैठा अल्लाह का नाम लेता दिखाई दिया।

€ ¥ Ω £ §

-समय भविष्य को याद रखता है।

(12)
घड़ी चोर

सन् 2017, मध्य भारत का एक जिला

पत्रकार सहस्त्रबाहु और डॉ॰ रामावल्ली एक स्टोर के बाहर खड़े थे। बरसात शुरू हो चुकी थी और वे उसके रुकने का इंतज़ार कर रहे थे। कुछ देर पहले सहस्त्रबाहु को यकीन हो गया था कि वह भविष्य में आ चुका है। उसने स्टोर में रखी वस्तुओं पर उनकी उत्पादन तिथि देखि थी, जिससे उसे यह विश्वास हुआ था।

डॉ॰ रामावल्ली उसे स्टोर से बाहर ले आया था। उसे किसी चीज की हड़बड़ी थी। किस की, कह नहीं सकते! शायद उसे किसी घटना के घटने या हो चुकने का ज्ञान था। क्या पता वो वहाँ पहले भी आ चुका हो। या क्या पता शायद वह नहीं चाहता था कि सहस्त्रबाहु उस घटना का साक्षी बने। या उसे जरा भी आभास हो कि वह उसी 2016 में क्यों पहुँचा। किसी और साल में क्यों नहीं। क्या कुछ ऐसा था जिस पर डॉ॰ रामावल्ली पर्दा डाले रखना चाहता था?

बारिश की फुहारों से मौसम सुहावना हो गया था। सहस्त्रबाहु बदले मौसम से प्रसन्न था क्योंकि थोड़ी देर पहले वह तपते रेगिस्तान की भूमि पर, कड़ी धूप में रिपोर्टिंग कर रहा था।

“वाह! क्या मौसम बन गया है।” उसने हाथ फैला कर बौछारों को स्पर्श किया।

“तुम्हें मेरा कहा मान लेना चाहिए था!” डॉ॰ रामावल्ली के चेहरे पर तनाव की रेखाएं थी।

“छोड़ो भी!” सहस्त्रबाहु ने कहा।

“पेपर... पेपर...” संध्या का अखबार बाँटने वाला एक लड़का बारिश से बचते हुए स्टोर के शेड के नीचे आ खड़ा हुआ था। वह शेड के नीचे खड़े लोगों से अखबार लेने की गुहार कर रहा था। लोग उससे अखबार ले रहे थे।

“मुझे एक देना!” सहस्त्रबाहु ने जेब से वॉलेट निकालते हुए अखबार वाले से अखबार माँगा।

“यह क्या कर रहे हो?” डॉ॰ रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु को अखबार खरीदते देख रोका।

"क्या कर रहा हूँ, मतलब? देखूं तो सही क्या नयी खबर है?" सहस्त्रबाहु ने अखबार वाले को पाँच रुपये का सिक्का दिया। उसे लेकर अखबार वाला छुट्टे पैसे देकर चला गया।

तभी किसी और ने भी लड़के से अखबार खरीदा और ₹100 का जामुनी नोट लड़के की ओर बढ़ाया, जिसे देखकर सहस्त्रबाहु चौंक गया।

"यह कौन-सा नोट है?" उसने मन में सोचा।

उसकी उत्सुकता और चेहरे के भाव डॉ॰ रामावल्ली से छिपे नहीं। उसने तुरंत ताड़ लिया कि सहस्त्रबाहु क्या सोच रहा था?

"चौंको मत! वो भारतीय नोट ही है।" उसने टेढ़ा-सा मुँह बनाते हुए सहस्त्रबाहु से कहा।

"क्या? ये कब हुआ?" सहस्त्रबाहु ने चौंकते हुए पूछा।

"नवम्बर 2016 की रात को, 8 बजे एक ऐतिहासिक भाषण के बाद! पाँच सौ और हज़ार के पुराने नोट विदा किए जा चुके हैं। अब नए नोट चलन में हैं। देखो!" डॉ॰ रामावल्ली ने अपनी जेब से एक नोट निकाल कर सहस्त्रबाहु को दिखाया। वह दो हज़ार का गुलाबी नोट था।

"यकीन नहीं होता!" सहस्त्रबाहु की आँखें चमत्कृत थीं।

उसके आश्चर्य को देख कुछ लोगों ने उसको अजीब नज़रों से घुरा। शायद किसी ने उससे पूछा भी, "क्या बाहर से आए हो?"

"हाँ, ये आज ही बरमुडा ट्रायंगल से लौटा है।" डॉ॰ रामावल्ली ने पूछने वाले को जवाब दिया था। वह मज़ाक करने लगा।

सहस्त्रबाहु आश्चर्य में डूब गया था। वह सोचने लगा कि भविष्य में आना बहुत फायदे का सौदा हो रहा है। होने वाली घटनाएँ उसे पहले से पता लग रही हैं।

उसने संध्याकालीन अखबार पर नज़र डाली। अखबार की पहली खबर थी, सेंसेक्स 36000 के पार!

"इतना उछाल!" सहस्त्रबाहु भौचक्का रह गया, "2006 से 2017 तक चार गुना बढोतरी!" उसके मुँह से निकला।

साल 2006 में सेंसेक्स नौ-दस हज़ार अंक पर था। जैसे-जैसे सहस्त्रबाहु अखबार पढ़ रहा था, उसके चेहरे पर तेज़ी से भाव बदल रहे थे। डॉ॰ रामावल्ली उसे देखते हुए समझ गया था कि जामुनी-गुलाबी नोटों और सेंसेक्स के बढ़े हुए अंकों ने सहस्त्रबाहु के दिमाग में किसी केमिकल लोचे की गुंजाईश को जन्म दे दिया था। वास्तव में भी सहस्त्रबाहु के दिमाग में कोई खिचड़ी पकने लगी थी।

डॉ॰ रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु के हाथ से अखबार छीन लिया और कहा, "हमें

चलना होगा।” उसने अखबार मोड़कर वहीं रखे नीले रंग के डस्टबिन में डाल दिया।

सहस्त्रबाहु डॉक्टर को रोक ना पाया। वह समझ गया कि डॉक्टर को किसी बात की बहुत जल्दी है। उसने बारिश का बहाना लिया।

“बारिश रुकने पर चलते हैं!”

“नहीं हमें चलना होगा। और वो भी अभी!” डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु की बात काटते हुए उसकी बाँह पकड़ ली।

“इतनी भी क्या जल्दी है?” सहस्त्रबाहु ने अपनी बाँह छुड़ा ली। उसे डॉ०रामावल्ली का जल्दी मचाना खटक रहा था। वह कुछ देर और भविष्य में रहना चाहता था। शायद पूरी दोपहर और शाम।

“देखो मुझे जल्दी हैं, पत्रकार महोदय! मेरे बहुत से काम रुके पड़े हैं और क्या तुम्हें अपने संपादक को खबर नहीं भेजनी है। जब तक हम वहाँ पहुँचेंगे रात हो चुकी होगी।” डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु को वर्तमान में यानी 2006 में घट रही घटनाओं के बारे में अवगत कराया।

“क्या? क्या कह रहे हो? सहस्त्रबाहु चौंक गया, “मुझे लगा हम वापस उसी समय में पहुँचेंगे!” उसने सोचते हुए कहा।

“यह इतना भी आसान नहीं है! बहुत-सी जटिलताएँ है इसमें। आंकड़ों और घटनाओं का विश्लेषण करना होता है।” डॉ०रामावल्ली सहस्त्रबाहु को समझाने की कोशिश जरूर कर रहा था, लेकिन उसका ध्यान दूर चौराहे पर एक सड़क की ओर लगा था। सहस्त्रबाहु को डॉक्टर का अजीब नजरों से दूर घूरना अटपटा और संदेहजनक लग रहा था। साथ ही वह थोड़ा घबरा भी रहा था। आखिर उसने पहली बार समय यात्रा की थी। वह समय के पहलूओं से पूरी तरह अनजान था।

“चलो वरना गड़बड़ हो सकती है!” डॉ० रामावल्ली ने उसे चेताते हुए कहा।

“ठीक है तो चलो फिर, लेकिन तुम्हें यह सब समझाना होगा मुझे!” सहस्त्रबाहु ने हड़बड़ी में कहा।

“अच्छा! ताकि तुम दुनिया भर को चौंकाने वाली ब्रेकिंग न्यूज़ दे सको कि तुमने भविष्य की यात्रा की है। यकीन मानो मेरे दोस्त, मेरे समझाने पर भी तुम्हारी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा। उल्टा लोग तुम्हें पागल कहेंगे।” डॉ० रामावल्ली व्यंग करते हुए बोला।

“मुझे ऐसा नहीं लगता। और मैं अकेला नहीं हूँ जिसने कुछ अजीब होता देखा है। वहाँ कुछ और भी लोग थे, वे आन्दोलनकारी, उन्होंने भी हम दोनों को गायब होते देखा है!” सहस्त्रबाहु डॉक्टर को याद दिलाते हुए बोला।

"गुंडे तो आधे ठरकी होते हैं। ज़्यादातर नशेड़ी भी होते हैं। उनका कहा कौन मानेगा भला। वैसे उनकी बात करके और बेतुके तर्क देकर तुम अर्थहीन बहस कर रहे हो मुझसे। बेहतर होगा हम चलें।"

"मैं समझ गया! लेकिन हम भीग जाएँगें।" बारिश थोड़ी तेज हो गई थी।

"यहीं रुको, मैं अभी आया!" कहते हुए डॉक्टर स्टोर के अंदर गया और दो छतरी खरीद लाया।

छतरी खोल कर वे स्टोर से आगे बढ़े। कुछ ही देर में वे वापस मैदान में पहुँच गए। इस दौरान डॉ॰रामावल्ली पलट-पलट कर सड़क पर देखे जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि वो पहले भी यहाँ आ चुका है। वो समय यात्रा से बिलकुल भी हैरान नहीं था।

"क्या वहाँ कुछ होने वाला है?" अब सहस्त्रबाहु से पूछे बगैर नहीं रहा गया।

"पता नहीं!" डॉ॰ रामावल्ली उसकी बात टाल गया।

मैदान के बीचों-बीच पहुँचकर डॉक्टर ने अपनी कलाई में पहनी द रियल टाइम मशीन पर समय सेट किया। उसने सहस्त्रबाहु से अपना हाथ थामने के लिए कहा। सहस्त्रबाहु ने मन मसोसकर डॉक्टर का हाथ थाम लिया। घड़ी का बटन दबाने और मैदान से गायब होने से पहले डॉ॰ रामावल्ली ने फिर से मैदान के पार दूर सड़क की ओर देखा।

उसी दौरान आसमान में तेज गड़गड़ाहट के साथ बिजली चमकी। ऐसा लगा कहीं दूर बिजली गिरी थी। सहस्त्रबाहु चमक गया। उसी समय डॉ॰ रामावल्ली ने घड़ी का बटन दबा दिया। कुछ ही पलों में वे राजस्थान के जैसलमेर जिले में प्रकट हो गए थे। सहस्त्रबाहु को उल्टी हुई, जिससे स्वस्थ्य होने में उसे थोड़ा समय लगा।

वह साल 2006 का मई महीना था। दिन वही था जब वे अस्वाभाविक तौर पर गायब हुए थे। जैसा कि डॉ॰ रामावल्ली ने कहा था, रात घिर आई थी। गुर्जर आंदोलन की लहर कम नहीं हुई थी। आंदोलनकारियों के दल अलग-अलग समूह बनाकर गश्त पर रहे थे तथा हर आने-जाने वाले को वे रोक रहे थे। बस पैदल चलने वालों को छोड़ रहे थे।

"चलो मैं चलता हूँ!" डॉ॰ रामावल्ली ने छतरी बंद करते हुए उसी सुनसान जगह छोड़ दी जहाँ वे प्रकट हुए थे।

"अरे! छतरी क्यों फेंक रहे हो?" सहस्त्रबाहु ने अपनी छतरी बंद करते हुए कहा।

"इसकी जरूरत ही क्या है?" डॉ॰ रामावल्ली बोला।

"ज़रूरत क्यों नहीं है, कहीं काम आएगी। फिर ये समय यात्रा की निशानी है।" सहस्त्रबाहु ने छतरी उठा ली। वह समय यात्रा से इतना उत्तेजित था कि उसकी एक-एक बात और निशानी को भूलना नहीं चाहता था।

"तुम्हारे लिए होगी। अच्छा मैं चलता हूँ!" डॉ॰ रामावल्ली जाने को हुआ।

"अकेले जाएँगे! आंदोलनकारी चारों ओर अब भी डटे हुए हैं।"

"पैदल आने-जाने वालों को कुछ नहीं करेंगे!" डॉ॰ रामावल्ली ने कहा।

"लेकिन वे आपको लूट सकते हैं। अंधेरा अधिक हो रहा है। कहे तो मैं आपको छोड़ दूँ। वैसे कहाँ है आपका घर?"

"थोड़ा दूर है पर मैं चला जाऊँगा!" डॉ॰ रामावल्ली ने एक दिशा की ओर संकेत करते हुए कहा।

"घर ज्यादा दूर हो तो मैं आपके साथ चलूँ। मेरे पास मीडिया कार्ड है, कई नेता जानते भी हैं। सड़क से बाहर निकलने पर कोई मिल जाएगा।" सहस्त्रबाहु ने अपनी जेब से मीडिया कार्ड निकाल कर गले में पहन लिया।

इस पर डॉ॰ रामावल्ली कुछ पल सोचने लगा। फिर उसने कहा, "ठीक है, चलो!"

दोनों साथ चलने लगे। कुछ देर में वे मुख्य सड़क पर थे। डॉक्टर ने घड़ी उतारकर अपनी जेब में रख ली थी। आंदोलनकारी यहाँ-वहाँ घूम रहे थे। थोड़ा और फासला दोनों पैदल तय किया। इसके बाद उन्हें सहस्त्रबाहु के पहचान का कोई आंदोलनकारी मिल गया। लेकिन पहचान होने पर भी उसके साथी आंदोलनकारी कुछ खर्चा-पानी माँगने लगे। क्योंकि उनके पास जीप थी और वे उन्हें जल्दी से कहीं भी छोड़ सकते थे। सहस्त्रबाहु ने अपनी वॉलेट में से सौ के दो नोट आंदोलनकारियों को दे दिए। वे नोट जामुनी नहीं थे। आदोलानकारी ने दोनों को अपनी जीप में बिठा लिया।

सहस्त्रबाहु समय यात्रा की निशानी दोनों छतरियों को पास की सीट पर रखकर डॉ॰ रामावल्ली के पास बैठ गया। छतरियाँ देख आंदोलनकारी को आश्चर्य हुआ।

"धूप से बचने के लिए रखी थी?" उसने पूछा।

"जी!" सहस्त्रबाहु ने जवाब दिया।

"तुम शहरी बाबू भी बड़े अजीब होते हो!" आन्दोलनकारी ने व्यंगात्मक मुस्कान चेहरे पर लाते हुए कहा।

फिर वो जीप चलाता रहा।

सड़कें उबड़-खाबड़ थीं। उसमें जगह-जगह गड्ढे थे। जीप बार-बार ऊपर-नीचे हिचखोलें खा रही थी। इसी दौरान डॉ॰ रामावल्ली की जेब से द रियल टाइम मशीन सरक कर बाहर आने लगी। जीप में बैठने से पहले उसने घड़ी जेब में रख ली थी। उसे लूट का भय था। घड़ी पर नज़र पड़ते ही सहस्त्रबाहु के मन में लोभ पैदा हो गया। उसने मौका देखकर घड़ी चुरा ली।

जब जीप आधा मील आगे बढ़ गई, तब सहस्त्रबाहु रिपोर्ट भेजने के बहाने से जीप से उतर गया। जाते हुए उसने डॉ॰ रामावल्ली से पूछा, "हम फिर मिलेंगे?"

"यह तो निर्भर करता है कि तुम घटना को कितना छिपा सकते हो!" डॉ॰ रामावल्ली ने कहा।

"आपको यकीन नहीं है मुझ पर?"

"पत्रकारों पर भला कौन है यकीन करेगा? वैसे मुझे लगता है कि तुम एक अच्छे इंसान हो। तुम किसी को कुछ नहीं बताओगे!" डॉ॰रामावल्ली ने कहा। इस पर सहस्त्रबाहु मुस्कुरा दिया।

"उम्मीद करता हूँ हमारी फिर मुलाकात हो। आपका इंटरव्यू लेना चाहूँगा।" सहस्त्रबाहु ने डॉक्टर से कहा।

"यह थोड़ा मुश्किल होगा। अगर किसी और सिलसिले में मिलना हो तो मैं सोच सकता हूँ।"

दोनों के मध्य अंतिम मुस्कुराहट का लेन-देन हुआ। दोनों एक-दूसरे के मन को टटोलते हुए अपने-अपने रास्ते चले गए। सहस्त्रबाहु छतरियों को बगल में दबाए अपने होटल पहुँच गया था। लेकिन बार-बार उसका ध्यान घड़ी पर जा रहा था, जो उसने अपनी जेब से निकाल कर टेबल पर रख दी थी। वो घड़ी उसे रोमांचित कर रही थी। उसे अपनी ओर आकर्षित कर रही थी और वह उसे पहन कर देखना चाहता था। वह घड़ी को कलाई में डालकर उसका बटन दबाना चाहता था।

वह देर तक गंभीर चिंतन में खोया रहा। उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ रही थी। उससे रहा नहीं गया। आखिरकार उसने द रियल टाइम मशीन को अपनी कलाई में पहन लिया। उसका रोम-रोम रोमांचित हो रहा था। अब उसके हाथ में भूत, भविष्य और वर्तमान को नियंत्रण में करने वाला पिटारा था। उसने बटन दबाने से पहले सोचा, "मैं अब क्या-क्या कर सकता हूँ?"

उसे याद आ गया 2017 का अखबार जिसमें सेंसेक्स नयी ऊँचाईयाँ छू रहा

था। उसे मालूम था कि कुछ सालों बाद देश के प्रधानमंत्री कौन होंगे, उसे मालूम था कि देश में अचानक कब नोटबंदी की शुरुआत होगी, उसे मालूम था कि भविष्य एक बहुत बड़ी संभावना है। लेकिन इतना जान लेना उसके लिए काफी नहीं था। उसे और बड़ी सम्भावनाओं को तलाशना था। शायद वह अपना भविष्य भी देखना चाहता था या कुछ और। उसे कौतूहल था। जिसे शांत करने के लिए उसने एक बार फिर भविष्य में जाने का विचार किया। उसने घड़ी को चलाने वाले बटनों और डायल पर अंकित शब्दों से घड़ी की कार्यप्रणाली को समझने की कोशिश की। उसे ज्यादा कुछ समझ नहीं आया। पर डायल साल 2017 दर्शा रहा था। उसने उस साल को बदलने के लिए बटनों से छेड़छाड़ की। फिर एक समय उसमें दर्ज हो गया। ऐसा होने पर उसे बहुत ख़ुशी हुई। फिर उसने बिना ज्यादा सोचे घड़ी का बटन दबा दिया। ऐसा करते ही एक झटके के साथ वो अपने कमरे से गायब हो गया। लेकिन उसके पीछे उसके कमरे की चीजें बिखर गईं। खिड़की के काँच तड़क गए।

सहस्त्रबाहु ने भविष्य की दुनिया में पहुँचने के लिए डॉ॰ रामावल्ली का महान आविष्कार चुरा भले ही लिया था, लेकिन उसे मालूम नहीं था कि घड़ी डॉक्टर रामावल्ली के निर्देशों पर चलती है।

उसी रात जब डॉक्टर रामावल्ली अपने बंगले पर पहुँचा तो उसे ज्ञात हो गया कि पत्रकार उसकी घड़ी लेकर फरार हो चुका है। वह अपने बंगले की गुप्त प्रयोगशाला में गया और मॉनिटर नुमा किसी बड़ी स्क्रीन पर सहस्त्रबाहु की स्थिति का अवलोकन करने लगा। उसे मालूम हो गया था कि सहस्त्रबाहु भविष्य की झाँकी देखने फिर जा रहा है। उसने अपनी प्रयोगशाला में स्थापित यंत्रों से छेड़खानी की।

उसके ऐसा करते ही सहस्त्रबाहु की घड़ी ने काम करना बंद कर दिया। सहस्त्रबाहु निर्धारित किये समय में न पहुँच कर बीच में कहीं प्रकट हुआ। कहाँ, ये समझने के लिए उसे मौका ही न मिला क्योंकि उसके प्रकट होते ही किसी वाहन ने उसे टक्कर मार दी।

दरअसल वह एक व्यस्त हाईवे पर प्रकट हुआ था। सहस्त्रबाहु हवा में उछलता हुआ दूर कहीं फिका गया। उसने आँखें खोलने की कोशिश की, लेकिन वो वहीं चित हो गया। उसके सिर से खून की धारा बह रही थी।

शायद वह मरने के करीब था।

€ ¥ Ω £ §

-समय किसी की मुट्ठी में कैद नहीं हो सकता।

(13)
भिखारी

1862, रंगून, बर्मा

जावेद और इरफान, नदी तट से कुछ दूरी पर एक मजार के पास घुटनों के बल बैठे थे। वे नमाज पढ़ रहे थे। उनके आगे बैठा एक व्यक्ति भी नमाज पढ़ रहा था, जो वास्तव में और कोई नहीं जावेद के परदादा के परदादा फिरोज अहमद शेख थे।

फिरोज अहमद शेख, जो घर छोड़कर भाग गया था और भीख माँगकर गुजर बसर करता था। वह दोनों पैरों से अपंग था। उसे देखने पर इरफान के ज़हन में किसी व्यक्ति की तस्वीर उभर रही थी।

“तो यह है बहादुर शाह जफर, हिंदुस्तान के आखिरी शहंशाह की असली कब्र!” जब नमाज पूरी पढ़ ली गई तब इरफान ने फिरोज शेख से पूछा।

“हाँ, यहीं शहंशाह को दफनाया गया था!” फिरोज शेख ने कहा। उसका पहनावा और बोलने के ढंग में एक फक्कड़पन और फकीरी का मिश्रण था। उसने कुछ दिन पहले ही घटना को याद करते हुए आगे कहा,“यह संयोग ही था कि जब बहादुर शाह ने कैद खाने में अंतिम सांस ली। मैं सुकून की तलाश में यहाँ पहुँचा था। फिरंगी नहीं चाहते थे कि शहंशाह की मौत की खबर किसी को लगे। न ही वे चाहते थे कि उसकी कब्र के बारे में किसी को मालूम हो, मगर वे यह भी नहीं चाहते थे कि उसे दफनाने के बाद वे खुद भूल जाएं कि बहादुर शाह को कहाँ दफनाया गया था। इसलिए उसकी कब्र की हिफाज़त की जिम्मेदारी मुझे सौप दी गई। एक भिखारी को जो फिरंगियों नज़र में फकीरों जैसा था। उन्होंने मुझे अच्छी बख्शीश देने का वादा किया है। पर पता नहीं मैं यहाँ कितने दिन रुक पाऊँगा।”

उस बूढ़े भिखारी को उन दोनों पर यकीन हो चला था इसलिए वो इन दोनों को ये बातें बता रहा था।

“फिर उस इमारत के पीछे क्या है?” इरफ़ान ने चट्टान के पीछे की ओर इशारा करते हुए कहा।

“कुछ नहीं!” फिरोज शेख बोला।

“फिर सिपाहियों का पहरा क्यों है वहाँ?” इरफ़ान का अगला प्रश्न था।

“उन्हें यही बताया गया है कि वो कब्र बहादुर शाह की है!”

"बड़ी हैरानी में डालने वाली बात है!" जावेद के मुँह से निकला।

"ये सब इन हरे कपड़ों की वजह से हुआ है!" फ़िरोज़ शेख ने अपनी शाल को ठीक करते हुए कहा, "कुछ दिन पहले एक भला आदमी दे गया था। इसे देख ही फिरंगी मुझे फ़क़ीर समझ बैठे। एक सूत के कपड़े ने भिखारी को फ़क़ीर बना दिया।"

"छोटा मुँह बड़ी बात होगी, मगर आप किसी भी नजरिए से भिखारी नहीं लगते। उल्टा आपको देखकर मुझे वहम होता है कि मैंने आपको पहले भी कहीं देखा है!" इरफान फिरोज शेख की आँखों में देखते हुए बोला। जबकि वो जानता था कि वो फ़िरोज़ की तुलना किससे कर रहा था। उसे बात बदलना पड़ी।

"हो सकता है तुमने मुझे देखा हो। शायद तुमने मुझे कहीं भीख दी होगी!" फिरोज शेख इरफान के चेहरे को देखकर सोचने लगा कि शायद उसने भी इरफान को कहीं देखा हो। लेकिन उसे कुछ याद नहीं आया। याद आता भी कैसे इरफान फिरोज शेख को देखकर जिस फ़क़ीर को याद कर रहा था। वह तो भविष्य में था या कहें वर्तमान में था, जहाँ से वे दोनों समय यात्री आए थे। सन् 2011-12 से।

"क्या तुम पैदाइशी अपंग हो?" अब फिरोज शेख ने जावेद के पैरों की ओर देखते हुए पूछा।

"हाँ!" जावेद को अपने कुछ गले में कुछ फँसता हुआ महसूस हुआ। वह अपने पुरखें को सामने देख खुद को संभाल नहीं पा रहा था।

"मेरे पैर भी मेरी पैदाइश से मरियल है। एकदम बेजान!" फ़िरोज़ शेख अपने पैरों को देखते हुए पूछने लगा, "अपने पैरों को देख कर कुछ ख्याल करते हो?" फिरोज शेख ने जानना चाहा कि जावेद अपने पैरों के बारे में क्या महसूस करता था।

"हर रोज ख्याल आता है!" जावेद ने संजीदा होकर कहा।

"क्या?" फिरोज शेख ने पूछा।

"आखिर क्यों?" कहते हुए जावेद एक पल को ज़ज्बाती हो गया। वो थोड़ा रुककर बोला, "आखिर क्यों ये ऐसे ही रहे? बेजान! मरियल और तरफ्तियाफ्ता अविकसित रहे! खुदा ने मुझे ही इस कमतरी से मुझे क्यों नवाजा?"

"यही ख्यालात मुझे भी आते थे!" फिरोज शेख ने कहा, "इसका जवाब पाने के लिए ही मैं घर छोड़कर भाग निकला था।"

"क्या सच में?" इरफान ने हैरत जताते हुए आगे कहा, "आपके अब्बा जान की फूफी तो कहती है कि आप ख़ुदकुशी करने घर से निकले थे!"

“कौन-सी फूफी?” फिरोज शेख हैरानी जताते हुए बोला। उसे कुछ समझ न आया। समझ आता भी कैसे, आखिर इरफान झूठ जो बोल रहा था। वह तो बस बातों-बातों में फिरोज शेख से उसके अतीत को जानना चाहता था, जावेद की पीढ़ियों में चली आ रही बीमारी के विषय में जानने के लिए।

“आपकी फूफी! वही जो दिल्ली में रहती हैं, इमामबाड़ा के पास घर है जिनका!” इरफान ने मुँह बनाते हुए जावेद को देखा।

“इमामबाड़ा में कौन रहती है? कौन कमबख्त चुड़ैल है ये? मैं उसे नहीं जानता। खैर मैं किसी को नहीं जानता। पर इतना इल्म ज़रूर है मुझे कि वो जो भी है झूठ कहती है। हमारे खानदान को शुरू से लोग बदनाम करने में आगे रहे हैं। वह भी सिर्फ इसलिए क्योंकि हमारी पीढ़ियों में अपाहिज बच्चे पैदा होते रहे हैं। यह तो खुदा का शुक्र है कि कोई लड़की हमारे खानदान में नहीं हुई, वरना पता नहीं क्या होता। वो कैसे जिंदगियाँ बसर करती और कैसे उस बद्दुआ से बचती?” फ़िरोज़ शेख विचलित हो गया।

“कैसी बद्दुआ?” जावेद और इरफ़ान चौंक पड़े।

“है एक! लेकिन तुम्हें उससे क्या? तुम बताओ मुझे ढूँढते हुए यहाँ तक क्यों आए हो? और किसलिए मेरे परिवार वालों ने तुम्हें भेजा है? पता नहीं किस-किस को भेजते रहते है?” फिरोज अहमद शेख बड़बड़ाते हुए बोला।

वह बद्दुआ के बारे में बात नहीं करना चाहता था और शायद वह अपने परिवार के लोगों से भी खफ़ा लग रहा था।

उसके द्वारा नज़रंदाज़ किये जाने पर जावेद अवाक होकर इरफान को देखने लगा। जैसे वो जानना चाहता था कि इरफान क्या सोच रहा है? बद्दुआ वाली बात तो उस फ़क़ीर ने भी कही थी, जिससे वे वर्तमान में मिले थे।

“दरअसल आपके अब्बा की जो दूर की फूफी है, इमामबाड़े वाली, जो आपके खानदान की दुनियाभर में बुराई करती फिरती है, चाहती है आप घर लौट चलें!” इरफ़ान फ़िरोज़ शेख से बोला।

“और वो ऐसा क्यों चाहती है?” फिरोज शेख ने भों सिकौड़ते हुए कहा, “मैंने कसम खाई है घर न लौटूँगा।”

“अगर आप घर न लौटेंगे तो कैसे चलेगा? आपका खानदान आगे कैसे बढ़ेगा?” जावेद ने बीच में पड़ते हुए कहा।

“मुझे अपाहिजों की फ़ौज तैयार करने में कोई दिलचस्पी नहीं है!” फ़िरोज़ नफ़रत से अपने पैरों को देखते हुए बोला।

“खानदान आगे न बढाएंगे तो मरने पर खुदा को क्या जवाब देंगे आप?” इरफ़ान ने पूछा।

“खुदा को छोड़ो, मैं अपनी औलाद को क्या जवाब दूँगा। जब वो पूछेगी, अब्बा मेरे हाथ क्यों नहीं है। अब्बा मेरे पैर मरियल गधे की तरह क्यों है? इन्हें ऐसा किसने बनाया? तब... तब मैं क्या जवाब दूँगा उन्हें? बोलो!” फ़िरोज़ शेख जावेद से मुखातिब होकर बोला, “तुम बताओ मियाँ! तुम भी मेरी तरह अपाहिज हो। अगर तुम्हारी आने वाली औलाद भी तुम्हारी तरह पैदा हो, खुदा ना करें ऐसा हो, मगर मान लो ऐसा हो तो तुम क्या जवाब दोगे उसे, बताओ मुझे?”

फिरोज शेख के अप्रत्याशित प्रश्न से जावेद के जिस्म में सिरहन दौड़ गई।

वह अपनी गर्भवती बेगम ‘मिस्बा’ को याद करने लगा।

उसका रोम-रोम सिरहन की ठंडी तरंग से उसे डरा रहा था। वह खुद से कहने लगा, ‘मैं आपको कैसे बताऊँ, जो आप सोचते हैं, वही मेरा भी सोचना हैं। मैं क्या कहूँगा अपनी औलाद से?’

“कुछ बोलो बरखुर्दार! चुप क्यों हो गए?” फ़िरोज़ शेख ने फिर से पूछकर जावेद को झकझोर दिया।

“मैं अपनी औलाद से यही कहूँगा, कि...” जावेद एक पल को रुककर आगे बोला, “खुदा ने जिस फ़र्ज़ को निभाने के लिए हमें जमीन पर भेजा है। हमें उसे पूरा करना चाहिए। फिर वो फ़र्ज़ हमें अपाहिज होकर ही क्यों न करना पड़े। अगर हम वो फ़र्ज़ नहीं निभाते तो अल्लाह हमसे नाराज़ हो जाता है। शायद इसलिए उसने हमें अपाहिज बनाकर ये लानत दी है! मैं यहीं कहूँगा अपनी औलाद से!” कहते हुए जावेद फ़िरोज़ शेख की आँखों में देखने लगा। फ़िरोज़ शेख ज़ज्बाती हो रहा था।

लेकिन कुछ ही पलों में उसके चेहरे का भाव बदल गया। वह एकदम से बिगड़ उठा और आवाज़ में कर्कशपन लाते हुए बोला, “अल्लाह किसी को लानतें नहीं देता बरखुरदार! अल्लाह सिर्फ रहमतें बरसाता है। यह हम हैं और हमारे करम, जो हमें ऐसी यातना और पीड़ा भोगने को मजबूर करते हैं।”

“आप करम के सिद्धांत को मानते हैं?” इरफान फिरोज शेख को कर्म की बात करते देख हैरान हुआ। वह फ़क़ीर फिर से उसके ध्यान में आ गया जो उसे वर्तमान में मिला था।

“कौन नहीं मानेगा? कौन नहीं मानेगा कर्म के सिद्धांत को?” फिरोज शेख उबलते हुए बोला, “हिंदुओं का यह सिद्धांत दुनिया को चला रहा है, जनाब! इससे कोई अछूता नहीं है।”

“आप हिंदू मान्यताओं की तरफदारी करना चाह रहे हैं! लगता है, आपका उनसे गहरा ताल्लुक रहा है।” इरफान के मन में कुछ प्रश्न कौंध गए।

“ताल्लुकात क्यों न होगा? हम इनकी धरती पर ही आश्रित बने हुए है। फिर तुम और मैं है भी कौन बरखुरदार?” फिरोज शेख ने इरफान की आँखों में आँखें डालते हुए पूछा।

“मतलब?” इरफान फिरोज शेख की बात समझ नहीं पाया।

“तुम्हारा मजहब क्या है?” फिरोज शेख ने प्रश्न बदलते हुए पूछा।

“मैं एक मुसलमान हूँ!” इरफ़ान ने जवाब दिया।

“झूठ! सरासर झूठ! तुम एक हिन्दू हो। तुम भी और मैं भी।” फिरोज शेख ने जावेद और खुद की ओर संकेत करते हुए कहा। वह बहुत गंभीर था।

“आप क्या कह रहे हैं?” जावेद को हैरत हुई।

“हा हा हा...” फ़िरोज़ शेख हँसते हुए बकने लगा, “चौंक गए न! पर यही सच है। अपना इतिहास जानो बरखुरदार! अपना इतिहास! वह तुम्हें बताएगा कि कौन क्या है? कौन किसे चला रहा है? खैर, शायद तब भी हम मानना नहीं चाहेंगे?”

“मैं नहीं समझ पा रहा, आप क्या कहना चाहते हैं। लेकिन आपकी बातें मुझे एक फ़क़ीर की याद दिलाती है। वह भी आपकी तरह ही बातें करता था। वैसे हम ये बहस और तर्क-वितर्क क्यों कर रहे है?” इरफ़ान ने पूछा।

“तुम्हें ही दिलचस्पी थी जानने की कि मेरे ताल्लुकात किससे हैं। वैसे क्या कहता था तुम्हारा फ़क़ीर?” फ़िरोज़ शेख ने इरफ़ान द्वारा बताए फ़क़ीर के बारे में पूछा।

“वह भी यही कहते थे कि अपना इतिहास खंगालो! जावेद मुझे उनके पास लेकर गया था। हम जावेद के घर आने वाली औलाद के लिए दुआ करने उसके पास गए थे।”

“औलाद के लिए दुआ करने?” फ़िरोज़ शेख ने कहते हुए जावेद की ओर देखा था।

“हाँ! आपकी तरह मेरे खानदान में भी अपाहिज बच्चों के पैदा होने का सिलसिला चल रहा है। आपके पहले की पीढ़ियों की तरह मेरे पुरखे भी अपाहिज पैदा होते रहे हैं।”

“यकीन नहीं होता!” फ़िरोज़ शेख को हैरत हुई।

“मुझे भी यकीन नहीं होता, अगर वो फ़क़ीर मुझसे भी किसी बद्दुआ या लानत का ज़िक्र न करता। हमने उसे ढोंगी, पाखंडी और फरेबी समझा था।”

जावेद ने बताया।

"क्या ये सच है?" फ़िरोज़ शेख ने इरफ़ान से पूछा।

इरफान ने गर्दन हिलाकर जावेद की बात पर मौन सहमति प्रकट की।

"आपकी बातों को सुनने से लगता है कि मेरे खानदान में किसी तरह की बद्दुआ लगी है। पर क्या और कौन-सी, इस बारे में बिल्कुल अनजान हूँ, मैं! आपके खानदान में कौन-सी बद्दुआ या लानत लगी है?" जावेद ने फ़िरोज़ शेख से कहते हुए उम्मीद की किरण चाही।

"वह मैं तुम्हें क्यों बताऊँ?" फिरोज शेख नज़रें तिरोरते हुए बोला।

"बता दीजिए! क्या पता शायद आपका और हमारा खानदान एक ही बद्दुआ के असर में हो। खुदा के लिए बता दीजिए की आपके खानदान में कौन-सी बद्दुआ लगी है और वो कैसे लगी है।" जावेद ने विनती करते हुए कहा।

इस पर फ़िरोज़ शेख चुप हो गया और जावेद व इरफ़ान की आँखों में देखने लगा। वो सोचने लगा कि ये कौन अजनबी है जो मेरे पास आए है। निश्चित ही मेरे परिवार के लोगों ने इन्हें नहीं भेजा है।

"ठीक है! मैं बताता हूँ।" वह बोला। फिर एक पल की खामोशी रही और वो आगे कहने लगा, "पर मैं ज्यादा नहीं जानता। जिस तरह तुम्हें इल्म नहीं है, मुझे भी नहीं है। फिर भी मैं कुछ जानता हूँ, जो मैंने अपने बड़े बुजुर्गों के मुँह से कभी गलती से सुन लिया था।"

"जितना जानते है, उतना ही बता दीजिए!" इरफ़ान ने अपने बैठने की स्थिति बदलते हुए कहा। वो गौर से सुनना चाहता था।

"उस वक़्त मैं बहुत छोटा था। शायद आठ-दस बरस की उम्र थी मेरी।" फ़िरोज़ शेख कहने लगा, "मैं अपने पैरों से लाचार था, इसलिए मेरा ज़्यादातर वक़्त घर के अन्दर या कभी आँगन में बीतता था। जिस वजह से घर के लोगों की बातचीत पर मेरे कान लगे रहते थे। दादा और परदादा की बातचीत मुझे बहुत लुभाती थी। वे दोनों जब भी किसी मसलें पर बात करते तो मैं खुद को उन्हें सुनने से रोक न पाता था क्योंकि उनकी बातचीत में जिंदगी की सीखें होती थीं। एक दिन मैं रोज़ की तरह अपने कमरे में बैठा था कि मुझे मेरे परदादा की बात सुनाई दी। उस रोज़ वे मेरे बारे में ही गुफ्तगू कर रहे थे। मैं पैरों को घसीटता हुआ दरवाजे की चौखट पर पहुँच गया। मेरे परदादा एक बद्दुआ का जिक्र कर रहे थे।"

"क्या आपके परदादा भी अपंग थे?" जावेद ने पूछा।

"हाँ, उनकी पैदाइश से उनके दोनों हाथ कमजोर और सामान्य से छोटे थे।

उनका होना, न होना बराबर था। ठीक तुम्हारे पैर की तरह।"

"क्या सच में?" इरफ़ान को हैरत हुई।

"हाँ, उनके हाथ बहुत छोटे थे, पर उनका चेहरा बड़ा ही रोबीला था। उनकी आँखों में एक अलग ही नूर था। नूर होता भी क्यों नहीं, आखिर वो एक पीर थे।"

"क्या?" जावेद का मुख खुला रहा गया।

"पर हमने तो सुना था कि आपके पुरखे बादशाह के महल में थे।" इरफ़ान ने पूछा।

"बादशाह उनके आगे सिर झुकाता था। उनकी वजह से ही मेरे दादा बादशाह के यहाँ नौकर हो पाए। वे हिसाब-किताब की नक़लें उतारा करते थे। आजकल सोचने लगा हूँ कि कहीं मैं अपने परदादा के नक्शे कदम पर तो नहीं चल रहा। उनकी बातों का बड़ा असर रहा है मुझ पर। भले ही उस वक़्त मैं छोटा था, लेकिन चेहरा और उनकी आँखें अब भी नहीं भुला हूँ। वे हरदम अल्लाह को याद करते रहते थे। वे अक्सर दिल्ली की जमाली-कमाली मस्जिद में बैठते थे। वहाँ खूब कवालियाँ गाईं जाती थीं। शाह आलम वहाँ खुद आता था।" फ़िरोज़ शेख अतीत में खो-सा गया था। वह याद करने लगा कि कैसी वो दिल्ली स्थित अपना घर छोड़कर कलकत्ता भाग गया था, जहाँ से नाव में सवार होकर वो किसी तरह रंगून पहुँचा था।

"शाह आलम! ये कौन है?" जावेद ने पूछते हुए इरफ़ान को देखा।

इरफ़ान भी शून्य होकर जावेद का मुँह ताँकने लगा। उसे तुरंत कुछ याद न आया कि शाह आलम कौन था।

"तुम दोनों कौन-सी दुनिया से आए हो? शाह आलम को नहीं जानते? वो दिल्ली की गद्दी पर राज करता था!" फ़िरोज़ शेख नाराज़ होते हुए बोला, "उसे अली गौहर के नाम से भी जाना जाता है। मेरे परदादा ने ही अली गौहर को कहा था कि दिल्ली से भाग जा वरना अँधा हो जाएगा और तेरा परिवार भूखों मरेगा । लेकिन वो माना नहीं। 1788 में गुलाम कादिर ने दिल्ली पर धावा बोल अली गौहर को कैद कर लिया। उसके बेटों को मार दिया गया था। एक-दो बचकर निकल भागे थे। मगर तब भी उसके खानदान की इज्ज़त, उसकी औरतों को बलात्कार किया गया। नोच-नोचकर उनके जिस्म की चमड़ी को छीला गया, उन्हें भूखों मारा गया। जिन्होंने गुलाम कदीर के साथ हम बिस्तर होने से इंकार किया, उन्हें उसने अपने वफादारों के सुपुर्द कर दिया, तौफे के रूप में, ताकि वे मज़ा लूट सकें!"

"क्या आपके परदादा अब भी जिन्दा है?" इरफान सोच रहा था कि अगर

फ़िरोज़ शेख के परदादा जिन्दा हो तो उनसे मिल लिया जाएँ, लेकिन…

“कैसी बात करते हो! फ़िरोज़ शेख बेरुखी से बोला, “अगर वे जिंदा होते तो मैं क्या उस बद्दुआ या लानत के बारे में खुद न जान लेता।”

“लेकिन कुछ देर पहले तो आपने कहा कि आप जानते हैं, नहीं क्या?” जावेद ने कहा।

“मैं अब इतना जानता हूँ कि मेरे खानदान में किसी की बद्दुआ लगी है। उस दिन जब मैं दहलीज पर बैठा उन्हें सुन रहा तो वे मेरे दादा से कह रहा थे, ‘फ़िरोज़ की औलाद पर भी बद्दुआ का असर रहेगा।’ यह भी एक कारण है कि मैं घर से भाग निकला था। इसलिए मैंने सोचा कि जब मैं शादी ही नहीं करूँगा तो मेरी औलाद कैसे होगी। और मैं अगले ही दिन भाग निकला। उसी दिन वे मर गए। काश! मेरे परदादा कुछ साल और जिन्दा रह जाते तो मैं वापस जाकर उनसे खुद पूछा लेता कि हमारे खानदान में किसकी बद्दुआ लगी है, जो ख़त्म ही नहीं होती, चाहे कितनी ही मन्नते माँग लो।”

“आपके अब्बा को भी नहीं पता था बद्दुआ के बारे में!”

“नहीं! उन्होंने किसी को नहीं बताया। कहते थे जिसको बताना था, बता दिया है!”

फिरोज़ शेख की बात सुन दोनों समय यात्री एक-दूसरे को देखने लगे। वे जान गए कि इस भिखारी के पास उन्हें देने को इससे अधिक कुछ नहीं था। अब उन्हें वहाँ से प्रस्थान करना था।

लेकिन इससे पहले दोनों ने कुछ और समय फ़िरोज़ शेख के साथ बिताया।

€¥Ω£§

-समय ही वो कड़ी है जो भूत, भविष्य और वर्तमान को जोड़ती है।

(14)
हम बूढ़े हो जाएंगे

घड़ी पूरी तरह से चार्ज नहीं हुई थी। दुनिया युद्ध के बवंडर में फँस गयी थी। सभी ओर अशांति थी। मिस्बा को खेत में मिले सैनिक ने कहा भी था कि युद्ध चल रहा है। लेकिन मिस्बा यह समझ नहीं पाई कि सैनिक ने उससे यह क्यों पूछा कि क्या वह मुस्लिम है।

दरअसल वह एक ऐसा दौर था, जब दुनिया में इस्लामिक कट्टरता के विरुद्ध भीषण नफरत की आग फैली हुई थी। शायद वह युद्ध की एक वजह भी था। आफताब और मिस्बा ने गौर नहीं किया लेकिन अन्य देशों के विमान भी उस वक़्त आसमान में थे।

खैर! मिस्बा को गुप्तचर समझ लिया गया था। इससे पहले कि सैनिक चारों ओर से उसे और आफ़ताब को घेरते, मिस्बा आफ़ताब को लेकर खेत में से अदृश्य हो गई थी। हड़बड़ी में उसने यह भी नहीं देखा कि उसने घड़ी में कौन-सा समय सेट किया था।

जब बहुत देर तक दोनों समय की सुरंग में यात्रा करते रहे तो आफ़ताब ने पूछा, “अम्मी हम कहाँ जा रहे हैं?”

“पता नहीं!” मिस्बा घड़ी देखने लगी।

डायल पर अंकित अंकों ने उसे चौंका दिया। वह सन् 3038 में जा रही थी।

“इतने लम्बे समय में जाने के लिए घड़ी में ऊर्जा नहीं होगी और न ही एक बार में इतनी दूर तक जाया जा सकता है!” खुद से कहते हुए वह चिंतित हो गयी।

“अब क्या होगा?” उसके मुख से निकला।

आफ़ताब ने घड़ी में अंक देखे तो वह भी चौंक गया।

“हम बीच में फँस जाएँगे!” उसने कहा।

“हमें कुछ करना होगा!”मिस्बा घड़ी के बटनों से छेड़छाड़ करने को हुई, लेकिन आफ़ताब ने उसे चेताते हुए रोक लिया।

“ऐसा मत करो अम्मी! अब यही तरीका है कि घड़ी की बैटरी खत्म होने दो। हम कहीं तो रुकेंगे ही।”

“हाँ, लेकिन घड़ी दोबारा शुरु नहीं हुई तो?” मिस्बा को संदेह था कि घड़ी

की ऊर्जा खत्म होने पर वह फिर काम भी करेगी।

"ऐसा क्यों होगा भला?" आफ़ताब ने पूछा।

"पता नहीं! मुझे ऐसा लग रहा है। शायद मेरा वहम है!"

"आप बेवजह परेशान हो रही हो। परेशान मत हो, धूप मिलते ही घड़ी शुरू हो जाएगी।" आफ़ताब ने मिस्बा की शंका को दूर करते हुए समझाना चाहा।

मिस्बा ने धैर्य रखा।

कुछ ही देर में घड़ी की ऊर्जा खत्म हो गई और दोनों माँ-बेटे किसी सुनसान और अज्ञात स्थान पर प्रकट हुए।

प्रकट होते ही दोनों को उल्टी होने लगी। मिस्बा ने देखा उसकी उल्टी उसके मुँह से जमीन पर गिरकर बह रही थी। फिर उसे एहसास हुआ कि वह भीग रही है। आफ़ताब भी अपनी बैसाखी का सहारा लेकर खुद को संभालने की कोशिश कर रहा था। वह भी भीग रहा था।

दरअसल वे जहाँ में प्रकट हुए थे, वहाँ मौसम खराब था। आँधी के साथ मूसलाधार बारिश हो रही थी। बादल गरज रहे थे। बिजली कड़क रही थी।

खाँसते हुए दोनों ने आसमान में नज़र उठाई। बौछारें उन पर मुक्के बरसा रही थीं। दोनों उससे बचने के लिए भागने लगे। मिस्बा ने घड़ी को पानी से बचाने के लिए उस पर अपना हाथ रख दिया और आफ़ताब का हाथ पकड़कर इधर-उधर देखने लगी।

"क्या हम किसी खेल के मैदान में है?" मिस्बा को घास और पिच नज़र आया। उसने मैदान की सीमा के पार कई सारी कुर्सियों भी देखीं।

"लगता तो यही है कि ये एक क्रिकेट स्टेडियम है!" आफ़ताब ने आसपास देखते हुए कहा। लेकिन उसकी आवाज़ बादलों की गरजना में खो गयी। वह अब भी समय यात्रा के प्रभाव खाँसी पर काबू पाने की कोशिश कर रहा था।

वह वास्तव में भी एक खेल का मैदान था। तभी उन्हें पैवेलियन की ओर जाते रास्ते पर एक शेड नज़र आया। मूसलाधार बारिश से बचते हुए वे उस ओर, यानी दर्शक दीर्घा की तरफ दौड़े।

आफ़ताब को बैसाखी के सहारे चलने में थोड़ी कठिनाई हो रही थी क्योंकि मैदान की घास पर फिसलन थी। वह दो-तीन बार गिरते हुए बचा। उसे मिस्बा ने सहारा दिया था और कसकर उसका हाथ थाम लिया ताकि वो दोबारा न गिरे। जल्द ही वे शेड के नीचे आश्रय लिए खड़े थे।

"यहाँ तो जोरदार बारिश हो रही है!" आफ़ताब ने अपना चेहरा पोछते हुए

कहा। मिस्बा भी अपने दुप्पटे से खुद को पोछने लगी। फिर उसने आफ़ताब को भी पोछा।

"तुम भीग गए हो!"

"ज्यादा नहीं!" आफ़ताब ने कहा।

"बारिश को भी यहीं होना था। वैसे हम हैं कहाँ?" मिस्बा ने आफ़ताब का चेहरा पौंछते हुए पूछा।

"हम क्रिकेट ग्राउंड में है!" आफ़ताब ने मैदान को ठीक से देखते हुए कहा।

"वह तो मुझे भी दिख रहा है। मैं जगह के बारे में पूछ रही हूँ!" मिस्बा घड़ी में देखने लगी। घड़ी बंद हो चुकी थी। वह इधर-उधर देखने लगी।

आफ़ताब पैवेलियन की ओर बढ़ते हुए इमारत की ओर जा रहा था। इस पर मिस्बा ने उसे टोकते हुए पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

"देखने जा रहा हूँ कि हम कहाँ हैं!" कहते हुए आफ़ताब पलट कर आगे जाने लगा।

"रुको मैं भी आती हूँ!" मिस्बा ने अपना सलवार झाड़ा और बैग उठाकर आफ़ताब के पीछे हो ली।

कुछ ही देर में वे एक चैनल गेट के पास पहुँच गए। चैनल गेट यूं ही लगा हुआ था। मिस्बा ने गेट का हैंडल पकड़कर सरका दिया। दोनों चैनल गेट के पार हो गए। फिर वे एक गलियारे में पहुँचे, जहाँ से आगे बढ़ने पर उन्हें एक हॉल नज़र आया। मिस्बा इधर-उधर नज़र दौड़कर स्विच बोर्ड ढूँढने लगी। उसे एक दीवार पर बोर्ड मिल गया। उसने हाथ बढ़ाकर तुरंत ही बत्तियाँ जला दीं। बत्तियाँ जलते ही हॉल में लगी कई क्रिकेटरों की तस्वीरें चमचमा उठीं। वे तस्वीरें उसी क्रिकेट मैदान की थी। कुछ तस्वीरों के नीचे तस्वीर की अहमियत बताते हुए वाक्य भी लिखे हुए थे।

आफ़ताब ने एक तस्वीर के पास जाते हुए पढ़ा, "2 अप्रैल 2011, वानखेड़े स्टेडियम, मुंबई। भारत ने श्रीलंका को 10वें वर्ल्ड कप में हराकर विश्व कप जीता।"

आफ़ताब ने देखा एम.एस धोनी और उसकी टीम वर्ल्ड कप के साथ जश्न मना रही थी।

"हम मुंबई में हैं, अम्मी!" आफ़ताब ने तस्वीर को देखते हुए मिस्बा से कहा।

"अच्छा!" मिस्बा ने तस्वीर पर एक नज़र डालते हुए कहा। वह तस्वीरों से दूर एक चमचमाती मशीन के पास खड़ी थी, जिसमें फास्ट फूड के पैकेट रखे हुए थे।

“क्या तुम्हें भूख लगी है?” उसने आफ़ताब की से पूछा।

“हाँ, लगी तो है! ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, श्रीलंका…” आफ़ताब तस्वीरों को देखते हुए मिस्बा की ओर बढ़ गया।

“क्या तुम जानते हो यह मशीन कैसे काम करती है?” मिस्बा को मशीन की कार्यप्रणाली समझ नहीं आ रही थी।

“मैं देखता हूँ!” आफ़ताब बैसाखियों को खड़खड़ाता हुआ मशीन के पास आया।

मशीन और उसके काँच के भीतर आकर्षक पैकिंग में खाने-पीने की वस्तुएं या फास्ट फूड उसके मुँह में पानी ला रही थी। वह देर तक मशीन को ऊपर से नीचे तक घूरता रहा। फिर उसने कहा, “शायद इसमें कोई कार्ड डालना होगा।”

“कैसा कार्ड?” मिस्बा ने पूछा।

“एटीएम कार्ड जैसा कुछ!” आफ़ताब ने मशीन के एक ओर पतली-रेखा के पर उंगली रखते हुए उस पर लिखे निर्देश को पढ़ते हुए बाताया, “यहाँ लिखा है, देखो! अपना टोकन यहाँ डालें।”

“पर हमारे पास तो टोकन है ही नहीं!” मिस्बा ने कहा।

“क्या मैं मशीन का काँच फोड़ दूं!” आफ़ताब ने बैसाखी पर अपने हाथों को मजबूत करते हुए पूछा।

“नहीं, काँच मत तोड़ना। मैं कुछ करती हूँ!” कहते हुए मिस्बा ने अपने साथ लाए बैग की ज़िप खोलने लगी। फिर उसने बैग के भीतर हाथ डाल दिया। जब उसका हाथ बाहर आया तो उसके हाथ में एक अत्याधुनिक यंत्र था, जिसे डॉ॰ रामावल्ली ने उसे दिया था। मिस्बा डॉ॰ रामावल्ली की बात याद करने लगी।

“इस घड़ी के साथ यह डिवाइस भी रखो! संभव है भविष्य में तुम्हारा सामना किसी ऐसी मशीन, जैसे कोई बंद दरवाजा, खाना देने वाली मशीन या ऐसे ही कोई और मशीन, जिससे काम लेने में तुम्हें कठिनाई हो, तब इस डिवाइस की मदद से उसे खोलना। ये बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। तुम्हें इस बटन को दबाना होगा और तुम्हारा काम हो जाएगा। यह मशीन अपना काम कर देगी।”

डॉ॰ रामावल्ली की बात का स्मरण कर मिस्बा डिवाइस के लाल बटन को देखने लगी। उसने डिवाइस को मशीन के पास लगा दिया। आफ़ताब डिवाइस को चकित भाव से देख रहा था। लाल बटन दबाते ही मशीन में एक आवाज़ हुई। उससे एक तरह की तरंगे बाहर निकलने लगीं। मिस्बा और आफ़ताब उसका कंपन महसूस कर सकते थे। कुछ ही देर में फास्ट फूड के सामान से भरी हुई मशीन

अपने आप फास्ट फूड के पैकेट निकाल कर बाहर उड़ेलने लगी। आफ़ताब उन पैकेट पर झपट पड़ा।

मिस्बा ने डिवाइस एक ओर रख दिया और खुद मशीन से पीने के पानी की बोतल और खाने के पैकेट उठाने लगी। फिर दोनों उस सोफे पर बैठ गए जो उस हॉल की शान में चार चाँद लगा रहा था। वे आराम से पेट पूजा करने लगे।

अभी उन्होंने फ़ास्ट फ़ूड के पैकेट को आधा भी नहीं ख़त्म किया था कि मिस्बा की नजरें सामने की दीवार पर गई। दीवार पर एक डिजिटल घड़ी टंगी हुई थी जो चौकाने वाला समय बता रही थी- 15 जून 2056, शाम 4:00 बजे।

"हम 2056 में ही पहुँचे हैं!" मिस्बा के मुँह से निकला।

इस पर आफ़ताब ने भी घड़ी की ओर देखा।

"हमें घड़ी को पूरी तरह से चार्ज करना होगा! शायद कम बैटरी के कारण घड़ी ठीक से काम नहीं कर रही है!" आफ़ताब ने कहते हुए पॉपकॉर्न मुँह में डाल लिया।

"पता नहीं बारिश कब रुकेगी?" मिस्बा सामने गलियारे के बाहर चैनल गेट की ओर देखने लगी। मैदान में पानी की बौछारों की आवाज़ अब भी आ रही थी। उसने नि:श्वास छोड़ते हुए पॉपकॉर्न के पैकेट में हाथ डाल दिया और बारिश के रुकने का इंतजार करने लगी।

दोनों माँ-बेटे ने मिलकर पाँच-सात पैकेट खा लिए और हॉल में लगे टीवी पर स्टेडियम में हुए खेलों की हाई लाइट्स देखने लगे। टीवी पर किसी दूसरे चैनल की व्यवस्था नहीं थी। जैसे हॉट स्टार या डिज्नी का सब्सक्रिप्शन।

दो घंटे इंतजार करने के बाद भी बारिश नहीं रुकी। थककर आफ़ताब वहीं सोफे पर सो गया था। मिस्बा भी झपकी लेने लगी थी। दोनों को कितनी देर हुई उन्हें पता नहीं चला।

जब मिस्बा की आँख खुली तो उसने देखा आफ़ताब अब भी सोफे पर सो रहा था। उसकी बैसाखी सोफे के किनारे से लगी हुई थी। मिस्बा ने दीवार घड़ी पर नज़र डाली। घड़ी रात के 9:30 बजा रही थी। उसे सोते हुए लगभग 5 घंटे बीत चुके थे।

उसने गलियारे के आगे चैनल गेट की ओर देखा। बारिश बंद नहीं हुई थी। उसने अपने होंठ दबा लिए और खुद से कहने लगी, "लगता है सुबह तक का इंतजार करना होगा!" उसके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ नज़र आ रही थीं। वह उठी और बाथरूम ढूँढने लगी। उसे गलियारे के पास दायीं ओर बाथरूम मिल गया।

सब तरफ अंधेरा था जिस कारण उसे आगे बढ़ने के लिए स्विच बोर्ड ढूँढते हुए बत्तियाँ जलानी पड़ रही थीं। जब वह बाथरूम से फ्रेश होकर बाहर आई तब तक आफ़ताब भी उठ चुका था।

"तो तुम जाग गए!" उसने आफ़ताब से कहा।

"बारिश बंद नहीं हुई न?"आफ़ताब ने बाहर देखते हुए कहा।

"हाँ!" मिस्बा सोफे पर बैठते हुए बोली।

"मतलब हमें एक रात इसी समय में रुकना होगा!"

"शायद से!" मिस्बा में अनमने भाव से कहा। उसकी चिंता बढ़ रही थी। बारिश बंद नहीं होने से वह परेशान हो रही थी।

"मतलब कल सुबह तक मैं 17 साल का हो जाऊँगा!" आफ़ताब चहकते हुए बोला, "एक रात में मेरी उम्र पाँच साल बढ़ जाएगी!"

"यह खुश होने की बात नहीं हैआफ़ताब!" मिस्बा ने आफ़ताब को डाँटते हुए कहा।

"क्यों? खुश होने की बात क्यों नहीं है अम्मी?" आफ़ताब ने पूछा।

"क्योंकि तुम्हारी साथ मेरी उम्र भी बढ़ जाएगी और हमारे पास तुम्हारे साइज के कपड़े नहीं हैं। तुम्हें इन्हीं कपड़ों से काम चलाना होगा या फिर हमें बाहर जाना होगा।"

"पर आपने तो बैग में कपडे रखे थे?"

"मैं शायद उन्हें भूल गई। पर ये बताओ तुम्हें कैसे पता चला कि यहाँ रुकने पर हमारी उम्र पाँच साल बढ़ जाएगी?" मिस्बा ने पूछा।

"जब वह डॉक्टर अंकल आपसे मिलने घर आए थे। मैं आप दोनों की बातें सुन रहा था।" आफ़ताब ने सिर नीचे करते हुए कहा। उसे लगा कि मिस्बा उसे डांटेगी। लेकिन मिस्बा ने उसे नहीं डांटा।

"अच्छा तो फिर तुम्हें पता होगा कि अगर ये बारिश तीन दिन तक नहीं रुकी तो तुम 27 साल के हो जाओगे और मैं 45 साल की!" कहते हुए ने मिस्बा को गुस्सा आने लगा।

वह समझ गई थी कि क्यों डॉ॰ रामावल्ली ने आफ़ताब को उसके साथ भेजने के लिए उकसाया था।

"वह जानता था कि मैं कभी आफ़ताब से नहीं मिल पाऊँगी!" मिस्बा मन ही मन बड़बड़ती हुई बोली।

“आप क्या कह रही हैं अम्मी?” आफ़ताब ने उससे पूछा।

“कुछ नहीं!” मिस्बा उठकर दरवाज़े के पास चली गई और वहाँ से बारिश को देखने लगी।

मिस्बा याद करने लगी। डॉक्टर ने कहा था कि घड़ी सौर उर्जा से चार्ज होगी। मगर अब वो परेशान थी क्योंकि उसे इल्म हो गया था कि भविष्य में आकर वो फंस जायेगी।

बाहर रह-रहकर बिजली कड़क रही थी। बादल गरजते हुए बरस रहे थे।

€¥Ω£§

-कौन कहता है समय रुकता नहीं?

(15)
मेरा मकसद क्या है?

वर्तमान, सन् 2012, डॉ॰ रामावल्ली का बंगला

"सहस्त्रबाहु, मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि समय बहती हुई नदी की तरह है जिसकी हर बह चुकी धारा अतीत का हिस्सा बन जाती है और जो धारा बहना शेष है, वही भविष्य हैं।" डॉ॰ रामावल्ली कुछ समझाना चाह रहा था लेकिन तभी सहस्त्रबाहु बोल पड़ा।

"मुझे अच्छी तरह से याद है!" सहस्त्रबाहु ने डॉ॰ रामावल्ली की बात काटते हुए कहा।

दोनों वर्तमान में थे। वह वर्तमान जिसमें सहस्त्रबाहु को कुछ चिंताएँ थीं। जैसे कि जावेद और इरफान अतीत से वापस कैसे आएंगे और भविष्य में एक प्रयोग की पूर्ति हेतु भेजी गई मिस्बा अपने पुत्र के साथ वापस कब लौटेगी। उसे जानना था कि आखिर डॉ॰ रामावल्ली क्या चाहता था।

"फिर क्या सोच रहे हो?" डॉ॰ रामावल्ली ने पूछा।

"तुम जानते हो मैं क्या सोच रहा हूँ!" सहस्त्रबाहु ने सिगरेट फूंकते हुए कहा।

"परेशान मत होओ! वो ठीक ही होंगे।"

"मैंने तुम्हारा साथ देकर बहुत बड़ी गलती कर दी है डॉक्टर। यह प्रयोग कुछ ज्यादा ही डरा रहा है मुझे। ऐसा लगता है कि हमारे कई वालंटियर अपनी जान गँवा चुके हैं।"

"तुम्हारी चिंता जायज है, लेकिन तुम फिक्र मत करो। बस उसे समय के स्रोत के उस बिंदु तक पहुँचने दो जहाँ पहुँचने के लिए मैंने उसे निर्देश दिया है।" डॉ॰ रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु को समझाना चाहा।

"अगर वो समय के उस बिंदु तक नहीं पहुंचे तो? कोई गड़बड़ी हो गई तो?" सहस्त्रबाहु ने धुआँ उगलते हुए पूछा।

"फिर मुझे अफसोस से कहना होगा कि उस लंगड़े जावेद की बीवी बूढ़ी हो चुकी होगी। शायद भविष्य के किसी समय में जहाँ मौसम खराब हो, उसकी मौत हो जाए। पर तब भी चिंता की बात नहीं है। उसका बेटा आफ़ताब समय यात्रा को पूरा करेगा और उस बिंदु तक पहुँचेगा। आखिर उसे भी पता है कि मैंने मिस्बा से क्या-क्या कहा था। वो छिपकर हमारी बातें सुन रहा था। मुझे आशा है उसे

सब याद होगा। अगर मेरा काम हो गया तो वो अपने लंगड़े बाप से ज़रूर मिलेगा और अच्छी बात ये है कि उसका बाप और उसका चाचा जिसे वो पहली बार देखेगा सही सलामत होंगें। ठीक वैसे जैसे वो गए थे। यही तो समय की खूबी है! आप हजारों साल अतीत में गुजार सकते हैं, इस इंतजार में कि काम पूरा होने के बाद घर वापसी कैसे होगी। लेकिन आप भविष्य में एक दिन नहीं गुज़ार सकते क्योंकि आप बूढ़े हो जाते हो।” डॉ० रामावल्ली शराब का गिलास पकड़े हुए अपने ज्ञान पर इतराने लगा।

“यह खेल नहीं है, डॉक्टर! यह खेल नहीं होना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अभी अपनी लैब में लेकर चलो। मैं देखना चाहता हूँ, वे कहाँ हैं।” सहस्त्रबाहु ने कठोरता से कहते हुए अपनी सिगरेट ऐश ट्रे में बुझा दी।

“लैब में तुम्हारे काम की कोई चीज नहीं है। जो कुछ अन्दर है उससे तुम अच्छी तरह वाकिफ हो!”

“मुझे वो स्क्रीन देखनी है!”

“स्क्रीन सिर्फ घड़ी की पोजीशन बताती है। इससे अधिक तुम जान नहीं पाओगे।”

तभी डॉ० रामावल्ली का रसोईया कमरे में आ गया। वह दोपहर के लंच में बनाए जाने वाले खाने के बारे में पूछने आया था।

“लंच में क्या लोगे सहस्त्रबाहु?” डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु से पूछा।

“कुछ भी ले आओ!” सहस्त्रबाहु रसोईये की ओर देखे बिना बोला।

एक बार फिर वो अतीत में घटी घटनाओं के बारे में सोच रहा था कि कैसे टाइम मशीन चुराने और उसका इस्तेमाल करने पर वह दुर्घटना में घायल हो गया था।

कैसे वो दो महीने अस्पताल में गुजारने के बाद, पागलों की तरह डॉ० रामावल्ली को खोजता रहा। सरकारी अनुसंधान केन्द्रों और बड़े-बड़े विज्ञान शोध संस्थानों व विश्वविद्यालयों में उसने डॉ० रामावल्ली का पता लगाना चाहता था, लेकिन हर जगह उसे असफलता मिलती रही। कोई कहता था कि डॉ० रामावल्ली विदेश गए हैं। कोई कहता था, वो एकांत में जी रहे हैं। किसी ने कहा उन्होंने वीआरएस ले लिया है। पर किसी को यह नहीं मालूम था कि डॉ० रामावल्ली विदेश में कहाँ गए हैं या अपना एकांतवास किस स्थान पर गुजार रहे हैं। चार साल तक सहस्त्रबाहु डॉ० रामावल्ली की खोज में लगा रहा। फिर एक दिन डॉ० रामावल्ली ने खुद ही अपने को सहस्त्रबाहु के सामने ला खड़ा किया।

उस दिन भी वो आज की तरह ही हैरान-परेशान सा बैठा था।

वो एक 'बार एंड रेस्टोरेंट' था। बहुत महँगा और पाँच सितारा बार एंड रेस्टोरेंट। उसने कुछ आर्डर नहीं किया था। बस वो अपनी डायरी में कलम घसीट रहा था। शायद डॉ० रामावल्ली के बारे में उसकी खोजबीन चल रही थी। बैरा हाथ बाँधे सहस्त्रबाहु के ऑर्डर देने की प्रतीक्षा में खड़ा था। ठीक उसी तरह जिस तरह अभी डॉ० रामावल्ली का रसोईया पास में खड़ा था।

"क्या लेंगे सर?" बैरे ने पूछा था।

"कुछ भी ले आओ!" तब भी सहस्त्रबाहु ने यही जवाब दिया था जो उसने थोड़ी देर पहले दिया था।

बैरा असमंजस में पड़कर सहस्त्रबाहु की मन: स्थिति का अंदाजा लगाने लगा। वह पूछना चाहता था। जैसे, 'सर, आप कुछ परेशान दिखते हैं!'

लेकिन उसने कुछ भी नहीं पूछा क्योंकि उस समय एक व्यक्ति रेस्टोरेंट के दरवाजे से भीतर आता हुआ दिखाई दे रहा था और वो सीधे उधर ही आ रहा था। वो डॉ० एन० रामावल्ली था।

वह चार साल से ज्यादा समय बाद अचानक से प्रकट हो गया था। उसे जरूरत नहीं थी कि वह अपनी घड़ी, द रियल टाइम मशीन चुराए जाने के बाद सहस्त्रबाहु से मिलता। लेकिन वह आ गया था। जैसे वह जानता था कि सहस्त्रबाहु उसे पागलों की तरह खोज रहा है।

वह सहस्त्रबाहु की टेबल तक आया और कुर्सी सरका कर उसके पास में बैठ गया।

"कुछ ढंग का आर्डर किया हो तो मैं भी खाऊँ!" उसने सहस्त्रबाहु का ध्यान डायरी से खींचने की कोशिश की।

एक अजनबी आवाज सुनकर सहस्त्रबाहु ने गर्दन उठाकर देखा। वह अवाक रह गया। डॉ० रामावल्ली साक्षात उसके सामने बैठा था।

"डॉ० रामावल्ली आप!" उसके मुख से निकला।

"क्या मेरे बारे में ही लिख रहे हो?" डॉ० रामावल्लीने सहस्त्रबाहु की डायरी पर नज़र नज़र डालते हुए कहा, "हाँ शायद मेरे बारे में ही है।"

सहस्त्रबाहु कुछ कहना ही चाहता था कि डॉक्टर ने हाथ के संकेत से उसे रोकते हुए कहा, "माफी माँगने की जरुरत नहीं है, पत्रकार महोदय! जो बीत गया, सो बीत गया। मैं उस घटना को भूल चुका हूँ। मैं भूल चुका हूँ कि तुमने मेरी घड़ी चुराई थी। बताओ खाने में क्या आर्डर कर रहे हो? मैं बहुत दूर से आया हूँ और

मुझे भूख लग रही है। ये बैरा भी कब से तुम्हारे आर्डर की बाँट जोह रहा है।” डॉ० रामावल्ली ने रोबीले अंदाज़ में कहते हुए बैरे को देखा। बैरा मुस्कुरा दिया।

“सब ले आओ। जो भी यहाँ सबसे बढ़िया मिलता है!” सहस्त्रबाहु ने उत्तेजित होते हुए बैरे से कहा।

इस पर बैरा उत्साह प्रदर्शित करते हुए चला गया।

“आपने मुझे कैसे ढूँढा?” सहस्त्रबाहु ने अपना पहला सवाल किया। उसकी जिज्ञासा चरम पर थी।

“अगर तुम किसी को खोज रहे हो तो उसे मालूम होना चाहिए कि तुम कहाँ हो!” डॉ० रामावल्ली रहस्यपूर्ण शब्दों से अपनी बात की शुरूआत की, “मुझे मालूम था, तुम यहाँ हो और यह भी मालूम था कि तुम मुझे कब से खोज रहे थे!” डॉ० रामावल्ली कुर्सी के बल आराम से टिक गया।

“समझा! शायद आपने समय में जाकर मुझे देखा होगा?” सहस्त्रबाहु अंदाजा लगाने लगा। पर उसका अंदाजा गलत साबित हुआ।

“नहीं-नहीं! तुम्हारी घड़ी की सुई वहीं अटकी है। मुझे उन विभागों से जानकारी मिली जहाँ-जहाँ तुमने मेरे बारे में पूछताछ की और वहाँ की खाक छानते हुए अपने जूते घिसवाए।” डॉ० रामावल्ली ने जवाब दिया।

“पर आपने तो वीआरएस ले लिया था, हैं ना?” सहस्त्रबाहु ने पूछा।

“एक तरह से हाँ और एक तरह से ना!” डॉ० रामावल्ली टेबल पर रखी महँगी शराब की बोतल से गिलास भरने लगा।

“मैं समझा नहीं, सर!” सहस्त्रबाहु ने कहा।

“वो मेरा खुद का काम है। शोध संस्थान में मेरा काम कुछ और था।” डॉ० रामावल्ली ने कहा।

“मतलब वो...” सहस्त्रबाहु के कहने से पहले ही डॉ० रामावल्ली ने कहा।

“वो मेरी निजी खोज है। समय यात्रा करवाने वाली- द रियल टाइम मशीन मेरा अब तक का सबसे महान और दुनिया बदलने वाला आविष्कार है।”

“मुझे अफ़सोस है, मैंने आपकी वो घड़ी घुमा दी। पता नहीं वो कैसे बंद हो गयी थी। मैं एक हाई वे पर प्रकट हुआ था...” सहस्त्रबाहु याद करने लगा।

“और वहीं तुम्हें एक वाहन ने टक्कर मारी। उसे मैंने ही बंद किया था।” डॉ० रामावल्ली ने रहस्योद्घाटन किया। सहस्त्रबाहु चौक गया।

“चौंकों मत पत्रकार महोदय! आज तुम जिंदा हो तो मेरी वजह से ही। मैंने ही तुम्हें अस्पताल पहुँचाया था।

“मैं जानता था! मैं जानता था!” सहस्त्रबाहु उत्तेजित होते हुए कहने लगा, “मुझे हर पल लगता था कि मुझे अस्पताल पहुँचाने वाला और कोई नहीं आप थे। मेरे परिवार को खबर देने वाले भी आप ही थे। मैं आपको शुक्रिया कहना चाहता था।”

“तो क्या सिर्फ शुक्रिया कहने के लिए मुझे खोज रहे थे? अब तो तुम बहुत मालदार बन चुके हो। खुद का अखबार भी चला रहे हो। सुना है मीडिया हाउस भी खोलने वाले हो। भविष्य में एक दिन की यात्रा ने तुम्हें कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया, हैं न?”

“आप सब जानते हैं!” सहस्त्रबाहु के मुख से निकला।

“क्या तुम मेरी घड़ी चाहते थे?” डॉ० रामावल्ली ने गिलास होठों से लगाते हुए कहा, “या तुम फिर से भविष्य में जाना चाहते थे? ताकि वह जान सको जो घटने वाला है। अपने और ज्यादा फायदे के लिए। क्यों मैंने सही कहा न? मुझे लग रहा था कि सबक मिलने के बाद तुम्हारी अकल ठीक हो गई होगी पर शायद मैं गलत था।” डॉ० रामावल्ली शराब पीने लगा।

“उस दिन अनजाने में की गई समय यात्रा ने मेरा जीवन बदल दिया है डॉक्टर!” सहस्त्रबाहु के मन में भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा था, “पेट्रोल पंप पर देखा एक पोस्टर और अखबार की प्रति में पढ़ी कुछ खबरों से मैंने चार साल में वो सब पा लिया है जिसे शायद में चालीस साल में भी नहीं पा सकता था। मैंने करोड़ों का मुनाफा कमाया है।” सहस्त्रबाहु अति उत्साहित होकर अपनी तरक्की के विषय में बताना चाहता था, लेकिन डॉ० रामावल्ली ने उसकी बात काटते हुए कहा।

“लेकिन फिर भी तुम्हें तृप्ति नहीं है। तुम और प्राप्त करना चाहते हो, पैसा नहीं; पर कुछ और, है न?”

“हाँ! पर वो क्या है मुझे नहीं मालूम! शायद इसलिए मैं आपको खोजता फिर रहा था।” सहस्त्रबाहु ने श्वास छोड़ते हुए कहा।

“क्या तुम दुनिया पर राज करना चाहते हो?” डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु की आँखों में आँखें डालते हुए पूछा।

“शायद हाँ! अगर आप और हम मिल जाए तो ये बहुत आसान हो जाएगा। हम पूरी दुनिया पर राज कर सकते हैं!” सहस्त्रबाहु ने कहा।

“हम! तुम्हारी जुबान पर हम कहाँ से आ गया पत्रकार महोदय! वो घड़ी मेरी है। अगर दुनिया पर राज करना होगा तो मैं कर लूँगा, लेकिन मेरा मकसद वो नहीं

है और न ही तुम्हारा मकसद वो होना चाहिए। ये बहुत छोटी चीज़ होगी। द रियल टाइम मशीन किसी और कारण से बनाई गई है।" डॉ० रामावल्ली अपना गिलास गटक गया।

"आप दुनिया को अपनी मुट्ठी में नहीं करना चाहते हैं? इससे बड़ा मकसद और क्या हो सकता है? मैं जानना चाहता हूँ, डॉक्टर!" सहस्त्रबाहु आश्चर्य से उसको देख रहा था। उसे डॉ० रामावल्ली एक अबूझ पहेली लग रहा था।

"मुझे नहीं लगता कि तुम्हारी जैसी छोटी सोच रखने वाला व्यक्ति उस मकसद के आसपास भी सोच सकता है। वैसे मैं उस मकसद के बारे में बताने तुम्हारे पास नहीं आया था। मैं तुम्हारी इच्छा शक्ति को परखने के इरादे से तुम्हारे पास आया था। सोचा था कि शायद तुम मेरे कुछ काम आ सको। लेकिन जैसा कि मुझे पहली मुलाकत में ही समझ लेना था कि मैं गलत था।"

"क्या आप वाकई मेरी लगन और इच्छाशक्ति से प्रभावित होकर मुझसे मिलने आए है? मुझे ढूँढते हुए?" सहस्त्रबाहु को यकीन नहीं हो रहा था। वह डॉ० रामावल्ली का इरादा भाँप लेना चाहता था।

"मैं तुम्हारी तरह झूठा नहीं हूँ, पत्रकार सहस्त्रबाहु!"

उसी वक़्त बैरा थालियाँ लेकर आ गया था।

"यह हमारे यहाँ की सबसे अच्छी और बेहतरीन डिशेस हैं सर!" उसने थालियाँ टेबल पर सजा दीं, "आशा करता हूँ आपको पसंद आएगी!" और बैरा पीछे खड़े होकर सहस्त्रबाहु और डॉ० रामावल्ली द्वारा खाने का पहला निवाला मुख में रखे जाने की प्रतीक्षा करने लगा। वह दोनों से पकवानों के स्वादिष्ट होने की प्रशंसा सुनना चाहता था। उसे वह प्रशंसा डॉ० रामावल्ली ने दी, जब उसने नैपकिन गले और जांघ पर रखकर पहला निवाला मुँह में रखा।

"ये वाकई लाजवाब है!" फिर वो हर व्यंजन का स्वाद लेकर उसके संबंध में कुछ शब्द कहने लगा, " वाह! यह तो और भी खूब है। अरे! इसका जवाब नहीं! मैं रसोईये से मिलना चाहूँगा। इससे तुमने कौन-से मसाले का उपयोग किया है? मुझे रसोईये को बधाई देना होगी!" खाने को लेकर उसकी तारीफ हैरान करने वाली थी। कम से कम सहस्त्रबाहु को वो कुछ ज्यादा ही हैरान कर रही थी।

"भला इतना महान आदमी खाने को लेकर इतना अति प्रतिक्रियात्मकवादी कैसे हो सकता है? खाना तो साधारण है। हाँ, कुछ व्यंजन का स्वाद लाजवाब है। लेकिन तब भी, क्या यह सब इसका दिखावा तो नहीं है? कहीं वह मुझे..." सहस्त्रबाहु ने खाने की तारीफ़ करते हुए बैरे को वहाँ से जाने को कह दिया।

फिर जब उससे रहा नहीं गया तो उसने डॉ० रामावल्ली से पूछा, “मैं चकित हूँ कि आप जैसा महान व्यक्ति मुझसे मिलने आ गया। क्या आप वाकई मुझसे मिलना चाहते थे?

“हाँ, पर अब मैंने अपना इरादा बदल लिया है!” डॉ० रामावल्ली खाने की प्लेट में चम्मच और छुरी चलाते हुए बोला।

“क्यों? सिर्फ इसलिए कि मैंने शक्तिशाली होने की संभावनाओं को समझा और अपने कदम उस दिशा में बढ़ा लिए। आप एक वैज्ञानिक हैं और मैं एक महत्वाकांक्षी नवयुवक! हम एक हादसे की वजह से मिले। लेकिन उस हादसे ने मेरा जीवन बदल दिया है। ये बात आपको समझनी चाहिए। समय यात्रा के एक दिन ने मेरे अन्दर का सब कुछ बदल दिया है। फिर आपकी और मेरी उम्र और अनुभव में भी जमीन आसमान का अंतर है। मैं कैसे आपके स्तर पर सोच सकता हूँ? मुझमें इतना ज्ञान कहाँ हैं? आप एक बार फिर से सोचिए डॉक्टर! मैं आपके बहुत काम आ सकता हूँ। ऐसा कोई काम नहीं जो मैं कर न सकूँ!”

“अच्छा! जरा सोचने दो फिर।” डॉ० रामावल्ली खाना चबाते हुए बोला, “क्या मुझे तुम्हारी बात पर यकीन कर लेना चाहिए? कहीं तुम मुझे फिर से धोखा तो नहीं दोगे?” डॉ० रामावल्ली गौर से सहस्त्रबाहु की आँखों में झाँकने लगा।

“आप मुझ पर उतना ही विश्वास कर सकते हैं जितना आप खुद पर करते हैं। यकीन मानिए, मैं आपको अब दोबारा धोखा नहीं दूँगा और ना ही आपकी घड़ी चुराऊँगा, जब तक आप खुद नहीं देंगे, मैं आपसे कुछ नहीं माँगूंगा।”

“घड़ी तो तुम्हें यूँ भी नहीं मिलने वाली है! कम से कम तब तक नहीं जब तक मैं तुमको लेकर किसी ठोस निर्णय पर नहीं पहुँचता।” डॉ० रामावल्ली व्यंजनों का मजा लूटते हुए बोला, “पर तुम मेरे साथ काम करोगे। मैं तुम पर जोखिम लूँगा!”

“सच! आप मुझे क्या काम देंगे सर?” सहस्त्रबाहु ने पूछा।

“पहले खाना खाओ! फिर मैं विस्तार से तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हारा काम क्या होगा। बस शर्त ये रहेगी कि तुम वो सब करोगे जो मैं तुमसे करने को कहूँगा और तुम कभी कारण नहीं पूछोगे कि मैं क्या चाहता हूँ। समय आने पर मैं तुम्हें सब बताऊँगा।”

“मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपको कभी निराश नहीं करूँगा।” कहते हुए सहस्त्रबाहु ने काँटे-छुरी उठा लिए और दूसरे व्यंजन पर गड़ा दिए, “पर आपको मुझे यह जरूर बताना होगा कि समय यात्रा के पीछे कौन-से सिद्धांत काम करते है। खासकर हमें उल्टी क्यों होती है? वैसे मैंने गौर किया था कि

आपको जरा भी उल्टी नहीं हुई थी।"

"खाना खाते समय उल्टी की बात नहीं करना चाहिए पत्रकार महोदय!" डॉ॰ रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु को टोकते हुए कहा।

"माफ़ कीजिएगा!" सहस्त्रबाहु ने कहा।

"मैं समय के सिद्धांतों के बारे में तुम्हें बता दूँगा, बशर्ते तुम समझ पाओ!" डॉ॰ रामावल्ली ने कहते हुए सहस्त्रबाहु को देखा।

€ ¥ Ω £ §

-समय एक भूलभुलैया है।

(16)
उसने कहा था!

1772 महरौली, दिल्ली

जमाली-कमाली मस्जिद

अली गौहर उर्फ़ शाह आलम पूरे ठाट-बाट से, सजे हुए घोड़ों, हाथियों, दर्जनों गुलामों और सेना के लशकर के साथ मस्जिद में सजदा करने आ रहा था।

उसके साथ कुछ हिंदू सिपहसलार भी थे, जो उसके साथ या उसके पीछे चल रहे थे। सभी अपने घोड़ों पर थे। उन्होंने राजसी पोशाकें पहन रखी थीं। दास-दासियाँ कई सारे थाल और टोकरियाँ लेकर आगे-आगे चल रहे थे।

मस्जिद के मार्ग में जो भी व्यक्ति उस लश्कर को देख रहा था, उसकी आँखें चमत्कृत हो रही थीं और वो रास्ते से एक और हटकर लश्कर को आगे जाने का मार्ग दे रहा था।

जब लश्कर मस्जिद के बाहर पहुँच गया तब अली गौहर अपने घोड़े से उतरा। उसने अपनी मौजड़ी उतारी और भीतर दाखिल हो गया। उसके साथ उसके करीबी और अंग रक्षक भी मस्जिद में दाखिल हुए। केवल उसके हिन्दू सिपहसलार मस्जिद के बाहर रुके रहे।

मस्जिद के भीतर एक स्थान विशेष पर मंच बना हुआ था, जहाँ अल्लाह के नाम का कलमा पढ़ते हुए कुछ सूफी फ़क़ीर नाच-गा रहे थे। वहाँ बायीं ओर खम्बे का सहारा लिए एक पीर भी बैठा हुआ था, जो तल्लीनता से अल्लाह को याद करता हुआ मदमस्त हो रहा था। उस पीर के दोनों हाथ नहीं थे। वह अपने घुटनों के बल बैठा हुआ था। उसके कंधे पर एक दुशाला ढकी हुई थी जो उसके अर्ध विकसित हाथों को ढक रही थी।

जब शाह आलम वहाँ पहुँचा तो उसने अपने दोनों हाथ फैलाकर अल्लाह को याद किया। फिर वो कुछ मौलवियों और सूफी फकीरों से मिलने, उन्हें अपने साथ लाए चादर, अशर्फियाँ आदि देने के बाद पीर की तरफ बढ़ गया जिसकी आँखें बंद थीं और वह दूसरों की तरह उसके आने से प्रभावित नहीं हुआ था। वह अपनी मस्ती में सूफी संगीत का मज़ा ले रहा था। वो अपने परवरदिगार को याद कर रहा था। अली गौहर ने उसके आगे झुककर सजदा किया। वह घुटनों के बल बैठकर उसके पैरों में गिर गया।

"जैसा आपने कहा था, वैसा ही हुआ बाबा!" उसने पीर से कहा, "पूरे बारह साल बाद मैं दिल्ली लौटा हूँ!"

"तो तूने अपने वालिद के कत्ल का बदला पूरा कर लिया!" पीर ने बिना अपनी आँखें खोले शाह से कहा। वह पूरी तरह से मस्त था।

"बहुत तकलीफें उठाई, जिद्दोजहद किया, अपने चाहने वालों को इकट्ठा किया, उन्हें मनाया, राजी किया, तब जाकर कहीं ये हो पाया। एक लम्बा वक्त लगा। लेकिन हाँ, मैंने कर दिखाया। मैंने अपने वालिद का बदला पूरा कर लिया।"

"तो अब क्या चाहता है तू!" पीर ने पूछा। उसने अब भी आँखें नहीं खोली थीं।

"आपके लिए कुछ तौहफे लाया था। इन्हें कबूल करिए।" कहते हुए शाह ने गुलामों को इशारा किया। गुलाम बड़े-बड़े थाल लिए पीर के सामने आ गए।

मंच पर अब भी कव्वाली गायी जा रही थी। सूफी फकीरों ने सम्राट के आने पर अपनी कव्वाली बंद नहीं की थी।

"यह तौहफे तो तू ज़रुरतमंदों में बाँट दे। मुझे इनकी जरूरत नही। ये अल्लाह का घर है, यहाँ अल्लाह का नाम ले। आ बैठ मेरे पास और थोड़ी देर तू भी अल्लाह का नाम ले!" पीर ने शाह को आदेशात्मक स्वर में कहा।

"जरूर बैठता, लेकिन अभी मुझे किले पर जाना है। मेरे हमनवा, मेरे साथी, मेरे मददगार, मेरे सिपहसलार मेरी राह देख रहे हैं।" अली गौहर ने कहा।

"क्या वे वही हैं जिन्होंने तेरी कई लड़ाईयों में मदद की, तेरा हमेशा साथ दिया?" पीर ने पूछा।

"हाँ वे लोग वही हैं! मेरे हिंदू दोस्त!" शाह ने बताया।

फिर दो पल ठहरकर उसने कहा, "मैं जाना चाहता हूँ, इज़ाज़त दीजिए!"

"तो जा ना! किसने रोका है तुझे!" पीर ने बेरुखी से कहा। पर अभी तक अपनी आँखें नहीं खोलीं।

"अगर एक बार आँखें खोलकर मुझे देख लेते तो मेरे जी को तसल्ली होती। जानता हूँ, बेवक्त आपके पास चला आया पर खुद को रोक न सका। सीधे यहीं आया हूँ।" शाह ने दरखास्त करते हुए कहा।

"आँखें तो मैंने तेरे लिए ही बंद कर रखी हैं अली गौहर!"

"क्या? मेरे लिए!" शाह को हैरत हुई।

"हाँ, तेरे लिए। तेरे लिए ही आँखें बंदकर अल्लाह से दुआ कर रहा था कि वो

तुझे एक लम्बे वक्त तक गद्दी पर बैठाए रखे। पर लगता है जैसे आज मेरी दुआ उस तक नहीं जा रही!" पीर ने कहा।

"ऐसा क्यों कहते हैं बाबा? ऐसा कहने की क्या वजह है?" शाह के माथे पर बल पड़ गए। वह सोचने लगा कि ज़रूर पीर की बातों में कोई रहस्य है।

"जितने नेक काम करने हैं, कर ले शाह! अल्लाह ने तुझे बारह साल और दिए हैं। आज से और अभी से गिनती कर ले, बारह साल! इसके बाद तू सम्राट नहीं रहेगा और न तेरा कोई वंशज शाह होगा। जो होगा वह भी कठपुतली की तरह।" पीर आँखें बंद किए अपनी बात कहता रहा।

"आप मुझे डरा रहे हैं, बाबा!" शाह को चिंता होने लगी।

"तू डरे तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ। खुदा तुझे हिम्मत दे! दिमाग दे! अब तेरे लिए यही दुआ कर सकता हूँ। सब्र से काम लेना, सबसे चौकन्ना रहना और दुश्मनों का आभास मिलने पर जगह छोड़ देना। और हाँ, अपनी आँखों से रोज खुले आसमान को देखना। आसमान अल्लाह की याद दिलाता है। दिल्ली की गद्दी और तौहफे नहीं। आसमान को देखने से तेरी हिफाजत होती रहेगी। ऐसा करने में कोई भूल न हो, याद रखना!" पीर ने शाह को कुछ इशारे दिए।

"गर किसी रोज मैं भूल गया तो?" शाह ने घबराते हुए पूछा।

"तो समझना तेरा वक्त खत्म होने वाला है। जा अब दिल्ली की गद्दी तेरा इंतजार कर रही है।" यह कहने के बाद पहली बार पीर ने आँखें खोलकर शाह को देखा और उसे ऊपर से नीचे तक देखता रहा। मानों अपनी आँखों से उसके जिस्म पर कोई कवच चढ़ा रहा था। फिर उसने कुछ कलमें पढ़े और शाह को निर्देश दिया कि वो तौहफे ज़रूरतमंदों में बांटता जाए। शाह ने वैसा ही करने का आदेश अपने गुलामों को दिया। मस्जिद के बाहर बैठे लोगों में थाल उड़ा दिए गए।

आखिर में जाते हुए शाह ने पीर के सामने सिर झुकाया। वह पीर का हाथ लेकर चूमना चाहता था लेकिन पीर के हाथ नहीं थे। सो वो देर तक झुका रहा। फिर जैसा वो आया था वैसा ही चला गया। अपने काफिले और लश्कर के ठाट-बाट के साथ। शाह के जाते ही पीर ने दोबारा आँखें बंद कर लीं। वह फिर से मस्त हो उठा। वह फिर से अल्लाह का नाम लेते हुए कुछ गुनगुनाने लगा।

कहाँ उसको पाऊँगा मैं?
न सोच तू ओ मुसाफिर!
वो पास ही तेरे बैठा है
तू रुक जा, तू ठहर जा, तू थम जा।।
कौन राह अपनाऊँगा मैं?

न सोच तू ओ मुसाफिर!
हर राह उस तक जाती है
तू देख, तू समझ, तू जान ले।।
क्या मंजिल पाऊँगा मैं?
न सोच तू ओ मुसाफिर
वो खुद ही चला आएगा
तू पुकार, तू याद कर, तू नाम ले।।

शाह के मस्जिद से दूर जाते ही जावेद और इरफान सूफी फकीरों के आगे से उठे और एक कोने में जाकर बात करने लगे।

“फिरोज शेख ने सही कहा था। शाह तुम्हारे पुरखों के पास आता था। हम बिल्कुल सही समय पर पहुँचे हैं।”

इरफान ने उत्तेजित होते हुए जावेद से कहा। जावेद तिरछी नज़र से पीर को देख रहा था। उसकी शक्ल उसके दादा से खूब मिल रही थी।

“क्या यह वक्त सही होगा उनसे मिलने के लिए?” जावेद पीर की मस्ती में खलल नहीं डालना चाहता था।

“क्यों नहीं! अभी-अभी शाह उससे मिलकर गया है। फिर वो जिस तरह से भविष्य की बात पहले ही बता सकता है। क्या पता वो हमें तुम्हारा इतिहास भी बता दे। सोचों जावेद मियाँ, इस बारे में सोचो।” इरफान ने जावेद से कहा।

“लेकिन वो खुदा की इबादत कर रहे हैं?” जावेद झिझक रहा था। वो कुछ देर इंतज़ार करना चाहता था।

“इबादत कर रहे हैं इसलिए यह और माकूल वक़्त है। शायद हमारे सवालों के जवाब आज ही मिल जाएँ। चलो, हमें देर नहीं करनी चाहिए।” और इरफान ने जावेद को कंधों से पकड़ते हुए पीर के पास चलने के लिए उसे प्रेरित किया।

जावेद अपनी बैसाखी का सहारा लेकर आगे बढ़ने लगा। इरफान ने अपनी टोपी सही की। वह चारों ओर नज़र दौड़ते हुए आगे बढ़ने लगा।

“तुमने घड़ी को धूप कब दिखाई थी?” इरफान ने बीच रास्ते में जावेद से पूछा।

“सफर पर निकलने से पहले!” जावेद ने कहा।

“घड़ी पूरी तरह से चार्ज कर लेना क्योंकि मुझे महसूस हो रहा है कि शायद हमें अब सीधे एक लम्बे सफ़र पर जाना पड़ेगा। अगर घड़ी में ऊर्जा नहीं हुई तो हम बीच में फँस सकते हैं।” इरफान ने बताया।

“देखते हैं!” दोनों पीर के पास पहुँचने ही वाले थे। वे चुप हो गए।

मस्ती में झूमते हुए पीर के कंधों से रेशमी शाल नीचे गिर गई थी, जिसे पास में से गुजर रहे एक व्यक्ति ने उठाकर फिर से उसके कंधों पर डाल दिया। जावेद और इरफान को वहाँ आया देख उसने दोनों को सलाम किया।

"अस्सलाम वालेकुम!"

"वालेकुम अस्सलाम!" जावेद और इरफ़ान ने साथ में जवाब दिया।

"कहिए मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ?" व्यक्ति ने दोनों से पूछा।

"हम इनसे मिलने आए थे।" जावेद ने पीर की ओर संकेत करते हुए कहा।

"अच्छा! तो कुछ पल इंतजार करिए।" कहते हुए व्यक्ति वहाँ से चला गया।

उसके जाते ही कुछ देर बाद पीर बड़बड़ाने लगा, "दो दोस्त, दो हमसफ़र, दो सहयात्री, बीते वक़्त में आए हैं अपने वर्तमान को ढूँढते हुए। उसने कहा था, वो आएंगे। आज वे दोनों आ पहुँचे हैं।"

पीर के मुख से अपने संबंध में भविष्यवाणी सुन, जावेद और इरफान आश्चर्यचकित रह गए। वे भौंचक्के से पीर को देखने लगे। उन्हें जरा भी उम्मीद नहीं थी कि पीर इन शब्दों में उनका इस्तकबाल करेगा। दोनों हैरानी से एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

"अच्छा हुआ, तुमने शाह के जाने तक इंतजार किया!" पीर ने आँखें खोलते हुए सबसे पहले जावेद को देखा। फिर उसने इरफान की ओर नज़र डाली और आगे कहने लगा, "आखिरकार वही हुआ जो उसने कहा था। अल्लाह का शुक्र है, मुझे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा!" पीर, आल्लाह का शुक्रिया मानते हुए ज़ज्बाती हो गया और कोई कलमा पढ़ने लगा। जावेद और इरफ़ान चकित भाव से उसे देख रहे थे।

फिर कुछ देर में पीर सामान्य होते हुए बोला, "हैरान मत होओ! मुझे मालूम था कि तुम दोनों आओगे। उसने मुझे पहले ही बता दिया था।" उसने दोनों को देखते हुए कहा।

"किसने बता दिया था बाबा? और क्या आप हमें जानते हैं?" जावेद ने पीर से पूछा।

"और नहीं तो क्या! दो दोस्त, दो हमसफ़र, दो समय के मुसाफिर, बहुत दूर कहीं भविष्य से, पीछे आए हैं।"

पीर द्वारा अपने शब्दों को दोहराते देख इरफ़ान चौकन्ना हो गया। वह इधर-उधर देखते हुए पीर के पैरों के पास बैठ गया और धीरे से बोला, "क्या आप

वाकई जानते हैं हम कौन हैं?"

मंच पर सूफी फकीरों की टोली गीत-संगीत में मसरूफ़ थी। अल्लाह के नाम की कवालियाँ मस्जिद में गूंज रही थी।

जावेद ने अपनी बैसाखी को दीवार का सहारा देकर टिका दिया और पीर के पास दूसरी ओर बैठ गया।

"बताईए बाबा, क्या आप हमें जानते है?" इरफ़ान ने पीर को चुप देख पूछा।

"ज्यादा तो नहीं, लेकिन उसने कहा था।" पीर ने इरफ़ान से कहा।

"किसने कहा था बाबा? आप बार-बार किसकी बात कर रहे है?" अब जावेद ने पूछा।

"एक उच्च कोटि के योगी ने बताया था। कुंभ के मेले में मुलाकात हुई थी हमारी। मेरे दरवेश का आदेश था तो मैं गया था। उस वजह के बारे में जानने के लिए जिस वजह को जानने के लिए तुम भी आए हो। है कि नहीं मेरे बेटे! मेरी छठी पीढ़ी से अपने परदादा के परदादा के परदादा से मिलने के लिए!" कहते हुए पीर की आँखों में आँसू आ गए। जावेद भी भावुक हो उठा।

पीर रोने लगा था। वह जावेद को बाहों में लेकर दुलारना चाहता था। वह उसका माथा चूमते हुए अपना प्यार देना चाहता था। लेकिन उसके दोनों हाथ नहीं थे। वह बेबस था।

"मेरे पास आओ बेटे! आओ और मेरे गले लगो!" उसने जावेद को गले लगाने की इच्छा व्यक्त की। उसकी भावनाओं के उमड़ते ज्वार को देखकर जावेद खुद को रोक न पाया। उसके सब्र का बाँध अब टूट रहा था। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। उसने रोते हुए इरफान को देखा। वह सोच रहा था कि क्या करे।

तभी पीर बोल उठा, "सोचो मत मेरे बेटे! मैं जानता हूँ, तुम कौन हो और क्यों आए हो!" पीर ने जावेद को सभी आशंकाओं से मुक्त रहने का संकेत दिया।

अब जावेद उस पीर के पास सरक गया और उसके सीने से जा लगा।

पीर ने अपने खुरदुरे होठों से जावेद का माथा चूम लिया।

वह क्षण बहुत ही अद्भुत और अतुलनीय था। समय यात्रा में 238 साल सफ़र करने के बाद पहली बार ऐसा वक्त आया था, जब जावेद को अपने पुरखे से ठीक गले लगने का मौका मिला था। वरना अभी तक वो सिर्फ शिष्टाचारवश ही सबसे गले मिलता रहा था। इसके अतिरिक्त ये भी पहली बार था कि उसके किसी वंशज ने उसे पहचान लिया था। अन्यथा अभी तक जावेद ने अपनी पहचान

जाहिर नहीं होने दी थी। उसने अपने ज़ज्बातों पर तीव्रता से काबू किया हुआ था। वह जिन-जिन से भी मिला था, चाहे वे उसके दादा थे, परदादा थे या पर-परदादा थे, वह किसी से भी नहीं कह पाया था कि वह कौन है। जबकि उसकी दिली ख्वाइश थी कि वो सबको बता देना चाहता था कि देखिए, मैं आपका पोता हूँ! मैं आपका परपोता हूँ! मैं आपका पर-परपोता हूँ!

वह कुछ नहीं कह सका था क्योंकि समय यात्रा पर जाने से पहले तय यहीं हुआ था कि वे अपनी पहचान छिपा कर रखेंगे। अब तक के सफर में उन्होंने अपने निश्चय का पालन भी किया था। लेकिन जमाली-कमाली मस्जिद में समय ठहर गया था। वह पल अप्रत्याशित, असामान्य और अनौपचारिक था। तीव्र भावनाओं का ज्वार पर-पर-परपोते और उसके पर-पर-परदादा के दिल में उफान मार रहा था।

जब जावेद ने पीर के आलिंगन से खुद को अलग किया तो कुछ पल तक दोनों के बीच खामोशी रही। वे एक-दूसरे को देखते हुए खुशी के आँसू बहाते रहे। उनका मिलन ही ऐसा था। फिर पीर ने इरफ़ान को गले लगाया।

"तुम इसके दोस्त हो?" पीर ने पूछा।

"जी, सही फरमाया आपने।" इरफ़ान ने कहा।

"अच्छा पहले यह बताओ तुम्हारा नाम क्या है?" अब पीर ने जावेद से पूछा।

"जावेद शेख!" जावेद ने बताया।

"और तुम्हारे वालिद का?"

"उमर शेख!"

"और तुम्हारे दादा का नाम अब्दुल रहमान रजा शेख!" जावेद समझ गया कि पीर क्या पूछना चाहता था। उसने पीर को सबके नाम बताए।

"और आगे?" पीर ने फिर पूछा।

"रजा शेख के दादा फिरोज शेख!" जावेद ने अंत तक आते हुए कहा, "और आप है सुलतान तारीख शेख!"

"तुम्हें मेरा नाम पता है!" पीर ने हैरत जताई ।

"जी, हमारे काजी साहब ने बताया था!"

"मुझे कैसे ढूँढ लिया?"

"आपके पोते ने बता दिया था कि आप यहाँ मिलेंगे!"

"मेरा पोता भी है? वह कहाँ मिला तुम्हें?"

"बर्मा में!"

"अभी मेरी कोई संतान नहीं है, लेकिन तुम्हारी बातों से लगता है जल्द ही अहमदा की कोख भरेगी।"

"अहमदा?" जावेद सोचने लगा।

"अहमदा, मेरी बीवी यानी तुम्हारी पर-पर-परदादी। मिलना चाहोगे उससे? चलो मैं तुम दोनों को उससे मिलवा दूँ! मुझे उठने के लिए सहारा दो।" पीर उत्साहित हो गया था।

जावेद और इरफ़ान ने उसे सहारा दिया। पीर ने उठते हुए कहा, "अहमदा के पास जाकर ही बातें करेंगे। वह बड़ी खुशी होगी। वैसे तुम दोनों उसे मत बताना कि तुम कौन हो। वो खामखा हैरान-परेशान होगी। उसे रूहानी बातें कम समझ आती हैं।"

"जैसा आप कहें!" जावेद और इरफान पीर के इशारे पर निर्देशित दिशा की ओर बढ़ते हुए मस्जिद से बाहर आ गए।

मस्जिद में सूफी संगीत अब भी जारी था।

€¥Ω£§

-समय का अंत नहीं है , न ही आरम्भ, ये बस है।

(17)
हमें देर हो गई

साल 2056,
वानखेड़े स्टेडियम, मुम्बई

सुबह हो चुकी थी लेकिन अब भी बारिश बंद नहीं हुई थी। वरन बारिश ने जोर पकड़ लिया था। मिस्बा बार-बार घड़ी में वक्त देख परेशान हो रही थी। आफ़ताब भी हर बीतते सेकेंड के साथ घबराहट अनुभव कर रहा था क्योंकि कुछ घंटों बाद दोनों को स्टेडियम में रहते हुए पूरे 24 घंटे बीतने वाले थे। वे अतीत से भविष्य की ओर बढ़ रहे थे, जिस कारण हर बीतते पल के साथ समय की निरंतर प्रवाहित धारा उन्हें जोरदार तरीके से प्रभावित करने वाली थी।

डॉ० रामावल्ली के शब्दों में, "अगर तुम ज्यादा समय तक एक जगह रुकी रही तो तुम बूढ़ी हो जाओगी। समय की झटका तरंगे हर 24 घंटे बाद तुमसे टकराएँगी। इसलिए चलते रहना बहुत जरूरी है। समय एक बहती हुई नदी की तरह है, जिसकी हर बह चुकी धारा अतीत का हिस्सा बन जाती है और जो धारा अभी बहना शेष है, वही भविष्य है। उस भविष्य में जाने के लिए धारा के विपरीत तैरना होता है। यही कारण है कि समय की उठने वाली तरंगें जोरदार तरीके से प्रभावित करती हैं। मेरी रियल टाइम मशीन तुम्हें उस भविष्य में ले जा सकती है, बशर्ते तुम यह ध्यान रखो कि तुम्हें किसी भी तरह से उस बीच में ज्यादा देर तक नहीं रुकना है। केवल घड़ी को चार्ज होने में जितना समय लगे उतनी देर रुको और वहाँ से निकल जाओ। अगर गलती से भी तुम भविष्य में 24 घंटे से ज्यादा रुक गई तो तुम्हारे जीवन के पाँच साल कम हो जाएँगे। तुम्हारी उम्र बढ़ जाएगी। ज्यादा दिन तक भविष्य में रुकना तुम्हें बूढ़ा बना देगा।"

मिस्बा सोचने लगी कि अगर बारिश यूँ ही चलती रही तो डॉ० रामावल्ली की बात सच हो जाएगी। उसके और आफ़ताब के शरीर पर समय की झटका तरंगों का क्या प्रभाव पड़ेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता था।

अगर आफ़ताब एकदम से पाँच साल बड़ा हो गया तो यह चिंता की बात होगी। वह आफ़ताब के कपड़े साथ में रखना भूल गई थी। बड़े कपड़ों के बारे में तो उसे ख्याल ही नहीं आया था।

"मेरे ख्याल से तुम्हें एक बड़ी छड़ी ढूँढनी चाहिए।" मिस्बा अपनी घड़ी को

घुमाते हुए आफ़ताब से बोली, “शायद यहाँ कोई स्टिक मिल जाए।” मिस्बा परेशान होते हुए दूसरे कमरों में जाने लगी।

“एक स्टिक! मुझे स्टिक क्यों चाहिए होगी?” आफ़ताब ने उसके पीछे चलते हुए पूछा।

“घड़ी देखो आफ़ताब! साढ़े तीन घंटे बाद हमें चौबीस घंटे पूरे हो जाएँगे। टाइम की शॉक वेव हमें अपनी चपेट में ले लेगी।” मिस्बा की व्यग्रता बढ़ रही थी उसे डॉ० रामावल्ली की बातें याद आ रही थीं।

“वह तो मैं भी जानता हूँ पर इसका स्टिक से क्या वास्ता?” आफ़ताब ने पूछा, “वैसे यह क्रिकेट स्टेडियम है। यहाँ शायद ही कुछ मिले।” आफ़ताब और मिस्बा स्टोर रूम ढूँढने लगे क्योंकि एक वही स्थान था, जहाँ कोई स्टिक मिल सकती थी।

“तुम्हारी ऊँचाई बढ़ सकती है आफ़ताब! हम बाहर जाकर तुम्हारे लिए नयी बैसाखी खरीद सकते हैं। लेकिन हम भींग जाएँगे।”

“यहाँ रेनकोट मिल जाएगा। जब भी बारिश होती है पिच और ग्राउंड को शीट से ढक दिया जाता है। मैंने देखा है वे लोग तेज़ी से आ जाते हैं और बड़ी-सी शीट लेकर ग्राउंड को ढक देते हैं। हमें स्टिक ढूँढने के बजाय रेनकोट ढूँढना चाहिए। उसे पहनकर हम बाहर जा सकते हैं और मेरे लिए नयी बैसाखी खरीद सकते हैं।”

“तुम्हें मजाक सूझ रहा हैं!” मिस्बा उसे डांटते हुए बोली, “हम यहाँ घूमने नहीं आए हैं आफ़ताब। सोचो, अगर बारिश नहीं रुकी तो क्या होगा! हम कभी तुम्हारे अब्बा से नहीं मिल पाएँगे। बारह साल से मैं उनके बगैर जी रही हूँ। अब जब उनके जिंदा होने की बात पता चली है, मैं... मैं बता नहीं सकती मुझे पर क्या गुजर ही है। मुझसे सब्र नहीं हो रहा।” कहते हुए मिस्बा रो दी।

“मुझे माफ कर दो, अम्मी! मैं आपको रुलाना नहीं चाहता था। मुझे भी अब्बू से मिलना है।” आफ़ताब मिस्बा को दिलासा देने लगा, “आप यहीं रुको, मैं जल्दी से स्टोर रूम ढूँढता हूँ।” कहते हमें आफ़ताब बैसाखी संभालने लगा।

“नहीं रुको! मैं भी चलती हूँ!” मिस्बा अपने आँसू पोछते हुए बोली।

फिर दोनों साथ में स्टोर रूम ढूँढने लगे। वे गलियारों में बढ़ते रहे। मिस्बा आगे चलते हुए बत्तियाँ जलाती रही।आफ़ताब बैसाखियाँ खटखटाता, थोड़ा पीछे चलता रहा। वे कई कमरों से होते हुए उस कमरे में दाखिल हुए जहाँ दीवार के हैंगर पर चाबियाँ लटकी हुई मिलीं। उसके कुछ आगे जाने पर स्टोर रूम भी नज़र

आ गया।

मिस्बा ने चाबी का गुच्छा निकाल लिया। फिर एक-एक चाबी दरवाज़े में लगाते हुए देखने लगी। एक चाबी से स्टोर रूम खुल गया। वहाँ क्रिकेट के सामान के साथ कुछ फूटबाल और हॉकी स्टिक उसे मिल गई। शायद खिलाड़ी फिटनेस के लिए उनका इस्तेमाल करते थे। उसे कुछ खेल की पोशाकें और रेनकोट भी वहीं मिल गए।

मिस्बा ने अलग-अलग साइज के कुछ शर्ट और शॉर्ट्स छाँट लिए। कुछ अपने लिए, कुछ आफ़ताब के लिए।

“काश! हमें घड़ी को चार्ज करने के लिए भी कुछ मिल जाए!” मिस्बा कपड़ों को बैग में रखते हुए खिड़की की ओर देखने लगी। बारिश तेज हो रही थी।

“हाई मास्ट की रोशनी शायद घड़ी को चार्ज कर दे!” आफ़ताब खिड़की से बाहर मैदान में दिखाई पड़ रहे हैं लाइट्स को देखकर बोला। उसके दिमाग की बत्ती अचानक से जल उठी थी।

“क्या कहा तुमने?” मिस्बा चकित होते हुए बाहर देखने लगी।

"अगर उन्हें जलाकर रौशनी कर दें तो शायद हमारा काम बन जाए। घड़ी चार्ज हो सकती है। स्कूल में मैं अपने सोलर पैनल वाले साइंस प्रोजेक्ट ऐसे ही चलाता था।”

“उनके स्विच ढूँढो!” कहते हुए मिस्बा ने बैग में कपड़े रख लिए और उठ गई। आफ़ताब ने भी अपनी बैसाखी को संभाल लिया।

फिर दोनों मैदान में ऊँचाई पर लगी हाई मास्ट के स्विच को ढूँढते रहे। उन्हें दो घंटे स्टोर रूम ढूँढने में लग गए थे और एक घंटा से ज्यादा स्विच ढूँढने व उसे ऑन करने में लग गया।

स्विच ऑन करते ही खट-खट की आवाज़ के साथ हाई मास्ट जल उठे। पानी की बौछारें उसकी रोशनी में और भी स्पष्ट रूप से दिखने लगी थीं। घने बादलों के बीच मैदान में पीली-सफेद रोशनी बिखर गई थी।

“मैं मैदान में पहुँचती हूँ! तुम जल्दी से वहाँ पहुँचो।” मिस्बा ने आफ़ताब से कहा और बिजली की गति से मैदान की ओर दौड़ गई। वह चाहती थी कि वक्त पूरा होने से पहले वह मैदान में पहुँच जाए। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता था?

पहले तो यह निश्चित नहीं था कि टाइम मशीन हैलोजन की रोशनी से चार्ज होने वाली थी और दूसरा कि वह वक्त पर वहाँ पहुँच पाती। घड़ी को पूरी तरह से चार्ज करने के लिए उसे एक घंटा चाहिए था।

उसने मैदान में पहुँचते ही घड़ी को रोशनी दिखा दी। वह एक शेड के नीचे खड़ी थी, जहाँ हैलोजन की रोशनी आ रही थी। उसने देखा, घड़ी चार्ज होने लगी थी। पर उसकी गति मंद थी।

कुछ ही देर में आफ़ताब की बैखाखियों की खट-खट आवाज़ उसके कान में पड़ी। उसने घूमते हुए आफ़ताब को आवाज़ लगाई, "जल्दी आओ बेटा वरना हमें देर हो जाएगी। घड़ी दस प्रतिशत चार्ज हो चुकी है। जल्दी आओ और मेरा हाथ पकड़ो!"

मिस्बा की आवाज़ सुनकर आफ़ताब ने अपनी गति बढ़ा दी। उसकी बैसाखी की खट-खट बढ़ने लगी थी। उसका हर कदम तेजी से आगे बढ़ रहा था।

वह जल्दबाजी में लड़खड़ा सकता था, गिर सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसने सधे और नियंत्रित कदम बढ़ाएँ। वह मिस्बा के पास पहुँच गया था। उसने अपना हाथ मिस्बा के हाथ में दे दिया था।

घड़ी पूरी तरह चार्ज नहीं हुई थी, लेकिन वे वहाँ से निकल सकते थे। समय की झटका तरंगों से बचने का यही एक मात्र तरीका था। उन्होंने कुछ कपड़े और आफ़ताब के लिए स्टिक ले ली थी, एहतियात के तौर पर।

अब बस मिस्बा घड़ी का बटन दबाने ही वाली थी कि भविष्य में उनका समय पूरा हो गया।

मिस्बा ने महसूस किया कि जिस हाथ ने उसे थामा था, वह कुछ बड़ा और भारी हो गया है। उसने देखा समय की झटका तरंगे आफ़ताब को बारह साल से सत्रह साल का बना रही थीं। सेकेंड के कुछ ही अंशों में ये घट चुका था।

आफ़ताब की लम्बाई बढ़ गई थी। उसकी माँसपेशियाँ फूल गई थीं। उसका चेहरा बदल गया था। उसके गले पर उभार आ गया था। हल्की मूंछे निकल आई थीं। उसकी टी-शर्ट कमर से ऊपर सरक गई थी और कुछ चुस्ती के साथ उसके बदन से चिपक गई थी। यही हाल उसकी जींस का हुआ था। उसके बटन खुल गए थे और वह कमर से लटक रही थी। उसका चेहरा! मिस्बा ने देखा कि उसका चेहरा हुबहू जावेद के चेहरे से मेल खा रहा था।

उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ये सब इतनी जल्दी घट जाएगा। उसकी आँखों से आँसू आ गए। वह आफ़ताब को घूरती रही। फिर उसने अपनी हथेलियों

से आँसू पोंछे।

तभी उसे ख्याल हुआ कि आफ़ताब की उम्र के साथ, उसकी उम्र भी बढ़ चुकी होगी। आफ़ताब कातरता से उसे देख रहा था। मानों उसके सामने वो घट गया था, जो नहीं घटना चाहिए था। उसने भी मिस्बा को बदलते हुए देखा। हालांकि वे बदलाव कुछ ज्यादा नहीं थे पर बढ़ी हुई उम्र के लक्षण मिस्बा में भी दृष्टिगोचर हो रहे थे।

मिस्बा खुद को थोड़ा भारी अनुभव करने लगी थी। उसका सलवार सूट उसके हर अंग पर दबाव डालता-सा महसूस हो रहा था।

वह एक खिड़की के पास गई और कांपते हाथों से उसने खुद की शक्ल काँच में देखी। उसके चेहरे की त्वचा कुछ लटक-सी गई थी। गले के नीचे चर्बी की परत जम गई थी। उसकी आँखें डर, घबराहट और हैरत के मिश्रित अहसास को प्रकट कर रही थी।

"मुझे माफ कर दो, अम्मी! मैं और तेजी से नहीं चल पाया।" आफ़ताब ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा। उसकी बैसाखी उसके हाथ से छूट गई और वह घुटनों के बल गिर गया।

"सम्भालो!" मिस्बा उसे सहारा देने को लपकी।

"मुझे माफ़ कर दो अम्मी!" आफ़ताब ने फिर कहा।

"इसमें तुम्हारी गलती नहीं है!" मिस्बा ने उसे शाँत रहने को कहा, "क्या तुम ठीक हो?" मिस्बा ने उससे पूछा।

"हाँ, मैं ठीक हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि सारी गलती मेरे पैरों की है। अगर ये सही होते तो मैं वक्त पर आपके पास पहुँच जाता।" आफ़ताब मायूस होकर अपने पैरों को देखने लगा।

"इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है और न तुम्हारे पैरों की। जो होना था, हो गया। इसी बहाने हमें पता तो चल गया कि हमारे साथ क्या हो सकता है। अब हमें जल्दी करनी होगी और बहुत सावधान रहना होगा। तुम अपने कपड़े बदल लो और बैसाखी को यहीं छोड़ दो। अब तुम्हें इस स्टिक के सहारे चलना होगा। बैसाखी छोटी पड़ेगी।" मिस्बा ने आफ़ताब को स्टिक थमाते हुए कहा और अपने कंधे से बैग उतारकर कुछ कपड़े निकाल कर आफ़ताब को दे दिए। आफ़ताब कपड़ों को लेकर एक कोने में चला गया।

फिर मिस्बा खुद भी अपने कपड़े बदलने के लिए गलियारे में दूसरी ओर चली गई। जाने से पहले उसने अपनी कलाई घड़ी को निकालकर मैदान में शेड के नीचे

रख दिया जहाँ हैलोजन की रोशनी आ रही थी।

कुछ देर बाद जब वह आफताब के पास पहुँची तो आफ़ताब कपड़े बदल चुका था।

“क्या देख रही हो?” आफ़ताब को मिस्बा का यूँ घुरना कुछ अजीब-सा लगा।

“कुछ नहीं, बस तुम्हारे अब्बा की याद आ गई। शायद तुम उनकी तरह दिख रहे हो।”

“क्या सच में?” आफ़ताब खुद को देखने लगा।

“हाँ, सच में।” मिस्बा ने कहा।

“हम अब्बा से मिल तो सकेंगे न अम्मी!” आफ़ताब ने उम्मीद भरी नजरों से मिस्बा से पूछा।

उसके इस प्रश्न पर मिस्बा गहरी सोच में पड़ गई। वह समय यात्रा के अगले पड़ाव के विषय में कुछ नहीं जानती थी क्योंकि यात्रा का अगला पड़ाव घड़ी की ऊर्जा पर निर्भर था। अगर घड़ी पूरी तरह से चार्ज रखी गई और समय की धारा ने उनका साथ दिया तो वे डेढ़ सौ साल या दो सौ साल आगे जा सकते थे और अगर उनके पड़ाव के बीच कहीं बारिश जैसी विपरीत परिस्थितियाँ पैदा न हुईं तो उन्हें उस बिंदु तक पहुँचने में ज्यादा वक़्त नहीं लगने वाला था जहाँ डॉ॰ रामावल्ली उन्हें भेजना चाहता था।

कुछ ही देर बाद वे दर्शक दीर्घा में बैठे हुए थे। उसी शेड के नीचे जहाँ घड़ी रखी हुई थी। वे घड़ी के चार्ज होने की प्रतीक्षा करने लगे। तभी उसे स्टेडियम के गार्ड दौड़ते हुए नज़र आए। वे चोर-चोर चिल्लाते हुए सीटियाँ बजा रहे थे। मिस्बा उन्हें देख घबरा गई। वह नहीं चाहती थी कि गार्ड्स की नज़र उन पर पड़े और वे किसी मुसीबत में पड़ जाएं।

“हमें अब चलना चाहिए!” मिस्बा ने घड़ी कलाई में पहन ली। फिर उसने बैग उठाया। आफ़ताब ने भी अपनी स्टिक उठा ली और उसका हाथ थाम लिया।

मिस्बा ने घड़ी का बटन दबाया। वे वानखेड़े स्टेडियम से गायब होकर समय सुरंग में प्रवेश कर चुके थे।

€ ¥ Ω £ §

-समय ही सृष्टि है।

(18)

वालंटियर लाकर दो

सन् 2010, जैसलमेर, राजस्थान

"भविष्य में जाना हमें बूढ़ा कर देता है!"

एक बार फिर डॉ० रामावल्ली सहस्त्रबाहु को समझा रहा था। वो भिन्न-भिन्न तरीके से सहस्त्रबाहु को समय यात्रा की जटिलता के बारे में बता रहा था। वे दोनों रेस्टोरेंट में दोपहर का खाने के बाद डॉ० रामावल्ली के बंगले पर थे। बार-बार एक ही बात को अलग-अलग तरह से बताने पर भी सहस्त्रबाहु को समय यात्रा की पेचीदगी समझने में कठिनाई हो रही थी।

सहस्त्रबाहु को समय यात्रा के विषय में और जानना था या किसी विशेष मकसद के लिए टाइम मशीन वापस चाहता था! बात क्या थी डॉक्टर जानता था, लेकिन फिर भी सहस्त्रबाहु के सामने अनजान बना रहा। वह उसे उतना ही बताता था जितना सहस्त्रबाहु उससे सवाल करता था।

"क्या आप मुझे शुरू से समझा सकते हैं? शायद तब मैं आपके अर्थों का ठीक से मतलब समझ पाऊँगा!" सहस्त्रबाहु ने अपनी अज्ञानता जाहिर करते हुए डॉ० रामावल्ली से कहा।

"ये कोई सिद्धांत नहीं है, सहस्त्रबाहु। यह प्रायोगिक रूप से सिद्ध है। देखो! ऐसा है कि हमारे हिंदू शास्त्रों और पुराणों में इसका जिक्र है। ये बात अलग है कि वो बस में कहानियों के रूप में है जिस कारण उसे केवल वही व्यक्ति समझ पाएगा जो उन्हें समझने की दिशा में कदम बढ़ाएगा।"

"जैसे?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"जैसे अलग-अलग जगह पर समय अलग-अलग तरह से चलता है। इसको समझाने के लिए मैं तुम्हें पुराणों की एक कथा सुनाता हूँ।

एक बार एक राजा अपनी बेटी को लेकर ब्रह्मलोक पहुँचा। ब्रह्मलोक तो समझते हो न?" डॉ० रामावल्ली ने पूछा।

"बिलकुल, मैंने दूरदर्शन पर कई धार्मिक कार्यक्रम देखे हैं और बचपन में कुछ कथाएँ भी सुनी हैं।" सहस्त्रबाहु ने उत्तर दिया।

"ठीक है! मतलब तुम ज्यादा नहीं समझते।" डॉ० रामावल्ली सहस्त्रबाहु के अज्ञान को समझ गया। उसने अपनी बात जारी रखते हुए आगे कहा, "तो

एक बार एक राजा अपनी बेटी को लेकर ब्रह्मलोक पहुँचा। वह एक अच्छे लड़के से अपनी बेटी की शादी करना चाहता था। उसने कई सारे वरों का चुनाव किया था। पर वह चाहता था कि ब्रह्मा जी स्वयं उसकी पुत्री के लिए एक वर चुनकर उसे बता दें।

मगर जब वो अपनी बेटी के साथ ब्रह्मलोक पहुँचा तो उस समय ब्रह्मा जी किसी काम में व्यस्त थे। इसलिए उस राजा को कुछ देर इंतजार करना पड़ा। पृथ्वी के हिसाब से करीब बीस मिनट। फिर ब्रह्मा जी अपना काम पूरा कर उनके पास आए और राजा से उसके आने का कारण पूछा।

राजा ने ब्रह्मा जी को अपने आने का कारण बता दिया। इस पर ब्रह्मा जी ने राजा से कहा, 'हे राजन! जिन वरों का चुनाव तुमने किया है, वे तो अब पृथ्वी पर जीवित ही नहीं है।' ब्रह्मा जी की इस बात पर राजा हैरान हुआ।

उसने पूछा, 'ऐसा क्यों कहते है, परम पिता?' तब ब्रह्मा जी ने उसे समझाते हुए कहा, 'हे राजन! जितनी देर तुम यहाँ ब्रह्मलोक में रुके हो उतनी देर में पृथ्वी पर एक सौ चालीस से अधिक युग बीत चुके हैं। जिन वरों का तुमने चुनाव किया था, वे मर चुके हैं। और न केवल वे, उनकी कई पीढ़ियाँ भी समाप्त हो चुकी हैं। इसलिए अच्छा होगा कि अब तुम वापस जाओ और कोई अन्य योग्य वर ढूँढो।

यह कहानी अल्बर्ट आइंस्टीन की थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी है सहस्त्रबाहु! समय अलग-अलग जगह अलग-अलग तरह से काम करता है। अगर हम बहुत तेज चल रहे हों तो हमारे आस-पास की चीजें धीरे हो जाती हैं। हमारी लम्बाई भी छोटी हो जाती है।

मैंने समय को आइंस्टीन से आगे जाकर समझा है। समय में यात्रा करने से व्यक्ति बूढ़ा हो सकता है। लेकिन ये सिर्फ भविष्य में यात्रा करने से होता है। भूतकाल में हमारे पास समय ही समय होता है।"

"मैं कहानी को सुनकर बहुत हैरान हूँ। मैं एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ हूँ। मेरे पिता संस्कृत के विद्वान थे लेकिन उन्होंने कभी भी इस कहानी के बारे में नहीं बताया।" सहस्त्रबाहु बोला।

"जो व्यक्ति विज्ञान का जानकार है, वही इन कथाओं का रहस्य समझ सकता है। इसके लिए संस्कृत का ज्ञान बहुत ज़रूरी है। मैंने अपनी पढ़ाई के दौरान संस्कृत का भी अध्ययन किया था। ऐसी कहानियाँ कई धर्म ग्रंथों में भरी पड़ी हैं। मुझे जापान की एक कथा और याद आती है।" डॉ० रामावल्ली ने कहा।

"तो प्लीज मुझे सुनाओ?"

"क्यों नहीं? जापानी कहानी के अनुसार, एक लड़का जो किसी गाँव में रहता था, पास के जंगलों में लकड़ियाँ काटने जाता था। एक बार उसकी कुल्हाड़ी एक तालाब में गिर गयी, जो उसी जंगल में था। वह अपनी कुल्हाड़ी लेने तालाब में उतरा। वह पानी के भीतर गया और तल में से अपनी कुल्हाड़ी लेकर बाहर आया। फिर वो लकड़ियाँ काटकर अपने गाँव लौटने लगा। जब वो पगडण्डी पर था तभी उसे ख्याल हुआ कि ये वो जंगल नहीं है जिसमें वो पहले लकड़ी काट रहा था। वो उसे कोई और जगह लग रही थी। पर वहाँ कुछ पहाड़ियाँ और निशान ऐसे थे जिन्हें देखकर उसे लग रहा था कि वो सही जगह है। वह थोड़ा और चलने लगा। आगे जाकर उसे अपना गाँव नज़र आ गया। पर वो बहुत बदला-बदला सा लग रहा था। वहाँ कच्चे-पक्के घर, सड़क, लोग, सभी कुछ नया लग रहा था। उसे कोई पहचान नहीं पाया। लेकिन कुछ देर बाद एक बुजुर्ग ने उसे पहचान लिया। वो बुजुर्ग और कोई नहीं उसका पंद्रह साल का पोता था, जो उसके सामने अस्सी साल के बूढ़े के रुप में बैठा था।"

"ऐसा कैसे हुआ?" सहस्त्रबाहु ने चकित होते हुए पूछा।

"दरअसल जिस तालाब में उसकी कुल्हाड़ी गिरी थी, वो समय यात्रा का एक सेतु था जो भूत, भविष्य और वर्तमान को जोड़ता था। हमारी दुनिया में ऐसे बहुत से सेतु हैं। बस हमें उनके बारें में ज्ञान नहीं है। कभी-कभी हम गलती से उसमें पहुँच जाते हैं।"

"कहानियाँ बड़ी अजीब हैं!" सहस्त्रबाहु के मुख से निकला।

"मैं मानता हूँ, लेकिन यह सब हमें समय के अलग-अलग अनुभव और अलग-अलग आयाम के बारे में बताती हैं। बताओ, ब्रह्मा जी के कितने मुख होते हैं?" डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु से प्रश्न किया।

"तीन!" सहस्त्रबाहु ने तुरंत जवाब दिया।

"गलत! ब्रह्मा जी के चार मुख होते हैं। अब मुझे समझ आया कि तुम्हें मेरी बातें समझने में कठिनाई क्यों हो रही है। तुम्हें विज्ञान विषय के बारे में जानकारी जरूर है, लेकिन वो नाकाफी है। खैर! जाने दो। मैं तुम्हें फिर से समझाने की कोशिश करता हूँ।" डॉ० रामावल्ली उत्साहित होकर सहस्त्रबाहु को फिर से समझाने लगे लगा, "ब्रह्मा जी के चार मुख होते हैं। जो चार आयामों को दर्शाते हैं। इन्हें गणित में एक्स-एक्सिस, वाय-एक्सिस, जेड-एक्सिस और टाइम-एक्सिस कहा जाता है। ब्रह्मा जी के चारों मुख नब्बे डिग्री के कोण पर स्थित हैं। ठीक वैसे ही जैसे आधुनिक गणित में रेखाओं के माध्यम दर्शाया जाता

है। कुछ इस तरह!" कहते हुए डॉ॰ रामावल्ली ने कागज-पेन पर उठा लिया और रेखाएँ खींचते हुए बताने लगा, "यह ब्रह्मा जी के तीन मुख हैं। इनके ठीक पीछे की तरफ एक और मुख है- इस तरह। यही समय है, सहस्त्रबाहु। यह एकदम से दिखता नहीं है। पर वास्तव में इसी चौथे मुख से ब्रह्मांड की रचना हुई है। अन्य तीनों आयाम इसी चौथे आयाम का विस्तार हैं। दूसरे शब्दों में, समय ही ब्रह्मांड की उत्पत्ति का कारण है। समय ही सृष्टि है। उसे ही काल कहा गया है। कई बार इसे महाकाल बताया गया गया है क्योंकि ये सब तरफ है!" डॉक्टर के चेहरे पर ज्ञान का सूरज दीप्त हो रहा था।

"समय ही सृष्टि है!" सहस्त्रबाहु ने आश्चर्य में पड़ते हुए उसकी बात को दोहराया।

"हाँ! और इसी सृष्टि का पालन कर रहे हैं..."

डॉ॰ रामावल्ली के कहने से पहले ही सहस्त्रबाहु बोल उठा।

"भगवान विष्णु!"

"एकदम सही! सृष्टि के पालन कर्ता विष्णु हैं और विष्णु की नाभि से ही तो ब्रह्माजी निकले हैं। फिर ब्रह्मांड का चौथा आयाम समय, सृष्टि का कारण कैसे हुआ? क्या सोच सकते हो?"

"पता नहीं!"

"दरअसल चौथा आयाम यहीं से निकला है। विष्णु की नाभि से ही समय की सृष्टि हुई है। लेकिन विष्णु जिन्हें भूत, भविष्य और वर्तमान का संपूर्ण ज्ञान है, वह क्षीरसागर में रहते हुए सृष्टि का संचालन कर रहे हैं। क्षीरसागर एक अथाह और अनंत सागर है जिसकी तरंगे उत्पत्ति का कारण हैं। सृष्टि के पल-पल का विस्तार ही यह सागर है। सब कुछ इसमें है। लेकिन दिक्कत यह है कि समय निरंतर प्रवाहित हो रहा है। वे तरंगे लगातार उठ रही हैं। समय इन्हीं तरंगों पर सवार होकर सारा कार्यक्रम चला रहा है। रचना, पालन और विनाश। इसलिए जब कोई भी उन तरंगों के विपरीत जाएगा तो उसे अपनी अतिरिक्त ऊर्जा को खर्च करना होगा। यही कारण है कि..."

डॉ॰ रामावल्ली आगे कहता कि सहस्त्रबाहु उसकी बात पूरी करते हुए बोला, "यही कारण है कि भविष्य में हम बूढ़े हो जाते हैं।"

"अब तुम कुछ-कुछ समझ रहे हो!" डॉ॰ रामावल्ली उत्साहित होकर बोला।

"लेकिन फिर अतीत में जाने वाला व्यक्ति बूढ़ा क्यों नहीं होता?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

“क्योंकि वह पहले ही हो चुका है। वह तरंग पहले ही निकल चुकी है। उसमें जाने के लिए हमें अतिरिक्त ऊर्जा खर्च नहीं करनी पड़ती है। उल्टा वो समय तरंग समय यात्री का हित और सहयोग करती है। जिस कारण तुम एक लम्बे समय तक भूतकाल में रह सकते हो।” डॉ० रामावल्ली ने अपनी बात खत्म की।

“मुझे तो लगा था कि समय यात्रा को समझने के लिए बहुत कठिन गणितीय समीकरणों से गुजरना होगा। पर यह तो बहुत आसान लगता है!”

“इतना आसान भी नहीं है। यह बेहद जटिल और उलझाने वाला है। क्वांटम मैकेनिक्स, थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी और रामानुजन की फील्ड थ्योरी, जिनका इस्तेमाल ब्लैक होल को समझने के लिए किया जाता है। इसके अलावा ग्रेविटेशनल वेव मैकेनिक्स सबको साथ में जोड़ना और उपयोग करना कोई खेल नहीं है, और ना ही किसी को कहानी सुनाने की तरह है। उसे यथार्थ के धरातल पर उतारना बहुत बड़ी चुनौती है और इसी चुनौती को मैंने पूरा किया है।”

डॉक्टर ने आगे कहा, “लगातार कई साल तक दिन-रात काम करने के बाद मैं द रियल टाइम मशीन बनाने में सफल हुआ पर तब भी मैं वह नहीं कर पाया जो मैं करना चाहता था।” डॉ० रामावल्ली किसी गहरी सोच में डूब गया था। मानों वह कुछ याद कर रहा था।

“क्या नहीं कर पाए आप?” सहस्त्रबाहु चकित भाव से उसे देखने लगा।

लेकिन डॉ० रामावल्ली अपनी सोच में ही डूबा रहा। उसने सहस्त्रबाहु को कोई जवाब नहीं दिया।

“आप क्या नहीं कर पाए डॉक्टर?” सहस्त्रबाहु ने फिर पूछा।

“उसे बताने का अभी समय नहीं आया है सहस्त्रबाहु! और तुम मुझे आप मत कहो। मुझे यह पसंद नहीं है।”

“ठीक है, डॉक्टर!” सहस्त्रबाहु सोच में डूब गया, “अच्छा अब यह बताइए कि आप मुझसे क्या चाहते थे? सॉरी! तुम मुझसे क्या चाहते थे?”

“यह सही सवाल पूछा तुमने! मैं तुमसे क्या चाहता था? मैं तुमसे क्या चाहता हूँ?” डॉ० रामावल्ली ने अपने वाक्यों को दोहराते हुए कहा, “मैं तुमसे यह चाहता हूँ कि तुम मुझे कुछ वालंटियर लाकर दो। ऐसे वालंटियर जिन्हें मैं गुप्त रूप से समय यात्रा पर भेज सकूँ! अब यह मत पूछना कि मैं उन लोगों को समय यात्रा पर भेज कर क्या करवाना चाहता हूँ। समय आने पर मैं तुम्हें यह भी बता दूँगा। पर अभी तुम्हें अपना वादा याद करते हुए, मुझे हाँ कहना होगा। तुम्हें मेरा साथ देना होगा।”

"तुम्हें कितने वालंटियर चाहिए होंगे?" सहस्त्रबाहु ने पूछा।

"जितने ला सको, उतना अच्छा होगा। मगर फिलहाल आधा दर्जन लोगों पर प्रयोग शुरु किया जा सकता है।" डॉ० रामावल्ली ने कहा।

"तुम्हें नहीं लगता है, तुम्हें अपने प्रयोग के लिए किसी और व्यक्ति को अपना पार्टनर बनाना चाहिए था! भला मैं एक पत्रकार, तुम्हें वालंटियर कैसे दे सकता हूँ? तुम पहली ही मुलाकात में मुझे खसके हुए लगे थे!"

"और इसी खसके हुए आदमी से दोबारा मिलने के लिए तुम पिछले चार साल से शहर दर शहर भटक रहे थे, नहीं क्या?" डॉ० रामावल्ली जानता था कि सहस्त्रबाहु यह प्रश्न जरुर पूछेगा, इसलिए वो जवाब देने के लिए भी तैयार था, "भला एक पत्रकार का और वैज्ञानिक का क्या मिलन हो सकता है? दोनों के कार्य और कार्य क्षेत्र अलग है। एक पूरब है, तो दूसरा पश्चिम। लेकिन तब भी मैंने तुम्हें चुना है। वो भी किसी विशेष कारण से। जानते हो वो कारण क्या है?"

"कौन सा कारण?"

"तुम वो महत्वाकांक्षी और तरक्कीपसंद व्यक्ति हो जो किसी भी हद तक जा सकता है। तुममें एक ललक है, सहस्त्रबाहु! तीव्र इच्छाशक्ति है सत्य को जानने की। इसी मजबूत इच्छाशक्ति के कारण मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा।। मेरा प्रयोग, मेरे जीवन और मेरे मरण का प्रश्न है। इसके लिए मुझे तुम्हारे जैसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता है।

ऐसा नहीं है कि मैंने तुमसे पहले किसी और से संपर्क नहीं किया। मैंने बहुत से अपने और गैर लोगों को जाँचने-परखने के लिए अपने राज़ 'द रियल टाइम मशीन' के बारे में बताना चाहा। कुछ इसके बारे में जानते भी थे, लेकिन यकीन मानो मुझे उनसे निराशा हुई। वे लोग किसी न किसी स्वार्थ के कारण मुझसे जुड़ना चाहते थे। फिर मुझे समझ आ गया कि स्वार्थ तो होगा ही, लेकिन तब भी वो सत्य को जानने की ललक, वो इच्छाशक्ति उनमें नहीं थी। कुछ थे, लेकिन मैंने उन्हें खो दिया। मुझे तुम पर भरोसा होता है सहस्त्रबाहु।

फिर मैंने तुम्हारा भविष्य देख लिया है।। मैं यह जान चुका हूँ, इसलिए मत सोचो कि तुम ही क्यों तुम विशेष हो मेरे लिए?" डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु की आँखों में देखते हुए उसे विश्वास दिला दिया कि उसने सिर्फ और सिर्फ एक विशेष कारण से ही नहीं बल्कि विश्वास के कारण भी उसे चुना है।

पर सहस्त्रबाहु के मन में कुछ शंकाएँ थी, "अगर तुम मेरा भविष्य देख चुके हो तो यह भी सच होना चाहिए कि तुमने खुद का भी भविष्य देखा होगा और जहाँ

तक मैं सोच पा रहा हूँ, तुम जो भी करना चाहते हो; तुम्हारा प्रयोग या वो जो भी है, तो तुम्हें भविष्य के लिए परिणाम वही देगा जो तय है।

"मतलब?" डॉ० रामावल्ली ने पूछा।

"मतलब तुम जानते होगे कि तुम अपने प्रयोग में सफल होगे या नहीं। यह तुम पहले से ही देख चुके होगे, है न?" सहस्त्रबाहु डॉक्टर की बात गहराई से सोचने लगा था।

"तुम यही सोच रहे हो, लेकिन..."

"एक मिनट। कहीं तुम..." डॉ० रामावल्ली कुछ कहता कि सहस्त्रबाहु ने सोचते हुए उसकी बात काट दी। जैसे उसके दिमाग में कुछ कौंध गया था, "कहीं तुम कुछ बदलना तो नहीं चाहते? मुझे ऐसा आभास क्यों हो रहा है कि तुम भविष्य में कुछ बदलना चाहते हो या शायद अतीत में। तुम खुद से वो काम नहीं कर पा रहे हो क्योंकि अगर तुम वहाँ गए और ज्यादा समय तक वहाँ रह गए तो तुम बूढ़े हो जाओगे या तुम्हें डर है कि तुम समय यात्रा से वापस न आ सको। इसलिए तुम वो काम किसी और से करवाना चाहते हो!" सहस्त्रबाहु उत्तेजित होते हुए बोला। जैसे अपनी दिमागी कसरत के जरिए उसे पता लगा गया था कि डॉ० रामावल्ली क्या चाहता था।

"अगर तुम इतना समझ ही गए हो तो क्या मैं मान लूँ कि तुम मेरे प्रयोग में कुछ योगदान करोगे?" डॉ० रामावल्ली ने आगे पूछा, "कहो, लाकर दोगे मुझे कुछ ऐसे आदमी जो समय यात्रा में जाने के लिए कुछ भी कर सकते हों? तुम एक पत्रकार होने के साथ पारखी भी हो। तुम पता लगा लोगे कि मेरे काम के लिए कौन-से व्यक्ति उपयुक्त होंगे। मैं उन्हें मनमाफिक पैसे दूँगा। जितना वे चाहेंगे उतना। मेरे पास इतना पैसा है, जितना जितना बिल गेट्स के पास भी पास नहीं होगा।"

"बिल गेट्स से ज्यादा पैसा!" सहस्त्रबाहु चौंक गया।

"आश्चर्य मत करो! तुम जानते हो मेरे पास इतना पैसा कैसे आया होगा।"

"द रियल टाइम मशीन!" सहस्त्रबाहु के मुख से निकला।

"ठीक समझे!" डॉ० रामावल्ली ने कहा।

"मैं तुम्हें वालंटियर लाकर दूँगा। मगर वे लोग जो तुम्हारे प्रयोग के लिए वॉलिंटियर बनेंगे, अगर भविष्य या अतीत से वापस ही ना आए तो? उनके परिवार, उनके बाल-बच्चों का क्या होगा?"

"इसलिए तो मैंने कहा, हम उन्हें मनमाफिक पैसा देंगे! बस हमारा काम गुप्त

रहना चाहिए।"

"मुझे अनुमान हो गया है। मगर पैसा ही सब कुछ नहीं होता डॉक्टर!" सहस्त्रबाहु चिंता में पड़ गया।

"उन वालंटियर की चिंता मत करो! उनकी वापसी जरुर होगी। तुम भी तो भविष्य से वापस आए थे। है न?"

सहस्त्रबाहु ने डॉ० रामावल्ली का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। भले ही डॉक्टर ने प्रयोग के विषय में सारी बातें अपने तक ही रखी थीं पर सहस्त्रबाहु को विश्वास था कि एक दिन डॉक्टर उसे प्रयोग के विषय सब बता देगा। इस तरह एक वैज्ञानिक और एक खोजी पत्रकार की जोड़ी काम पर लग गई।

सहस्त्रबाहु दिन भर अनजान लोगों से मेलजोल बढ़ाने लगा था। वह रेल यात्राएँ करता था, बसों में बैठता था, प्रदर्शनों में हिस्सा लेता था, हड़तालों के बारे में सुनता था, लोगों के साथ नारे लगाता था, कभी-कभी मदिरों-मस्जिदों-गुरुद्वाओं में भी जाता था, अकेले और गुमसुम बैठे व्यक्तियों के पास बैठकर बातें करता था, उनके वर्तमान और भविष्य के बारे में जानने की कोशिश में लगा रहता था। फिर वो लिस्ट बनाकर घंटों सिगरेट फूँकते हुए उनका मूल्यांकन करता। वह झुग्गी झोपड़ियों में जाता था, साधु संतों से मिलता था... और भी बहुत कुछ था, जो वह करता था।

उसने समय यात्रियों की खोज शुरू कर दी थी। तीन से छ:महीने में उसने कुछ व्यक्तियों के नाम तय कर लिए थे। फिर एक निश्चित दिन एक-एक करके सभी को डॉ० रामावल्ली से मिलवा दिया। डॉ० रामावल्ली ने सभी चयनित व्यक्तियों का अलग से साक्षात्कार लिया। फिर उनमें से केवल एक या दो नामों को समय यात्रा के लिए तय किया। उसने उन व्यक्तियों को चेक काटकर दिए।

सहस्त्रबाहु ने देखा कि साक्षात्कार के दौरान चुने गए व्यक्ति, एक निश्चित तारीख को उसकी लैब से भेज दिए गए। उन्हें एक टनल जैसी दिखने वाली मशीन से भेजा गया था पर उनके हाथ में वैसी ही घड़ी बाँधी गयी थी, जैसी डॉ० रामावल्ली के पास थी।

सहस्त्रबाहु को वालंटियर का टनल से भेजा जाना समझ नहीं आया। डॉ० रामावल्ली अकेले ही टनल को चलाता था। इस बीच सहस्त्रबाहु दूर खड़ा उसे देखता रहता था। टाइम टनल ने उसे हैरत में डाल दिया था। वह गंभीरता से डॉ० रामावल्ली के प्रयोग के विषय में सोचने लगा था।

-समय एक भ्रम है।

(19)

कुम्भ और एक संन्यासी

1772, महरौली, दिल्ली।

पीर की पत्नी अहमदा और जावेद की पर-पर-परदादी, दो मेहमानों की आवभगत में लगी हुई थी। वे मेहमान, जो उसके लिए 'सुलतान तारिक शेख' यानी पीर के दूर के भक्त थे और जो एक लम्बा समय तय कर अतीत में पहुँचे थे और जिन्हें पीर ने पहचान लिया था। उनकी मुलाकात जमाली-कमाली मस्जिद में हुई थी, जहाँ से पीर मेहमानों को अपने घर ले आया था।

"मैंने तो सुना था, पीर केवल अल्लाह का नाम लेते हैं। फिर आपने शादी कैसे कर ली?" इरफान ने बातों-बातों में पीर से पूछा।

"हा हा हा..." पीर से हँसने लगा, "मैंने कभी खुद को पीर नहीं कहा। ये तो लोग हैं और उनकी सोच! वे मुझे राह दिखाने वाला समझते हैं, इसलिए मुझे पीर कहते हैं। पीर का एक मतलब राह दिखाने वाला भी होता है।"

"लेकिन शादी? अल्लाह आप दोनों की जोड़ी सलामत रखे! पर कहाँ आप, जिसके दोनों हाथ नहीं है और कहाँ आपनी बेइंतहा खूबसूरत बीवी, ये जोड़ी कैसे बैठ गई?" इरफान ने फिर पूछा।

"हाँ, अहमदा बेइंतहा खूबसूरत है! उससे मेरी शादी का किस्सा भी उससे कम खूबसूरत नहीं है। वो दिन तो बहुत ही गजब का था।" पीर याद करते हुए बोला।

"फिर सुनाइए न?" जावेद ने पीर से गुजारिश की।

"क्यों नहीं!" पीर के यह कहते ही अहमदा दूसरे कमरे में चली गई। पीर ने मुस्कुराते हुए उसे देखा और जावेद से कहा, "इसे वो किस्सा नहीं पसंद है।

खैर! मैं उस दिन की बात बताता हूँ। एक समय मैं एक सूफी दरवेश के पास उसका चेला हुआ करता था। उसके पास सैकड़ों लोग आते थे। तरह-तरह के लोग: आमिर, गरीब, व्यापारी, किसान, भिखमंगे, बीमार, सभी तरह के। वे अपनी परेशानियों का इलाज पाने की उम्मीद से उसके पास आते थे। जब मुझे उसके बारे में पता चला तो मैं भी उनके पास पहुँचा गया।

उस वक्त मैं अच्छा खासा बांका और रोबीला जवान था। बिलकुल तुम्हारी तरह, बस मेरे हाथ नहीं थे। जिस कारण लडकियाँ मुझे घास नहीं डालती थीं।

मेरी शादी में मेरे हाथ ही एक रोड़ा थे। अम्मी-अब्बा कहीं बात भी चलाते तो काम नहीं बन रहा था। मेरे मन में जबरदस्त इच्छा थी कि मेरी जिंदगी में कोई हमसफ़र, हमनवा आए। यहीं वजह थी कि जब अम्मी-अब्बा से कुछ न हुआ तो मैं उस सूफी दरवेश के पास जाकर हाजिरी देने लगा। क्या कर सकता था? एक अपंग लौंडे को कोई अपनी बेटी का हाथ क्यों देता। फिर मेरे अब्बा के भी हाथ नहीं थे। विरासत में हमें यह ख़ास अमानत मिली थी। कोई हाँ भी करता, तो डर जाता था।

जब मैं उस सूफी फ़क़ीर के पास पहुँचा तो मैंने उससे अपने मन की बात कह दी। इस पर वो खूब हँसा और बोला कि तुझे मेरे पास रुकना होगा और मेरे साथ अल्लाह की इबादत करना होगी। मैंने सोचा, ये कौन-सी बड़ी बात है? मैं तैयार हो गया। पर जानता नहीं था कि उसने बिना मेरे जाने मुझे अपना चेला बना लिया था। मैं उसके साथ दो साल तक रहा। उसकी हर बात मानी, उसका हर कहा पूरा किया, उसके हर हुक्म की तामिल की। इस उम्मीद में कि कभी वो मेरी इच्छा पूरी करने का रास्ता बताएगा। पर उसके साथ रहते हुए हुआ ये कि मेरी शादी करने की इच्छा ख़त्म होने लगी। उसके साथ रहते हुए, मैं भूल ही गया कि मैं उसके पास क्यों गया था। हाँ, पहले-पहल , हर औरत पर, जो उसके पास आती थी, मेरी नज़र जाती थी, लेकिन बाद में मेरी ये आदत भी चली गई। मैं उसके साथ नाचता-गाता और शहर दर शहर घूमता रहता था।

फिर एक दिन ये हुआ कि अहमदा की माँ उसके पास आई। मैं, मेरे दरवेश सूफी पीर के पास ही बैठा था। अहमदा की माँ ने घुटनों के बल बैठकर मेरे दरवेश के आगे सजदा किया और अपनी दरखास्त लगाते हुए बोली, “मेरी बेटी के लिए कोई लड़का दिखाओ बाबा!”

“लड़का! लड़का क्यों?” मेरे दरवेश ने उससे पूछा।

“मेरी लड़की बड़ी हो गई बाबा! यूँ तो बहुत रिश्ते आ रहे हैं, लेकिन मैं चाहती हूँ कि मेरी बेटी का पति अनोखा हो।”

अहमदा की माँ के मन में बलवती इच्छा थी कि उसका दामाद औरों के दामाद से बहुत अलग हो, खूब दौलतमंद और रुतबे वाला। उसके पास तमाम सुख-सुविधाएँ हों, खूब सोना-चाँदी जवाहरात वाला हो। मगर उसे क्या पता था कि सोने-चाँदी के टुकड़ों से भी बड़ी दौलत अल्लाह का नाम लेने वालों के पास होती है, जो दिखाई तो नहीं देती, पर उसके आगे सब फीके हो जाते है। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरे दरवेश क्या कहने वाले हैं।

“मेरी नज़र में एक है!” उन्होंने अहमदा की माँ से कहा, लेकिन...”

"लेकिन क्या बाबा?" उसने पूछा।

"लेकिन अभी तो वह गरीब है। मगर मैं देख सकता हूँ कि आने वाले वक़्त में उसके पास इतनी दौलत होगी कि दिल्ली का बादशाह भी उसके आगे अपनी झोली फैलाए खड़ा होगा!"

मेरे दरवेश ने जब यह कहा तो इसे सुनकर अहमदा की माँ हैरत से उन्हें देखने लगी। उसके चेहरे की रंगत ही बदल गयी थी। उसकी आँखें चमक उठी, पर उसे क्या पता था कि मेरे दरवेश किसके बारे में बात कर रहे थे। मुझे भी अहसास नहीं था। मैं भी हैरानी से उन्हें देख रहा था। मैं सोचने लगा कि कौन वो किस्मत वाला होगा जिसके आगे बादशाह भी हाथ फैलाए खड़ा होगा! मैं सोचता रहा... सोचता रहा... देर तक।

मेरे दरवेश आँखें बंद करके अल्लाह का नाम लेने लगे थे। अहमदा की माँ उन्हें देख सोच रही थी कि वे कब आँखें खोलें और वह उनसे पूछे कि कौन है वो लड़का।

हम दोनों इंतजार करने लगे कि अब या तब दरवेश उस लड़के का नाम बताए।

हम दोनों को बड़ी बेसब्री थी। बेताबी ने हमारे दिल में ज़ज्बातों का ज्वार उमड़ा दिया था।

"वह कौन है, बाबा? मेहरबानी करके जल्दी बताओ!" अहमदा की माँ बोल पड़ी। मैंने भी पूछा।

"बता दूँगा... बता दूँगा...सब्र रख! पहले ये बता कि तू उसे अपना दामाद बनाने से इंकार तो नहीं करेगी?" मेरे दरवेश ने उससे पूछा।

"नहीं बाबा, बिल्कुल नहीं! भला मैं क्यों मना करूँगी? फिर आपकी बात मैं कैसे टाल सकती हूँ।"

"हा हा हा..." मेरे दरवेश हँसते हुए कहने लगे, "मैंने तुझे हुकुम कहाँ दिया रुबीना! अभी तो हम बात ही कर रहे हैं।"

उन्हें अहमदा की माँ की बेताबी पर हँसी आ रही थी।

मुझे अभी भी हँसी आ जाती है क्योंकि अब मैं जान गया था की मेरे दरवेश उसे अच्छा उल्लू बनाने वाले थे। साथ ही वे उसके मन में पैदा हुए धन-दौलत के लालच को भी खत्म करने वाले थे।

वो मेरे दरवेश के पैरों में झुक गई और बोली, "आप हुक्म कीजिए बाबा!"

"अच्छा! हुक्म चाहती है?"

"हाँ, बाबा!" वो बोली।

"सोच ले। मैं जिसका नाम लूंगा, उससे तू अपनी बेटी की शादी करेगी?" दरवेश ने पूछा।

"मैंने सोच लिया बाबा!"

"वादा करती है!" मेरे दरवेश ने उसके ऊपर चंवर झाड़ते हुए जुबान देने को कहा।

"मैं वादा करती हूँ!" उसने वादा करते हुए कहा।

"फिर सोच ले! अगर अपनी जुबान से मुकरेगी तो तेरा सब कुछ बर्बाद हो जाएगा और तेरी रुह जहन्नुम में सताई जाएगी।" मेरे दरवेश ने उसे आगाह किया।

"मैं नहीं मुकरुंगी बाबा। आप जिससे भी बोलोगे उसे ही मैं अपनी बेटी का हाथ दूंगी। पर अगर उसने मेरी बेटी का हाथ लेने से इंकार कर दिया तो?" रुबीना के मन में शक पैदा हो गई।

"वो इंकार नहीं करेगा!" अब मेरे दरवेश ने मेरी ओर देखते हुए रुबीना से कहा।

उनके एक नज़र देखने से मैं समझ गया कि वो मेरे बारे में बात कर रहे थे। मैंने घबराहट और डर के मारे उनके पैर पकड़ लिए। उन्होंने गर्दन हिलाकर मुझे अपनी बात मानने के लिए हुक्मनामा सुना दिया।"

इससे पहले की पीर आगे कहता इरफ़ान ने बात को समझते हुए कहा, "फिर जब रुबीना ने आपके दरवेश के मुँह से आपका नाम सुना तो वह पत्थर सी जम गई!" इरफ़ान ने पीर की बात पूरी की। वह आगे की कल्पना खुद ही कर गया। पीर की शादी का किस्सा उसके दिल को छू गया। न सिर्फ उसे बल्कि जावेद के चेहरे पर भी मुस्कराहट की लहर दौड़ गई। वो अपनी पर-पर-परदादी को देखने लगा जो दरवाज़े की चौखट में से झाँककर देख रही थी।

"यही हुआ था। उसे चक्कर आने लगा था। लेकिन वह कर ही क्या सकती थी? उसे अहमदा का हाथ मेरे हाथ में रखना ही पड़ा।" इस तरह पीर ने अहमदा और उसकी शादी का किस्सा पूरा किया।

"अगर आपके दरवेश इतने पहुँचे हुए थे तो आपने उनसे पूछा क्यों नहीं कि आपकी पीढ़ियों में ये बीमारी, ये अपंगता कैसे आई?" जावेद ने पीर से पूछा।

"पूछा था, मेरे बेटे! मैंने उससे पूछा था। जब मैं पहली बार उसके पास गया था, तब मेरा पहला प्रश्न ही उससे यह था।" पीर किसी पुरानी बात को याद करते

सोच में डूब गया।

"फिर क्या कहा था उन्होंने?" जावेद ने फिर पूछा। उसे महसूस हुआ कि शायद अब पीर खानदान को लगी बद्दुआ या लानत के बारे में बताने ही वाला था।

"इंतज़ार करो!" पीर ने यादों में गोता लगाते हुए कहा।

"क्या?" जावेद को समझ नहीं आया।

"यही कहा था उसने कि इंतज़ार करो!"

"क्या?" अब इरफ़ान भी हैरान हुआ।

"हाँ, पर उसने आगे भी कहा था। कहा था कि..." पीर को आँखों के सामने एक दृश्य चलता सा दिखने लगा। वह संजीदा होकर बताने लगा, "एक दिन कोई और तुम्हें बताएगा।"

"कोई और क्यों? वे तो पहुँचे हुए थे सूफी फ़क़ीर थे!" इरफान की उत्सुकता बढ़ गई थी।

"हाँ, वे बहुत पहुँचे हुए थे, लेकिन उन्होंने मुझे नहीं बताया। मेरे बार-बार पूछने पर भी टाल जाते थे। फिर अहमदा के साथ मेरी शादी करवा कर वे चल बसे!"

"क्या? वे गुजर गए!" इरफान के साथ जावेद भी चौक गया।

"हाँ!" पीर ने कहा।

"मतलब आपका सवाल, सवाल ही रह गया?" अब जावेद ने पीर से पूछा।

"नहीं। मेरे दरवेश से मैं नहीं जान पाया। लेकिन अपनी अंतिम घड़ियों में वे मेरे सवाल को भूले नहीं थे। वे जाने से पहले एक इशारा कर गए थे। इशारा कि आने वाले कुंभ के मेले में अवंतिका (उज्जैन) जाना। वहाँ एक साधु तुम्हें मिल जाएगा। वही मुझे बताएगा कि मेरी पीढ़ियों में ये अपंगता की बीमारी क्यों और कैसे दाखिल हुई। उसने सही कहा था।"

"मतलब आप कुम्भ के मेले में गए थे!" जावेद में पूछा।

"हाँ, मुझे वो साधु वहीं मिला। आज से सौलह बरस पहले, 1756 ईस्वी में अवंतिका में कुम्भ का मेला लगा था। मैं दो महीने पहले ही यहाँ से अवंतिका के लिए निकल पड़ा था। नागा और दूसरे साधु-सन्यासी को देखने की ललक पैदा हो गई थी। सच में उन लाखों इंसानों का सैलाब देखने लायक होता है। झुण्ड के झुण्ड में हज़ारों की संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ पवित्र नदी में डुबकी लगाती है। क्या ही वो अहसास होता है, उनको देखने का।

मेरे दरवेश के जाने के बाद लोग मुझे उनका उतराधिकारी मानने लगे थे। वे मुझे पीर बाबा कहने लगे थे। उन्होंने ही मेरे कहने पर अवंतिका जाने का बंदोबस्त किया था। वो बड़ा ही अनोखा सफर था। जिस दिन मैं अवंतिका पहुँचा उसके तीन दिन बाद कुंभ का पहला स्नान शुरू होने वाला था। लाखों की संख्या में नागाओं को जय भोले, जय शिव शंभू, ओम नमः शिवाय मंत्र का जाप करते देख मेरा दिल अलग ही दुनिया में चला गया था।

मैंने कभी इतने नजदीक से उतने लोग नहीं देखे थे। मेरे दिल को तो वे लोग किसी दूसरी दुनिया से आए आदमी लग रहे थे। उनकी बड़ी-बड़ी जटाएँ, भारी भरकम त्रिशूल, मोटे-मोटे रुद्राक्ष की मालाएँ ऐसा भाव पैदा कर रहे थे मानो साक्षात शिव के भूत और गण चले आ रहे हो। कई तांत्रिकों को मैंने देखा, काले वस्त्रों में वे नर मुंडो की माला पहने बेख़ौफ़ घूम रहे थे। मैं उन्हें देख दंग रह गया था। मेरे दरवेश ने मुझे उनसे दूर रहने को कहा था। क्योंकि जिन्न-जिन्नात को काबू में रखना उनका रास्ता नहीं था और न वो मेरे लिए उस राह को छोड़ गए थे। मैंने तांत्रिकों को दूर से ही दुआ सलाम किया। पर मेरे साथ आए मुस्लिम लोग उस माहौल को देख भाग खड़े हुए। उन्हें वे नागा बड़े डराने वाले लग रहे थे।

उनके जाने पर मैं अकेला रहा गया। मैं कहाँ जाता, मुझे तो मेरे दरवेश के बताए साधु से मिलना था। हालांकि मेरे मन में एक बार ख्याल जरूर आया था कि मैं भी वहाँ से चला जाऊँ, लेकिन तभी मैंने देखा मेरे दरवेश उन्ही नागाओं के बीच में से चले आ रहे थे। मेरी आँखों को यकीन नहीं हुआ।

क्या मैं सपना देख रहा था या मुझे कोई वहम हुआ था?

मैं सोचने लगा।

पर वो मेरा सपना नहीं था और न ही वहम। मेरे दरवेश सच में मेरे पास आ रहे थे। बस उनका रूप नागाओं की तरह था। उनके आस-पास हज़ारों नागाओं की टोली थी, जो महाकाल का नाम लेकर आसमान गूँजा रही थी।

जब उनकी टोली मुझसे दो हाथ की दूरी पर से गुजरी तो मैंने देखा मेरे दरवेश मेरे पास आ चुके थे और मुझसे कह रहे थे, आँखें फाड़कर क्या देख रहा है? हैरान मत हो! सब शिव है! ओम नमः शिवाय!”

तभी मैंने देखा कि मेरे दरवेश का चेहरा बदल गया । अब वे वहाँ नहीं थे। वहाँ एक नागा अपना त्रिशूल थामे खड़ा था। मैं समझ गया कि मेरे दरवेश मुझे कुंभ मेले में क्यों लाए थे। वे मुझे बताना चाहते थे, सब कुछ शिवमय है। मेरे दरवेश मुझे आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश समझाने के लिए वहाँ लाए थे।

फिर मैं सात दिन तक लगातार नर्मदा के तट पर सिद्धों और संन्यासियों व भक्तों और श्रद्धालुओं को देखता रहा। उनके अखाड़ों और आश्रमों में घूमता रहा। वे बड़े चमत्कारी लोग थे, जो हिंदुस्तान के कोने-कोने से आए थे।

एक साधु को मैंने शेरों और बाघों के साथ देखा, एक तांत्रिक हजार नर मुंडो की माला पहने हुआ सोने के सिंहासन पर बैठा था, एक कच्चा माँस खाता था, एक साधू को मैंने देखा तो वो रेत में से काजू-बादाम जैसे पच्च मेवे निकाल कर अपने भक्तों में बाँट रहा था। एक साधु धूप में से किसी भी प्रकार की खुशबू पैदा कर सकता था, एक मृत लोगों से बात करवा देता था।

जितने दिन मैं वहाँ आ रहा, मेरा आश्चर्य बढ़ता ही गया। कई साधुओं ने मेरे माथे पर भस्म, चंदन और कुमकुम के तिलक लगा दिए। मैं बता नहीं सकता, वहाँ मुझे कैसे-कैसे अनुभव हुए। लेकिन मुझे उससे काम ही क्या था? मैं कुछ चमत्कार सीखने नहीं गया था। मैं तो एक सवाल का जवाब जानने के लिए वहाँ गया था। सवाल- मेरी पीढ़ियों में ये रोग क्यों लगा था?

दस दिन बीत गए थे, लेकिन मैं उस सन्यासी को, उस साधु को नहीं खोज सका था जिससे मिलने के लिए मेरे दरवेश ने हुक्म दिया था। मुझे वे चिन्ह नज़र नहीं पड़ रहे थे। फिर मेरा मन हुआ कि मैं घर लौट जाऊँ क्योंकि ऐसा लग रहा था कि ज्यादा रुका तो कहीं खुद भी साधु, संन्यासी न हो जाऊँ। तुम हैरान हो गए, है न?" पीर दोनों समय यात्रिओं से पूछते हुए कहने लगा, "हैरान होना भी चाहिए! ऐसा तुम्हारे साथ भी हो सकता है। बशर्ते तुमने ऐसे माहौल को करीब से देखा हो। हिन्दू योगी, साधु-संन्यासी और नागा योग विद्याओं में उस्ताद होते है। दुनिया में इनका कोई सानी नहीं है। इनके पास ज्ञान का अथाह भंडार होता है। वे इतना कुछ जानते थे, जिसका एक-दो प्रतिशत जान लेने पर पूरे संसार को मुट्ठी में किया जा सकता हैं। मेरे दरवेश भी वो सब नहीं जानते थे। शायद इसलिए भी उन्होंने मुझे मेरे सवाल का जवाब लेने के लिए कुम्भ भेजा था।"

"अच्छा आगे क्या हुआ था? ये बातें तो आप बाद में भी बता सकते हैं।" जावेद ने पीर को रोकते हुए पूछा।

"आगे ये हुआ मेरे बेटे कि बारहवें दिन मुझे एक साधु नज़र आया। वह वैसा ही दिखता था जैसा मेरे दरवेशने बताया था। वो सबसे अलग-थलग था। न उसका कोई अखाड़ा था, न आश्रम। उसके लिए नीला आसमान और हरी धरती ही सब कुछ था और था तो बेरंग पानी, वो पवित्र सलिला नर्मदा, जिसके तट पर बैठा वो ध्यान में लीन था। मैं उसकी तरफ खींचा चला गया।

"क्या मैं आपको ही ढूँढ रहा हूँ?" मैंने उसके पास जाकर पूछा पर उसकी आँखें बंद थी। उसने मेरी आवाज़ नहीं सुनी।

फिर मैंने अपना प्रश्न दोबारा किया, "माफ कीजिएगा! आपको तकलीफ नहीं देना चाहता, लेकिन क्या आप वही है जिसे मैं ढूँढ रहा हूँ?"

उससे मेरा यह पूछना ही बचकाना था। लेकिन कोई और तरीका भी नहीं था। अजीबो-गरीब नागाओं और साधुओं के संग रहकर मैं भी अजीब तरह से पेश आने लगा था। मैंने उससे तीन बार पूछा। लेकिन वह शायद समाधि में था।

फिर मैं उसके आँखें खोलने का इंतजार करने लगा। पूरे तीन दिन तक वह अपनी शिला से उठा ही नहीं। वह वाकई सबसे अलग था। मेरा सब्र खो जाता, लेकिन जाने उसमें क्या था कि मैं खुद भी वहाँ हिल नहीं पाया। बस उसके समाधि से जागने का इंतज़ार करने लगा और उसे किसी तरह आँखें खोल देने के लिए तरह-तरह के जतन करने लगा। कभी मिट्टी के बर्तन में उसके लिए पानी मंगवाता, कभी कंद मूल या फल का बंदोबस्त करता। मगर कुछ न हुआ।

चौथे दिन उसने आँखें खोली। उस वक्त मैं उसके पैरों से थोड़ी दूर थककर सोया हुआ था। उसने मुझे देखा। उसे मुझ पर दया आ गई। शायद उसे मैं किसी बच्चे की तरह लग रहा था। उसने मेरे सिर पर हाथ फैरा। मेरी आँख खुल गई। उसे देखते ही मेरे शरीर की सारी थकान जाती रही, जो उसकी आँखें खोलने की इंतजार में सिर से पाँव तक चढ़ चुकी थी। मैंने उठकर उसे सलाम किया।

"क्या चाहते हो?" उसने मुझसे पूछा।

"एक सवाल का जवाब!" मैंने उससे कहा।

"अवश्य पूछो!" उसने मुस्कुराते, लेकिन संजीदा होकर कहा।

"मेरी पीढ़ियों में एक अजीब सी बीमारी है। आप देख सकते हैं, मेरे दोनों हाथ नहीं हैं। मेरे अब्बा भी ऐसे ही थे और उनके अब्बा यानी मेरे दादा भी ऐसे ही थे, उनके पैर नहीं थे। मेरे परदादा भी दोनों हाथ या शायद एक हाथ, एक पैर के बिना ही पैदा हुए थे। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरे खानदान में ये रोग क्यों और कैसे लगा। मेरे दरवेश, मेरे रहनुमा, मेरे उस्ताद ने मुसझे कहा था कि मुझे इस सवाल का जवाब यहाँ मिलेगा, कुंभ के मेले में, एक सन्यासी के द्वारा। क्या आप मेरे सवाल का जवाब जानते हैं?"

मैंने उसे पूछा। इस पर वो मुझे देर तक घुरता रहा। फिर वो बोला, "शायद हाँ!" उसने कहा और मुझे फिर से घूरने लगा।

"फिर मेहरबानी करके मुझे बताइए!" मैंने उससे गुहार लगाई।

इस पर उसने अपनी आँखें बंद कर ली। मुझे लगा कि अब वो फिर से चौथे दिन आँख खोलेगा। लेकिन उसने देर नहीं की। उसने कुछ पलों में ही अपनी आँखें खोली और बताया... ।" पीर एकदम से मौन हो गया।

जावेद और इरफान हैरानी से देख रहे थे। पीर उन्हें चौंका रहा था।

"उन्होंने क्या बताया था, बाबा?" इरफ़ान ने आँखें फैलाते हुए पूछा।

"उन्होंने बताया... ।" पीर चुप हो गया।

"क्या बताया?" जावेद भी हैरत से उसे देख रहा था।।

"उसने बताया कि....तुम्हारे खानदान को श्राप मिला हुआ है।"

पीर ने दुखी होते हुए कहा।

"श्राप!" इरफ़ान और जावेद एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

"हाँ, श्राप! एक ब्राह्मणी का श्राप! उसकी बद्दुआ, उसकी लानतें! उसी के कारण हमारे खानदान में ये लाइलाज रोग लगा।"

पीर ने एक बार फिर दोनों समय यात्रियों को चौंका दिया था।

€ ¥ Ω £ §

-समय में लूप होल्स होते है।

(20)

आपकी घड़ी खराब है?

फिर एक बार घड़ी की ऊर्जा खत्म हो रही थी, जिस कारण समय सुरंग में यात्रा कर रहे 'मिस्बा और आफ़ताब' के रुक जाने का समय आ पहुँचा था।

गार्ड्स के आ जाने पर मिस्बा को स्टेडियम से जाना पड़ा था। मगर तब तक घड़ी अस्सी प्रतिशत चार्ज हो चुकी थी। जब मिस्बा ने घड़ी देखी तो उसका डायल 2150 दर्शा रहा था। स्थान बेंगलुरु था।

उन्होंने एक लम्बा समय पार कर लिया था।

दोनों माँ-बेटे एक सुनसान स्थान पर प्रकट हुए थे। प्रकट होते ही उन्हें उल्टी हुई, हमेशा की तरह। वस्तु स्थिति से सामान्य होने के लिए दोनों ने बैग में से पानी की बोतल निकाली व कुल्ला किया और थोड़ा पानी पिया। फिर मिस्बा ने आसपास देखा।

वे एक कंस्ट्रक्शन साइट पर थे, जहाँ मशीनें पुरानी इमारतों को गिरा रही थीं।

हालाँकि थोड़े फासले पर, करीब पाँच सौ-सात सौ मीटर की दूरी पर नयी इमारत का काम भी चल रहा था। वहाँ पीली, नारंगी और हरे रंग के हेलमेट पहने श्रमिक दिखाई पड़ थे। अत्याधुनिक मशीनों और ट्रकों के निर्माण सामग्री उठाने, पटकने व रखने का मध्यम शोर मिस्बा और आफ़ताब के कानों में पड़ रहा था।

"हम करीब सौ साल आगे आ गए हैं!" मिस्बा ने घड़ी को सेट करते हुए आफ़ताब से कहा।

"सच्ची!" आफ़ताब ने डायल पर नज़र डालते हुए ख़ुशी प्रकट की।

"हाँ और अब मौसम भी साफ है!" मिस्बा ने घड़ी के डायल को सूरज की तरफ कर दिया।

अब वो इमारतों के मलबे को देखने लगी। कार्यस्थल से धूल और सीमेंट की मिश्रित हवा बहती हुई आ रही थी, "बड़ी घटिया जगह है!" धूल व सीमेंट के कण मिस्बा की आँख और मुँह में समा रहे थे।

आफ़ताब ने हवा के झोंके से खुद को बचाने के लिए पीठ फेर ली और खाँसने लगा, "हमें यहाँ से थोड़ी दूर चलना होगा!" उसने खाँसते हुए कहा।

"मुझे भी यही लगता है। चलो, यहाँ से चलें!" मिस्बा मुँह पर हाथ रखते हुए आगे बढ़ने लगी, "शायद वह बाहर जाने का रास्ता है!" उसने अपने बाएँ एक सड़क देखी जो निर्माणधीन स्थल से दूर जा रही थी।

आफ़ताब अपनी हॉकी स्टिक का सहारा लेकर उसके साथ चलने लगा। मिस्बा ने चुनरी से खुद का मुँह ढक लिया और सड़क की तरफ मुड़ गयी।

कुछ ही देर में वे निर्माणधीन स्थल से बाहर आ गए। अब वे एक व्यस्त सड़क पर थे, जहाँ सौर ऊर्जा और बैटरी से चलने वाली चालकरहित कारें उनके सामने दौड़ रही थीं। कुछ कारें उड़ते हुए भी नज़र आ रही थीं। कई स्थानों पर रोबोट्स घूम रहे थे। सड़क के आस-पास दोनों ओर हरे-भरे वृक्ष कतार में लगे थे। एक चालकरहित ट्रक उन्हें पानी देता हुआ आगे बढ़ रहा रहा था। साथ ही वो सड़क भी साफ करता जा रहा था। सड़क के दूसरी और कई दुकानें और उनके पीछे इमारतें नज़र आ रही थीं। वहाँ भिन्न-भिन्न स्टोर भी थे जो बेहद ही साफ-सुथरे और व्यवस्थित लग रहे थे।

"वाह! कितनी सुंदर जगह है, हैं न अम्मी?" आफ़ताब के मुँह से निकल पड़ा।

"हाँ, बहुत सुंदर जगह है! चलो थोड़ा आगे चलते हुए शहर ही घूमा जाए। तब तक ये घड़ी भी चार्ज हो जाएगी!" मिस्बा ने घड़ी के डायल को घुमाते हुए एक कोण दे दिया, जिससे चलते हुए सूरज की रोशनी सीधे घड़ी के डायल पर

आ रही थी।

“लेकिन आपने तो कहा था, हम आगे कहीं नहीं जाएँगे?” आफ़ताब ने पूछा।

“हम ज्यादा दूर नहीं जाएँगे! शायद यहाँ कोई खतरा नहीं है! हम घूम सकते हैं!”

फिर वे सन् 2150 का बेंगलुरु शहर देखने निकल पड़े। बड़ी-बड़ी चमचमाती इमारतें उनके सामने थीं। वहाँ सब कुछ व्यवस्थित था। हाँ, ये ज़रूर था कि निर्माण के कार्य जगह-जगह चल रहे थे। एक और बात थी कि शहर में अधिक भीड़ नहीं थी। ऐसा लगता था, जैसे आबादी कुछ घट सी गयी थी।

वे वाहनों, दुकानों और इमारतों को देखते हुए किसी स्टोर में प्रवेश कर गए, जहाँ एक रोबो ने उनका स्वागत किया। स्टोर के अन्दर भी रोबोट साफ-सफाई करते नज़र आए। एक-दो रोबोट अपने बुजुर्ग मालिकों के लिए सामान खरीदते दिख पड़े।

मिस्बा को बदलाव देखकर हैरत हुई। वो साल 2010 में किसी शादी में इस शहर आयी थी। उसने कहीं पढ़ा भी था कि भविष्य की दुनिया में रोबोट्स ज्यादा नज़र आएंगे। पर उसे नहीं पता था कि वो ये सब इतनी जल्दी देखेगी। डॉ० रामावल्ली के कारण वो इस सुनहरे भविष्य की साक्षी बनी थी।

मिस्बा को ये देखकर भी बड़ी हैरत हुई की वहाँ चलने फिरने वाले लोगों के पास मोबाइल नहीं थे। वह मोबाइल जिनसे कि वो और आफ़ताब दिनभर चिपके हुए रहते थे। भविष्य में मोबाइल की जगह हथेलियों पर लगी इलेक्ट्रॉनिक चिप ने और घड़ी जैसे दिखने वाले गैजेट्स ने ले ली थी, जिनसे हवा में ही स्क्रीन बन जाती थी। लोग अपनी हथेलियों को छूते हुए ही मोबाइल ऑन कर बात कर रहे थे। कुछ के पास तो वो भी नहीं था। वे केवल बोलकर चीजों को अपने ढंग से संचालित कर पा रहे थे।

मिस्बा ने एक और चीज़ पर गौर किया। उसे अचानक से महसूस हुआ कि आस-पास चल फिर रहे लोग उसे और आफ़ताब को घूर रहे थे। पर क्यों? यह मिस्बा को समझ नहीं आया। शायद उनके कपडे अलग थे या कुछ और बात थी?

“सब लोग हमें देख कर मुँह क्यों बना रहे हैं?” मिस्बा ने अपनी चुनरी चेहरे से हटाते हुए आफ़ताब से पूछा।

“शायद हमारें कपड़ों की वजह से?”

“नहीं। कपड़े नहीं! कुछ और बात है!”

“क्या पता? मुझे नहीं मालूम! ”आफ़ताब ने अपने कंधे उचका दिए।

वे दोनों आगे चलते रहे। फिर किसी स्टोर के पास रुककर सामान देखने लगे। तभी किसी बुजुर्ग महिला ने मिस्बा के पास आकर उससे पूछा, “माफ़ करना! लेकिन क्या मैं पूछ सकती हूँ, तुम कहाँ से आई हो?”

“मैं...” मिस्बा झिझक गयी, “मैं... एम.पी से हूँ!” उसने कुछ रुककर कहा।

“एम.पी से!” महिला बोली, “और ये लड़का तुम्हारा है?” महिला से आफ़ताब को देखते हुए पूछा।

“जी! ये मेरा बेटा है। इसका नाम आफ़ताब है।” मिस्बा ने आफ़ताब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

“हेलो आंटी!” आफ़ताब ने महिला का अभिवादन किया।

“हेलो बेटा! लगता नहीं कि ये तुम्हारा बेटा है। मुझे लगा ये तुम्हारा भाई होगा! खैर! अच्छा, मैं कह रही थी, बुरा मत मानना लेकिन ऐसा क्यों लगता है कि तुम गरीब हो? मेरा मतलब क्या तुम शरणार्थी शिविर से आई हो?” महिला ने मिस्बा से पूछा।

“क्या आप हमारे कपड़ों के कारण ऐसा कह रही हैं?” मिस्बा अपने कपड़ों की ओर संकेत करते हुए बोली।

“हाँ, वो तो है ही। लेकिन दूसरी वजह तुम्हारा बेटा है! मैं तुम्हारे बेटे को देख रही थी। ये स्टिक के सहारे क्यों चल रहा है? देखो मुझसे झूठ मत बोलना, पर इसके पैरों को किसी अच्छे से अस्पताल में दिखाना चाहिए। ये फैलने वाला संक्रमण तो नहीं है न?”

“नहीं! आफ़ताब के पैर बचपन से ऐसे हैं!” मिस्बा ने डरते हुए कहा। उसे नहीं मालूम था कि कोरोना के बाद और भी बीमारियाँ भविष्य में आई थीं जिनने मनुष्यों को लील लिया था।

“बहुत अच्छी बात है! लेकिन तब भी इसे किसी डॉक्टर को दिखाओ। आजकल तो कटा हुआ पैर भी लग जाता है। बायो-रोबोटिक्स में ज़बरदस्त तरक्की आ गयी है। मैं खुद इस चीज़ की विशेषज्ञ हूँ! अपना नंबर बताओ मैं तुम्हें अपना पता भेजती हूँ!”

“मेरे पास फ़ोन नहीं है!” मिस्बा ने सकुचाते हुए कहा।

“क्या? लेकिन ये कैसे हो सकता है?” महिला को हैरानी हुई।

“अच्छा! मैं चलती हूँ। ज़रुरी काम से कहीं जाना है। देर हो जाएगी।” और मिस्बा ने महिला के आगे कुछ कहने से पहले आफ़ताब का हाथ थाम लिया और उसे साथ लेकर स्टोर से तेज़ी से निकल गयी।

दरअसल वो घबरा गई थी। महिला उसे दरवाज़े से घूर रही थी।

“बड़ी अजीब महिला थी। कितने सवाल पूछ रही थी।” मिस्बा ने बड़बड़ाते हुए आफ़ताब से कहा।

“मुझे लगता है, वो कोई सामन बेचने वाली थी।” आफ़ताब बोला।

“सही कह रहे हो! इसलिए हमें जल्द से जल्द यहाँ से चलना होगा!” मिस्बा और तेज़ चलने लगी।

“लेकिन वो मेरे पैरों के लिए क्या कह रही थी?” आफ़ताब ने मिस्बा से पूछा।

“शायद वो तुम्हारा पैर ठीक करने को बोल बोल रही थी!”

“फिर तो हमें उसके पास चलना चाहिए!” आफ़ताब ने उत्साहित होते हुए कहा।

“हम नहीं चल सकते!”

“क्यों?” आफ़ताब ने मिस्बा का हाथ छोड़ते हुए पूछा।

“क्योंकि अभी हमारे पास वक़्त नहीं है और न ही पैसे?”

“आपके पास बैग में कुछ रूपए और जेवर हैं। हम उनसे काम ले सकते है!” आफ़ताब झट से बोला।

“हम भविष्य में है आफ़ताब! यहाँ बहुत कुछ बदल चुका है। शायद तुमने गौर नहीं किया पर यहाँ सभी स्टोर और शॉप में कैशलेस ट्रांसएक्शन चल रहा था। फिर हम यहाँ ज्यादा देर नहीं रुक सकते, तुम जानते हो क्यों?”

“मतलब...”

“मतलब हमारी उम्र बढ़ सकती है, बेटा! चलो हम वहीं चले जहाँ से आए थे।” मिस्बा ने आफ़ताब का हाथ पकड़ लिया और उसे साथ लेकर निर्माणधीन स्थल की तरफ बढ़ने लगी। लेकिन कुछ कदम चलने पर उसे किसी गड़बड़ी का एहसास हुआ।

दरअसल, वे घूमते हुए कुछ दूर आ गए थे और कई मोड़ लेने के बाद अब मिस्बा को याद ही नहीं आया कि वो किधर से आयी थी।

दोनों रास्ता भूल गए थे।

“वो साईट कहाँ है?”

“कौन सी?” आफ़ताब ने पूछा।

“जहाँ पर हम आए थे!”

“शायद उधर या शायद उधर!” आफ़ताब सोचते हुए संकेत करने लगा। सब तरफ कुछ-न-कुछ निर्माण चल रहा था।

“नहीं। हम वहाँ से नहीं आए थे! वहाँ कोई पुल नहीं था। यहाँ तो तालाब भी है! मेरे साथ चलो, मैं देखती हूँ!” मिस्बा आफ़ताब को सहारा देते हुए तेजी से चलने लगी।

वो बार-बार घड़ी भी देख रही थी कि वह कितना चार्ज हुई है। उसने कुछ मोड़ लिए, तभी घड़ी में एक बीप का वाइब्रेशन होने लगा। जिसने मिस्बा को चौंका दिया।

मिस्बा ने झट से रुककर घड़ी में देखा। घड़ी के डायल में एक लाल रंग की बत्ती कलाई में कम्पन करते हुए जल रही थी।

“जब कोई समय यात्री किसी विशेष क्षेत्र में तुम्हारे आस-पास होगा तो ये टाइम फील्ड वाला डायल एक लाल बत्ती के साथ जलता हुआ तुम्हें उसकी सूचना देगा। फिर तुम्हें घड़ी में बताए जा रहे निर्देशित स्थान पर पहुँचना होगा।”

मिस्बा याद करने लगी कि घड़ी देते समय डॉ॰ रामावल्ली ने उसे क्या-क्या कहा था?”

“क्या यह सच है? कहीं घड़ी बिगड़ तो नहीं गई?” मिस्बा खुद से कहने लगी।

उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसे कोई समय यात्री मिलने वाला था।

“कहीं यह जावेद तो नहीं?” वह सोचने लगी।

मिस्बा ने डरते हुए डायल के एक बटन को दबाया। ये दूसरा बटन था, जिससे डायल पर एक नाम उभर आया।

‘मैत्रेय!’

“यह कौन होगा?” वह निराश होकर सोचने लगी।

तभी वाइब्रेशन की गति कम होने लगी, जिस कारण उसने फिर से आफ़ताब का हाथ पकड़ लिया और उसे जल्दी से चलने को कहने लगे।

“हमें घड़ी द्वारा दिखायी गयी दिशा में बढ़ना होगा। तुम थोड़ा जल्दी चलो, वरना हम इसे खो देंगे!”

“मैं चल तो रहा हूँ!” आफ़ताब स्टिक पर अपनी पकड़ बढ़ाते हुए बोला।

फिर दोनों, जितना तेज़ चल सकते थे, चले। डायल द्वारा निर्देशित स्थान का संकेत समझते हुए वे कई सड़कों को पार कर गए। उनकी हड़बड़ाहट को देखकर आसपास के पैदल चलने वालों, वाहन चालकों आदि को हैरानी हो रही थी। उनकी बदहवासी से खिंचकर कुछ मददगार लोग आगे आए। उन्होंने मिस्बा को मदद की पेशकश की। दोनों माँ-बेटे ने मदद लेने से इनकार नहीं कर सके। वे

जल्द से जल्द घड़ी द्वारा दर्शायी जा रही दिशा में बढ़ना चाहते थे।

करीब दस किलोमीटर के लम्बे और अनदेखे सफर के बाद, वे एक मददगार की उड़नखटोला कार से उतरे। उनके सामने सन् 2150 का एक अत्याधुनिक मॉल था जिसका संचालन पूरी तरह से रोबोटिक्स प्रणाली पर आधारित था। वे मॉल की ओर बढ़ने लगे। यहाँ भी लोग उन्हें अजीब नजरों से घूर रहे थे। पर मिस्बा ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया। गेट पर चेकिंग के दौरान मिस्बा के बैग से पुराने नोट निकले जो साल 2150 में चलन में नहीं थे। उसके बैग से जेवर भी निकले जिनके डिजाइन पुराने, लेकिन आकर्षक थे।

"आप बिलकुल सही जगह आयी हैं! इस कलेक्शन के आपको बहुत अच्छे पैसे मिलेंगे। छठे माले पर एंटीक चीजों की शानदार दुकान है! शहर में अपने जैसी एकलोती!" रोबोट द्वारा जाँच के बाद एक गार्ड ने मिस्बा के बैग के सामान को देखते हुए कहा।

"क्या सच में?" मिस्बा को हैरानी हुई।

"बिलकुल!"

"शुक्रिया!" मिस्बा ने मुस्कुराते हुए कहा।

"शुक्रिया की कोई ज़रूरत नहीं है! ये मेरा काम है। आपके भाई के लिए मैं व्हीलचेयर मंगवा देता हूँ!" कहते हुए गार्ड ने हथेली को कान पर छुआया और कुछ ही मिनट में एक व्हीलचेयर आ गई।

आफ़ताब ने स्टिक गेट पर जमा करवा दी और व्हीलचेयर पर बैठ गया। व्हीलचेयर अपने आप चल सकती थी, लेकिन तब भी मिस्बा उसे धकियाते हुए आगे बढ़ने लगी। मानों उसे डर था कि कोई हादसा या हँसी उड़ने वाली बात न हो जाए। वह आगे बढती कि तभी गार्ड ने उसे रोकते हुए कहा, "वैसे आप, आपका भाई और आपकी घड़ी बहुत सुन्दर है!"

"शुक्रिया!" मिस्बा ने फिर से गार्ड का शुक्रिया कहा और फुसफुसाते हुए आफ़ताब से बोली, "तुम मेरे भाई हो!"

"हा हा हा!" आफ़ताब हँस पड़ा।

मॉल के अंदर घड़ी यानी द रियल टाइम मशीन कुछ ज्यादा ही कम्पित हो रही थी। मिस्बा व्हीलचेयर को बेवजह धकेलते हुए लिफ्ट के पास पहुँच गई। दरवाज़ा खुलते ही उसने हर माले पर जाने वाले बटन दबा दिए। जिससे उसके साथ के लोग हैरानी में पड़ गए और उसे अजीब नज़रों से घूरने लगे।

अब लिफ्ट जैसे ही किसी माले पर रुकती, मिस्बा अपनी कलाई पर हाथ

रखती या डायल में देखती। ये पुख्ता करने के लिए कि उसे किस माले पर रुकना है। लिफ्ट का दरवाज़ा खुलता, बंद होता और फिर खुलता। इस तरह वह छठे माले पर पहुँचकर लिफ्ट से बाहर निकली क्योंकि घड़ी उसी माले पर निर्देश दे रही थी।

कुछ ही देर में वो दर्जनों स्टोरों को पार करते हुए एक दुकान के सामने रुक गयी। वह वही एंटीक चीजों की दुकान थी जिसके बारे में नीचे गार्ड ने उसे बताया था। दुकान में कई पुरानी चीजें खरीदने और बिक जाने के लिए शेल्फों में सजी हुई थी।

मिस्बा आँखें फैलाते हुए दुकान को देखने लगे। वह हैरत में पड़ गई थी। दुकान में नयी, नायब और बहुमूल्य वस्तुएँ थी। आफ़ताब भी विस्मय से उन अनोखी चीजों को देख रहा था।

दरवाज़े के थोड़ा पास जाते ही वह खुल गया। मिस्बा आफ़ताब को लेकर दुकान में प्रवेश कर गयी थी। अन्दर घुसते ही बायीं ओर काउंटर पर दुकान का मालिक नज़र आया। वो किसी पुरानी वस्तु को परख रहा था।

“आइए आपका स्वागत है!” दुकान के भीतर दाखिल होते ही किसी स्वचालित मशीन ने दोनों का स्वागत किया।

“आपका बैग रेक में रख दीजिए। दुकान में बैग लेकर प्रवेश करना मना है!” मशीन से फिर आवाज आयीं।

आवाज़ से दुकान के मालिक का ध्यान मिस्बा पर गया। उसने अपना ध्यान वस्तु से हटाकर मिस्बा पर केन्द्रित किया।

“अगर आप कुछ बेचने के लिए लायी हैं तो बैग लेकर आ सकती हैं। वरना आपका बैग रेक में सुरक्षित रहेगा। आप आराम से दुकान घूम सकती है!” दुकान के मालिक ने मुस्कुराते हुए दोनों माँ-बेटे से कहा।

इस पर मिस्बा ने एक पल सोचने के बाद बैग रेक में रख दिया।

“आपका स्वागत है!” मिस्बा के काउंटर के पास आते ही मालिक ने दोनों का फिर से स्वागत किया।

“क्या मैं यहाँ चीजों को देख सकती हूँ?” मिस्बा ने मालिक से पूछा।

“क्यों नहीं! आप ही की दुकान है। शौक से घूमिए! बस किसी चीज़ को तब तक हाथ मत लगाइएगा, जब तक आप उसे खरीदना न चाहे। वैसे आपके कपड़े अच्छे हैं! क्या पुराने दौर का फैशन फिर से चलन में आ गया है?” मालिक ने मिस्बा के कपड़ों की तारीफ़ करते हुए कहा, “और ये शर्ट तो बहुत पुरानी है। जहाँ

तक मुझे पता है ये शर्ट करीब सौ साल पहले इंडियन क्रिकेट टीम पहना करती थी। लगता है आप दोनों को भी एंटीक चीजों से बहुत प्यार है?"

"सही कहा आपने!" मिस्बा ने झूठमूठ की मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा।

"क्या आपको किसी रोबो की ज़रूरत होगी? वो आपको चीजों के बारे में बता देगा। वैसे मेरे पास एक आदमी भी है पर इस समय वो कुछ काम कर रहा है।" मालिक ने दूकान की एक पंक्ति की और नज़र डालते हुए कहा।

वहाँ आराम कुर्सी पर एक आदमी बैठा था।

"जी शुक्रिया! ज़रूरत हुई तो आपको बुला लूँगी!" मिस्बा मालिक से बोली।

फिर वो आफ़ताब को लेकर आगे बढ़ने लगी। उसी दौरान दुकान के मालिक की नज़र उसकी घड़ी पर गई।

मालिक उसे देखकर थोड़ा अचंभित हुआ। शायद उसने वह घड़ी पहले भी कहीं देखी थी। जब मिस्बा घड़ी में बताए गए निर्देशित स्थान का पीछा करते हुए किसी पंक्ती में चीजों को देखने का बहाना करते हुए आगे बढ़ रही थी, तब उसी समय दुकान का मालिक काउंटर से बाहर आकर उस पंक्ति में घुस गया जहाँ उसका नौकर आराम कुर्सी पर बैठा किसी पुरानी-सी घड़ी को ठीक कर रहा था। वह एक नाटे कद का व्यक्ति था, जिसे मिस्बा अन्दर घुसते समय नज़रंदाज़ कर गई थी।

"सुनो। तुमसे एक बात पूछना थी!" दुकान मालिक ने घड़ीसाज़ के पास आकर कहा।

"क्या है? दिखता नहीं मैं काम में व्यस्त हूँ!" आराम कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने बिना अपनी नज़र उठाए दुकान मालिक से कहा।

"क्या तुमने अपनी घड़ी एक लड़की को बेची थी?" दुकान मालिक ने उससे पूछा।

"क्यों, क्या हो गया?" घड़ीसाज़ ने मालिक की बात पर कान नहीं दिए।

"हुआ कुछ नहीं है। मैं बस पूछ रहा हूँ! बताओ क्या तुमने घड़ी किसी लड़की को बेची थी?"

"नहीं, वह घड़ी मैंने किसी और को दी। लेकिन तुम क्यों पूछ रहे हो?" अब घड़ीसाज़ ने नज़र उठाकर अपने मालिक को देखा।

"क्योंकि मैंने वैसी घड़ी अभी-अभी देखी है!"

"क्या वाकई!" अब आराम कुर्सी पर बैठा वो नाटा-सा व्यक्ति चौंका,

"कहाँ?" उसने दूकान में देखते हुए मालिक से पूछा।

"एक ग्राहक के हाथ में! वो व्हीलचेयर के साथ आगे की पंक्ति में चीजें देख रही है!" मालिक ने संकेत करते हुए बताया।

"क्या सच कह रहे हो?"

"तुम जाकर खुद देख लों!" मालिक ने उसे हुक्म दिया।

"अच्छा! ठीक है, मैं देखता हूँ!" नाटा व्यक्ति अपनी आराम कुर्सी से उठ गया और अपने मालिक को घूरते हुए आगे की पंक्ति में चला गया।

मिस्बा घड़ी के निर्देश को समझने की कोशिश कर रही थी। डायल पर दिखायी दे रहा बिंदु अपनी जगह पर स्थिर हो गया था।

नाटा व्यक्ति मिस्बा के पास बढ़ने लगा। अपनी ओर एक अनजान व्यक्ति के आने पर मिस्बा सचेत हो गई।। उसने अपना ध्यान घड़ी से हटा लिया और आगे बढ़ने लगी। नाटे व्यक्ति ने उसके बराबर आने के लिए अपने कदम तेज़ कर लिए। उसकी नजर मिस्बा की कलाई पर जम गयी थी और वो बहुत गंभीर बन गया था। मिस्बा को आभास हो गया कि नाटे व्यक्ति के साथ कुछ गड़बड़ है। वह और भी ज्यादा सतर्क और सचेत हो गयी। वह नहीं चाहती थी कि कोई उसे घड़ी के साथ परेशान होते हुए देखे।

"माफ कीजिएगा! अगर आपको मेरी मदद के लिए भेजा है, तो कहना चाहूँगी, आप तकलीफ न करें। हम खुद देख लेंगे।" मिस्बा ने मुड़ते हुए उस नाटे से व्यक्ति से कहा।

"ओह नहीं! आप गलत समझ रही है। मैं आपको कोई चीज नहीं दिखाना चाहता। यहाँ ऐसा कुछ नहीं है जिसके लिए किसी सेल्समैन की जरूरत पड़े। यहाँ हर चीज अपने आप में बहुमूल्य है, बेहद अलग है, एंटीक है! उसे समझने के लिए आपके पास सहज बुद्धि और ज़ज्बात होना चाहिए। जोकि मैं देख सकता हूँ, आपके पास है। आप देखिए, जो भी आपको पसंद आए! हर चीज के पीछे का अपना एक इतिहास है। इन्हें बहुत अलग-अलग जगह से खरीद कर लाया गया है। तीसरे विश्वयुद्ध के बाद इन्हें इकठ्ठा किया गया था।"

"क्या?" मिस्बा हैरान हुई।

"हाँ और अगर आप अपने भाई! माफ़ कीजिएगा ये आपका भाई है, है न?" घड़ीसाज़ ने आफ़ताब को देखते हुए पूछा।

"जी हाँ, जी नहीं!" मिस्बा हड़बड़ा गई।

घड़ीसाज़ को मिस्बा की कशमकश पर हैरानी हुई।

"ये मेरा बेटा है! इसका नाम आफ़ताब है!" मिस्बा ने सँभलते हुए कहा।

"हेलो अंकल!" आफ़ताब ने घड़ीसाज़ का अभिवादन किया।

"हेलो! लगता नहीं है कि ये आपका बेटा है। खैर! अगर आप इसके लिए कुछ ढूँढ रही हैं तो भी यहाँ कुछ मिल जाएगा। वैसे ये मध्यम सी कम्पन की आवाज़ आ रही है, बीच-बीच में। क्या ये आवाज़ आपकी घड़ी से आ रही है?" घड़ीसाज़ ने मिस्बा की कलाई पर देखते हुए पूछा, "मेरे कान ज़रा तेज़ है। मुझे बहुत हल्की आवाज़ें भी आ जाती हैं।" उसने आगे कहा।

"जी, नहीं तो!" मिस्बा इंकार कर गई।

"क्या वो खराब हो गई है? मैं यहाँ ऐसे ही चीजों की मरम्मत करता हूँ! जो पुरानी, लेकिन बहुमूल्य, अनमोल और अनोखी हों!" घड़ीसाज़ ने मिस्बा की बात को नज़रअंदाज करते हुए कहा।

अब मिस्बा ने घड़ी के कम्पन की आवाज़ को दबाने के उद्देश्य से उस पर हाथ रख लिया।

"मुझे लगता है, यह खराब हो गई है!" घड़ीसाज़ ने फिर से अपनी बात दोहरायी।

"नहीं! मेरी घड़ी बिल्कुल ठीक है।"

"अच्छा! फिर ठीक है। लेकिन क्या मैं इसे एक बार देख सकता हूँ? आप बुरा न माने तो कृपया एक बार मुझे घड़ी दिखाएँ।" उसे घुमा-फिराकर बात कहने की आदत नहीं थी! घड़ीसाज़ ने अपना एक हाथ मिस्बा की तरफ बढ़ाया।

"माफ कीजिएगा! लेकिन मैं इसे खोलना नहीं चाहूँगी।" मिस्बा ने कहा।

"कोई बात नहीं, मैं भी आपको इसे खोलकर दिखाने के लिए नहीं कह रहा। सिर्फ ऐसे ही देखना चाहता हूँ। दरअसल मेरे मालिक को लगता है कि मुझे यह घड़ी देखना चाहिए। शायद वो मुझसे ऐसी घड़ी बनवाने की बात सोच रहा है।" घड़ीसाज़ ने दुकानदार की ओर संकेत करते हुए कहा।

वह पंक्ति के कोने में से उधर ही झाँक रहा था। घड़ीसाज़ के देखते ही उसने अपना मुँह दूसरी तरफ घुमा लिया।

घड़ीसाज़ के विनम्र आग्रह करने पर मिस्बा उसे मना नहीं कर सकी। उसे अपना हाथ आगे करना ही पड़ा।

घड़ी के डायल पर लाल बत्ती जलते हुए घड़ी को कम्पित कर रही थी। डायल पर एक नाम भी था- मैत्रेय! साथ ही घड़ी का निर्देश घड़ीसाज़ की ओर था। मिस्बा ये देखकर चौंक गई।

मिस्बा की कलाई पर द रियल टाइम मशीन ने घड़ीसाज़ को भी चौका दिया। उसका एक हाथ अपने पेंट की जेब पर गया। उसने दुकान के मालिक से

“तुम चिंता मत करो, वह घड़ी मैं तुम्हें लाकर दे दूँगा! अच्छा होता उसे तुम तब ही खरीद लेते जब मैं तुम्हारे पास उसे बेचने आया था।”

घड़ीसाज़ अपनी आराम कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

दोनों बात कर रहे थे कि मिस्बा और आफ़ताब दुकान से बाहर निकल गए।

“क्या हुआ? आपको कुछ पसंद नहीं आया?” दुकानदार ने मिस्बा से पूछा।

“पसंद तो आ गया है, लेकिन मुझे एक काम याद आ गया है। फिर इनकी कीमत बहुत ज्यादा है।” मिस्बा ने मुस्कुराते हुए दुकान मालिक से कहा और रैक में से अपना बैग उठा लिया।

“हम मोलभाव कर सकते हैं!” दुकान मालिक ने आग्रह किया।

“आपका शुक्रिया! लेकिन मैं फिर किसी दिन फुर्सत में आऊँगी।”

फिर मिस्बा आफ़ताब की व्हीलचेयर को धकेलते हुए दुकान से बाहर जाने लगी।

उसने एक नज़र घड़ीसाज़ पर डाली। वो उसे देखते हुए सिर हिलाकर अपने जल्द ही आने का संकेत दे रहा था।

€¥Ω£§

-समय स्वयं को व्यक्त करता है।

(21)
पहली मुलाकात

2012, डॉ० रामावल्ली का बंगला।

सहस्त्रबाहु पुरानी घटनाओं को याद कर रहा था। वह अक्सर सोचता था कि आखिर कौन सा प्रयोग है, जिसके लिए डॉक्टर को दर्जनों वालंटियर लग रहे हैं। वह हर हफ्ते किसी न किसी वालंटियर लेकर आता था लेकिन डॉक्टर को ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति चाहिए थे।

आखिर इतने व्यक्तियों की पूर्ति कैसे होती?

उसके साथ काम करते हुए सहस्रबाहु ने अनुमान लगाया था कि डॉ० रामावल्ली वॉलिटियरों को किन्ही भावनाओं के वशीभूत होकर भविष्य में भेज रहा है। पर उन भावनाओं के पीछे छिपे असली उद्देश्य को समझ पाने में उसे कठिनाई हो रही थी। डॉ० रामावाल्ली का व्यवहार अजीब और अप्रत्याशित था।

कुछ भी हो पर वे दो दर्जन से अधिक व्यक्तियों को भविष्य में भेज चुके थे। मैत्रेय जिससे मिस्बा की भेंट हुई थी, उन्हीं में से एक था। लेकिन वो सहस्त्रबाहु द्वारा खोजा गया वालंटियर नहीं था। मैत्रेय डॉ० रामावल्ली का सबसे वफादार साथी था। सच कहें, तो वो उसका घनिष्ठ मित्र था। उसका सच्चा दोस्त जिसने सबसे पहले वालंटियर बनना स्वीकार किया था। क्यों? इसकी वजह हम मैत्रेय के मुख से ही सुनेंगे, पर बाद में। हाँ, अभी इतना ज़रूर बता सकता हूँ कि मैत्रेय को सन् 2005 में भविष्य में भेजा गया था। सहस्त्रबाहु और डॉ० रामावल्ली की प्रथम भेंट से एक साल पहले।

सहस्त्रबाहु ने पहला वालंटियर सन् 2010 के आधा बीत जाने के बाद लाकर दिया था। शुरुआत में उसे बहुत कम लोग मिले। लेकिन 2011 के आते-आते वालंटियर की संख्या दो दर्जन के पार पहुँच गई थी। उसके वालंटियर खोजी अभियान जारी थे।

फिर एक दिन वो ऐसे शहर में पहुँचा, जहाँ जावेद और इरफान से उसकी पहली मुलाक़ात होने वाली थी। जावेद की शादी उसी साल हुई थी। वो 2011 के आखिर दिन थे। वे एक फ़क़ीर, करीम खाँ बंगाली की कुटिया में बैठे थे। एक-दूसरे से सटे हुए। एक-दूसरे से बिलकुल अनजान और बेपरवाह। सहस्त्रबाहु

वहाँ वालंटियर की खोज में आया था। वहाँ और भी लोग थे, जिनमें से ज़्यादातर दुखियारे थे और किसी उम्मीद की चाह में जमावड़ा लगाकर बैठे थे।

जावेद भी उन्हीं दुखियारे लोगों में से एक था, जो अपने दोस्त और सहकर्मी इरफ़ान के साथ वहाँ आया था। बूढ़ा फ़क़ीर 'करीम खाँ' लोगों की समस्या सुनता जा रहा था और साथ ही उसका हल भी बताता जा रहा था। वो कोई झाड़-फूँक या ताबीज़ नहीं बाँट रहा था।

जब जावेद और इरफ़ान की बारी आयी तब वे फ़क़ीर करीम खाँ के पास पहुँचे और अपनी दरखास्त सुनायीं।

"एक उम्मीद की चाह में आपके पास आए हैं बाबा! सुना है, आप नामुमकिन को मुमकिन कर देते हैं। क्या यह सच है?" इरफ़ान ने बात शुरू करते हुए कहा।

"जिसे लोग नामुमकिन कहते हैं, असल में वही मुमकिन होता है। रही उम्मीद की बात, तो उम्मीद के लिए यह दुनिया नहीं है। इसलिए ठीक से बताओ क्यों आए हो मेरे पास बर्खुरदार। अपने आने की असल वजह बताओ ताकि मैं जान सकूं कि किस नामुमकिन को मुमकिन करने का इरादा तुम करके आए हो!" फ़क़ीर ने रहस्यमय शब्दों में अपनी बात कही।

"ये मेरा दोस्त है बाबा!" इरफ़ान ने बताना शुरू किया, "आप देख सकते हैं, ये एक पैर से अपाहिज है।" इरफ़ान ने जावेद की बैसाखी की ओर इशारा किया, "इसके खानदान में एक रोग है। कहते हैं, पीढ़ियों से लगा है। ये जानना चाहता है कि इनके साथ ऐसा क्यों हो रहा है? अल्लाह ताला ने इनके साथ इतनी बेरुखी और बेहिसाबी क्यों की हुई है?"

इरफ़ान की बात सुनकर फकीर ने अपनी आँखें बंद कर लीं। वह कुछ बुदबुदाने लगा। फिर आँखें खोलते हुए उसने कहना शुरू किया, "एक शहर के बाजार से मैं गुजर रहा था। कभी वह शहर मेरा ही था क्योंकि मैं वहाँ पैदा हुआ था। मैं कई शहरों में गया हूँ, कई गाँवों में घुम चुका हूँ पर मेरा शहर मुझे अब भी याद आता है। उसकी एक-एक गली जैसे मेरी साँसों में बसती है।

उस दिन, जब रात का वक़्त था, मैं उसकी गलियों से गुजर रहा था। तुमने देखा होगा, कई शहरों में बाजार शाम ढलने के बाद गुलजार होते हैं। उनकी

रौनक आधी रात बीत जाने के बाद भी बरकरार रहती है। कई रईस, ओहदे वाले काम की थकान के बाद, परिवार के साथ तो कभी दोस्तों के साथ, वहाँ की तफ़री किया करते हैं। बहुत से मध्यमवर्गीय लोग भी, उस बाजार की चमक-दमक में अपनी हैसियत से ज्यादा लुटा आया करते हैं। उसी तरह के एक बाजार से, मैं गुजर रहा था। तब मैं फ़क़ीर नहीं हुआ था।

मेरी शादी को पाँच-छः बरस बीत चुके थे और एक बच्चा भी था। वहाँ मैंने एक अंधी भिखारिन को देखा। मैं उसे पहचानता था। मैंने उसे अपने अंधे पति के साथ कितनी ही बार बैंकों में रुपए जमा कराने और निकालने जाते देखा था। लेकिन उस दिन बाजार में उसे भीख माँगते देख, मैं हैरानी से जड़ हो गया। मैंने उसे देखते हुए अंदाजा लगाया कि जरूर इसका खासिम मर गया होगा और उसके बच्चों ने उसे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर कर दिया होगा।

उस चमक-दमक से भरी रात में जाने क्यों उसे देख मेरा कलेजा मुँह को आ गया और मैं अल्लाह को याद करने लगा। शायद मैं बहुत ही नरमदिल और ज़ज्बाती था; या अल्लाह का मुझ पर करम कि मैं उस भिखारिन के दुःख व दर्द को महसूस कर पा रहा था।

उसे देख मेरी आँखों में आँसू आने लगे। मैं फौरन बाजार से बाहर आ गया क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा था कि यदि मैं एक घड़ी तक भी वहाँ रहता तो गश खाकर गिर पड़ता या रोते हुए तमाशा बना लेता।

बेचैनी में बाहर तन्हाई में आकर, मैंने अल्लाह ताला के आगे हाथ फैलाते हुए उससे पूछा, 'हे रहनुमा! हे मेरे परवरदिगार! तूने ऐसी दुनिया क्यों बनाई कि एक तरफ तो मटन-बिरयानी उड़ रही है और दूसरी तरफ झोली फैलाकर माँगने पर भी एक सिक्का उसमें नहीं पड़ता। तेरी दुनिया में इतनी बेहिसाबियाँ क्यों है?'

तब जाने कहाँ से एक आवाज़ मेरे अंदर से उठी और उसने मुझे दो बातें समझाईं। पहली- उसने कहा कि मैं ही भिखारी हूँ! तेरी निगाहें, जहाँ-जहाँ तक जाती है, जिसे-जिसे तू देखता है, जिस-जिस से तू मिलता है, बात करता है और जिस-जिस से तेरा वास्ता नहीं भी है, जो मुर्दा है, उस तक में भी मैं ही हूँ! इस तरह मटन-बिरयानी में मैं हूँ, मटन-बिरयानी बनाने वाला मैं हूँ, उसे खाने वाला और माँगने वाला भिखारी भी मैं हीं हूँ! फिर उस आवाज़ ने दूसरी बात कही। उसने कहा, अगर मुझे तुझे मेरी बात पर यकीन न हो तो तू यह समझ ले कि सितारें जो आसमान में चमकते हैं, वे एक दिन गर्दिश भी देखेंगे क्योंकि उनकी फितरत ही कुछ ऐसी है। इस सरजमीं पर सभी अपनी फितरत से ही चलते, बनते

और बिगड़ते रहते हैं। अपनी फितरत से ही अपने किए का फल पाते हैं। रूहानी फितरत उन्हें मुझ तक पहुँचाती है, शैतानी फितरत उन्हें भटकाती है। इसलिए जो जमीन पर मारे-मारे फिरते हैं। उनके लिए तू परेशान न हो। जब वक्त आएगा, वे फिर आसमाँ में होंगे। तब तक उन्हें अपने पाप भोगने दे!"

और ये कहते हुए फ़क़ीर करीम खाँ बंगाली चुप हो गया।

कुछ पल बीतने पर इरफान ने भौं चढ़ाते हुए कहा, "तो आप ये फरमा रहे हैं कि मेरे दोस्त का खानदान अपने किसी कर्म का फल भोग रहा है? अरे! मैं नहीं मानता। यह सब हिंदू फिलॉसफी है। हम मुसलमान हैं! हमारा फैसला तो कयामत के दिन होगा!"

"बरखुरदार! यह दुनिया अल्लाह ताला ने बनाई है। उसने ही इतने धर्म बनाए हैं और मैं समझता हूँ अल्लाह गलती नहीं करता। अगर हिंदू धर्म-कर्म के सिद्धांत को मानता है तो जरूर वह सही होगा। एक कहावत भी तो है- जैसी करनी वैसी भरनी! हिंदू धर्म सबसे प्राचीन धर्म है। भले ही कुछ नापाक लोगों ने उसे नष्ट करने का बीड़ा उठाया है, लेकिन तब भी जो सच है उसे झूठलाया नहीं जा सकता। तुम मानो या न मानो, फितरत इंसान का पीछा नहीं छोड़ती।" फ़क़ीर ने अपनी बात को और साफ़ शब्दों में बताते हुए कहा।

"ये अपाहिज टांगे देख रहे हैं! ये नकली टांगे!" अब इरफान जावेद का एक पायजामा ऊँचा करते हुए गुस्से से कहा, "देख रहे हैं आप इन्हें! इन्हें किसी ने काटा नहीं था! ये इसकी पैदाइश से ऐसी है और इसकी ही नहीं इसके वालिद, इसके वालिद के वालिद और उनके भी वालिद, सबके साथ ये खानदानी रोग लगा हुआ था। किसी के हाथ कमजोर थे, किसी के पैर अपंग, किसी के दोनों! ऐसा क्या किया होगा इन्होंने जो इस रोग का सिलसिला रुकने का नाम नहीं लेता? बताएंगे आप?"

"किसी अच्छे हकीम को दिखाओ!" फ़क़ीर ने जावेद के पैरों की ओर देखते हुए वितृष्णा से मुँह फेर लिया।

"आपको मजाक सूझ रहा है? हम हाकिमों से निराश होकर आपके पास आए हैं, ताकि अल्लाह से दुआ करके आप मेरे दोस्त के लिए रहमत की दो भीख माँग सकें। इसे गौर से देखिए बाबा!" इरफान जावेद की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसके घर में नया मेहमान आने वाला है! ये बाप बनने वाला है। इसका बेटा भी इसके जैसा अपाहिज पैदा हो सकता है।"

"हाँ, बाबा!" अब जावेद ने फ़क़ीर से दया की याचना करते हुए कहा, "मैं

नहीं चाहता कि मेरी आने वाली औलाद मेरे या मेरे पुरखों जैसी हो! अगर आप कुछ कर सके तो बहुत मेहरबानी होगी। हम बहुत आस लेकर आए हैं। अगर आपने भी हमें निराश कर दिया तो हम फिर कहाँ जाएँगे?"

"अल्लाह पर यकीन रख! सब ठीक होगा।" उस फ़क़ीर ने कहा।

"मेरी अम्मी ने भी मेरे पैदा होने पर यकीन किया था। लेकिन फिर मैं हुआ बाबा।" जावेद ने मायूस होते हुए कहा।

"चमत्कार की खोज में मुझ तक आए हो? माफी चाहूँगा, लेकिन मैं सच कहता हूँ। मैं एक आम फ़क़ीर हूँ। कोई जादू टोना या जिन-जिन्नात और जादू के बारे में नहीं जानता। पर हाँ, हो सकता है, कोई बद्दुआ, लानत या अभिशाप तुम्हारे खानदान पर हो? कोई मान, मन्नत या अल्लाह से किया कोई वादा जिसे निभाया न गया हो? इनमें से कोई वजह हो सकती है?"

"कितनी पीढ़ियों से यह रोग हमारे खानदान को मुँह में दबाए है बाबा। कैसे पता लगेगा कि किसने लानते भेजी थी या किसने कौन-सी मान रखी थी? क्योंकि मैंने तो कोई मान नहीं रखी!" जावेद ने लाचार बनते हुए कहा।

"अब इस पर मैं क्या कहूँ? अगर वक्त में पीछे जा सको तो शायद जान सकते हो!" फ़क़ीर ने कहा।

"क्या?" इरफान ने चौंकते हुए कहा, "वक्त में पीछे जा सके तो जान सकते हैं? जो मुँह में आ रहा है आप बक दे रहे हैं बाबा। आपको होश भी हैं? आप क्या कह रहे हैं? वक्त में पीछे जाना नामुमकिन है!" इरफान झल्ला गया था।

वो और जावेद अस्पतालों, पीर-फकीरों और कई दरगाहों में माथा टेकते-टेकते थक चुके थे।

"मैं कुछ नहीं कहता। जो भी कहता है, अल्लाह कहता है!" फ़क़ीर अल्लाह का नाम लेने लगा।

"जावेद मियाँ! मुझे तो लगता है, हम किसी पागल का चक्कर में आ गए हैं। इनके बारे में कितना सुना था। तुमने ही तो पता लगाया था, इनके बारे में। तुम्हीं बताओ क्या कहा था? इनके दरबार से कोई खाली हाथ नहीं जाता। अब तुम देख रहे हो ये कैसी-कैसी बहकी बातें कर रहे हैं? वक्त में पीछे जाएँ!" इरफ़ान का सब्र खो गया था।

वो बके जा रहा था, "अरे बाबा! लोगों से उनका वर्तमान नहीं संभालता है, आप हमें वक्त में पीछे भेजने की बात कर रहे हैं। ये हो नहीं सकता! चलो जावेद मियाँ! बहुत हो गया, जो होगा देखा जाएगा। किसी और बड़े अस्पताल, किसी

और बड़े डॉक्टर को दिखाएंगे, लेकिन कसम खाते है इन पीर-फकीरों के चक्कर में नहीं पड़ेंगे।" और इस तरह जावेद और इरफान फ़क़ीर की कुटिया से मायूस होते हुए बाहर आ गए थे।

जब सहस्त्रबाहु ने फ़क़ीर और इरफ़ान के बीच की बातचीत सुनी तो तब उससे रहा नहीं गया। वो दो वालंटियर को झाँसे में लेने की बात सोचते हुए, दोनों के पीछे हो लिया। वह भी फ़क़ीर की कुटिया से बाहर निकल आया।

"अतीत में चले जाओ! क्या बकवास है, जावेद मियाँ।" इरफान जावेद से कहते हुए बड़बड़ा रहा था।

"बकवास नहीं है! अतीत में जाया जा सकता है और न केवल अतीत में बल्कि भविष्य में भी जाना संभव है!" सहस्त्रबाहु ने उनकी बात सुन पास आते हुए कहा, "नमस्कार! मेरा नाम सहस्त्रबाहु है और मैं एक खोजी पत्रकार हूँ!" सहस्त्रबाहु ने अपना कार्ड देते हुए कहा।

"नमस्कार श्रीमान जी! मेरा नाम इरफान खान है और यह मेरा दोस्त है, जावेद शेख!" इरफ़ान ने कार्ड लेते हुए औपचारिकता पूरी की।

"आप दोनों से मिलकर अच्छा लगा। मैंने अन्दर आप दोनों की बात सुनीं!"

"जी मैंने भी आपको देखा था।" जावेद ने सहस्त्रबाहु को बताया, "लेकिन माफ कीजिएगा। मैं...यानी हम समझ नहीं पाएँ कि आप क्या फरमा रहे थे?"

"मैं फिर से बताता हूँ। मैंने आपकी समस्या के बारे में सुना और यह भी सुना कि उन्होंने क्या कहा...!"

"जब आपने सब सुना है तो फिर आप समझ गए होंगे कि जितनी प्रसिद्धि उनके नाम की है उसका एक प्रतिशत भी उनमें नहीं है।" सहस्त्रबाहु आगे कुछ कहता कि इरफ़ान ने बीच में बोलते हुए कहा, "अतीत में जा सको तो हो सकता है!" इरफान ने मुँह बनाते हुए व्यंग किया और सहस्त्रबाहु से पूछने लगा, "आप बताइए कि लोग इनके पास क्यों आते हैं? इसलिए न कि आदमी सब और से निराश हो चुका है। और किसी ऐसी चीज़ की तलाश में है जो सिर्फ रुहानी ताकते ही उसे दें सकती है।"

"ऐसा नहीं है! सिर्फ रुहानी ताकतों की बात नहीं हैं। विज्ञान की ताकत भी बहुत कुछ कर सकती है!" सहस्त्रबाहु ने मुस्कुराते हुए कहा।

"जी मैं समझा नहीं? क्या आप हमारी मदद करना चाहते हैं?" इरफ़ान ने पूछा।

"हाँ, मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ! बशर्ते, आप मेरी मदद लेने को तैयार

हो। मैं आपको आपका अतीत दिखा सकता हूँ। बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि मैं आपको उसमें भेज सकता हूँ। करीम खाँ बंगाली फ़क़ीर के शब्दों में आप अपने अतीत में जा सकते है, उसे देख सकते है, जान सकते है कि आपके खानदान में ये रोग कैसे लगा!"

"क्या? क्या सच में?" जावेद और इरफ़ान चौंक पड़े।

"सच में! मतलब..." इरफान सोचने लगा। "एक मिनट, एक मिनट..." उसने जावेद की ओर देखा।

वह भी सहस्त्रबाहु का वाक्य सुन विचार में पड़ गया था और सहस्त्रबाहु के कहने का अर्थ निकाल रहा था। सहस्त्रबाहु के होंठों पर रहस्यमय मुस्कराहट थी।

"मैं किसी को जानता हूँ, जो अतीत में जाकर आपकी पीढ़ियों का पता लगा सकता है। जैसा कि आपने कहा या फ़क़ीर ने कि आपके खानदान पर शायद कोई बद्दुआ लगी है या फिर कोई मान रह गई है!" सहस्त्रबाहु ने दोनों की उत्सुकता को संतुष्ट करने की कोशिश करते हुए कहा।

"मतलब आप इनसे भी ऊँचे किसी फ़क़ीर या पीर को जानते हैं?" इरफ़ान ने पूछा।

"हाँ, लेकिन वह कोई फ़क़ीर या पीर नहीं है। वह एक वैज्ञानिक है! एक चमत्कारी वैज्ञानिक!"

"एक चमत्कारी वैज्ञानिक?" जावेद ने आँखें हैरत में पड़ते हुए पूछा।

"वैज्ञानिक तो सुना था, लेकिन चमत्कारी वैज्ञानिक! यह बड़ी अनोखी बात बोल रहे हैं आप श्रीमान जी। जरा खुल कर बताइए, ये चमत्कारी वैज्ञानिक हैं कौन?" अब इरफ़ान बोला।

"बिल्कुल मैं आपको बताता हूँ, लेकिन एक शर्त है!" सहस्त्रबाहु ने कहा।

"कैसी शर्त?" इरफान ने जावेद की ओर देखते हुए पूछा।

"पहली शर्त यह, कि मैं आपसे जो भी कहूँगा, आप उस बात को मजाक नहीं समझेंगे और उस पर यकीन करेंगे।"

"नहीं-नहीं ये तो निर्भर करता है कि आप क्या कहते हैं। यकीन करना थोड़ा मुश्किल होगा। जाँच-परख कर ही किसी बात पर यकीन किया जा सकता है। हाँ, हम यह जरूर कह सकते हैं कि आपकी बात का मजाक नहीं उड़ाएंगे।" इरफ़ान ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मेरी बात की जाँच परख करने का मौका आपको जरूर मिलेगा। अच्छा मेरी दूसरी शर्त भी सुनिए!"

"हाँ सुनाइये! वैसे मुझे शंका हो रही है!" इरफ़ान ने कहा।

"शंका की कोई बात नहीं होगी। मेरी दूसरी शर्त यह है कि आप मुझे पागल नहीं समझेंगे।

"पागल! भला हम आपको पागल क्यों समझेंगे? आप तो भले-चंगे मालूम होते हैं। फिर पत्रकार भी है!" अब जावेद ने पत्रकार के कार्ड की ओर संकेत करते हुए कहा।

"मतलब, मैं मान लूँ कि आप मेरे एक-एक शब्द को ध्यान से सुनेंगे?"

"जी जरूर सुनेंगे! आप कहेंगे तो पी भी जाएँगे!" इरफ़ान ने मजाक करते हुए कहा।

इस पर सहस्त्रबाहु हँसने लगा। जावेद भी हँसने लगा।

अब अपनी बात शुरू करने से पहले सहस्त्रबाहु एक क्षण को ठहर गया। उसने इधर-उधर देखा। अपनी बात कहने के लिए उसे जगह उपयुक्त नहीं लगी। उसने अपना निर्णय बदल लिया और कहा, "मेरे ख्याल से हमें कहीं और चलकर बात करना चाहिए। कहीं चाय कॉफ़ी पीते हुए?"

"हाँ, क्यों नहीं! चलिए पास में एक अच्छा कॉफी हाउस है, वहाँ चलते हैं!" इरफान ने इशारा करते हुए बताया।

"हाँ, वो जगह ठीक रहेगी।"

कुछ ही देर में तीनों व्यक्ति कॉफी हाउस में बैठे थे, जहाँ सहस्त्रबाहु दो ठेकेदारों यानी सिविल इंजीनियर दोस्तों को डॉ० रामावल्ली की महान टाइम मशीन के बारे में अपना अनुभव सुना रहा था।

दोनों दोस्तों बर्फ की तरह जमें हुए, आँखें फाड़े खोजी पत्रकार सहस्त्रबाहु की कथा सुन रहे थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे सहस्त्रबाहु को कैसी प्रतिक्रिया दें। इसलिए उनके चेहरे सपाट भावों को व्यक्त कर रहे थे। जिस पर कुछ भाव लाने लिए उन्हें बीच-बीच में 'अच्छा! क्या!' जैसे आश्चर्य को व्यक्त करने वाले विस्मयबोधक शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ रहा था। वे अपने मन से सहस्त्रबाहु की दोनों शर्तों को नकार चुके थे। वे मन ही मन हँस भी रहे थे और सहस्त्रबाहु को पागल भी समझ रहे थे। इरफ़ान तो खुद से कह भी रहा था, "भला-चंगा आदमी भी पागल हो सकता है! राह चलते किसी आदमी को पत्रकार मानते हुए विश्वास नहीं करना चाहिए!"

दोनों को यकीन करने में बहुत ही मुश्किल हो रही थी कि सहस्त्रबाहु का एक भी शब्द सच हो सकता था।

"डॉ० रामावल्ली एक गुप्त कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्हें समय यात्रा के लिए वालंटियर चाहिए। अगर आप दोनों वालंटियर बन जाए तो आप जान सकेंगे कि आपके परिवार में पीढ़ियों से चला आ रहा ये रोग कैसे पैदा हुआ। मुझे विश्वास है, आप बड़े से बड़े डॉक्टरों से मिल चुके होंगे" सहस्त्रबाहु ने अपनी बात कहीं।

"यह बात तो आपने सच कहीं कि हम बड़े से बड़े डॉक्टरों से मिल चुके हैं!" जावेद ने कहना शुरू किया, "हमने अमेरिका के डॉक्टरों से भी संपर्क किया था। उनका कहना है कि ये एक आनुवांशिक रोग मतलब जेनेटिक डिसऑर्डर है, जो करोड़ों में से किसी एक होता है। शायद दस-बीस करोड़ में से किसी एक को। इसका क्या कारण है, कोई नहीं जानता। पर रिसर्च हो रही है!"

"यह बात तो ठीक है, जावेद मियाँ! लेकिन तुम कुछ समझ भी रहे हो, श्रीमान जी क्या कह रहे हैं?" इरफ़ान को हैरानी हुई कि सहस्त्रबाहु की बात सुनकर जावेद को हैरानी क्यों नहीं हुई। उसकी समझ में जावेद को लग रहा था कि सहस्त्रबाहु उसकी मदद कर सकता था। फिर वो मदद समय यात्रा जैसी असंभव चीज से ही क्यों न मिलने वाली हो।

"मैं सब समझ रहा हूँ, इरफ़ान!" जावेद ने समोसा उठाते हुए कहा।

"गजब कर रहे यार! तुम्हें कुछ होश भी है, ये श्रीमानजी क्या कह रहे है? यहाँ समय यात्रा की बात की जा रही है। समोसे में चटनी नहीं डाली जा रही है। अव्वल तो मुझे यकीन नहीं हो रहा, इन्होंने जो भी कहा वह सच है। मगर मैं यकीन कर भी लूँ तो भी किसी गुप्त कार्यक्रम पर शोध की बात खटक रही है!" इरफ़ान सहस्त्रबाहु से स्पष्ट बोला।

"क्या खटक रहा है, आपको?" सहस्त्रबाहु ने गंभीर मुद्रा धारण कर ली।

"यहीं कि आप हमें उल्लू बना रहे हैं, श्रीमान जी! पता नहीं आप पत्रकार है भी या नहीं? कोई ठग ज़रूर लग रहे हैं, जो हमसे कोई ठगी करना चाहते हैं। भाई साब, यूँ ही बता दीजिए आपको कितने रूपए-पैसे चाहिए। पाँच हजार-दस हजार कितने? हम आपको यूँ ही दे देंगे, सोचेंगे कि इतने का चाय-नाश्ता कर लिया पर ऐसी कोई बात न करिए जिससे हमारा इंसानियत पर से भरोसा उठ जाए। इसकी प्यारी-सी बीवी है, पेट से है वह। अभी बच्चा भी बाहर नहीं आया है और उसके नाम पर आप हमें झाँसे में ले रहे हैं। थोड़ी शर्म करिए आप!" इरफ़ान ने चिढ़ते हुए सहस्त्रबाहु से कहा।

"आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, हैं न?" सहस्त्रबाहु ने मुस्कुराते हुए

कहा।

"यकीन कैसे आएगा जनाब? सन् 2012 चल रहा है और आप समय यात्रा की बात कर रहे हैं। अभी इसके गाँव जाने में चार दिन लगते हैं। वह भी तब जब हम एक्सप्रेस ट्रेन से जाएँ और आप एक बटन दबाकर हमें बीते सालों में भेज रहे हैं। नासा चाँद पर दोबारा अपने आदमी नहीं उतार पाया हैं और आप टाइम मशीन का आविष्कार हिन्दुस्तान में कर रहे है। कैसे यकीन आएगा, श्रीमान जी?" इरफान ने बड़े-बड़े तर्क दिए।

सहस्त्रबाहु उसे कुछ देर तक देखता रहा। फिर उसने बेंच पर रखा झोला उठाते हुए उसमें से कुछ अखबार निकाल टेबल पर दिए और बोला, "शायद इससे आपको यकीन आ जाएँ!"

टेबल पर रखे अखबार भविष्य से लाए गए थे।

उन पर सन् 2017-18- 20 और 22 की तारीखें थी।

इरफान और जावेद टेबल पर रखे अखबार उठाकर देखने लगे। उनके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थी। इरफ़ान तो आँखें फाड़कर एक-एक खबर को गौर से पढ़ रहा था। आने वाला भविष्य उनके सामने था।

"मैं आप पर छोड़ता हूँ कि आपको मेरी बात पर यकीन करना है या नहीं।" सहस्त्रबाहु ने कहा, "और इस अखबार को पढना मत भूलिएगा!" कहते हुए सहस्त्रबाहु ने एक अखबार आगे सरका दिया। वो आने वाले कल का अखबार था। अगले दिन का।

इरफान ने अखबार उठाते हुए उसे गौर से पढ़ा। उसके हर पन्ने पर भविष्य की इबादत छपी थी।

"अगर अब भी मेरी बात पर यकीन न तो कल तक रुक जाएँ। हम दुबारा कल यहीं मिलेंगे।" सहस्त्रबाहु ने गंभीरता से कहा।

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं!" इरफ़ान ने हैरत से कहा, "इसमें ऐसी कोई खबर नहीं है जिससे मैं यह समझूँ कि आप झूठ बोल रहे है। ये अखबार आपने कहीं बनवाया नहीं है। इनकी प्रिंटिं क्वालिटी बहुत ही खास मशीन से संभव है, जो अभी तक कहीं नहीं है। इन खबरों को पढ़कर भी मैं समझ गया हूँ कि आपका एक-एक शब्द सच है। वैसे ये आपको कहाँ से मिलें? मेरा मतलब, क्या आप और वो चमत्कारी वैज्ञानिक रोज़ समय यात्रा करते हैं?"

"मैं नहीं करता! पर वो ज़रूर करता है। ये अखबार वही लाता है। इन अखबारों के कारण ही हमारे~ पास अथाह रुपया-पैसा आता है। इसलिए

जब भी कोई समय यात्रा पर जाने की हामीं भरता है तो हम उसे और उसके परिवार को खूब रुपया देते है। इतना कि उसकी दो-तीन पीढ़ियाँ राजा-महाराजाओं की तरह जिंदगी बसर कर सकें। मैं कोई ठग नहीं हूँ इरफ़ान साब! बस मैं एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति हूँ!”

“हमें समय यात्रा पर किस दिन भेज सकते है?” जावेद ने उत्साह प्रदर्शित करते हुए पूछा।

“जब भी आप तैयार हो?” सहस्त्रबाहु ने मुस्कुराते हुए कहा।

इरफ़ान हैरत से जावेद और सहस्त्रबाहु को देखने लगा था।

€¥Ω£§

-समय आशा की एक किरण है।

(22)
सरहिंद का गद्दार

सन् 1001, गजनी शहर का एक बाज़ार
अफगानिस्तान।

ऊँचे से चबूतरे पर सैकड़ों हिंदू स्त्रियों की भीड़ थी। उनमें से ज्यादातर कम उम्र की लड़कियाँ थीं, जिनकी स्थिति देखने से ही बड़ी दयनीय मालूम होती थी। उनके गालों पर आँसुओं की लकीरें खिंचकर सूख गई थीं और उनकी आँखों में पत्थर की सी कठोरता आ गई थी। उनके पैरों में जख्म और छाले थे तथा उन्हें बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। ऐसा लगता था कि वक्त की कलम में स्याही सूखने के बाद उनकी किस्मत लिखी गई थी। उनकी हालत बता रही थी कि उन्होंने हाल ही में किसी भीषण दौर का सामना किया था, जिसकी परिणीति अभी बाकी थी।

उन स्त्रियों के सामने हजारों वहशी से दिखते बदसूरत किस्म के लोग खड़े थे, जिनमें से ज्यादातर अधेड़ और उम्र के एक पड़ाव को पार कर चुके लोग थे। वे सभी तुर्क सुन्नी सरदार महमूद गजनवी की पनाह में पनपने वाली उसकी प्रजा थे। वे सभी के सभी वहाँ सरहिंद के राजा अजयपाल की पराजय के बाद गुलाम बनाई गई हिंदू स्त्रियों को अपनी लौंडी या रखेल बनाने और उन्हें खरीदने के मकसद से इकट्ठा हुए थे।

वे सभी बड़े बेरहम और बेदर्द थे। उन लुटेरों, कातिलों और जालिम दरिंदों ने उन हिंदू स्त्रियों के शरीर पर एक भी कपड़ा रहने न दिया था, जबकि उन स्त्रियों में से कितनी ही महलों में रहने वाली राजकुमारियाँ थीं। कितनी ही स्त्रियों को माहवारी का दौरा था पर वहाँ मौजूद किसी भी मर्द के दिल में इतनी हमदर्दी और रहमत नहीं थी कि वे उनको अपनी जांघों के बीच का हिस्सा, जिससे जिंदगी रिसती है, ढकने के लिए एक चिंदा कपड़ा भी देता। बल्कि वे तो वासना से भरी निगाहों से उनके अंग-अंग को नाप-जोख रहे थे। कुछ लोलुप निगाहों की बजाय अपने हाथों का इस्तेमाल कर, उन स्त्रियों की छातियों, पीठ और जांघों को छू रहे थे, जिससे वे स्त्रियाँ सहमते हुए एक-दूसरे से सट जाती थीं। उन्हें ठीक से खड़ा रखने के लिए एक लम्बा सा व्यक्ति, जो कसाई जैसा दीखता था, उन पर चाबुक चलाता था, जिससे उन स्त्रियों की नाजुक और मुलायम चमड़ी छिल जाती थी।

“दो दीनार...दो दीनार...हिंदुओं की खूबसूरत औरतें...शाही कमसिन लौंडिया... कीमत सिर्फ दो दीनार...ले जाओ...ले जाओ...इन्हें बांदी बनाओ... एक लौंडी...कीमत सिर्फ दो दीनार...”

एक लम्बा व मजबूत आदमी हिंदू स्त्रियों की बोली लगा रहा था।

ऐसा नहीं था कि उस बाज़ार में यह पहली बार हो रहा था। ये कई बार हो चुका था। उस बाजार में एक मीनार थी, जिस पर लिखा था-

दुख्तरे हिन्दोस्तान...नीलामें दो दीनार...

ये शायद अब भी लिखा हो, जिसका मतलब था-

यह वह जगह है, जहाँ हिंदू स्त्रियाँ दो दीनार में नीलाम हुईं

जब महमद गजनवी उन औरतों को गजनी ले जा रहा था तो वे स्त्रियाँ बिलख-बिलख कर अपने पतियों, माता-पिता और भाइयों को पुकार रही थीं कि वे उन्हें बचा लें। लेकिन करोड़ों हिंदुओं के बीच कोई अकेला भी ऐसा नहीं था, जो उन स्त्रियों को कट्टर इस्लामी लुटेरों से बचा पाता। रोती बिलखती उन हिंदू स्त्रियों के न पति आगे बढ़े, न उनके भाई अपने सिंहासन से उठे, न उनके पिताओं ने उन्हें सहारा दिया।

वे हिंदू औरतें झुण्ड के झुण्ड में भेड़ बकरियों की तरह हाँक कर, कट्टर इस्लामी लुटेरों द्वारा ले जाती रहीं। वे बेबस और लाचार थीं। उनके पति,भाई और पिता आपस में ही बंटे रहे। उनमें से कई तो ऐसे थे, जिन्होंने खुद अपने देश की बेटियों को विधवा बनाने, उन्हें बेचने या उन्हें बंदी करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उन्होंने अपने दुश्मनों की इसमें भरपूर मदद की थी।

उस बाजार में जब एक आदमी हिंदू स्त्रियों की बोली लगा रहा था, भीड़ में एक शख्स बड़े रौब से खड़ा था। वह एक सैन्य समूह का सरदार था, जिसे महमूद ने खुद सरदार बनाया था। वह सरदार चबूतरे पर सबसे आगे खड़ी एक निर्वसना राजकुमारी को घूर रहा था। राजकुमारी भी जलते नेत्रों से उसे देख रही थी। उसके तेवर बता रहे थे कि वो उस सैनिक सरदार से बेहद खफा थी। उसके अंग-अंग से ज्वाला निकल रही थी। उसने सैनिक सरदार को देखकर थूका भी था।

जल्द ही बोलियाँ फिर शुरू हो गईं।

दो दीनार...दो दीनार। मेहरबान...कदरदान... हिंदू औरतें, कीमत सिर्फ दो दीनार...ले जाइए जना॥ कीमत सिर्फ दो दीनार..."

"मुझे ये दोनों चाहिए!" एक कट्टरवादी की आवाज गूँजी।

"बिक गईं!" कहते हुए लुटेरे ने संकेत किया और दो स्त्रियों की बेड़ियाँ खोल दी गईं। आदमी ने उससे चार दीनार लेकर दो स्त्रियाँ उसकी ओर धकेल दीं। जिन्हें खरीदार लार पिरोता अपने साथ ले गया।

"दो दीनार...दो दीनार...कीमत सिर्फ दो दीनार..." बोली फिर शुरू हो गई।

"मुझे ये वाली चाहिए थी!" और एक खरीदार ने कहा।

"लाओ, पहले दो दीनार रखो!" सैनिक ने हाथ बढ़ाकर दीनार लिया। फिर लड़की को उसकी ओर धकेलते हुए कहा, "ये बिक गई! और बोलिए..."

फिर देखते ही देखते कई स्त्रियाँ उन कट्टरवादी लोगों के हाथ में धकेल दी गईं। राजकुमारियाँ, उनकी दासियाँ और कम उम्र की लड़कियाँ, किसी को भी बख्शा नहीं गया था।

आखिर में कुछ शाही घराने की हिंदू स्त्रियाँ रह गई थीं, जिनमें वह राजकुमारी भी थी जिसे सैनिक समूह का सरदार ऐब दिखाते हुए घूर रहा था। उस राजकुमारी और उसकी सहेलियों को बेचने के लिए सबसे आखिर में बोली लगने वाली थी। शायद ऐसा आदेश उस सैनिक सरदार ने ही दिया था।

जल्द ही उनकी बोली भी शुरू कर दी गई।

"...और अब पेश है, सरहिंद के महाराज अजय पाल के राज घराने की राजकुमारी माधवी और उसकी दासियाँ व सहेलियाँ! कौन इन्हें खरीदेगा जनाब, बोलिए?" आदमी की आवाज बुलंद हो चुकी थी।

"मेरी बात मान ली होती तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता तुम्हें माधवी!" सैनिक सरदार ने राजकुमारी माधवी को देखते हुए कहा। वो चबूतरे के करीब आ चुका था।

"तेरी बात मैंने न तब मानी थी और न कभी मानूँगी बालचंद्र! तू एक नीच है! तू सरहिंद का गद्दार है! देशद्रोही है! तेरे कारण मेरा राज्य पराजित हुआ!

तेरे कारण मेरे पिता की हत्या हुई! तेरे कारण हजारों स्त्रियाँ विधवा हुईं! स्मरण रखना, भगवान तुझे कभी क्षमा नहीं करेगा!" राजकुमारी गुस्से से बोली।

"भगवान! कौन-सा भगवान? क्या तूने देखा नहीं इन्होंने क्या किया? इन्होंने तुम्हारे भगवान के टुकड़े-टुकड़े करके अपने घरों में सजा लिए हैं। अब तो सिर्फ अल्लाह ही है! अल्लाह ही तुम्हारे देवी-देवताओं पर भारी है!" बालचंद्र ने अपने साथियों की ओर संकेत करते हुए कहा।

"इसलिए तूने अपना धर्म और निष्ठा बदल ली? नीच! अधर्मी!" राजकुमारी माधवी जलते नेत्रों से बोली, "इसलिए तूने इस्लाम कबूल कर लिया?"

"हाँ, इसलिए मैंने इस्लाम कबूल कर लिया। अब महमूद के गजनी आने पर मेरा फैसला कर लिया जाएगा। तेरा राज्य और राजपरिवार का इष्ट मंदिर मेरा होगा। उसके सिंहासन पर अब मेरी ताजपोशी होगी।"

"जिसे तोड़कर तू नई इबादत लिखेगा?" माधवी ने पूछा।

"हाँ, ऐसा ही होगा! अब वहाँ वही होगा जैसा महमूद चाहेगा। एक-एक नागरिक से इस्लाम कबूल करवाया जाएगा। एक-एक मंदिर को खंडित किया जाएगा। तेरे राज परिवार का इष्टमंदिर भी छोड़ा नहीं जाएगा माधवी।"

"सरहिंद के मंदिरों को तोड़कर तेरे हाथ नहीं काँपे, जो तू अब राज परिवार के मंदिर को खंडित करने की बात कर रहा है? वो भी इन मूर्तिभंजकों के लिए! हे दुष्ट! हे महानीच! हे अधर्मी! तेरी इष्ट देवी तुझे कभी क्षमा नहीं करेगी। तुझे श्राप लगेगा।"

"ऐसा कहने से कुछ नहीं होगा सरहिंद की राजकुमारी! मुझ पर कोई श्राप नहीं लगेगा क्योंकि अब से मेरी कोई इष्ट देवी नहीं है और न मेरे परिवार की कोई इष्ट देवी होगी। ये बालचंद्र जो तेरे सामने खड़ा है, कभी बालचंद्र था, जो अब इनमें से एक है!" सैनिक सरदार बालचंद्र ने अपने साथ खड़े कट्टर इस्लामी लोगों की ओर संकेत करते हुए कहा, "अब से मैं बदरुद्दीन शेख हूँ!"

"तू बदरुद्दीन शेख नहीं बालचंद्र, तू एक बद्दुआ है, जो अपने साथ अपने परिवार पर भी लगेगा। सरहिंद की जिस इष्टदेवी को नकारकर तूने अपनी निष्ठा इन विधर्मियों को बेची है, वही देवी तुझे भयंकर श्राप देगी। देखना तू और न तेरा परिवार, सरहिंद की विधवाओं की हाय और अजयपाल की इस राजकुमारी के कोप से बच पायगा। गजनी के इस बाज़ार में सरहिंद की हम स्त्रियाँ तुझे और यहाँ मौजूद हर अफगानी को श्राप देती है कि तुम्हें कभी सुख और आराम नहीं मिलेगा। जिस तरह तुमने हिंदूओं की धन-सम्पदा और उनके मंदिरों का नाश

किया है, उसी तरह तुम सबका भी विनाश होगा। हर हर महादेव!" कहते हुए माधवी ने ललकार लगाई।

उसके संकेत पर उसकी दासियों और उसकी सहेलियों ने बिजली की गति से अपनी बेड़ियों को तोड़ डाला और अपने पास खड़े सैनकों से उनकी तलवार और भालें लेकर उन अफगानियों पर टूट पड़ीं।

देखते ही देखते सैकड़ों शव उस बाज़ार में बिछ गए। माधवी ने लुटेरों से लड़ते हुए अपने प्राण गँवा दिए।

लेकिन इससे पहले वो बालचंद्र उर्फ़ बदरुद्दीन शेख का एक हाथ और एक पैर काट चुकी थी।

Œ Œ Œ

इतना कहने के बाद पीर कुछ देर के लिए चुप हो गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे।

जावेद और इरफ़ान भावुक होकर तथा टकटकी लगाकर उसे देख रहे थे।

दरअसल पीर जावेद और इरफान को सरहिंद की राजकुमारी माधवी के बालचंद्र उर्फ़ बदरुद्दीन शेख की कहानी सुना रहा था, जो उसे कुम्भ मेले में मिले संन्यासी ने ध्यान में देखने के बाद बतायी थी।

बालचंद्र वास्तव में जावेद का पूर्वज या पुरखा था।

"उस साधु ने मुझे यही बताया था।" पीर याद करते हुए बताने लगा, "मैं हैरान रह गया था। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि वैसा कुछ हुआ होगा।"

"मतलब आप यह कह रहे हैं कि हमारे पुरखे..." जावेद कहते हुए रुक गया।

"हाँ! हमारे पुरखे हिंदू थे।" पीर जावेद की बात पूरी करते हुए बोला, "हमारे खानदान को एक हिंदू स्त्री की लानते मिली थी या शायद उस इष्ट देवी ने हमें श्राप दिया था, जिसके हम भक्त थे।"

"क्या आपने उस संन्यासी से कोई उपाय नहीं पूछा था?" इरफान ने पीर से पूछा।

"पूछा था, मैंने उससे उपाय भी पूछा था। मैंने उससे ये तक कहा था कि अगर मेरे पुरखे हिन्दू थे और उनसे किसी ज़ज्बात में आकर कोई भूल हो गई थी तो क्या उस भूल को सुधारने के लिए मैं फिर से हिंदू बन जाऊँ? तो जानते हो इस पर उसने क्या कहा था? उसने कहा था कि नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम जो हो अब यही तुम्हारी पहचान है और यही तुम्हारी पहचान होना चाहिए। रही बात उपाय की तो फिलहाल तो कोई उपाय नहीं है, लेकिन हाँ कुछ समय बाद भविष्य स्वयं

किसी को तुम्हारे पास भेजेगा। वो तुम्हारा वंशज होगा, उसके पास कुछ शक्तियाँ होगी, अगर तुम उसे यही बताओगे जो मैंने तुम्हें बताया है, तो भूतकाल में जाकर बालचंद्र को रोक सकेगा। यदि ऐसा हो गया, तो शायद तुम्हारे वंश पर, तुम्हारे खानदान पर सरहिंद की राजकुमारी का श्राप नहीं लगेगा।" कहते हुए पीर ने उम्मीद से भरी निगाहों से जावेद को देखा और कहा, "उसने कहा था तुम आओगे। उसकी बात सच हुई। अब ये तुम्हारे ऊपर है मेरे बेटे कि तुम क्या करते हो? मेरा काम ख़त्म हुआ। अब तुम तय करो कि क्या करना है?"

पीर के ये कहते ही जावेद इरफान को देखने लगा। मानो उसकी आँखों में पढ़ रहा था कि वो क्या सोचता है। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि ये सब कुछ होने वाला था।

"मुझे थोड़ा वक़्त चाहिए, बाबा!" जावेद ने पीर से कहा।

"बेशक! तुम वक्त लो, तुम्हारे पास तो बहुत वक्त है, पर जो भी फैसला लेना, सोच समझ कर लेना। इतिहास जितना रोमांचक लगता है, उतना ही खतरों से भी भरा है।"

"मैं समझ गया बाबा!"

और फिर जावेद और इरफ़ान पीर के गरीबखाने से बाहर आ गए। वे बहुत देर तक सोच में डूबे रहे। उन्होंने भूतकाल में जाने को लेकर तर्क-वितर्क और आपस में विमर्श किया।

"तो क्या कहते हो इरफान?" जावेद ने इरफ़ान से पूछा, "क्या हमें और पीछे जाना चाहिए?"

"अब मैं क्या कहूँ जावेद मियाँ! ये फैसला तुम्हें करना है। तुम्हारे साथ यहाँ तक आने के लिए मैंने डॉक्टर रामावल्ली की द रियल टाइम मशीन चुराई, बिड़ला पार्क में गोली लगने पर मैं तुम्हें अस्पताल ले गया, मैंने हुमायूँ के मकबरे में तुम्हें बचाया, हम बर्मा गए, हमने बहादुर शाह जफ़र के पुरखे को देखा, हमने शाह को देखा, हमने कव्वालियाँ सुनीं। मियाँ, मैंने हर परिस्थिति, हर हालत में तुम्हारा साथ दिया है, मुझे आगे भी तुम्हारा साथ देने में कि कोई एतराज नहीं है। जहन्नुम में भी जाने को बोलोगे तो मैं तैयार हूँ!"

"ठीक है, मैं घड़ी को धूप दिखाता हूँ!" कहते हुए जावेद ने किसी सुनसान जगह की ओर देखा।

Œ Œ Œ

दोनों ने पीर के घर में एक रात गुजारी। फिर अगले दिन जब घड़ी पूरी तरह

से चार्ज कर ली गई, दो दोस्त, दो समय यात्री, दो हमसफ़र अतीत की अनजान, अनदेखी और अगम्य यात्रा पर चल पड़े।

इस बार इरफ़ान ने जावेद से घड़ी लेकर अपनी कलाई पर बाँध ली। जब जावेद ने इरफ़ान का हाथ पकड़ लिया तब इरफ़ान ने घड़ी में समय निश्चित कर घड़ी का बटन दबा दिया।

€ ¥ Ω £ §

-समय यात्रा प्यार का दूसरा नाम है।

(23)
वजहः प्यार और कुदरत

सन् 2150, बेंगलुरु का मॉल

मिस्बा आठवें माले पर एक रेस्टोरेंट में घड़ीसाज़ मैत्रेय का इंतजार कर रही थी। आफ़ताब उसके पास व्हीलचेयर पर बैठा था। दोनों किसी दक्षिण भारतीय व्यंजन का लुफ्त उठा रहे थे। वो व्यंजन उन्होंने कार्ड द्वारा भुगतान के बाद पाए थे, जिसे एंटीक वस्तुओं की दुकान में मैत्रेय ने दिया था।

“ये खाना कितना लजीज है, है न अम्मी?” आफ़ताब ने सांभर में डोसा डालते हुए मिस्बा से व्यंजन की तारीफ की।

“हाँ, ये बहुत लजीज है!” मिस्बा ने काँटे वाले चम्मच से निवाला मुँह में रखते हुए कहा।

“और ये मॉल भी कितना शानदार है! सारे काम रोबोट कर रहे हैं।” आफ़ताब ने फिर कहा, “उड़नेवाली कारों से लोग सीधे रेस्टोरेंट्स में आ रहे हैं। नीचे वहाँ गेम्स की शॉप्स भी कितनी अलग थी! क्या मैं वहाँ जा सकता हूँ?” उसने नीचे गेम्स की शॉप को देखते हुए मिस्बा से कहा।

“हाँ जरुर। पर उसके लिए हमें कार्ड खरीदना होगा जोकि पैसों से आएगा। तुम समझ रहे हो ना, मैं क्या कह रही हूँ?”

“हमारे पास अंकल का कार्ड है तो?” आफ़ताब ने आस भरी निगाहों ने मिस्बा को देखा। मानो सुनना चाहता था कि हाँ, तुम गेम खेल लेना। पर नहीं...

“उन्होंने कार्ड लंच के लिए दिया था,आफ़ताब! हमें तुम्हारे गेम्स के लिए उनसे पूछना पड़ेगा।” मिस्बा ने उसे हताश करने वाला जवाब दिया।

“वो कब आएंगे?” आफ़ताब ने फिर पूछा।

“उन्होंने एक घंटे में आने को कहा था, आते ही होंगे!” कहते हुए मिस्बा भी गेम की शॉप पर देखने लगी। वहाँ कई बच्चे और जवान लोग गेम खेलने में व्यस्त थे।

फिर वो खाने का लुफ्त उठाती रही। कुछ देर बाद उसने आफ़ताब के लिए केक और कुकीज का भी ऑर्डर दिया। एक रोबोट ऑर्डर लेकर गया।

“अरे! ये क्या तुमने दक्षिण भारतीय खाना मंगवाया है! यह मेरा पसंदीदा है।” घड़ीसाज़ मैत्रेय आ चुका था। टेबल पर दक्षिण भारतीय खाना देख उसकी

आँखों में चमक आ गई थी। उसे भी दक्षिण भारतीय व्यंजन बहुत पसंद थे।

"आप आ गए!" मिस्बा कुर्सी से उठते हुए उसका अभिवादन करने लगी।

इस पर मैत्रेय ने उसे टोकते हुए कहा, "कृपया बैठी रहो! खाते में उठना नहीं चाहिए।" वह कुर्सी सरकाकर बैठ गया, "और तुमने केक और कुकीज आर्डर किया है!" उसने आफ़ताब की डिश देखते हुए कहा।

"यह मेरा पसंदीदा है!" आफ़ताब ने खुश होते हुए कहा।

"तुम्हें यहाँ की स्पेशल चाइल्ड डिश खाना चाहिए, वो बहुत बढ़िया है। उसे जादू की कुल्फी कहते हैं। रुको, मैं अभी ऑर्डर करता हूँ।" कहते हुए मैत्रेय ने टेबल पर एक बटन दबाया। जिसके बाद तुरंत ही एक रोबोट वहाँ हाजिर हो गया।

"जी सर!" रोबोट बोला।

रोबोट को ऑर्डर देने के लिए मैत्रेय को रोबोट से कार्ड को स्कैन कराना था। मिस्बा ने ये समझते हुए कि कार्ड उसके पास है, बैग में से कार्ड को निकालने लगी। इस पर मैत्रेय ने उसे टोका।

"कार्ड को अपने पास ही रहने दो, मेरे पास दूसरा कार्ड है।" फिर उसने अपनी जेब से कार्ड निकाला और उसे रोबोट से स्कैन करवा कर जादू की कुल्फी और कुछ अन्य व्यंजन अपने लिए आर्डर किए। रोबोट आर्डर लेकर चला गया।

"तो कौन-से साल से आई हो?" मैत्रेय ने मिस्बा से पूछा।

"साल 2012 से!" मिस्बा ने जवाब दिया।

"जगह?" मैत्रेय ने फिर पूछा।

"इंदौर, मध्य प्रदेश के एक शहर से!"

"मैं जैसलमेर से निकला था!" मैत्रेय ने बताया, "साल 2005 में, उसकी लैब से..."

"2005 से!" मिस्बा चौक पड़ी। उसे यकीन नहीं हुआ, "मतलब आप डेढ़ सौ सालों से भविष्य में हैं!" उसने मैत्रेय से पूछा।

"एक तरह से हाँ भी और नहीं भी, दोनों बातें हैं। वैसे ठीक से गणना करूँ तो मुझे सात साल के लगभग होने आए हैं!"

"सात साल!" मिस्बा को हैरानी हुई। उसने आश्चर्य करते हुए पूछा, "सात साल से आप यहाँ है, फिर भी आपकी उम्र नहीं बढ़ी? मैं चौबीस घंटे मुंबई के एक स्टेडियम में रह गई थी, बारिश की वजह से घड़ी की ऊर्जा खत्म हो गई थी। समय पूरा होते ही समय की झटका तरंगों ने हमारी उम्र बढ़ा दी। मैं और आफ़ताब पाँच

साल बड़े हो गए।"

"मैं समझ सकता हूँ। यह होना लाजमी है। समय जो हमारी साँसों की तरह है, हमें बुरी तरह प्रभावित करता है। आप क्या ग्रहण कर रहे हैं, वह आपका भविष्य बन जाता है। आप जो श्वास छोड़ते हैं; वह परिणाम होता है। लेकिन तब भी बहुत सी चीजें हैं, जो अस्वाभाविक तौर पर होती हैं। जैसे कभी-कभी साँसों का अटक जाना। मैं भी अटक चुका था पर अब तुम आ गई हो तो मतलब है कुछ होगा।"

"मतलब आप भटक चुके थे?" मिस्बा को समझ नहीं आया।

"अटकने से मेरा मतलब है, समय में कई लूप होल्स होते हैं। हम उन्हें छेद कह सकते हैं। उनमें चीजें यथावत रहती हैं। मैंने ऐसे ही एक लूप होल में अटक गया था।"

'लूप होल! यह क्या होता है?" मिस्बा ने पूछा।

"लूप होल ऐसी जगह है जहाँ समय की झटका तरंगें आपको प्रभावित नहीं करतीं। अच्छा! यह बताओ यहाँ कैसे आई? मतलब उसने तुम्हें भेजा या तुम खुद?" मैत्रेय ने मिस्बा से उसके आने का कारण पूछा।

मिस्बा ने उसे पूरी कहानी कह सुनाई। फिर उसने पूछा, "आप एंटीक की दुकान में कब से काम कर रहे हैं? आपका बॉस घड़ी के बारे में आपसे कुछ कह रहा था।" मिस्बा ने मैत्रेय के बारे में जानना चाहा।

"वो पागल है। उसे हर चीज़ एंटिक लगती है। मैं पिछले दो सालों से उसके यहाँ काम कर रहा हूँ। इसके पहले कहीं और था। दरअसल दो साल वो समय होता है, जिस दौरान आपके शरीर में प्रकट हो रहे लक्षण और चिन्ह जैसे झुर्रियाँ, बालों का सफेद होना इत्यादि कोई पकड़ नहीं पाता है। देखो मैं अब भी 28-30 साल का नौजवान हूँ पर मैं नहीं चाहता कि कोई जाने कि मेरी रुकी हुई उम्र का कारण क्या है। इसलिए मैं अलग-अलग जगह काम की तलाश करता रहता हूँ। इस उम्मीद में कि कोई मुझे लेने आएगा और एक बार फिर मैं अपने वर्तमान में जा सकूँगा।" मैत्रेय ने मिस्बा को बताया।

"उसने आपको क्यों भेजा था?" मिस्बा ने डॉ० रामावल्ली का जिक्र छेड़ा।

"उसने मुझे नहीं भेजा था। मैं खुद समय चक्र में आया था। हाँ, ये बात और है कि इसके लिए मुझे उससे लड़ना पड़ा था।"

"लड़ना पड़ा था मतलब?" मिस्बा को आश्चर्य हुआ।

"मैं किसी को ढूँढने आया था।"

“ढूँढने आए थे! किसे?” मिस्बा ने जिज्ञासा व्यक्त की।

“निशोक की गर्लफ्रेंड को!” मैत्रेय ने बताया।

“निशोक! ये कौन है?” मिस्बा के लिए निशोक नया नाम था।

“निशोक...माफ़ करना! मुझे उसका पूरा नाम बताना चाहिए था। डॉ॰ निशोक रामवल्ली! यह उसका पूरा नाम है, जिसे शायद तुम डॉ॰ रामावल्ली कहती होगी। हम उसे निशोक के नाम से पुकारते थे। क्या दिन थे वो! काफी अरसा हो गया उससे मिले। दो दुश्मन! एक लड़की को पाने के लिए क्या-क्या कर गुजर गए थे।” मैत्रेय पुरानी बातें याद करते हुए सोचने लगा।

“आपकी जादू की कुल्फी और आपकी रेगुलर डिश सर!” रोबोट आर्डर ले आया था। उसने आर्डर टेबल पर रख दिया और चला गया।

“ये लो! यहाँ की चिल्ड्रनस् स्पेशल डिश!” मैत्रेय ने जादू की कुल्फी की प्लेट आफ़ताब की ओर बढ़ा दी। फिर कहा, “अब मैं भी थोड़ी पेट पूजा कर लेता हूँ। बड़ी भूख लग रही है। मेरा मालिक बहुत कमीना है। बहुत काम करवाता है।” मैत्रय ने छुरी-काँटे उठा लिए और खाने की प्लेट पर टूट पड़ा।

मिस्बा का लंच हो चुका था। वह नैपकिन से मुँह पोछ रही थी। उसके हाथ पोछते ही एक डस्टबिन जैसा दिखाई देने वाला रोबोट उसके पास आकर जूठी प्लेट और नैपकिन ले गया।

“क्या आप साथ में पढ़ते थे?” मिस्बा ने पानी का गिलास उठाते हुए मैत्रय से पूछा।

“हाँ, हम एक कॉलेज में थे!” मैत्रेय निवाला चबाते हुए बोला, “पर हमारे विषय अलग थे। निशोक एक भौतिकी का छात्र था और मैं कला संकाय का एक लफंडर छात्र! हम दोनों एक ही लड़की को पसंद करते थे। उसका नाम स्वर्णा था। क्या खूब थी वो! बला की खूबसूरत!” स्वर्णा की बात करते ही मैत्रेय के हाथ रुक गए। उसने काँटा और चम्मच छोड़ दिया और कुछ भावुक-सा हो गया, “अफ़सोस, वो इस दुनिया में नहीं है!” उसने याद करते हुए बताया।

“क्या?” मिस्बा चौक गई।

आफ़ताब भी हैरत से मैत्रेय को देखने लगा। उसकी जादू की कुल्फी भाँप बनकर उड़ने लगी थी।

“हाँ, स्वर्णा मर चुकी है, समय के अनंत भंवर में! अच्छा होता निशोक ने उसे मरने ही दिया होता।” मैत्रेय मायूस होते हुए बोला।

“ये आप क्या कह रहे हैं?” मिस्बा ने पूछा।

"मैं सच कह रहा हूँ! उसके पीछे ही मैं यहाँ आया था। भगवान नहीं चाहता था कि वो हम दोनों में से किसी को मिले। इसलिए वो किसी तीसरे आदमी से शादी करने जा रही थी। जबकि वह निशोक को बहुत प्यार करती थी। शायद दोनों के बीच कुछ अनबन हो गई थी जिसके कारण उसने ये निर्णय लिया था। मुझे ठीक से नहीं पता पर ये जरूर पता है कि जिस दिन उसकी शादी होने वाली थी, उस दिन के विषय में निशोक को पहले से आशंका थी। उसे मालूम पड़ गया था कि शादी के दिन स्वर्णा मरने वाली है। कमीना बहुत पहले से समय के जटिल सिद्धांतों पर काम कर रहा था। उस वक्त तक द रियल टाइम मशीन बनी नहीं थी, लेकिन वो गणना से जानता था कि अनहोनी घटने वाली है। वह कॉलेज में भी बहुत होशियार था। हर साल अव्वल आता था। उसका कोई सानी नहीं था, सिवाय मेरे। बस मुझे नहीं पता था कि क्या होने वाला था पर उसे पता था। उसने स्वर्णा के विषय में मुझे बताया। मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं आया, लेकिन फिर उसने मुझे कुछ ऐसी बातें बताई जिस पर मैं कोई संदेह नहीं कर सका कि वो झूठ कह रह था। उसकी टाइम थ्योरी एकदम सही थी। फिर हम मिलकर स्वर्णा की मौत को रोकने के लिए जी जान से लग गए। पर उसकी मौत को रोक न सके। कुदरत किसी को भी छेड़छाड़ करने नहीं देती। होता वही है, जो होना है।

स्वर्णा की मौत में से वो और मैं बहुत टूट गए थे। मुझे स्वर्णा की मौत से उबरने में काफी समय लगा। पर उसे एक सनक सवार हो गई थी। वो कुदरत के लिखे को बदलना चाहता था। करीब एक साल बाद दिन-रात एक कर उसने टाइम मशीन बना ली। चूँकि मैं उससे जुड़ गया था तो सबसे पहले उसने ही मुझे उसके बारे में बताना ठीक समझा। उसे पूरा भरोसा था कि पीछे जाकर हम स्वर्णा की मौत को रोक सकते थे।

मुझे उसकी काबिलियत पर पूरा भरोसा था। हम अतीत में पीछे गए और हमने कोशिश की कि स्वर्णा की मौत को रोक सकें। लेकिन हम नाकाम हुए। एक बार, दो बार, तीन बार... हम बार-बार नाकाम होते रहे। हम पीछे जाते, फिर वापस आते, फिर पीछे जाते और वापस आते। ये सिलसिला चलता ही रहा। जाने कितनी ही बार... हमने अलग-अलग तरह से स्वर्णा को मरते देखा। सौ बार तो वह मेरी आँखों के सामने मरी थी। वो भयंकर मंजर थे।

मुझे समझ आ गया था कि हम कुदरत के चक्र में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे पर उसे ये बात समझ नहीं आ रही थी। वो हार मानने वाला नहीं था। फिर पता नहीं एक दिन क्या हुआ। अचानक से सब कुछ सामान्य हो गया था। मैंने खुद को

वर्तमान में पाया। मुझे कुछ भी याद नहीं था क्योंकि वो मेरे कॉलेज का पहला दिन था। अब निशोक और मैं एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे और न ही स्वर्णा हमारी जिंदगी में थी। सब कुछ सामान्य था।

हम सामान्य लोगों की तरह अपनी जिंदगी बसर कर रहे थे। पर एक दिन निशोक मेरी नजरों के सामने आ गया। उसे देख कर मुझे ऐसा लगा कि मैंने उसे कहीं देखा है। मुझे कुछ गड़बड़ लगी। दरअसल बार-बार समय यात्रा के कारण ऐसा हुआ था। फिर मैं रोज निशोक को छिपकर देखने लगा। उसे देखकर मुझे अजीब-से ख्याल आते थे। मुझे बार-बार ऐसा लगता कि कहीं कुछ हो रहा है या होने वाला है। पर क्या, मुझे नहीं पता चल रहा था।

एक दिन मौका देखकर मैंने उसका पीछा किया। मैं उसकी लैब तक पहुँच गया। उसे मेरे आने की ज़रा भी भनक नहीं थी। फिर जब वो अपनी लैब से कहीं चला गया तो मैं उसमें दाखिल हो हो गया। वो अपने प्रयोग वहीं किया करता था। उसके पिता बहुत पैसे वाले थे। वह घर- जिसमें वह रहता है, उसके पिता द्वारा ही बनवाया गया था। वो उस बड़े से आलिशान घर में अकेला रहता था। उसके माँ-बाप बहुत पहले ही गुजर चुके थे। मैं उसकी लैब में थोड़ी देर की खोजबीन से ही चक्कर में पड़ गया। वहाँ सारा रिकॉर्ड था। हम क्या कर चुके थे और वह खुद क्या कर रहा था। सारी जानकारी मेरे सामने थी। अब मुझे सब समझ आ गया था कि हमारी जिंदगी में क्या हो रहा था। उन रिकॉर्डस को देखने पर मुझे पता चला कि निशोक ने स्वर्णा को कॉलेज में आने से पहले ही समय की अनंत खाई में भेज दिया था। जिससे मेरा सिर घूम गया। मुझे निशोक पर बहुत गुस्सा आया। जबकि मुझे गुस्से में नहीं होना चाहिए था क्योंकि कुछ भी घटा नहीं था। एक हिसाब से देखें, तो न स्वर्णा कॉलेज आई थी और न हम दोनों को उससे प्यार हुआ था। लेकिन मुझे बड़ी बेचैनी होने लगी। मैं उसके लौटने का इंतज़ार करता रहा।

जब वो अपने वापस लैब में आया तो मैं उस पर भड़क उठा। मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई। जिससे हमारी झड़प भी शुरू हुई। फिर मैंने उसे स्वर्णा को वापस लाने के लिए बोला पर वो इंकार कर गया। उसने मुझे कहा कि ये असंभव है क्योंकि स्वर्णा खो गई है। मैं नहीं माना। मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि समय एक भूलभुलैया हो सकती है। मैं मानता हूँ कि मैं दिल से ज्यादा दिमाग से सोचता हूँ। इसलिए मैं उससे झगड़ने लगा। तब उसने मुझे एक घड़ी देकर समय मैं खुद जाकर देखने के लिए कहा। पर मुझे नहीं पता था कि समय में बहुत आगे जाना

खतरा होगा। आखिर वो एक प्रयोग था जिसमें वो बार-बार असफल हो रहा था। मैं घड़ी लेकर निकल पड़ा। मैंने अलग-अलग समय में स्वर्णा को खोजा पर वो कहीं नहीं मिली। फिर एक दिन गलती से मैं ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ समय की झटका तरंगों का कोई असर नहीं होता था। वो एक समाधि थी। एक लड़की की समाधि जिस पर लिखा था,

यहाँ वो लड़की सोयी है, जिसे बचाने के लिए उसके
प्रेमी और दोस्त ने एक हज़ार एक कोशिशें की।

वो स्वर्णा की समाधि थी।"

और फिर मैत्रेय फूटफूट कर रोने लगा। मिस्बा की आँखों से भी झरझर आँसू गिरने लगे। दोनों एक दूसरे को हिम्मत बंधाने लगे कि अब अच्छा होगा। फिर मैत्रेय सुबकते हुए बोला,"मैं वापस जाकर निशोक को बताना चाहता था, लेकिन मेरी घड़ी खराब हो गई और मैं यहीं अटक गया। समय की यात्रा ने मेरा कद भी छोटा कर दिया। आइन्सटीन की थ्योरी के सभी प्रयोग जैसे मुझ अकेले ने झेले हैं!"

मिस्बा को कुछ हँसी सी आ गई। मैत्रेय बहुत अनोखा था। उसने अपने आँसू पोंछे। आफ़ताब के आँसू उसकी जादू की कुल्फी में गिरने लगे।

"अब चूँकि तुम आ गई हो तो शायद मैं दोबारा अतीत में जा सकूँगा!" मैत्रेय ने अपने आप को संभालते हुए कहा।

आफ़ताब भी अपनी भावुकता पर काबू करते हुए मैत्रेय को दिलासा देने लगा। जब मैत्रेय चुप हो गया तो उसने अपनी घड़ी में समय देखा। उसके लिए समय की झटका तरंगे आने वाली थी।

"हमें यहाँ से चलना होगा। मेरी शॉकवेव आने वाली है।" मैत्रेय कुर्सी से उठते हुए बोला, "मुझे पता नहीं उसका तुम पर क्या असर होगा। पर मेरे ख़याल से तुम्हें भी मेरे साथ लूप होल में चलना चाहिए। शायद वहाँ सुरक्षित रहोगी।"

"ठीक है! हम साथ में चलते है।" मिस्बा ने कुर्सी से उठकर आफ़ताब की व्हीलचेयर थाम ली।

कुछ ही देर में वे मॉल से बाहर निकलते हुए किसी पुरानी उड़नखटोला कार में उड़ रहे थे, जो बीस मिनट के सफर के बाद एक सुनसान जंगल के तालाब के ऊपर खड़ी थी।

"यही वो लूपहोल है, जहाँ टाइम की शॉक वेव काम नहीं करती।" मैत्रेय ने घड़ी में समय देखते हुए मिस्बा को बताया, "इस तालाब के नीचे ही वो

समाधि है। पहले यहाँ तालाब नहीं था। लेकिन एक बाढ़ आई जिससे यहाँ का एक बड़ा इलाका डूब गया।" मैत्रेय के कहने पर मिस्बा और आफताब तालाब को देखने लगे।

मिस्बा को कुछ घबराहट हो रही थी। मानों सोच रही थी कि मैत्रेय की बात मानकर उसने ठीक किया था अथवा नहीं।

"शॉक वेव तीन मिनट में आने वाली है!" मैत्रेय ने घड़ी में देखते हुए कहा।

"हम तैयार हैं!" मिस्बा ने आफ़ताब का हाथ कसकर थाम लिया था।

€¥Ω£§

-समय एक विज्ञान है।

(24)
हमने उन्हें खो दिया!

सन् 2012, डॉ० रामावल्ली की लैब

डॉ० निशोक रामावल्ली स्क्रीन पर टिमटिमाते दो बिंदुओं को देख अति उत्साहित और आनंदित हो रहा था। वे दो बिन्दु उसे किसी विशेष घटना की ओर इंगित करते से लग रहे थे। उसकी आँखों में गहरी खुशी की चमक उठ चुकी थी और वह बार-बार चिल्लाने लगा था।

"मैत्रेय मिल गया... मैत्रेय मिल गया...शायद वो जिंदा है! मिस्बा ने उसे ढूँढ निकाला। उसकी घड़ी ने मैत्रय की घड़ी के पास होने का सिग्नल दे दिया है। वो घड़ी भले ही काम न कर रही हो पर मिस्बा की घड़ी से मिलने वाले सिग्नल को उसने पकड़ लिया है। अब मैं जान सकूँगा हूँ कि मेरी स्वर्णा कहाँ है। अगर वो जीवित हुई तो मैं उसे वापस देख सकूँगा। मेरा प्रयोग भी लगता है काम कर जाएगा। हाँ, कुछ हेरफेर करने पड़ेंगे, लेकिन हम फिर से साथ होंगे। आई लव यू स्वर्णा! आई लव यू मैत्रेय!" निशोक अपने आप में बड़बडाने लगा।

"क्या हुआ डॉक्टर? किसे आई लव यू बोल रहे हो?" खोजी पत्रकार सहस्त्रबाहु जोकि उसके पास ही खड़ा था, डॉ० रामावल्ली को अचानक से उत्साहित होता देख हैरत में पड़ गया।

"मैत्रय की घड़ी का सिग्नल मिला है, सहस्त्रबाहु! सात साल बाद बहुत बड़ी कामयाबी मिली है। भगवान् ने चाहा तो आगे भी मुझे कामयाबी मिलेगी। देखना फिर स्वर्णा, मैत्रेय और मैं एक होंगे।"

"कौन मैत्रय? कौन स्वर्णा, डॉक्टर?" सहस्त्रबाहु को समझ नहीं आया।

"मैत्रय मेरा दोस्त! और स्वर्णा मेरा प्यार, सहस्त्रबाहु! हम फिर से एक होंगे!"

डॉ० रामावल्ली भावनाओं के वेग को संभाल नहीं पा रहा था। उसकी जबान लड़खड़ा रही थी, "तुम पूछते थे न कि मैं वॉलिंटियरों को कहाँ भेज रहा हूँ! आओ बैठो, आज मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा!" और डॉ० रामावल्ली ने सहस्त्रबाहु को कंधों से पकड़ कर कुर्सी पर बैठा लिया और उसे अपनी, मैत्रेय की और स्वर्णा की कहानी सुना दी। वह भावनाओं के आवेश में था।

कहानी सुनते ही सहस्त्रबाहु का ह्रदय गदगद हो उठा। उसका गला आँसुओं से रुंध सा गया। उसे यकीन ही नहीं हुआ कि अपने प्यार को पाने के लिए

कोई इतना भी पागल और जुनूनी हो सकता है। उसने अपनी खुशी जाहिर करते हुए डॉ० रामावल्ली को गले लगा लिया और खुद पर फक्र करने लगा कि उसे रामावल्ली जैसा कोई साथी मिला।

"अब तुम क्या करोगे डॉक्टर?" सहस्त्रबाहु ने अपने आँसू पौंछते हुए उससे पूछा।

"क्या करूँगा? मैं मिस्बा की घड़ी को सिग्नल भेजूंगा। मैं मिस्बा को बताऊंगा कि उसे क्या करना है?" डॉ० रामावल्ली हँसते हुए बोला।

"क्या वो वापस आ जाएगी?" सहस्त्रबाहु ने फिर पूछा।

"बिल्कुल! उसको आना ही होगा।"

"और वे दर्जनों वॉलिंटियर जिन्हें हमने पहले भेजा था? क्या वे भी वापस लौट सकेंगे?" कहते हुए सहस्त्रबाहु ने डॉ० रामावल्ली की आँखों में देखा।

डॉक्टर चुप हो गया था।

"बोलो डॉक्टर? क्या वे वॉलिंटियर भी घर वापसी करेंगे?" सहस्त्रबाहु ने फिर पूछा।

इस पर डॉ० रामावल्ली कुछ देर तक सोचता रहा। फिर उसने कहा, "शायद हाँ...मैत्रेय मेरा पहला वॉलिंटियर्स था। सात साल से गायब था। अगर वो अब तक जिंदा है तो बाकी वॉलिंटियर्स भी घर वापसी करेंगे!"

"और जावेद और इरफान का क्या? वो घड़ी चुराकर आतीत में भागे थे, वे कैसे वापस आएंगे?"

"वे... वे तो कभी भी आ सकते है!"

"आपने कहा था उनकी वापसी का प्रतिशत दशमलव नौ-नौ प्रतिशत है!"

"मैंने झूठ कहा था!" डॉ० रामावल्ली स्क्रीन को देखने लगा। उस पर जावेद और इरफ़ान की स्थिति सामान्य रूप से आ रही थी, "उनके पास मेरी सबसे पहले वाली घड़ी है, जिसे मैंने स्वर्णा को वापस लेन के लिए बनाया था। बस मिस्बा को सकुशल लाने के लिए हमें कुछ और वॉलिंटियर की जरूरत पड़ सकती है!"

जब डॉ० रामावल्ली ये कह रहा था, तभी उसका ध्यान स्क्रीन पर गया। चार बिंदु, जो चार लोगों की सही स्थिति को प्रकट कर रहे थे, तेज आवाज के साथ टिमटिमाने लगे थे। स्क्रीन पर समय के अलग-अलग आयाम और क्षेत्र दिखाई पड़ने लगे।

"ये क्या हो रहा है?" निशोक घबराते हुए गौर से स्क्रीन को देख बटन दबाने लगा, "लंगड़ा जावेद और उसका घमंडी दोस्त कहाँ जा रहे हैं?" वह गंभीर मुद्रा

धारण करते हुए बोला, “और मैत्रेय और मिस्बा की घड़ियों के सिग्नल को क्या हो रहा है? क्या ये जाने वाले हैं? वे कहाँ बढ़ रहे हैं? क्या समय की झटका तरंगे आ रही हैं?” डॉ० रामावल्ली बड़बड़ाने लगा।

सहस्त्रबाहु चकित होते हुए उसके पास आ गया, “क्या हुआ डॉक्टर?” उसने डॉ० रामावल्ली से पूछा।

“पता नहीं! पर ऐसा नहीं होना चाहिए। हम उन्हें खोने वाले हैं।”

जिस समय दोनों स्क्रीन पर जावेद और इरफ़ान तथा मैत्रेय और मिस्बा की घड़ियों की स्थिति देख रहे थे, उसी समय जावेद और इरफान समय के एक लूप होल में प्रकट हो चुके थे तथा मैत्रेय और मिस्बा लूप होल वाले तालाब पर अपनी कार में बैठे थे। टाइम की शॉकवेव उनके ऊपर से गुजर रही थी।

कुछ ही देर बाद स्क्रीन पर स्थिति सामान्य हो गई। अब चारों बिंदु सामान्य रूप से टिमटिमा रहे थे, जिन्हें देखकर सहस्त्रबाहु ने राहत की साँस ली।

“सब ठीक है?” सहस्त्रबाहु ने पूछा।

“हाँ, सब ठीक है!” निशोक स्क्रीन पर से नज़र हटा ही रहा था कि तभी चारों बिंदु स्क्रीन से गायब हो गए।

“यह क्या हो गया?” वह फिर से स्क्रीन को देखते हुए बोला।

“क्या हुआ डॉक्टर?” सहस्त्रबाहु ने उससे फिर पूछा।

“शायद हमने उन्हें खो दिया है!” डॉ० निशोक रामावल्ली के मुख से निकला। वह बेहद चिंतित हो गया था।

Œ Œ Œ

शॉकवेव के निकल जाने के बाद मैत्रेय ने सीट पर पीछे मुड़कर देखा तो उसकी कार में दो वृद्ध लोग बैठ हुए थे। मैत्रय उन्हें देखकर चौंक गया था। वे मिस्बा और आफ़ताब नहीं थे, वे कोई और थे।

“हम किसकी कार में आ गए?” उन दोनों अजनबियों ने मैत्रेय से पूछा था।

Œ Œ Œ

जावेद और इरफान समय के लूप होल पर प्रकट हुए तो उन्होंने देखा कि उन्हें कुछ सैनिकों ने घेरा हुआ है। सैनिक उन्हें भाला दिखाते हुए आपस में कह रहे थे, “जलालुद्दीन मोहम्मद के शामियाने में घुसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? कौन हो तुम?”

सैनिकों के यह कहने पर इरफान ने हाथ ऊँचे करते हुए कहा, “आपको हमसे

कोई खतरा नहीं है जनाब! हम आपके दोस्त है!”

फिर उसने फुसफुसाते हुए जावेद से कहा, “जाने किस मनहूस घड़ी में वो घड़ी चुराई थी जावेद मियाँ। लगता है इस बार न तुमको और न मुझको कोई बचा पाएगा! अल्लाह को याद कर लो!”

।।नाम नहाज खात्मा-द रियल टाइम मशीन, भाग-1 ।।

।।इति द रियल टाइम मशीन प्रथम खंड समाप्तम।।

FLYWINGS

WingsHouse

फंतासी | एडवेंचर | हॉरर

WingsHousePostbox#07

क्या है विंग्स हाउस?

जैसा कि हम बता चुके हैं कि विंग्स हाउस एक ऐसा समूह है जो दुनियाभर की जादुई फंतासी, एडवेंचर और हॉरर कहानियों को किताब के रूप में आप सभी के सामने प्रस्तुत करता है। विंग्स हाउस हिंदी के पाठकों की मांग को ध्यान में रखने हुए कार्य कर रहा है। जल्दी ही आपको कई ऐसी तमाम किताबें पढ़ने के लिए मिलेंगी जिन्हें आप कहीं न कहीं खोज रहे थे। जादुई जंगल से लेकर समुद्री यात्रा और खजाने की खोज से लेकर टाइम ट्रेवल तक की कहानियां।

हमारे इसी वादे को पूरा करती यह किताब, 'द रियल टाइम मशीन' आपके हाथों में है। हमें पूरी आशा है कि यह किताब आपकी उम्मीदों पर खरी उतरी होगी। आप अपनी राय से हमें जरूर अवगत कराऐं।

चलिए अब लेखक महोदय से यह जानते हैं कि उन्हें यह किताब लिखने का विचार कैसे आया।

× × ×

आज से करीब दस साल पहले जब मै प्रकाशन संस्था में प्रूफ्रीडर और एडिटर का काम करता था तो तब एक दिन मुझे डीटीपी ऑपरेटर के घर जाने का मौका पड़ा। अमूमन ऐसा होता नहीं था क्योंकि अक्सर वे ही लोग हमारे ऑफिस आते थे। लेकिन यह डीटीपी ऑपरेटर, जिसका नाम लेना उचित नहीं होगा, कोई नया था, जिसे मैं नहीं जानता था। मुझे समझ नहीं आया था कि क्यों मेरे प्रकाशक ने मुझे उसके घर जाने को कहा। खैर, मैं पूछना भी भूल गया था। उसका अधिक दूर नहीं था। मेरे ऑफिस से तकरीबन 300-400 मीटर दूरी पर, किन्ही गलियों में था। मैं परिचितों से पूछते-पूछते उसके घर पहुंच गया। वह एक दिव्यांग व्यक्ति था। लगभग 28-30 साल का। वह अपने घर से ही काम करता था क्योंकि बिना बैसाखियों का सहारा लिए वह कहीं आ जा नहीं

सकता था। मैंने गौर किया कि वह खुद को घसीटते हुए चलाता था। बैसाखी पकड़ने के लिए उसे काफ़ी मशक्कत करना पड़ती थी। वह खुद से जूझता था। उसकी तकलीफ समझने में मुझे जरा थी वक्त नहीं लगा। मैं जान गया कि क्यों मेरे प्रकाशक ने मुझे उसके पास भेजा, बजाय उसे ऑफिस बुलाने के।

तकरीबन एक घंटे मैं उसके पास रहा और अपना कार्य करवाता रहा। इस बीच उसकी बेगम साहिबा उसे एक कप चाय देकर चली गई। जब मेरा काम हो गया और मैं वहां से जाने को हुआ तो तब मैंने देखा कि उसकी एक बेटी, तकरीबन तीन-चार साल की, घर के बाहर खेल रही थी। वह अकेली नहीं थी। उसके साथ उसका छोटा भाई भी था। उसकी उम्र एक या डेढ़ साल थी। यह दोनों ही बड़े सुंदर और गोरे चिट्टे थे, बिल्कुल उनकी अम्मी की तरह। एक बार कोई देख ले तो अपनी नजरें ना हटाए। बस उन्हें देखता रहे। और जैसा कि अमूमन होता है प्यारे और मासूम बच्चे स्वत: ही किसी को भी आकर्षित कर लेते हैं। मैं भी उनकी ओर खिंचा चला गया। उनकी छवि ने मुझे अपनी गिरफ्त में लिया।

उन्हें लाड़ करने और कुछ पल उनके निकट रहने के लोभ से मैं स्वयं को रोक न सका। मेरे कदम उनकी ओर बढ़ गये। मगर इससे पहले कि मैं चार कदम भी पूरे चलता, मुझे रुक जाना पड़ा। एक ऐसी बात जो उन भोले मासूम और सुंदर चेहरों को लाचार बनाती थी, मैंने गौर की। वे दोनों ही बच्चे, अपने अब्बू की तरह लाचार थे। लड़की का एक पैर का पंजा गायब था और लड़के का एक हाथ, जिसे मैं ठीक से देख नहीं पाया।

मैं ठिठक गया और हैरत से उन्हें देखने लगा। कुछ देर पहले जो बच्चे, मुझे दुनिया के सबसे सुंदर बच्चे लग रहे थे, अब मेरे दिल में उनके लिए तरस के भाव थे। मैं सोचने लगा कि आखिर इन बच्चों का जीवन क्या होगा? वे कैसे बड़े होंगे? उनकी परवरिश कैसे होगी? उन दिनों मैं आध्यात्मिक विषयों में कुछ ज्यादा ही घुसा हुआ था जिस कारण गंभीर प्रश्न मेरे मन मस्तिष्क में चलते रहते थे। मैं सोचने लगा कि आप फिर उस डीटीपी ऑपरेटर में ऐसे कौन से कर्म किए

होंगे जिस कारण होगा खुद ऐसा हुआ और उसके बच्चे भी ऐसे हैं? क्या उसके घर में कोई जेनेटिक बीमारी है?

बस उसी दिन मैंने सोच लिया था कि उस डीटीपी ऑपरेटर को लेकर कोई कहानी लिखूंगा। तो द रियल टाइम मशीन घुसी डीटीपी ऑपरेटर से प्रेरित कहानी है उसके जीवन का कुछ हिस्सा मैंने इस कहानी में लिया है और वही इस कहानी का सबसे महत्वपूर्ण कथानक है इसे आप पढ़ने पर समझ गए होंगे। यदि अब भी आपके मन में कोई प्रश्न हो या शंकाएं हो तो आप बेझिझक मुझसे संपर्क कर सकते हैं।

× × ×

चलिए अब बात करते हैं विंग्स हाउस के दूसरे सेट की किताबें कौन-कौन सी हैं:

- द रियल टाइम मशीन
- काबेरी: पारलौकिक प्रेम की अनोखी दास्तां
- अमन- क्रांति

आप अपने e-पत्र, सुझावों के साथ हमें ईमेल कर सकते हैं। आपके दिए सुझावों को अगले सेट के WingsHousePostbox में शामिल किया जाएगा।

उम्मीद है आपको हमारा ये प्रयास पसंद आएगा।

Subject: WingsHousePostbox

ईमेल: teamflywings@gmail.com